राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्.
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ९८

राजस्थानी-वीर-गीत-संग्रह

प्रथम भाग

प्रकाशक
राजस्थान-राज्याज्ञानुसार
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)
१९६८ ई०

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८९

प्रधान-संपादकीय

प्रस्तुत गीत-संग्रह प्रतिष्ठान की प्रकाशन-माला में एक नये अध्याय का सूत्रपात करता है। इस सग्रह मे जो गीत संगृहीत किये गये हैं वे उन सहस्रों वीर-प्रशस्तियों के प्रतिनिधि हैं जो अनेक साधारण सैनिको के लिये लिखी गई हैं। राज्याश्रित कवियों और इतिहासकारो की दृष्टि स्वभावतः अपने आश्रयदाता राजाओ और शासकों पर ही केन्द्रित रहने के कारण, उनकी दृष्टि से प्रायः वे साधारण सैनिक उपेक्षित रह जाते हैं जिनके ही बलिदान पर वस्तुतः बड़े बड़े सेनापतियो की विजयश्री का भव्य प्रासाद खड़ा होता है। विश्व की अन्य भाषाओं में ऐसे अज्ञात तथा उपेक्षित सैनिकों की प्रशस्ति-स्वरूप लिखी गई कुल एक दो कविताएँ ही मिलती हैं, परन्तु राजस्थानी को यह लगभग अद्वितीय गौरव प्राप्त है कि उसने अपने सामान्य वीरों की गौरव-गाथा को भी सुरक्षित रखने के लिये हजारो गीतों को रचा और उन्हे सुरक्षित रखा। मुझे पता चला है कि इस प्रकार के लगभग आठ हजार गीत अकेले राजस्थान पुरालेख विभाग बीकानेर मे ही सगृहीत हैं और इस प्रतिष्ठान में भी लगभग इतने ही गीत सगृहीत हैं।

इन वीर-गीतो की विशाल निधि राजस्थान के ही नही अपितु सारे भारत के इतिहास के लिये बड़ी उपादेय है, क्योकि इन गीतो मे राजस्थान के उन वीरो का तो स्तवन है ही जो देश या विदेश मे वीर-गति को प्राप्त हुये, परन्तु राजस्थानी कवियो ने गुजरात, महाराष्ट्र एवं बुंदेलखण्ड आदि के सैनिको की यशश्री को भी अपनी कविता का विषय बनाया है। विविध ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रकाश डालने के अतिरिक्त इन वीरगीतों में राजस्थान के उस सामान्य-जनजीवन का भी चित्रण हुआ है जो किसी भी देश के शौर्य, साहस तथा जिजीविषा के लिये गर्व और गौरव की वस्तु हो सकता है। इस दृष्टि से इन गीतो का समाज-शास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करके देश के रक्षा-प्रयत्न मे एक नई स्फूर्ति और प्रेरणा को उत्पन्न किया जा सकता है।

इन वीरगीतो के भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन के लिये यहां समुचित अवसर नही है, परन्तु इतना कहना अनुचित न होगा कि इस प्रकार के अध्ययन से राष्ट्रीयता और राष्ट्रभाषा के पक्ष को बहुत बड़ा समर्थन प्राप्त हो सकता है। खेद है कि हमारे इतिहास और संस्कृति के अन्य क्षेत्रो की तरह, भाषाविज्ञान के क्षेत्र मे भी हमारा नेतृत्व साम्राज्यवादी विदेशियों ने किया, जिसके

फलस्वरूप हम स्वतन्त्रता के पश्चात् भी स्वतन्त्र ढंग से सोचने में असमर्थ रहे हैं। जैसा कि बालशिक्षा-व्याकरण की भूमिका मे कहा गया है, इस देश मे अंग्रेजी से पहले भी एक सम्पर्क-भाषा थी और उसको विभिन्न लोकभाषाओ के सम्पर्क मे रखने के लिये निरन्तर प्रयत्न होते ही रहे। संभवतः इन्ही प्रयत्नो के फलस्वरूप ऐसे लोगो के लिये भी एक सम्पर्क-भाषा हो चली थी जो सस्कृत नही जानते थे। इस सम्पर्क-भाषा मे देश के विभिन्न प्रदेशों में जाने वाले तीर्थयात्री और साधु-सन्त अपना काम चलाते होंगे। यद्यपि इस सम्पर्क भाषा के विस्तृत इतिवृत्तको उपस्थित करना बहुत कठिन है, परन्तु अनुमानतः महाराष्ट्री प्राकृत इस सम्पर्क-भाषा की निकटतम प्रतिनिधि मानी जा सकती है। यही कारण है कि प्राकृत, अपभ्रंश और डिंगल महाकाव्यो का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करने वाले डॉ० छोटेलाल शर्मा ने महाराष्ट्री प्राकृत के व्यापक प्रभाव को स्वीकार किया है। यद्यपि इस विद्वान् का ग्रन्थ अभी विद्वानो के सामने नही आया है, परन्तु मेरी उनसे जो बातचीत हुई है उसके आधार पर यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि उनके अध्ययन से जो निष्कर्ष निकल रहे हैं उनको प्रस्तुत गीत-सग्रह के भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन से बहुत बडी पुष्टि मिलेगी। आशा है हमारे समर्थ विद्वान् इस दिशा में समुचित प्रयत्न करेंगे जिससे कि हम यह समझ सकें कि राजस्थानी वीरगीतो में हिन्दी की कितनी बड़ी निधि विद्यमान है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के विद्वान् सम्पादक ने इन गीतो से संबंधित सैनिकों का तथा घटनाओ का परिचय देते हुए बहुत उपयोगी सामग्री पाठकों के लिये प्रस्तुत कर दी है। उन्होने प्रत्येक गीत का साराश तथा कठिन शब्दो के अर्थ देते हुए सम्पूर्ण सामग्री को सुबोधगम्य बना दिया है। ग्रन्थ के प्रारम्भ मे जो शोधपूर्ण भूमिका दी गई है वह उनके प्रखर पाण्डित्य साहित्याभिरुचि तथा परम्परा-ज्ञान का सम्यक् परिचय कराती है और इस बात को स्पष्ट करती है कि इन वीर-गीतो के सम्पादन के लिये कितनी उत्कृष्ट योग्यता और सामर्थ्य अपेक्षित है। इतने सुन्दर सम्पादन के लिये सम्पादक हमारी बधाई के पात्र हैं।

जय हिन्द

माघ शुक्ल पूर्णिमा सं. २०२४
जोधपुर

—फतहसिंह

विषय-सूची



भूमिका

राजस्थान का प्राचीन साहित्य मरुभाषा अथवा मरुदेशीय भाषा मे लिखित उपलब्ध होता है। मरुभाषा का उद्भव प्राकृत भाषा से हुआ है। प्राकृत की शौरसेनी शाखा से ब्रज और अपभ्रंश शाखा से मरुभाषा का आविर्भाव हुआ। प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. तॅस्सितॅरी ने मरुभाषा के लिए पश्चिमी राजस्थानी शब्द का प्रयोग किया है। सोलहवी शती में पश्चिमी राजस्थानी, गुजराती और राजस्थानी नाम से अपना अलग स्वरूप निर्धारण करने लगी। गुजराती ने गुजरात प्रदेश तथा राजस्थानी ने राजस्थान प्रान्त की मातृ भाषा का गौरव प्राप्त किया। कालान्तर मे जिस प्रकार ब्रज भाषा के काव्य रूप को पिंगल के सम्बोधन से पहिचाना जाने लगा, वैसे ही राजस्थानी के काव्य रूप के लिए डिंगल शब्द का भाषा के रूप मे प्रयोग होने लगा। राजस्थानी विद्वानो ने ब्रजभाषा और राजस्थानी (डिंगल) भाषा का प्रादुर्भाव प्राकृत भाषा से ही स्वीकार किया है।[1]

राजस्थानी का प्राचीन साहित्य गद्य और पद्य दोनो मे प्रभूत परिमाण में सर्जित हुआ है। गद्य मे ख्यात, वात, वचनिका, दवावैत, किस्सा, पीढियावली, हकीकत, विगत, हाल, वाकिया, दर्शननामा, सूरतनामा, रुक्के, परवाने, पट्टे, खरीते आदि विभिन्न रूपों मे प्राप्त हैं और पद्य साहित्य वेली, रासो, साको, विलास, प्रकास, रूपक, सरोज, सलोको, झमाळ, झूलणा, कवित्त, निशानी और गीत दोहादि छन्दो मे उपलब्ध हैं। वैसे राजस्थानी भाषा मे हिन्दी के सभी छन्दों मे काव्य-सर्जन हुआ है। किन्तु राजस्थानी का अपना अलग छद-विधान है। राजस्थानी भाषा के अपने छन्दों मे 'गीत छन्द' उसकी अपनी निधि है। यह छंद भारतीय भाषाओ के अन्य छदों से एक सर्वथा स्वतन्त्र और विशिष्ट प्रकार का छद है। राजस्थानी के लक्षण ग्रथो में गीत छद के १२० भेदों का विवेचन मिलता है। गीत छद और उसकी विशेषता पर विचार करने के पूर्व गीत और लोकगीत के अन्तर एवं भेद को जान लेना आवश्यक है।

राजस्थानी साहित्य मे 'गीत' शब्द दो साहित्यिक विधाओ का बोधक है। एक लोक-गीत और द्वितीय डिंगल गीत। लोक गीत सामान्य लोक-मानस का साहित्य है और डिंगल गीत विशिष्ट मानस की कृति। लोकगीत मे संगीत और उसके उपकरण वाद्य यत्रादि का स्वर प्रधान रहता है। उसमे छन्द शास्त्र के मात्रा, गण एव तुकादि के प्रासादि नियमों का बन्धन अनिवार्य नही है। उसका कोई एक रचयिता होते हुए भी वह किसी की रचना नही होता। जन-कण्ठों पर अवस्थित रहने के कारण उसके स्वरूप मे भी सम्वर्द्धन-परिवर्तन होता रहता है। अतएव लोकगीत के रचयिता, घटना प्रसग तथा सर्जन काल का कोई निश्चित तिथिक्रम सुनिश्चित नही होता है। किन्तु डिंगल गीत छन्द शास्त्र के नियमो से निबद्ध होते

---

1 प्राकृत भाषा प्रकट, भेद दोइ करि भाखि।
पीगळ डींगळ प्रबळ, सुभ गुण भाषा साखि॥
'विजयविलास' काव्य स० १८१२ वि० में रचित।

हैं। इनका रचयिता, रचना प्रसंग, रचनाकाल और वर्ण्य विषय आदि तथ्य सुज्ञात रहते है। डिंगल गीत और लोकगीत के भेद को प्रकट करने वाला एक अन्य प्रबल आधार और भी है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है कि लोकगीत संगीत-प्रधान होते है। वे गेय हैं और डिंगल गीत पाठ्य साहित्य है। यहाँ डिंगल गीतों की कतिपय विशेषताओं पर ही विचार किया जा रहा है।

डिंगल गीत और छंद शास्त्र—अब तक की खोज में डिंगल के कोई तेरह छन्द शास्त्र के ग्रथ उपलब्ध हो चुके हैं जिनमे न्यूनाधिक रूप मे डिंगल गीतो का विवेचन हुआ है। डिंगल के लक्षण ग्रथो में सबसे प्राचीन ग्रथ नागराज पिंगल का विद्वानो ने नामोल्लेख किया है; परन्तु नागराज पिंगल की कोई प्रति आज तक किसी विद्वान् को प्राप्त नहीं हुई है। प्राप्त लक्षण ग्रथो मे सबसे प्राचीन ग्रथ 'छद ग्रथ गीत' है। इसने ४८ प्रकार के गीतों का विवेचन किया गया है। प्रत्येक गीत के तीन द्वालों मे नागराज ने पक्षीराज गरुड़ की स्वामि-भक्ति, विवेक, सेवापरायणता और गति आदि का प्रशसात्मक वर्णन किया है। चतुर्थ द्वाले में गीत के लक्षण व्यक्त किए है। इस ग्रथ मे विवेच्य समस्त गीतों में गण एवं अक्षरों की गणना द्वारा वर्णन किया है। वर्णन क्रम को समझने के लिए पालवणी गीत का एक उदाहरण देखिए—

आखिजै पंखाळी अैसो।
सामे कामे वाहै सैंहसो॥
वीर सधीर सवीर वखांणै।
जोगी जोग तणी विध जांणै॥१।

जीपण जुध महाबळ जत्ती।
पिसण दळां पाहण गजपत्ती॥
च्यारौं दिस चावो चूंचाळो।
चिरत लखै नह को चिरताळो॥२॥

वेग वहै मन हूंता वेगो।
ईस ईस तैं धावियो वेगो॥
देवी देव कियो बड दावो।
गरुड़ तणा गुण अहिपति गावो॥

मेक मलूक मगण पर ज्योंही।
भगण दुवाई जांणों सोही॥
तीजो मगण हूवो नृप तक्खै।
आखर सतहरसैं अहि अक्खै॥४॥

छंद शास्त्र के ग्रंथों मे द्वितीय प्राचीन ग्रथ जैसलमेर के महारावल हरराज के नाम से प्रकाशित 'पिंगल सिरोमणी' है। यह ग्रंथ सं० १५७५ मे लिपिबद्ध हुआ माना जाता है। किन्तु हरराज के समय और ग्रन्थ मे प्रयुक्त उदाहरणों से न यह ग्रंथ सं० १५७५ मे रचा गया है और न हरराज के राज्यत्वकाल स० १६१८ में ही लिखा गया है। ग्रंथ में जिन ग्रंथो, कवियो एव

गीतनायकों के गीतो के उदाहरण दिए गए हैं, वे सं० १६८० के आसपास की घटनाओ से सम्बद्ध है। इसलिए इसका रचनाकाल सतरहवी शती का चतुर्थ चरण ही समीचीन जान पडता है। इसमें हिन्दी भाषा और डिंगल भाषा मे प्रयुक्त अन्य छन्दो के लक्षण एव उदाहरणो के अतिरिक्त चालीस प्रकार के डिंगल गीतो के लक्षण और उदाहरण दिए गए हैं। यह ग्रथ भी छद शास्त्र की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

लक्षण ग्रथो मे प्रमाणित तृतीय ग्रथ जोगीदास चारण कृत 'हरि पिंगल प्रबंध' है। यह ग्रन्थ प्रतापगढ देवलिया के महारावल हरिसिंह के शासनकाल में सवत् १७२१ मे रचा गया था। इसमे कवि ने हिन्दी भाषा के राजस्थानी मे व्यवहृत अन्य छन्दों के साथ साथ २२ प्रकार के गीतो के लक्षण एव उदाहरण दिए हैं। छद ग्रथो के इसी क्रम मे हरिरामदास की छंद रत्नावली, गुण पिंगल प्रकास, लखपत पिंगल और हरि पिंगल की गणना की जा सकती है। इन चारो ग्रथो मे हरि पिंगल प्रवध की शैली में गीतो पर भी प्रकाश डाला गया है। केवल गीतो की दृष्टि से रचित लक्षण ग्रन्थो में किसना आढ़ा कृत रघुवर जस प्रकास, मछाराम सेवग कृत रघुनाथ रूपक, मनोहरपुर शाहपुरा के महाराव हनुमन्तसिंह के जीवन वृत्त को कथाधार बना कर रचित 'हणूत प्रकास' और उम्मेदराम लिखित 'कवि कुलबोध' महत्त्वपूर्ण ग्रथ है। इनमे रघुवर जस प्रकास मे ६१, रघुनाथ रूपक मे ७४, हणूत प्रकास मे ८४ और कविकुलबोध मे ८४ प्रकार के गीत, उनके लक्षण, रचनाविधि, जथाए, वयण सगाई आदि पर अत्यन्त ही विद्वत्तापूर्वक विचार किया गया है। रघुवरजस प्रकास, रघुनाथ रूपक और हणूत प्रकास मे गीतो के लक्षणो को पद्य के साथ ही गद्य मे भी टिप्पण देकर स्पष्ट किए गए हैं। हणूत प्रकास मे गीत के प्रथम द्वाले मे लक्षण और अग्रिम द्वालो मे ग्रथनायक की वीरता, उदारता और वैभव आदि का चित्रण किया गया है।

गीतो के लक्षण ग्रथों के सर्जन की यह परम्परा आधुनिक काल मे कविराजा मुरारिदान के डिंगल कोश, हिंगळाजदान कविया के प्रत्यय-पयोध और सावळदान आशिया के 'महाभारथ गीत रूपक' तक अबाध गति से प्रचलित मिलती हैं। महाभारथ गीत रूपक मे १२८ प्रकार के गीतो मे महाभारत की कथा को सार रूप में गुम्फित किया है। किन्तु गीत कुल १२० प्रकार के ही हैं। शेष आठ तो साणोर गीत के भद हैं। इस प्रकार के गीतो पर लिखित अब तक कोई तेरह ग्रथ उपलब्ध हो चुके हैं जो गीतो के भेद-प्रभेद, रचना-प्रक्रिया और वर्ण्य विषय आदि की दृष्टि से वैविध्यपूर्ण हैं। किन्तु यहां पर गीतों के छदशास्त्रीय ग्रथो पर विस्तार से विवेचन करना अभीष्ट नही है। अतएव साधारण रूप मे गीतो का नाम निर्देश मात्र ही किया गया है।

गीतो की रचना-विधि—प्राचीन गीतकारो के हस्तलिखित ग्रन्थो के अध्ययन से पता चलता है कि गीत कवि दो प्रकार के हुए है। एक वे कवि जिन्होने लक्षण ग्रथो का विधिवत् अध्ययन किया था। उनके गीतो से स्पष्ट बोध होता है कि उन्होने इतिहास, पुराण, रामायण, महाभारत, रघुवश तथा सगीत, ज्योतिष, शालिहोत्र आयुर्वेद, दर्शन, स्थापत्यकला और खगोल विद्या का सांगोपाग अध्ययन किया था। ऐसे कवियो मे आणंद, करमाणद, आशानद, ईश्वरदास बारहठ, माला सांदू, कुभकर्ण सादू, माधवदास दधिवाडिया, हुकमीचंद

खिडिया, चैनकरण सांदू, वाकीदास आशिया और कविसम्राट् सूर्यमल्ल मिश्रण आदि शता-विक कवियो का उल्लेख किया जा सकता है। द्वितीय कोटि मे वे कवि आते हैं जिन्हें गीत रचना तो आती थी किन्तु उनका अध्ययन साधारण कोटि का होता था। इस कोटि के कवियो के अध्ययन के लिए उन्हें एक सौ गीत कठस्थ करवा दिए जाते थे, जिनके आधार पर वे काव्य सर्जन करना सीख जाते थे। किन्तु उनके गीतों मे जथाओ, उक्तियो और अनुप्रास माला के नियमो का सम्यक निर्वाह नही हो पाता था। इसलिए प्रथम प्रकार के कवियो को 'शास्त्रकवि' और दूसरे प्रकार के कवियो को 'वातकवि' कहा गया है। शास्त्रो के ज्ञाता कवियो के गीतों मे शब्दमाला और भाव-परम्परा का एक-सा क्रम एव प्रवाह रहता है। इस कोटि के कवि, गीत का प्रारम्भ अन्तिम द्वाले के चतुर्थ चरण से करते है। पहले अन्तिम द्वाले की चतुर्थ पक्ति रचते है जिसे नीव की पक्ति कहा जाता है। तदनन्तर तृतीय, द्वितीय और प्रथम पक्ति रचते हैं। इस क्रम से गीत के शेष द्वाले पूर्ण कर गीत के शीश की पंक्ति का निर्माण कर सम्पन्न करते है। अन्तिम द्वाले की अन्तिम पक्ति को जिस प्रकार नीव बाँधना कहा जाता है उसी प्रकार प्रथम द्वाले की प्रारम्भ की पक्ति को गीत का 'सिर वाधना' कहते हैं। इस क्रम को 'उलटा चेजा' भी कहते हैं। प्रासाद अथवा कूप आदि के निर्माण में उसकी बुनियाद की सुदृढता को महत्वपूर्ण माना जाता है उसी प्रकार गीत की नीव को महत्व दिया जाता है। गीत रचना मे यह क्रम सर्वश्रेष्ठ समझा गया है। किन्तु इस प्रणाली से गीतो का प्रणयन एव क्रम निर्वाह उच्चकोटि के कवि ही कर पाते हैं।

गीतो का नामकरण और भेद—जैसा कि ऊपर निर्देश किया जा चुका है कि लक्षणग्रंथ-कारो ने अपने ग्रथो मे गीतो की सख्या अलग-अलग बतलाई है। सख्या की दृष्टि से सबसे अधिक १२८ प्रकार के गीतो के लक्षण और उदाहरण 'महाभारथ गीत रूपक' मे दिये गए हैं। किन्तु आम तौर से प्रचलित एवं व्यवहृत्त गीत ८४ जाति के ही अधिक मिलते है। इनमे भी साणोर, वेलियो साणोर, सावझडो, सपखरो, गयद, हसावळो, पालवणी, अगझप त्रिकुटवध अठताळो, भाखडी और झमाळ का अधिक प्रचलन रहा है। वैसे उदयराम गूंगा ने गीतों की जाति का अपने एक गीत, जाति अगझप में निम्न प्रकार वर्णन किया है—

मदार मनमद खुडद मधुकर सोख गोख अवंक सकर,
सोहणो अगझप धावक भाखड़ी अधमाख।
गजल मुड़ियळ अरट गजगत प्रोढ दोढो सवा श्रीपत,
पाड़गत झड़मुकट दीपक सुध भाख अर साख ॥१॥
चंद्र चितईलोळ चदण वीरकंठ विवाण वदण,
कमळ धमळ प्राहास काछो सुपंखरो सारग।
सतखणो सालूर सायक अेक अछर मधुर भायक,
... ... — सोख अधर सरंग ॥२॥
झडउथल घड़उथल मदझर विकुटवध'र त्रिकुट कंवर,
मधुर चित्तविलास मगळ गवसार गयद।
वेलियो मुक्तावळी वर जागडो गुजार भ्रमर,
हांसलो लहचाल हेळा माळ गीत मयंद ॥३॥

अवकड़ो अम्बाळ दुसतर सोरठो सेलार सुन्दर,
अडळ मनसुख अठताळ चग चोटीयाळ ।
ललितमुकट झमाळ लंगर सिघचल दुरमेळ सगर,
मन उमग प्रकास मनसुख मेळ अेक घमाळ ॥४॥

जुगल रुद्र अनूप रसजस सावझड अठवस सद्रस,
वीस खट सांणोर वेता ग्यान पिंगल गीत ।
इसी चाल प्रतध आणो जमक लाट रचेक जाणो,
रीत झड झड छंद राखो करो करता क्रीत ॥५॥

रघनाथ रूपक में यद्यपि कवि ने ग्रंथ के गीत प्रकरण की समाप्ति पर कथित दोहे में गीतों की ७२ जाति का ही उल्लेख किया है।[1] किन्तु ग्रंथ मे प्रयुक्त गीतो की सख्या से ७४ जाति के गीतो के लक्षण और उदाहरण प्राप्त है। गीतकार ने ७४ जाति के निम्न लिखित गीतो का निरूपण किया है—

साणोर बडा, शुद्ध साणोर, प्रहास, दुमेल, अरट, अरटियो, दोढो, भाखडी, पखाळो, गोख, द्वितीय गोख, अर्द्ध भाखडो, प्रौढ, द्वितीय प्रौढ़, सिहचलो, सालूर, झमाल, छोटो सांणोर, वेलियो, सोहणो, मुक्ताग्रह, इकखरो, दीपक, सावक, अडल, द्वितीय सावक अड़ल, गाहा चौसर, अवकड़ो, हेलो, एकल वयणों, द्वितीय एकल वयणों, भाख, अर्द्ध भाख, गजगत, घमाळ, चोटियाळ, उमंग, सेलार, अर्द्ध गोख, सतखणो, झड मुकट, अमेल, काछो, हसावळो, भवर गुजार, द्वितीय भवर गुजार, चोटियो, चितविलास, मदार, कंवार, चितइलोळ, पालवणी, कवि इलोळ, त्रिपखो, मनमोद, झड लुपत, द्वितीय अवकडो, द्वितीय पालवणी, सावझडो, अर्द्ध सावझड़ो, जागड़ो, खुड़द सांणोर, वीर कण्ठ. सवैयो, सपखरो, सुवग, अठताळो, आटको, लहचाळ, पाड़गत, अकुटबन्ध, द्वितीय अकुटबन्ध, लघु चित्त विलास और ललित मुकुट।

गीतो के प्राप्त लक्षण ग्रथो के आधार पर उनका वर्गीकरण मात्रिक, वार्णिक, गणो के आधार पर सम, अर्द्धसम, विषम, गीतों के द्वालो एव छन्दो के सयोग आदि से बने आदि कई प्रकार से किया जा सकता है। गीतो के नामकरण मनुष्य के अग, पशुओ की गति, पक्षियो की वाणी एव गीतो की पक्तियो, यत्र एव शस्त्र आदि के आधार पर निश्चित किए गए है। जैसे पशुओ की गति के आधार पर सिहचल, गजगति, गयद, अगजप और पक्षी-कीटो की वाणी के आधार पर भमर गुजार आदि गीतो का उल्लेख किया जा सकता है। गीतों के चरणो के आधार पर दोढो, अठताळो और मानव अगो के आधार पर जथ खोड़ो अरहण खेडी आदि की गणना की जा सकती हैं।

---

१. कहे वहोतर मछ कवि, गीत प्रबन्ध गिणाय।
राजतिलक वरणन करू, दवावैत दरसाय॥

रघुनाथ रूपक कवि मछाराम की कलमी प्रति स० १८६४ वि० आसाढ बदि ४। यह प्रति राजस्थानी शोध सस्थान में सुरक्षित है।

गीत मुक्तक और प्रबन्धात्मक दोनो प्रकार के बहुलता से रचे गए उपलब्ध होते हैं। मुक्तक गीतो मे गीत नायक के जीवन की किसी एक घटना का तीन, चार, पाँच द्वालो मे वर्णन किया जाता है। कोई कोई गीत २२ तथा २४ द्वालो तक के भी प्राप्त होते हैं। किन्तु ऐसा अपवादस्वरूप ही कहा जा सकता है। साधारण तौर पर अधिक गीत चार द्वालो के ही पाए जाते हैं। प्रबन्धात्मक काव्यो मे व्यवहृत गीतो मे वेली, वेलियो, झमाळ भाटको, भाखडी और गजगत उल्लेखनीय हैं। इन गीतो मे रचित प्रबन्ध काव्यो मे क्रिसण रुकमणी री वेली, राउ रतन री वेली, हर पारवती री वेली, देवीसिंघ पोकरण री झमाळ, महाराणा भीमसिंघ री झमाळ, अलवर षड् ऋतु वर्णन झमाळ, इन्द्रसिंघ री झमाळ, अरजन गोड़ री भाखडी और दुरसा आढा कृत गजगत प्रमुख कृतियाँ हैं। प्रकृति वर्णन के लिए तो राशि राशि झमाळों का प्रयोग किया गया है। क्या प्रबन्ध और क्या मुक्तक दोनो शैलियों मे वीर, वीभत्स, शृंगार, करुण, वात्सल्य और शान्त रस की धारा राजस्थान की संस्कृति, समाज जीवन, जन-मानस की प्रकृति और प्रवृत्ति को स्पर्श करती सवेग प्रवहमान उपलब्ध होती है।

मुक्तक शैली के गीतो की सख्या अगणित है। सवत् पन्द्रहसो से सम्वत् १६०० विक्रमी तक के चार सौ वर्षो के राजस्थान के रणस्थलो मे प्रवेश कर लडने-मरने, जीतने, हारने और जूझने वाले लक्षाधिक योद्धाओ, दानियों और सतियों के चरित्रो पर रचित गीतो की गणना करना सम्भव नहीं है। एक एक योद्धा पर एक से लेकर तीस तीस तक रचित गीत उपलब्ध होते है। ऐसी स्थिति मे यह कहना बड़ा कठिन है कि एक ही योद्धा पर कितने गीत लिखे गए थे तथा कितने अद्यावधि हस्तलिखित ग्रंथों में यत्र तत्र बिखरे पडे हैं।

मुक्तक गीतों मे कवि अमूमन चार द्वालो मे गीतनायक का चरित्र-चित्रण करता प्राप्त होता है। इन द्वालों मे गीतनायक का नाम, उसके पिता का नाम, कुल अथवा गोत्र के प्रसिद्ध पूर्व पुरुष का नाम, जाति और प्रति नायक का नाम आदि का अनिवार्य रूपेण वर्णन किया जाता है। साथ ही युद्ध की घटना एवं उसके परिणाम का आलेखन भी अनिवार्यतः किया जाता है।

गीतनायक के नाम का प्रथम द्वाले मे उल्लेख आ जाता है तब अग्रिम द्वालो मे नायक के पिता का नाम अथवा नायक के पिता के नाम के साथ अंगोभव, समोभव, तणो, तण, वत, सुतण, नदण, वाळो, अभिनव, बीजो, बीजाई तथा पितामह के नाम के आगे हरो, हरा, वीयो वियो, अभिनमो, सख, दूजो आदि शब्दों द्वारा उसके वंशक्रम की परिचिति दी जाती है। अनेक बार नायक के स्थान की प्रसिद्धि के माध्यम से भी उसका परिचय करवाया जाता है। यदि गीतनायक कछवाहा जाति का है तो उसके लिए आमेरा, आमेरापत, आमेरानाथ और कछवाहों मे भी शाखा विशेष की जानकारी का उल्लेख करना होता है तब उस शाखा वालों के प्रमुख एव प्रसिद्ध स्थान की ओर सकेत किया जाता है। कछवाहो में शेखावत शाखा के नायक के लिए अमरसरपत, अमरसरा, शेखाधरा आदि का नामोल्लेख किया जाता है। इसी प्रकार चौहानो के लिए सभरी, गौड़ो के लिए अजमेरा, राठौड़ों के लिए खेड़ेचा, कछवाहो के लिए ढूढाडा, सीसोदियों के लिए अहाड़ा, कँलपुरा,

नागद्रहा, चित्तौडा तथा भाटियो के लिए माडेचा शब्दो का प्रयोग मिलता है। इस प्रकार स्थान वाचक शब्दो द्वारा भी योद्धा का परिचय प्रकट किया जाता है। कथन की स्पष्टता के लिए बूंदी के महाराव शत्रुशाल हाडा का एक गीत उद्धृत किया जाता है। इस गीत मे शत्रुशाल के लिए प्रथम द्वाले मे सता, द्वितीय मे सुत नाथ, तृतीय मे बूंदी तणै राय और चतुर्थ में भोज बीजै का प्रयोग हुआ है। गीत मे देखिए—

तरंग सार धारां तणी निहंग छवतां तरळ, घरहरे गाज अंबाट घोखैं।
ऊफणें सैन दिखणाध वाळा उदधि, 'सता' अगस्ति पखो कवण सोखैं ।।१।।
लोहरी लहरि नभ गहर परसै लगस, धार चत्रधार तिण बार दीधा।
विलवै बार समराथ जळ दळ विगरि, कुभ सुत जेमि 'सुतनाथ' कीधा।।२।।
ऊपड़ै बजर गगन दुरसि आभडै भरै घट पाण आराण रै भाय।
धाट साहाण समद लक वाळा थया, रीख जेही पिया 'बूंदी तणै राय' ।।३।।
माखजै जोड पै वोड अैतो अन्तर, खग अगनि प्रचड जळ जेम खीजै।
अपच लागो समद मुनिन्द ऊतारियो, वारि दळ जारियो 'भोज बीजै'।।

गीतों में वर्णन क्रम भी कई रीतियों से चलता है। कई गीतों मे तो प्रथम द्वालो में उत्तरोत्तर वर्णन विकसित होता जाता है और कई गीतों मे नायक के कार्यो का वर्णन तो प्रारम्भ के द्वालों में रहता है और नायक का नाम अन्तिम द्वाले में प्रकट होता है। कतिपय गीतो मे प्रत्येक द्वाले मे एक ही भाव की शब्दान्तर से आवृत्ति रहती है।

इस क्रम के गीतो मे भावो की पुनरावृत्ति होती है पर शब्दो की नही। प्रत्येक द्वाले मे शब्दो के पर्याय रूप व्यवहृत होते हैं। वैसे देखने मे तो भाव पुनरावृत्ति परिलक्षित होती है; किन्तु यह गीत की अपनी विशेषता है। जिस प्रकार किसी मन्त्र की सिद्धि के लिए मान्त्रिक प्रारम्भ मे कई दिनों तक नियमित रूप से उसका विधिवत पाठ कर सिद्धि प्राप्त करता है उसी प्रकार एक ही भाव को अनेक बार दुहराने से वह भाव श्रोता पर अमोघ रूप से प्रतिफलित हो जाता है। अनवरत भाव पाठ से श्रोता पर उसका मन्त्र की भाँति स्थायी प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। अतएव प्रत्येक द्वाले मे एक ही भाव की आवृत्ति सप्रयोजन रहती है। कवियो की मान्यता के अनुसार एक ही बात को चार बार दुहराने से गीत का भाव श्रोता के मानस पर स्थायित्व प्राप्त कर लेता है। यो उसकी बार बार आवृत्ति उद्दिष्ट लक्ष्य की उपलब्धि के प्रयोजन से की जाती है। इस क्रम का निर्वाह उत्तम कोटि के कवियों द्वारा ही सम्भव होता है। शब्द कोष का भरपूर ज्ञान और वर्णन कौशल मे निपुणता इसके लिए अनिवार्य है।

गीतो मे चमत्कार उत्पन्न करने एव भावों के सम्यक् रीति से निर्वहन के लिए उकतों तथा जथाओं का यथोचित व्यवहार आवश्यक माना गया है। वयण सगाई और जथाएँ एक प्रकार से डिंगल काव्य के अलकार होते है। वयण सगाई तो डिंगल भाषा के काव्यों में सामान्यतः सर्वत्र ही व्यवहृत मिलती है। किन्तु जथाओ के नियमों का पालन गीत छदों में ही प्राप्त होता है। डिंगल छदशास्त्र के आचार्य मछाराम ने रघुनाथ रूपक मे वयण सगाई के भेद, उकतो एवं जथाओ का सुदर रूप मे विवेचन किया है। रघुनाथ रूपक मे ग्यारह

प्रकार की जथाओ का वर्णन है। कविकुलबोध में और भेद प्रभेद कर जथाओ की संख्या इक्कीस तक निश्चित की है।

जथाएँ—जथा एक प्रकार के वाक्य विन्यास की रीति है। इनसे रचना मे चमत्कार एवं अर्थगौरव की वृद्धि होती है। वस्तुतः ये गीतो मे प्रयुक्त शब्दालकार है जिन्हें लक्षण ग्रंथकारो ने जथाओ के नाम से विज्ञप्त किया है। रघुनाथ रूपक मे जथाओ की परिभाषा देते हुए लिखा है—

रूपक माहे रीत जो, वरणन करे विचार।
सो क्रम निवहे सो जथा, तवै मछ विस्तार॥

गीतो में वर्णन-क्रम की जिस रीति को प्रारम्भ मे ग्रहण किया गया हो, वह क्रम प्रारम्भ से अन्त तक उसी क्रम मे निभाया जाय उसे जथा कहा जाता है। रघुनाथ रूपक के अनुसार ग्यारह प्रकार की जथाएँ निम्नलिखित हैं[1]—विधानीक, सर, सिर, वरण, अहिगत, आद, अन्त, सुद्ध, इधक, सम और नून।

विधानीक जथा—गीत के प्रथम द्वाले मे जिस क्रम से वर्णन प्रारम्भ किया जाय आगे के द्वालों मे उसका पूरी तरह एकसा निर्वाह हो वहाँ विधानीक जथा होती है। इस क्रम मे प्रत्येक द्वाले मे वर्ण्य के लिए नवीन उपमानो का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए हाडोती प्रदेश के इन्द्रगढ के शासक महाराज भक्तसिंह पर रचित गीत द्रष्टव्य है—

राजै सुरां मे सुरेस रूप खगां मे खगेस राजा,
समाजै द्विजेस गणां मुन्या मे मुनेस।
ग्रहा मे ग्रहेस छाजै वसू मे गोलोक नामी,
नरां में विराजै असो समरी नरेस॥१॥
गजां अैरापती जेही तेज सुरा मुख गिणां,
गणां मेक दन्त राजै आपगा में सिंध।
भार मे भरेस राजै ध्यान मे भूतेस पुणां,
वदीतो छाताळ नद सोहे वळावंध॥२॥
गिरां में सुमेर ओपै सुरताण राहां गणां,
जत्या में मारुत प्रजापती रिखां जांण।
जाप मे अजपा जहि साचो वळीराजा जिसो,
महाराजा तपै लोयां हींदवां चो मांण॥३॥
माधवांन वैनतेह अमीधार मुनी तेज,
कुज नाग ज्वाळा गणे सिंध कहू सेस।
ईस मेर साह हनू अधी अजै जाप ओप,
जुहं खटा वेमेक सो राजै भगतेस॥४॥

---

[1] विधानीक सर सिर वरण, अहिगत आद अतांण।
सुद्ध इधक सम नून सो, जथा ग्यारह जाण॥
रघुनाथ रूपक—स० महतावचंद्र खारेड, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी पृ० २४५।

इस प्रकार उल्लिखित गीत मे भक्तसिंह के लिए जिन उपमानो का प्रयोग किया गया है अन्तिम द्वाले में उनको गिना कर विधानिक जथा का निर्वाह किया गया है।

सरजथा—सरजथा के चार भेद किये गए हैं। प्रथम भेद मे यथा संख्या अलकार का प्रयोग कर-शृङ्खलाबद्ध वर्णन किया जाता है। द्वितीय में यथा संख्या के साथ उल्लेख अलकार की योजना की जाती है और तृतीय मे उल्लेख अलंकार होता है। इसमें वर्ण्य का नाम अंत में प्रकट किया जाता है। चतुर्थ भेद में वर्ण्य नायक अथवा विषय का नाम प्रथम द्वाले में ही व्यक्त कर दिया जाता है। स्पष्टीकरण के लिए महाराज अमानसिंह हाडा की तलवार की प्रशसा मे रचित गीत देखिए—

फण बाढ़ां डसण सुबाढां फोजा, घण पौरिस विख रोस घणौ।
काळा नाग सरीखो कळहणि, तिसडो खाग अमान तणौ ॥१॥

फूकारां बादियां घड फाड़े, जत्र न लागे भडां जग।
भूंगा काळ तणौ कळ भारथ, खत्री तूझ हाडा खड्ग ॥२॥

तड़ बादियां तणा मुह तूटे, दारण धका सकारण दाट।
खळ रण ताळ चाळ वध खाये, झाळ बराळ काळ खग झाट ॥३॥

घूमे वर्क घणा खळ घावां, तण भगतावत डसिया तरह।
दूजा छता चढ़े विख दोयणा, लोघा हूंस उतरे लहर ॥४॥

सिरजथा—गीत के प्रथम द्वाले में जो वर्णन-क्रम ग्रहण किया जाय वह क्रम अन्तिम द्वाले तक उसी प्रकार शब्दान्तर से निर्वह किया जाय उसे सिरजथा कहा जाता है।

बाथे ऊचाणां सुमेर पाथे तेरसा अचूक बाण,
राण काळा राढ़ि वेळां बेरसा रमाज।
रिमंदां ऊबेड़ जाड़ा सेरसा गजा रा गोड़,
सामतां समाज राखे येरसा समाज ॥१॥

तेड़िया बाराह लोह छेड़िया भमग तिसा,
खेड़िया अजागि जाणे राम सखा छद।
हेड़िया पिनाकी वाच गणां रा समूह हले,
नेडियां सुभट्टां राखे भगतेस नन्द ॥२॥

तेगाळा बीजाळा करां सिंभाळा जीवता सको,
अडाळा हटाळा जुटाळा भीम दाव।
सांचाळा वाचाळा बोल जगाळा पगाळा सांचा,
भीछाळा अेहाळा हाले हाडा रे सुभाव ॥३॥

भग गिरा वैरूपी उमग रा सिध अेहा,
रग रा मजीठ रग दान रा करन।
स्याम रा उपासी बिया स्याम री न माने सक,
रवताळा असा बिया छता रे सरन ॥४॥

तीनवी पहाड़ तेज अवकरा वहनी - ताप,
अरिवरा लेण काज राखणा उपाव ।
आठों जाम ईस काम सारणा धारण असा धसा,
रावते जुहारे राजै वळावध राव ॥५॥

वरणजया—जिस गीत मे कवि वर्णनीय का प्रत्येक द्वाळे में नवीन वर्णन करता चले वहा वरणजथा होती है । वरणजया को समझने के लिए राव रामसिह हाडा का एक गीत अवलोक्य है—

असपति आहुडँ दोय तखत उपरि करग गहे केवाण ।
राजि सरसो आजि रामा, आगरे अवसाण ॥१॥
पलटिया दूसरा छत्रपति, भिडि खतंग भड भींक ।
वरण अवरी वार विळकुळ, मरण दम मछरीक ॥२॥
जैसिघ राजा तसा सटिया, नामदार नरनाह ।
पातिसाहां वाजि पाघर, वळावध पतसाह ॥३॥
मघाउत उजीण मडिया, सेतपुर छत्रसाल ।
चाल खाये नहि चौरंग, चहूआणे चाल ॥४॥
भाजि जाणै नहीं भोळा, विढ़ण खग वरियाम ।
हाथिया चढ सदा हाडा, कळह आवै काम ॥५॥

अहिगतजया—जिस गीत के द्वालो मे वर्णनीय का वर्णन सर्प की गति की भाति दिशाएँ बदलता जाता है, उसे अहिगतजया कहा जाता है । सर्प अपने अंग का सकोचन कर आगे बढता हैं उसी रीति से इस जया मे वर्णनीय का वर्णन सम्बन्ध मध्य मे एक-एक शब्द छोड़ कर आगे के शब्द से सम्बद्ध होता चलता है । वर्णन की रीति को पहिचानने के लिए गीत का एक द्वाळा दर्शनीय है—

तरवर नदियांण सुरसरी सुरतर, सरपा गज ऐरावत सेस ।
सरां नखत रजनीस मांनसर, अवनीसां ओपम अवधेस ॥१॥

इसमें तरवरों मे सुरतरु (कल्पवृक्ष), सर्पों में शेषनाग, सरोवर में मान सरोवर की भांति नृपतियो में श्री रामचद्र सुशोभित होते हैं । इस वर्णन में नदियाण सुरसरी, गज-ऐरावत और नखत रजनीस शब्दो को मध्य मे छोड कर सम्बन्ध स्थापित किया गया है ।

आदजया—जिस गीत मे वर्णनीय वस्तु का नाम-निर्देशन प्रथम द्वाले मे किया जाय और अग्रिम द्वाळो मे उसका क्रमशः वर्णन किया जाता है वहाँ आद जया होती है ।

देख्यो तिण तमि हीज मींट दौडियो, हुवै वैर यम सदा हुवै ।
अमरापुर ओळू आफळिया, दसतमखान तिलोक दुवै ॥१॥
किसन तणी काय काणि न कीवी, पौरस पिंड माझी अपलि ।
शिरमर कहर काढ़ि कछवाहो, चगथा ऊपरि गयो चलि ॥२॥

अमर बड बडा दौहि आविया, आडां करण कजै ओनारि ।
तोगा राम दुहाई तोनू, तोग मति बाहवै तरवारि ॥३॥
अमरां दिसि सुरताण अगोअम, कुरूम जपै येम सकाज ।
मेछ जको यळ मडल मारियो, अमरापुर मारू सुजि आज ॥४॥

अन्तजथा—गीत के प्रथम द्वाळे मे जो वर्णन प्रारम्भ किया जाता है उसका प्रयोजन अन्तिम द्वाळे मे स्पष्ट हो; वहा अन्त जथा होती है। उदाहरण मे देखिए—

यसा सूत सू काम बरियाम तूं यम करै, लकड़ मानै तरस जकड़ लागा ।
बसेला घाव सेला तणा बीदणां, खळा रा डोल करि घडे खागां ॥१॥
याही कारीगरी सारी जग ऊपरै, घड़ा रजवट तणी घरट घाटै ।
किरमरा केळि परि कव्हाडा कीमती, काठ जिम आरधां रा घाट काटै ॥२॥
मोहरै महराण रै दळां रा महाबळ, भुजां बळ वनपती कीध भैरी ।
राजि रा पमाडा हवै सह रीधीया, बींधीया कवाडा जही वैरी ॥३॥
रीति खाती तणी चीति राखो रूडां, पेढ साखा सहत घडत पाती ।
तरवरां ऊपरै केई नर तरछिया, खरो हू नर लियां नगा खाती ॥४॥

सुद्धजथा—गीत के प्रारम्भिक द्वाळे मे जो वर्णन किया जाय, वह वर्णन अन्य समस्त द्वाळो मे वर्णित हो जाय उसे शुद्ध जथा कहा जाता है। शुद्ध जथा को नारायणदास खंगारोत के युद्ध गीत में देखिए—

अकबर चै कांमि दिखण दळ ऊपर, असमरि ऊछजियै आरांणि ।
मुहरि हुवो नरो घाय मिळतो, पुळियो दळा हुवो पछिमांणि ॥१॥
भारथि भडा खगार अगोभव, खळ खाडण रिण भाले खाग ।
आगळि हुवो वाग ऊपडती, बासै हुवो फिरती बाग ॥२॥
कळहि चढै जगमाल कळोधर, जण जण मुहडै जुवा जूवो ।
मुहरै हुवो अणी मेळन्तो, हालिया पूठि रखो हूवो ॥३॥
कलह करै ऊबरियो कूरम, भाजै सत्रा पडती भीड ।
आगळि करै सेन ऊवेलै, बळि राखै पूठी रख वीड़ ॥४॥

इधक जथा—जिस गीत मे वर्णनीय का रूपक अलंकार मे वर्णन कर उस पर व्यतिरेक अलकार का प्रयोग किया जाय उसे अधिक जथा कहा जाता है। इसमे रूपक तथा व्यतिरेक का संयोजन करने मे अतीव विवेक आवश्यक होता है।

समजथा—जिस गीत में केवल रूपकालकार द्वारा वर्णनीय का वर्णन किया जावे वहां समजथा होती है।

नूनजथा—जिस गीत मे उपमेय और उपमान की सादृशता बताते हुए अन्त में उपमान की उपमेय के सम्मुख न्यूनता प्रकट की जाए वहा न्यून जथा होती है।

जथाएँ वस्तुतः वयरा सगाई की भाँति ही डिंगल गीतो के अलंकार कहे जा सकते हैं। कारण कि कुछ जथायें तो सर्वांश मे अलकारो के सयोग पर ही आधारित हैं और कुछ मे वर्णन की रीति विशेष का परिपालन होता है।

जथाओं की भाति ही गीतो में उकतो (उक्तियो) का भी महत्व प्रतिपादित किया गया है। डिंगल के लक्षण ग्रन्थो मे काव्योक्तियो के चार प्रकार स्वीकार किए गए हैं। काव्योक्तियो को शैलीगत विशेषतायें मानी जा सकती है। ये उक्तियाँ चार प्रकार की होती है, जो इस प्रकार है—परमुख उक्ति, सन्मुख उक्ति, परामुख उक्ति और श्रीमुख उक्ति।

परमुख उक्ति—जिस वर्णन मे कवि वर्णनीय का वर्णन अन्य पुरुष को सम्बोधित करके करता है उसे परमुख उक्ति कही जाती है। परमुख उक्ति के दो भेद किए गए हैं—शुद्ध परमुख और गर्भित (गरवत) परमुख उक्ति। जहा वर्णन मे वर्णनीय के सन्मुख सामान्य शब्दो मे बात कही जाए वहाँ शुद्ध सन्मुख और जहा वर्णनीय के सन्मुख अन्योक्ति द्वारा बात कही जाय वहा गर्भित परमुख उक्ति होती है।

सन्मुख उक्ति—जिस गीत अथवा छद मे वर्णनीय का वर्णन उसी को सम्बोधित कर किया जाता है वहाँ सन्मुख उक्ति होती है। सन्मुख उक्ति के भी शुद्ध सन्मुख और गर्भित सन्मुख दो भेद किये गए हैं।

परामुख उक्ति—जिस गीत मे कवि वर्णनीय का अपने वचनो मे वर्णन न कर अन्य के मुख से वर्णन करवाता है वहाँ परामुख उक्ति होती है। परामुख उक्ति का भी परमुख-परामुख और सन्मुख परामुख दो भेद किये गए हैं।

श्रीमुख उक्ति—जिस छंद मे कवि अपने ही मुख से अपनी अवस्था का वर्णन करता है वहाँ श्रीमुख उक्ति होती है। श्रीमुख उक्ति के भी कल्पित श्रीमुख तथा साक्षात् श्रीमुख उक्ति नाम से दो भेद किये गए हैं।

मिश्र उक्ति—जिस गीत या छद के प्रत्येक द्वाले मे उक्ति बदलती रहे वहाँ मिश्र उक्ति कही जाएगी।

रघुवर जसप्रकास मे उपर्युक्त चारों उक्तियो के उपभेदो का स्वतन्त्र रूप मे उल्लेख कर उनके ९ भेद गिनाये हैं। किन्तु इनका चारों में अन्तर्भाव हो जाता है।

काव्य दोष—संस्कृत के आचार्यो ने काव्य-सौन्दर्य मे व्यवधान अथवा अवरोध उत्पन्न करने वाले कारणों को दोष कहा है। मम्मट, विश्वनाथ और वाग्भट आदि प्रसिद्ध आचार्यों ने काव्य दोषों पर विस्तार से विचार किया है। सदोष काव्य, प्रशसा के स्थान पर निन्दा के कारण बनते हैं। काव्य दोष, भाषा, अर्थ विपर्यय, वर्णन-क्रम भंग, काव्य नियमों का उल्लंघन और निरर्थक शब्द-योजना आदि के कारण उत्पन्न होते हैं। भामह ने अपार्थ, व्यर्थ, ससंशय, अपक्रम, शब्दहीन, यतिभ्रष्ट, भिन्नवृत्त, विसंधि, देश विरोधी, काल विरोधी, लोक विरोधी, न्याय विरोधी, आगम विरोधी, प्रतिज्ञाहीन, हेतुहीन और दृष्टान्तहीन १९ प्रकार के दोष बतलाये हैं। ये दोष काव्योत्कर्ष के लिए बाधक होने से त्याज्य है। राजस्थानी आचार्यों में मछाराम ने दस, किसना आढ़ा ने ग्यारह और भाईदान पाल्हावत ने द्वादस

प्रकार के काव्य दोषो का निरूपण किया है। किन्तु डिंगल में ग्यारह प्रकार के काव्य दोषों को ही काव्य मे वर्जित माना है। राजस्थानी मे मान्य ग्यारह काव्य दोषो के नाम इस प्रकार है– अन्ध, छबकाल, हीण निनग, पागळो, जातिविरोध, अपस, नालछेद, पखतूट, बहरो और अमगल। किन्तु सस्कृत मे भामह द्वारा निर्दिष्ट काव्य दोषों और राजस्थानी मे विवेचित काव्य दोषो मे नाम भेदो का ही अन्तर है। लक्षणो मे विशेष अन्तर परिलक्षित नही होता है। डिंगल के ग्यारह काव्य दोष सस्कृत काव्य मे परिगणित १९ दोषों मे समाधानित हो जाते है। सस्कृत के आचार्यो ने जिसको अपक्रम दोष बतलाया है राजस्थानी मे उसे ही निनग दोष कहा है। इसी प्रकार सस्कृत काव्य के भिन्न वृत को जाति विरुद्ध, व्यर्थ को अपस, और शब्दहीन को लक्षणों के आधार पर पखतूट कहा जा सकता है। अतएव सस्कृत और राजस्थानी के काव्य दोषो मे नाम भेद के अतिरिक्त कोई भेद नही जान पडता है। दोनो भाषा काव्यो मे प्रयुक्त दोष लक्षणो के तुलनात्मक अनुशीलन से यह विभिन्नता बहुत कम रह जाती है। किन्तु स्थानाभाव से यहां काव्य-दोषो पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार करना सभव नही है। अतएव, डिंगल के ग्यारह काव्य दोषो पर ही यहां सामान्यतः सकेतन किया जा रहा है।

अन्ध दोष– जिस गीत मे परमुख सन्मुख आदि उक्तियो के समिश्रण स्वरूप विकार उत्पन्न हो जाता है वहा अन्ध-दोष माना जाता है।

छबकाल दोष– जिस गीत मे डिंगल भाषा के शब्दो के अतिरिक्त ब्रज, पंजाबी, मराठी, तुर्की आदि भाषाओ के शब्दो का व्यवहार किया गया होता है उसे छबकाल दोष कहते है। भाषा मे विजातय भाषा के शब्दो के छबके (धब्बे) से लगने से छबकाल दोष बनता है। किन्तु डिंगल मे मराठी की चा, ची, चो आदि विभक्तियो एवं अरबी, तुर्की, फारसी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग बहुशः उपलब्ध होता है। इस दोष से डिंगलकाव्य के ग्रथ वचित नही है।

हीण दोष—जिस गीत मे वर्णनीय की जाति, शाखा, पिता, पितामह अथवा वश आदि के परिचय सम्बन्धित अन्य जानकारी का उल्लेख भली भांति नही किया गया हो वहा हीण दोष माना जाता है।

निनंग दोष—जिस गीत के वर्णन में वर्णन क्रम भग अथवा क्रम विपर्यय हो वहाँ निनंग दोष होता है।

पांगळो दोष—जिस गीत मे नियमविरुद्ध मात्राएँ तथा वर्ण हो वहां पांगळा दोष होता है।

जाति विरुद्ध दोष—जिस गीत मे गीतों की विभिन्न जातियो के द्वालो का सम्मिश्रण हो वहाँ जाति विरुद्ध दोष होता है। सस्कृत का भिन्नवृत और डिंगल का जाति विरुद्ध दोष एक ही है।

अपस दोष—जिस छंद में निरर्थक शब्द-योजना हो जिससे अर्थ की स्पष्टता प्रकट न हो वहाँ अपस दोष होता है।

नाळछेद—जिस गीत मे जयाओ के क्रम का निर्दिष्ट रीति से यथावत् निर्वाह न हो वहाँ नाळछेद दोष होता है।

पखतूट– जिस गीत के द्वालो मे कही अनुप्रास और कही अनुप्रासरहित शब्दावली हो वहाँ पखतूट दोष होता है।

बहरो दोष– जिस गीत मे शब्दो का ऐसी रीति से प्रयोग किया गया हो जो दोनो ओर जुड कर अर्थ पलट देते हो वहाँ यह दोष होता है। डिंगल काव्य मे 'विसहर' (विषधर) नाम से जिस रचना का उल्लेख किया जाता है उसमे वहरा दोष ही होता है। जिन रचनाओ मे यह दोष होता है उन्हे विसहर और सर दोनो नामो से व्यक्त किया जाता है। शुभ फलदायक को सर और अशुभ फलदायक को विसहर कहा जाता है।

अमगल दोष– जिस गीत मे द्वाले की पक्ति के प्रारम्भ के अक्षर तथा अन्तिम अक्षर के सयोग से कोई अमागलिक अर्थ प्रतिपादक शब्द बन जाता हो वहाँ यह दोष होता है।

उपर्युक्त ग्यारह दोष वयणसगाई आदि अलकारो मे व्यवधान उत्पन्न कर काव्य के उत्कर्ष को नष्ट कर देते है।

द्वाला– गीत में चार पक्तियो के समूह को एक द्वाला कहा जाता है। एक गीत में सामान्यतः तीन से चार तक द्वाले होते हैं। किन्तु इस नियम का सर्वत्र पूर्ण रीति से निर्वाह नही मिलता है। प्रवन्ध काव्यो मे वेलियो एवं झमाळो गजगतो मे तो तीन सौ तक द्वाले पाये जाते है। मुक्तक गीतो मे राजा उम्मेदसिंह पर रचित गीत मे २२, पाबूजी राठौड पर रचित गीत मे ४४ तक द्वाले उपलब्ध है किन्तु यह अपवाद ही मानना चाहिए। साधारणतया तीन, चार, पांच, सात और आठ द्वालो तक अधिक गीत रचे गए उपलब्ध होते हैं। चार चरणो का एक द्वाला वाला सिद्धात भी समस्त गीतो पर प्रभावी नहीं होता है। गजगति और झमाळ मे छह छह पंक्तियो का एक द्वाला होता है। चितविलास में पाच, दोढा मे छह, अठताला मे आठ और त्रिकुटबन्ध मे पन्द्रह पंक्तियों का एक द्वाला होता है।

गीतों का वर्गीकरण– गीत मात्रिक और वार्णिक दोनों प्रकार के है। मात्रिक गीतो मे भी सम, अर्द्धसम, विषम और मिश्रित रूप मे उपलब्ध होते हैं। गीतो के वर्गीकरण पर प. नरोत्तमदास स्वामी ने राजस्थानी के भाग २, अक १ मे डिंगल गीतों की सारणी' नामक निबन्ध में तथा डा तारा सापट ने 'डिंगल के छदशास्त्र' नाम के अपने शोध-प्रबन्ध मे अत्यन्त ही सुन्दर रीति से विवेचन किया है।

गीत और इतिहास— वीरगीत और इतिहास का चोली दामन का सम्बन्ध है। इतिहास ज्ञान के अभाव मे गीतो का अध्ययन सभव नही है। इतिहास के ढाचे पर गीतों का सर्जन हुआ है। इनमे इतिहास का तथ्य और काव्य की कल्पना का अद्भुत समिश्रण है। अतएव गीतो को समझने के लिए गीतों की रचनाकाल की सामाजिक एव राजनैतिक परिस्थितियो को समझना अनिवार्य है। बिना तत्कालीन परिस्थितियो की भूमिका को जाने गीतों का महत्व समझ पाना सहज नहीं है। गीतो का निर्माण केवल मनोरजन अथवा स्वान्तः सुखाय भावना से नही किया जाता था। इनके निर्माण मे निश्चित हेतु रहा है। सप्रयोजन रहित गीतो में योद्धाओं को कर्त्तव्य-बोध, उद्बोधन, तथा कर्त्तव्य-पालन के लिए प्रेरित करने का लक्ष्य निहित रहा है।

राजस्थान के इतिहास में सोलहवीं शताब्दी से बीसवीं शती के पांच सौ वर्षों का काल मुसलमानो, मरहठो और राजपूतों के पारस्परिक युद्धो का काल रहा है। इस दीर्घ अवधि में राजस्थान तथा राजस्थान से बाहर अनेकानेक युद्ध लड़े गए हैं। राजस्थान के योद्धाओ ने इन युद्धों मे सक्रिय भाग लिया था। उन युद्धो के घटना प्रसग वीर गीतो के पक्ति-सूत्रो मे ग्रथित है।

राजस्थान द्वारा मध्यकाल मे लडे गए युद्ध किसी राज्य की प्राप्ति, किसी ग्राम पर अधिकार अथवा किसी भूखण्ड का शासन-स्वत्व प्राप्त करने के युद्ध नही थे और न ही वे प्रभुत्व प्रदर्शन करने के लिए किए गए युद्ध थे। उनके पीछे एक व्यापक दृष्टि और स्पष्ट उद्देश्य था और वह था स्वातत्र्य रक्षा एवं कर्त्तव्य पालन की भावना। इस काल में सर्जित साहित्य निश्चय ही राष्ट्रीय भावनाओ का प्रेरक साहित्य है। इसमे जन-जीवन की रक्षा, स्वधर्म-पालन, गोधन, पूजा-गृहो आदि की रक्षा तथा दर्पपूर्ण चुनौतियो का सामना करने की भावना के अनेकानेक प्रसग समाहित हैं।। अतएव राजस्थानी साहित्य को केवल सामती वैभव एव शासको के प्रशमन के सकुचित वृत मे आबद्ध करना हमारे अध्ययन के अभाव का द्योतक तो है ही, किन्तु साथ ही स्वधर्म, स्वकर्त्तव्य और राष्ट्रीय मर्यादाओ की रक्षा के लिए अपने जीवन को युद्ध-वेदी मे आहूत करने वाले उन उदात्त चरित्र कर्मवीरो के प्रति कृतघ्नता प्रकट करने का सूचक भी है। राजस्थानी साहित्य का इस प्रकार जो मूल्यांकन किया गया है, वह एक चातुर्यपूर्ण एव कैतवतामय राष्ट्रीय विद्रोह है। राष्ट्र के लिए प्राण न्योछावर करने वाले उन वीरो के गौरव पर कुटिलतापूर्वक आवरण डालने का प्रयास है। इस प्रकार अंग्रेजो की नीति से प्रभावित भारतीय विद्वानो ने राजस्थानी साहित्य के प्रति घातक प्रहार किए हैं। उन्होने भारत की प्रतिष्ठा, गौरव-रक्षा और उसकी गर्वीली परम्पराओ के लिए पतगवत् बलि चढ़ने वाले योद्धाओ को सामन्त, दरबारी, राजाशाही और जागीर वर्ग आदि शब्दो के माध्यम से जन-समाज के सम्मुख निहित स्वार्थी घोषित करने का प्रयत्न किया है। किन्तु हमारे विद्वानो ने यह समझने का प्रयत्न नही किया कि अंग्रेज विदेशी थे। वे भारत के नागरिक नहीं थे। उन की न गंगा मे श्रद्धा थी और न कैलाश के प्रति भक्ति-भावना। किन्तु राजस्थान के सामन्तों का इस भूमि के प्रति रागात्मक सम्बन्ध था। भारत की गौरव-रक्षा उनके लिए एक प्राथमिक कर्त्तव्य था और यहाँ के वीरों ने इसी कर्त्तव्य पालन की पुनीत भावना से प्रेरित होकर युद्ध लडे थे। उन वीरो मे कर्त्तव्य की चेतना जाग्रत करने वाला, उत्साह का सचार करने वाला, मृत्यु को मांगलिक बताने वाला, कायर को वीर और धीर को जूझ कर धराशायी बन जाने के लिए बाध्य कर देने वाला साहित्य क्या सामन्ती साहित्य है? क्या उसमे जीवन-ज्योति की शिखा का प्रकाश नही है?

चीन और पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया और हमारे राजनेताओ ने साहित्यकारो का आह्वान किया। हमने अपने देश के रक्षको मातृभूमि की रक्षा के लिए शत्रु का सामना करने वाले सैनिको के मुक्त हृदय से स्तुति-गीत गाये कवि सम्मेलनो मे उनकी प्रशंसा की। उन पर राशि राशि स्तवन-काव्यो की रचना कर देश भक्ति के प्रमाण पत्र समर्पित किए। यह क्यो? इसीलिए कि उन वीरो ने भारतीय राष्ट्र की शत्रुओ से रक्षा के लिए कदम बढ़ाए थे। तब फिर मध्यकाल में अपने देश के लिए लड़ने वालो के लिए रचित

साहित्य सामन्ती कैसे हो गया ? जिस प्रकार चीन पाकिस्तान के आक्रमण के समय देश को युद्धोत्साही साहित्य की आवश्यकता थी उसी प्रकार मध्यकाल मे रचित वीर साहित्य भी उस युग की मांग की पूर्ति का साहित्य है ।

ऊपर कह आए है कि विगत पाच सो वर्षो में राजस्थान ने अनवरत युद्धो के खेल खेले है। रणभूमि को कर्त्तव्य-निर्वाह की क्रीडा भूमि के रूप मे स्वीकार कर उसमें जीवन-मरण की क्रीडा की है । उन युद्धो की परम्परा को जीवित रखने मे वीरगीतो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । आक्रान्ताओं से लोहा लेते हुए अनेको वीर पीढियां समाप्त हो गईं। कई वश ससार से विलुप्त हो गए । फिर भी राजस्थान के योद्धाओं ने कभी थकान का अनुभव नहीं किया। मृत्यु भय से उनके मन में कार्पण्य, चेहरे पर निराशा और हृदय मे निरुत्साह का भाव नही जगा। दूकान पर विक्रय करता महाजन धन्धे से ऊब कर हरिद्वार चला जाता है । राजनीतिज्ञ राजनीति में पिट कर सन्यास ले बैठता है । शिक्षक शिक्षा क्षेत्र से मुक्ति प्राप्त कर मौन धारण कर लेता है। कृषक अपना धन्धा सन्तान के सुपुर्द कर विश्राम ले लेता है। किन्तु राजस्थान के योद्धाओं ने शत्रु के ललकारने पर बारह वर्ष की बाल-वय मे उसका सामना किया । यौवन की पच्चीसी मे मृत्यु का आलिंगन किया और साठ वर्ष की वृद्धावस्था मे वैरियो से लोहा लिया । उसका शरीर और मन कभी विश्राम के लिए मचला नही । राजस्थान का विगत शताब्दियो का इतिहास साक्षी है कि राजस्थान का तथाकथित सामन्त, युद्ध से न कभी थका, न निराश हुआ और न ठहरा । उसकी कर्मशीलता, और अटूट उत्साह का श्रेय राजस्थान के वीर साहित्य को है । योद्धाओं की थकान के लिए वीरगीत सिद्ध गुटका था। गीत से नवीन शक्ति प्राप्त कर थकित योद्धा तत्काल डट खडा होता था । किन्तु सामन्ती साहित्य, युद्धों के गीत, दर्पोक्तिपूर्ण काव्य, वीर स्तवन, चारण भाटों का प्रशस्तिगान आदि शब्दों के अन्तराल में गीतों के यथार्थ, उनके प्रभाव का प्रतिफलन और इनमे अन्तर्हित सत्य को जानना तो दूर रहा, सुनने तक के प्रति ईमानदारी नही बरती । रूढि और सकीर्णता के शब्दों के प्राकार में गीतों की वास्तविकता और यथार्थता को आबद्ध कर दिया ।

समाज मे सदैव आदर्श की पूजा होती है । परम्परा-प्रचलित नियमों और लोक-आदृत मान्यताओं का परिपालन एव उनकी क्रियान्विति आदर्श कहलाते हैं । गीतों मे जिन वीरों का चरित्र गुम्फित है उन्हो ने लोकादर्शों के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया था । शरणागत की रक्षा, आश्रित का पोषण, वचन-निर्वाह, अभावग्रस्त की सहायता, शत्रु-पीड़ित को अभयदान प्रदान करने वाले गीतनायक को समाज ने आदर्श व्यक्ति माना है । ये गुण मध्यकाल के योद्धा मे बहुशः उपलब्ध होते हैं । अतएव वीरगीतों मे जहाँ योद्धाओं की श्लाघा प्राप्त होती है वहां समाज-मान्य आदर्शों का गुणगान भी निश्चय ही लक्षित होता है । गीतो मे उस युग विशेष का आदर्श और उन आदर्शों की प्रेरणा का स्वर गुंजित है । अत: गीतों मे केवल युद्धों की विभीषिका, रूढिगत धारणाओं का वर्णन और अनुकरण का कोलाहल मात्र नहीं है । अपितु भावी पीढी के लिए प्रेरणा का सवेदनशील स्पदन भी है । प्रतिशोध की भावना का प्राबल्य है, मृत्यु का उपहास है और अमरता का जयगान है ।

शस्त्रो की तीक्ष्ण धाराओं में प्रवेश कर जीवन का सगीत आलापते हुए विपक्षी सेना रूपी कामिनी से युद्धस्थल रूपी विवाह-वेदी पर प्रणय-लीला करने वाले उन लक्षाधिक विस्मृत, अज्ञात और मौन भारत पुत्रो का उज्ज्वल चरित्र वीर गीतो मे गुनगुना रहा है। यदि कोई सहृदय उन वीरो के त्याग, बलिदान और उच्चादर्शों को हृदय की आंखो से देखना चाहे तो उनके उत्सर्गों की गुरुता और कर्त्तव्यो की महत्ता सहज ही द्रवित कर सकती है। एतदर्थ राजस्थानी साहित्य का पुनर्मूल्याकन बहुत ही आवश्यक है।

ऊपर संकेत दिया जा चुका है कि गीतो का ताना-बाना इतिहास के सूत्रो द्वारा गूथा गया है। भारतीय इतिहास के वेदव्यास डा० गौरीशंकर हीराचद ओझा ने अपने राजपूताने के इतिहास मे गीतो का ऐतिहासिक महत्त्व स्वीकार करते हुए लिखा है—

"राजपूत राजाओ, सरदारो आदि के वीरकार्यों, युद्ध में लडने या मर जाने, किसी बडे दान के देने या उनके उत्तम गुणो अथवा राणियो तथा ठकुराणियो के सती होने आदि के सम्बन्ध के डिंगल भाषा मे लिखे हुए हजारो गीत मिलते हैं। ये गीत चारणो, भाटो, मोतीसरो और भोजको के बनाये हुए हैं। इन गीतो मे से अधिकतर की रचना वास्तविक घटनाओं के आधार पर की गई है, परन्तु इनमे अतिशयोक्ति भी पाई जाती है। युद्धों मे मरने वाले जिन वीरों का इतिहास मे सक्षिप्त वर्णन मिलता है, उनको वीरता का ये अच्छा परिचय करवाते है। गीत भी इतिहास मे सहायक अवश्य होते है।"

गीत इतिहास के महत्त्वपूर्ण साधन है। जिन वीरों का इतिहास ने उपेक्षा कर विस्मृत कर दिया उनको गीतो ने बड़े यत्नपूर्वक सम्हाल कर जीवित रक्खा है। वीरगीतो ने उनके नामों को ही जीवित नही रक्खा है, बल्कि वीरों के जीवन की अनेकानेक घटनाओं को भी अपने अन्तराल मे सम्हाले रक्खा है। एक ही घटना पर दस-दस तक गीत रचे गए उपलब्ध होते है। वस्तुतः राजस्थान का लिखित इतिहास राज्य सत्ता को केन्द्र बना कर लिखा गया है। उसमे राजस्थान के जन-जीवन पर व्यापक दृष्टि से विचार नही किया गया है। युद्ध में केवल राजा, सेनापति और प्रतिष्ठा प्राप्त योद्धा ही भाग नही लेते थे। उनके साथ हजारो सैनिक, रसोइये, पानी भरने वाले, सईस, सिकलीगर, धोबी, मोची, दर्जी, नाई, बारी, बलाई आदि जातियो के भी कितने ही व्यक्ति सम्मिलित रहते थे। गीतों मे उनका भी वर्णन मिलता है। योद्धाओ के लडने मरने तक ही गीतो का क्षेत्र सीमित नही रहा है। इनमे उद्योग-धधे, कृषि, वाणिज्य, विवाह, जन्म, आखेट, हाथियो की लड़ाई, भूख, प्यास, अध्ययन, संगीत, स्थापत्य, चित्रकला, प्रकृति, पशु-पक्षी, देव-दानव आदि नाना विषयो का चित्रण हुआ है। गुजराती के प्रसिद्ध विद्वान झवेरचन्द मेघाणी ने गीतों की व्यापकता एव ऐतिहासिक महत्ता पर अपना अभिमत प्रकट करते हुए कहा है—

"यह सत्य है कि ये गीत इतिहास का विशुद्ध चित्रण नहीं करते थे, किन्तु प्रजाजीवन की अनेक मार्मिक घटनाओ तथा तत्कालीन परिस्थितियो पर लोक हृदय की समीक्षा का विवरण इन गीतो मे मिल जाता है। इतिहास के शुष्क ककाल को इन गीतों ने लोकोर्मियो के सजीव रक्त-मांस से आपूरित कर दिया है।" अत: गीत इतिवृत्त के अतिरिक्त लोक-मानस की आशा-आकाक्षा, मनोदशा, सामाजिक परिस्थितियाँ राजनैतिक घटना-चक्रो प्रभृति कतिपय विषयो से सम्बद्ध हैं।

गीतों में वर्णन—गीतो का वर्णन क्षेत्र बडा विस्तृत है। प्रकृति के समस्त उपकरण, मानव समाज का सम्पूर्ण जीवन, पशु-पक्षी जीवन की क्रीडा, उद्योग धन्धे, रहन-सहन, आवास-निवास, हास्य-विनोद, आहार-विहार, नृत्य-गान, आशा-निराशा, उत्साह-अनुत्साह, उदारता, वीरता, कायरता, कृपणता और भय, लोभ व आदि चित्तवृत्तियाँ गीतो की विषय बनी है गीतकारों ने गीतनायक के माध्यम से दृश्यमान पदार्थो, अनुभवजन्य क्रियाओं और विश्वास लोक तक को गीतो मे विवित किया है।

इस सग्रह मे रूपक गीतो को सकलित किया गया है। योद्धा-जीवन का सांगोपांग चित्रण इनमे हुआ है। योद्धा जीवन का जैसा मूर्त्त चित्रण गीतों मे मिलता है वैसा काव्य के अन्य छद प्रकारो मे मिलना कठिन हैं। यह वर्णन कैतवता, धूर्तता, आचरणहीनता और युद्ध के तत्कालीन निर्धारित नियमों से कही भी धूमिल नही मिलेगा। युद्ध मे शस्त्रहीन पर प्रहार न करना, भागते हुए का पीछा न करना, सोए हुए पर घात न करना, बिना सचेत किए हुए असावधान पर शस्त्र संघात न करना आदि भारतीय सांग्रामिक आदर्शो के उल्लघन का गीतों मे कही भी वर्णन नहीं हुआ है। आमतौर से गीतों में छह बातो का चित्रण मिलता है। योद्धा, वेषभूषा, शस्त्र, वाहन, रण कौशल और युद्धप्रिय देवी-देवताओं का वर्णन। योद्धा वर्णन मे उसकी वीराकृति, तेजस्विता, प्रचण्डता, धीरता, भयानकता, उत्साह, ललकार आदि का वर्णन किया जाता है। वेशभूषा मे झिलम, टोप, कवच, रागां, दस्ताने, घूघी, अगरखा, वीरता के प्रतीक विशेष आदि गिनाए जा सकते है। शस्त्रों मे तोपें, तलवारें, भाले, त्रिशूल, गदा, गुज, ढाल, धनुष, बाण, कटार, पट्टा, गोली बन्दूक आदि के प्रहार, ध्वनि, प्रभाव, प्रतिपक्षी योद्धाओं की भयातुर आकृति और शस्त्रों की आकृति प्रभृति का अनेक विध चित्रण प्राप्त होता है। वाहनो में हाथी, घोड़े, उनकी पाखर, श्री, जाली, अन्धेरी, जीन, लगाम, पागड़े, तग, झूलें आदि युद्ध-सज्जा तथा उनकी गति और क्रियाओं से उत्पन्न वातावरण का उल्लेख रहता है। रण-कौशल मे योद्धाओ की व्यूह रचना, हरावळ, चंदावळ, गोळ, खासावाड़ा, जंघाळ, तरगाळ, बरंगाल, मारकाट, हस्तलाघव, सहार, विनाश अग-प्रत्यगों की क्रियायें, कटने, गिरने, लुढकने, जूझने आदि का चित्रण उपलब्ध होता है। युद्धप्रिय देवताओ मे शिव, चण्डिका, भैरव, नदिगण, सूर्य, नारद, अप्सराएँ, योगिनियां, भूत-प्रेत, पिशाच और गृद्ध, चील, शृगाल आदि का आलेखन पाया जाता है।

गीतों में उद्योग धंधों का वर्णन यद्यपि गीत रचना का मूल अभिप्राय योद्धाओ को योद्धा-धर्म का बोध करवाना रहा है। योद्धा को सतत् स्वधर्म के प्रति जाग्रत रखना गीतकारों का लक्ष्य रहा है। अतएव वीरगीत युद्ध-जीवियों के उदात्त चरित्रो के चित्र कहे जा सकते हैं। किन्तु योद्धाओ का रणभूमि के अतिरिक्त समाज मे भी अपना सम्मान्य स्थान था। वे गृहस्थ थे उनका परिवार था। उनके सगे सम्बन्धी, शत्रु-मित्र, सहयोगी-साथी सभी कोई थे। उनके युद्धों मे काम आने भाले, धनुष-बाण, तलवार, ढाल, बन्दूक आदि आयुधो के निर्माताओं से भी उनका सम्बन्ध सम्पर्क रहता था। अन्न-वस्त्र, फल-फूल के लिए उनको माली और कृषक से सम्बन्ध रखना पडता था। वस्त्रों की सिलाई के लिए दर्जी, धुलाई के लिए धोबी और रंगाई के लिए रगरेज की आवश्यकता को वे समझते थे। आवासगृहो के

निर्माण के लिए चेजारा और किवाड़ो की बनवाई के लिए बढई से उनका काम पड़ता रहता था। कहने का अभिप्राय यह है कि नाई, कुम्हार, लुहार, बढई, सिकलीगर, रगरेज, कृषक, माली, मल्लाह, स्वर्णकार, जौहरी, दर्जी, धोबी लिपिक, दधि-मन्थक और वाणिज्यकार सभी उनके प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप मे सहयोगी थे। इसीलिए गीतो में उनके धन्धो, कर्मों और उनकी चित्त वृत्तियो का योद्धा के माध्यम से बडा ओजस्वी वर्णन किया हुआ मिलता है। समाज म जो स्थान युद्ध कर्मी का था उतना ही महत्वपूर्ण कार्य समाजोपयोगी उद्योग धधो में निरत व्यक्तियो का था। गीतकारो ने अपने गीतो में उन धन्धों और उन कलाकारो का महत्व स्वीकार किया हैं। उनके यन्त्र, क्रिया विधि, श्रम और कर्म का बडा फबता, सरस, और भावपूर्ण चित्रण किया है। घर गृहस्थी के कार्यो में गोपालन, दधिमथन, भोजन बनाना, अतिथ-पूजा पूजा-अर्चना आदि दैनंदिन कार्यो को गीतो में सशक्त अभिव्यक्ति मिली है। दूदा नगराजोत नामक योद्धा के युद्धकौशल का एक गीत में कवि ने दधिमथन के साथ तुलनात्मक वर्णन किया है। इस मे रण-स्थल को दधिपात्र, दधि को शत्रु, तलवार को मथनी और यश को मक्खन अङ्कित करते हुए लिखा हैं—

आहव माट थाट उलटतां, नेजडा झाट रवाट निहाव।
खाटा थाट दही जेम खागे, रोदां मथै बाकडो राव ।।१।।
मिळ मथाण धाराळ तणै मुह, जत्र कत्र सत्र होयै जणौजण।
वार वार दध जेम विलोयै, ताईया दळ नगराज तण ।।२।।
कळ चालण चन्द्रसेन कळोधर, कळहि कळहियै वहै कस।
काळा तै दळ मथै काढियो, जुग माखण ऊजळो जस ।।३।।

भारतीय समाज मे अतिथि पूजा को पर्याप्त महत्व दिया गया है। आगन्तुक का मद्य-पान, तम्बाखू, भाग, अफीम आदि से सत्कार करना सामान्य रिवाज माना जाता रहा है। यदि अतिथि को भोजन के पूर्व अफीमादि पेय की मनुहार नही दी जाये तो अतिथि और आतिथेय दोनो का अपमान समझा जाता था। इसी परम्परा को प्रकट करने वाला एक गीत आईदान गाडण पर रचित उल्लेख है। इसमे काव्य का भांग घोटने की क्रियाओ के साथ सावयव रूपक द्वारा वर्णन किया है। भाग का रस तैयार करने के लिए उसमे केशर, लवंग इलायची शर्करा आदि डाल कर उसे बार बार घोटा जाता है। जब ये समस्त वस्तु घुट कर भाग के साथ तरल पदार्थ बन जाती हैं तब इन्हें स्वच्छ वस्त्र से छान कर पेय पदार्थ तैयार किया जाता है। गीत मे कथित रीति से तैयार रस को 'कसूम्बा' कहा गया है। उपर्युक्त वर्णित रस द्वारा योद्धा रूपी अतिथि का सत्कार किया जाता था। कवि ने कसूम्बा की क्रियाओ की काव्य रचना की क्रियाओ के साथ समानता दिखाते हुए कहा है—

दळ वाजिया घोट उकत पुट दे दे, चित ऊडै कूडै रग चाढ।
आईदान छकावै असपति, कायब तणो कसूम्बो काढ ।।१।।
बायक लवग मसाला बांटे, जीभ सकर मीठय जेम।
सोहडा कज कोडां परसा सुत, आखर तणा राम रस प्रेम ।।२।।
गळबध तणै झकोळै गळणै, सोह अभिनमै सुगड सुगाढ।
गढपति प्रकट छकाडै गाडण, कथनां तणो रगड घ्रत काढ ।।३।।

छाणंद पाल करै तंत छांणै, घण ठाहो कर भरै गियांन।
गाढा पाय पियाला गहवै, गढपतियां कीधा गळतान ॥४॥

गृह उद्योग-धधो में स्वर्णकार, धोबी, नाई, सुथार, लुहार, छींपा, मणिहार एव इत्रफरोश के कार्य की परिगणना की जा सकती है। धोबी का कार्य वस्त्रो की धुलाई कर स्वच्छ बनाना है। उसके कार्य के लिए कुण्ड, शिला, भट्टी, जल, साबुन और कल्प आदि उपकरणो की आवश्यकता होती है। छत्रपति शिवा सीसोदिया (मरहठा) पर रचित युद्धगीत में शिवा द्वारा शत्रुओ का सहार करने का धोबी के कर्म के साथ सुन्दर रूपक बांधा गया है। कवि ने गीत में लिखा है कि शिवा रूपी रजक ने वीरता रूपी जल मे शत्रु रूपी वस्त्रो को भिगोया और तलवार के प्रहार रूपी साबुन का खूब मल-मल कर प्रयोग किया। तदनन्तर उन अरि रूपी वस्त्रो को पृथ्वी रूपी शिलाखण्डों पर पछाटें देकर उनकी मलिनता नष्ट करदी। तब फिर उन पर ऐसा पोत (कान्ति) आया कि वे दूर से चमकने लगे। गीत को निम्न रूप में पढिए—

सूरातन सुजळ सार करि साबू, धोवण लागो सिवो सधीर।
पिंड भुई सिला ऊपरै पटके, मरे डरे घट काटे मीर ॥१॥

खूम इसी चाढी खूंमाणै, धोया इसै अनोखै धोत।
दसता पड़ै वीछड़ै डाडर, पिंड कापड़ आवै अण पोत ॥२॥

खग मोगरा घणां खळ खोटै, साह सुतन औरग री सैन।
इसडै चौंप आणियो अणभंग, मारे किता दिखावै मैन ॥३॥

भाग जिकै कूड मझ भिळिया, रहे तिकै जुग चाढे रूप।
साह सुतन सेवौ बड सांवत, भाजे खग मुह धोया भूप ॥४॥

धोवट घाट अनोखा धोया, सारां मुह ऊजळा सरीर।
सिवला तणी वीछळण सांपरत, चौळ तणै रगिया अणचीर ॥५॥

लुहार का समाज मे महत्वपूर्ण स्थान है। वह घर और खेत में काम आने वाले उपयोगी औजारों का निर्माण करता है। किसान को वह खेत कूर्ये के लोहयन्त्र बना कर देता है। खाती को उसके धंधे के लिए कुल्हाड़ी, वींदणी, अहरन, बसोला आदि उसीके यहाँ प्राप्त होते है। योद्धा के लिए आयुध तैयार करना भी कभी उसी के जिम्मे था। इसीलिए समाज मे विवाह, जन्म एव त्योंहार, उत्सवों पर उसे बुलवाकर पुरस्कृत किया जाता था। लुहार के कार्य के लिए आरण, अहरन, घन, हथौडा, संडासी, इकलवाई आदि उपकरण आवश्यक हैं। लालसिंह बडलो के ठाकुर पर सजित गीत मे लालसिंह को लुहार बनाकर जो वर्णन किया गया है: वह पढिये—

आरण रच समहर सोर अगारो, तोपां धमण धमै यकताय।
लोह दोयण कारीगर लालो, ताव झपट सैं लिग्रे तपाय ॥१॥

सांजत समहर डाव सडासी, चख धिखता ग्रहिया रग चोळ।
अहरण अकस लाल तिण ऊपर, घण ग्रिजड़ा वाहे घमरोळ ॥२॥

भारी सत्र-कवाड़ा भाजे, अरणियां भेडे भांत असी।
हैंसल हूंत वडा अर हीसू, कूट लालियै किया कसी ॥३॥

कर मेहणत कांटा वळ काढै, अयपच पतळा किया यसा।
सारत छांट पिछट्या सत्रू, जाणै जंत्री तार जिसा ॥४॥

आसत सगत ऊवरा आचा, जस जालम अखमाल जिसो।
लोह ओयण ताछै लोह लगर, ओ लालो लोहार यसो ॥५॥

वर्षा राजस्थानी जन-समाज का जीवनाधार है। वर्षा काल के चार मास के सहारे बारह मास आनन्दपूर्वक व्यतीत होते हैं। वर्षा के देवता इन्द्र और खलिहान की देवी 'सावढ़' के प्रति राजस्थानी कृषक समाज में असीम श्रद्धा रही है। कृषि वर्षा पर ही आधारित है। कृषि ही ग्राम समाज का वाणिज्य नौकरी और आधारभूत धन्धा है। खेती की महत्ता को स्वीकार करते हुए उसे सब धर्धों से उत्तम कहा गया है। गीतो मे कृषक और कृषिकर्म के गुण-गीत गाए गए हैं। लालसिंह बडली पर लिखे गए गीत मे लालसिंह को कृषक, उसके भाले को हळ, कीर्त्ति को बीज, शत्रुओ मे उत्पन्न भय को खाद, घोडो को बैल, शत्रुओ के मस्तक-छेदन को अनाज के सेहरे तोडने आदि समग्र कृषि कर्म का वर्णन किया है। गीत मे सांग रूपक का सुन्दर निर्वाह द्रष्टव्य है—

पोहो कीरत बीज रजपूती, दाह सत्रा उर खाद दियो।
हळ भालो करता बडहाळी, करसण आरंभ गजब कियो ॥१॥

कांकळ कदळ बाहणी काढ़ै. महपत सबळ घणा मळ माण।
समहर डगळ किया सह सूधा, दळ चावर फेरै दैवाण ॥२॥

अरि चारो जड़ हूंत ऊपाड़ै, साकुर धोरी हांक सर।
लहास करै फौजां बड लंगर, क्रोध निनाणी हमल कर ॥३॥

लगर वध दूलावत लाला, सुपह दाता परसी कर सार।
सर डू चण दुसहा नव-सहसा, बड करसा भोका ब्रडवार ॥४।

पाहड हरा अवर कुण पूगै, जग थारां हासल रै जोड़।
रस आई जांणी रजवाडां, रजवट री खेती राठौड ॥५॥

वीर गीत योद्धाओं के दुर्गों एव प्रसादो की प्राचीरो तक ही सीमित नही रहे हैं। इनका व्यापारी के बाजार, कृषक के खेत, स्वर्णकार की दूकान, मल्लाह के सागर तट की झोपडी और तेली के कोल्हू यंत्र तक अबाध गति से भ्रमण रहा है। समाज के प्रत्येक धधा कर्मी के धन्धे में गीतो ने प्रवेश पाया है। ये मानव के जीवन निर्वाह के कार्यो को पैनी दृष्टि से निहारते हुए उसकी महत्ता स्वीकार करते और उन धन्धा कर्मियो की भावनाओ को प्रेरित करते दृष्टिगोचर होते है। कृषि में अनाज उत्पादक किसान की ही भांति गुड, शक्कर बनाने वाले कृषक की उपयोगिता और समाज मे उसका स्थान भी गीतो का विषय बना है। गन्ना उत्पादक अपने कोल्हू से गन्ने का रस निकाल कर समाज के त्योहारों-पर्वो तथा विवाहादि आयोजनो पर मधु प्रदान करता है। वीर घासीराम हाडा के गीत मे गीतनायक को गन्ना उत्पादक चित्रित किया गया है। घासीराम ने शत्रुरूपी झाड झखाड़ को उखाड़ कर

कृषि का आयोजन किया। फिर अरि रूपी गन्नो को रणभूमि रूपी कोल्हू में डाल कर तलवार रूपी कोल्हू यन्त्र (लाठ) से उन्हें भरपूर पेल कर उसका सार रूपी रस निकाल लिया और जो रसहीन छिलके अवशेष रहे उन्हें दूर फेंक दिए। इस प्रकार उस वीर ने क्षत्रियत्व की कृषि की। गीत का रसास्वादन निम्न पंक्तियों में लीजिए—

खत्रवट अेम निपाई खेती, झाडि पाडि अरि झोळविया।
अरियण करि ईख घडा करि घांणी, रुक लाठि करि रीळविया ॥१॥

मोजां समद बीजाई महीकम, चावा धिन खग चो चरिया।
कोलू करि कटक पिसण करि सांटो, खेड आवुध खग खरिया ॥२॥

घण दळ लियां वासी घणनामो, सुभवट सुबद वदीतो साखि।
भेंह घड़ पाडि वाडि विधि वैरी, करि मेळा यळा कमळाखि ॥३॥

गीतो मे उत्सव-संस्कार—राजस्थानी समाज में देवी-देवताओ की पूजा, यज्ञ-याग, व्रत-उपवास और त्योहार-वारो के प्रति अपूर्व निष्ठा रही है। ये जहा धार्मिक कर्म माने गए है वहां दैवी प्रकोपो से रक्षा के लिए भी आवश्यक समझे गए हैं। त्योहारों को उत्साह-पूर्वक मनाने की भांति ही पुत्र-जन्म, वाग्दान, विवाह, गोठ, आखेट आदि के रूप में राजस्थान मे धवल मगल होते ही रहते थे। विवाह का तो समस्त सस्कारो मे प्रमुख स्थान रहा है। वीरगीतो मे विवाह की रस्मो और वैवाहिक-कर्मानुष्ठान का बडा सजीव वर्णन किया गया है। युद्ध जैसे भयानक कर्म को विवाह जैसे मगल पर्व की संज्ञा प्रदान कर सफलतापूर्वक चित्रण करने मे गीतकारों को सफलता मिली है। प्रसिद्ध वीर अमरसिंह राठौड़ का आगरा दुर्ग से शव लाने वाले योद्धा बल्लूसिंह चांपावत के आगरा दुर्ग पर लड़े गए युद्ध को विवाह कार्य के साथ उपमित किया गया है। वर और वीर की वेशभूषा, कार्य और उसका परिणाम दोनो मे अपूर्व समता वर्णित की गई है। गीत पढिए—

सिर बांधे मोड़ करे केसरियां चांपा इण चळ रीत चलू।
अेकण लगन रीद घड अपछर, वेहूं ठौड़ा परणीजे बलू ॥१॥

गोळां नाळ गुणीजन गावै, लसकर अमर जानियां लार।
मांडण हरो दिपन्तो मिळियो, सोम्हे ले बीड़ो घणसार ॥२॥

पाल तणो तोरण पेखीजै बड वेहडा धुर टोप विचाळ।
आखातीर आरती असमर, वांमे अग घाले वरमाळ ॥३॥

ब्रह्मा नारद करै वेदोगत, चौंरी होम कटक चिरियो।
फिरियो नहीं अमर खत फाटे, फेरा कमध इसा फिरियो ॥४॥

भालां साळ पोढियो भाजे, काळी राती सेज करूर।
माथो त्याग करै राव मारू, सूर तणैं रथ वैठो सूर ॥५॥

विवाह में बाणों के अक्षतो की वर्षा, अप्सराओं द्वारा वरमाला, ब्रह्मा और नारद द्वारा वेद विधि से पाणि ग्रहण करवाना और मस्तक के रूप में याचको को त्याग बांटना आदि समस्त वैवाहिक विधि सम्पन्न हो गई किन्तु वर-वधू का मिलन इस गीत मे नहीं हुआ।

अत एक अन्य गीत में समरस्थली में शयन कर रहे योद्धा का चित्र देखिए—

पाखतियां बिहू सिराती पगांती, पड़िया भड घड आप प्रमांण ।
समहर कहर अजर जरि सूतौ, साथरि अरि पाथरि सुरताण ।।१।।

पखा करै अछर बिहू पासै, पखणि सेव स चपै पांव ।
सिरदारा पाथरि वीसम्मियौ, समहरि निसभरि मान सुजाव ।।२।।

गीध गहकि अम्बक धुनि गिण, गहमह अपछरि राज गति ।
पह पोढियौ डहे पाखतिया, पिंड देसोतां देस पति ।।३।।

परि जिम घरणि घरै पोढतो, पिडि तिम रिण पोढ़ै खग पांणि ।
माडेचौ जीवतौ मरतौ माणिग, माणिग गयौ बिन्है कळि माणि ।।४।।

विवाह में जिस प्रकार अतिथियो, प्रियजनो, पारिवारिको और वृत्तिजीवी सेवको को विवाहोपरात दावत एव पुरस्कारादि सम्मान देकर विदा दी जाती है उसी प्रकार युद्ध में गृद्ध, चील्ह, शृगाल, योगनियाँ, भूत-प्रेतादि आमिष-भोजियों को तृप्त किया जाता है। ठाकुर शार्दूलसिंह शेखावत पर लिखित गीत में युद्ध में उपस्थित पाहुनो के सत्कार का वर्णन निम्न पक्तियों में पढिए—

केवांण भगत रचै राव कूरम, भाडै प्रिसण आवळा भूळ ।
त्रिजड़ां मुंह हिंदवां तुरका, समहर गोठ करै सादूळ ।।१।।

एकां भात गोळिया रोटा, सुजडा घीरत सोहिता सार ।
सारां सरा सावळां सूळा, अण-रुचता पुरसिया अणपार ।।२।।

रण साकडै जगाघत राघत, भोजन सार छतीसै भांत ।
ईकण पात जीमिया आइसड़ा, पाड भूअ चळा न दूजी पांत ।।३।।

प्रकृति मानव की आदि सहचरी रही है। सर्वप्रथम उसका प्रकृति से ही सलाप हुआ। वह उसके लिए आकर्षण का केन्द्र और जीवन का आधार बनी। धरती, चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र, वर्षा, वनस्पति, समुद्र, वायु, शीत, गर्मी, दिन, रात्रि एव ग्रहण आदि के रूप में उसके विराट स्वरूप ने मानव को मोहित किया। वह उसकी ओर आकर्षित हुआ और उसके उपकरणो में देवत्व की कल्पना की। उससे निर्भरता प्राप्त करने के लिए उसकी वदना की गई। फल-फूल पत्र उसके आवास-निवास एव भोजन के रूप मे जीवनाधार बने। कवि ने उसकी उदारता से प्रेरणा प्राप्त कर विविध रूप में प्रकृति का वर्णन किया। वृक्ष और दानी की स्वभाव साम्यता छत्रसिह हाडा के गीत के एक द्वाले में निम्न प्रकार अभिव्यक्त हुई है—

व्रछ री या रीत या रीत विहग री, पाळि आया करि आया पाळ।
पछी फळ कतरै पत्र फाडै, तरवर नह दाखै छाताळ ।।१।।

वर्षा के देवता इन्द्र के प्रति आस्था का गीतों मे उल्लेख किया गया है। वर्षा में मेघो की गड़गड़ाहट ध्वनि, विद्युत की आख-मिचौनी, दादुर की ध्वनि, मोर-चातको की टेर आदि

का सेना में आरोपण कर गीत रचे गए हैं। छत्रसिंह हाडा के गीत में वर्षा का सचित्र वर्णन अवलोक्य है—

वणै सिंधुरां घटा वरसै छता महावळ, दादुरां दोहोक कवि कोहोक दौळा।
वारही मास वरसण सुव्रत वधंतो, छतो इन्द्रगढ तपै इंद छौळा ॥१॥

दुरद मघवाण सोम धजा दामणी, ईहगा चात्रगां पूरवण आस।
झरता गजां अेराकिया तणो झड, मेघ रो मेघ जिम वारहे मास ॥२॥

हलक्का गजां दाजा हुवै हकाला, मद्दा छक आवळा ओघ माला।
हेतुवा पातुवां तणो दाळद हरो, हरो इद राजीव इंद व्हाला ॥३॥

रति छह मेह अण छेह दूनो रयण, तेह राखण जुगा चार ठांई।
घरा वर दीयो वर मिल्यो हुवै वरतो, सुरपति जिसो अधपति साई ॥४॥

इसी प्रकार प्रकृति के अन्य अंग, उल्कापात, सूर्य-चन्द्र ग्रहण, जलप्लावन, मेघ, निर्झर, सर, सरिता, चपलवृष्टि, गर्जना, वर्षा की झड़ी आदि पर भी इस संग्रह में अनेक गीत संकलित हैं।

वीरगीतों में पशु एवं कीट जगत का भी पर्याप्त वर्णन हुआ है। पशुओं में वन्य और पालित दोनों जातियों को आधार बनाकर कवियों ने अपना काव्य-कौशल प्रकट किया है। वन्य जीवों में स्वतन्त्र रूप में और योद्धाओं के माध्यम दोनों रूपों में वर्णन किया गया है। इस कोटि के गीतों में सिंह, वाराह, गज, अनिल पक्षी, गरुड़, हंस, चक्रवाक और सर्प विषयक गीत विशेष रूप से उल्लेख्य हैं। सिंह पराक्रम, वाराह दृढता, गज भीमकायता, बैल भारवहनता, मत्स्य बलवत्ता, गरुड त्वरिता प्रहार तथा नाग क्रोध का प्रतीक माना गया है। योद्धाओं में इन पशु पक्षी एवं कीटों की विशेषताओं का बल-पराक्रम में आरोपण कर निरूपण किया गया है। कालिय नाग सदृश क्रुद्ध वीर राव भीमसिंह का एक गीत द्रष्टव्य है—

गयो खीजियो थको संदेस हूं सूरगुर, टळण परदेस री न कर टाळो।
धार फूला लहरि वहरि ले ले धुकै, कहर खदा रमै जहर काळो ॥१॥

फुणाटां झाट बीजड़ भड़ां ऊफणां, खुणाटां बोवडै थाट खेदी।
वादगीरां हदा साद घट बीचते, भीम मुगलां मिळै नाद भेदी ॥२॥

खमैं सरणाट तुपका सरां हे खुरां बीजड़ भड़े ऊफांटा प्राट वूठो।
पाव विमुहा खडै घडहडै असुर पिंड, राव अहराव रै भाव रूठो ॥३॥

झाग विख आरावां आगि मायै झडै, लड़थड़ै अडै गैणागि लागी।
झपेटां भोग किलमां करै झोवरै, नाग जिम राम रो खाग नागी ॥४॥

परळ जळ गरळ दळ जळे पांहेसवो, नरांअंत कळकळै वळै नीडो।
केहरी वियो मुणिसाळ रळतो कळै, ताइयां जाणियों काळ तीडो ॥५॥

घाव आखा सबद वाहि थाका घणा, मूगलां फरोळै दाव माटै ।
अवनि धरि सभरी सुनि चढियो अरे, ऊबरे न जाय म मुलक आंटै ॥६॥

गाख साखां सिरै राखि चढियो समर, लाख फौजां गजां तणो लाडो ।
वषण आवागवणि तोडि सूधो विघन, हर चंदण बिलूघो राव हाडो ॥७॥

सस्कृत और ब्रजभाषा मे नायक नायिकाओ के शृगार वर्णन मे पशु पक्षियो के अंगो का सौंदर्य प्रदर्शन करने के लिए वर्णन किया गया है । मधुर भाषी को कोकिल कठी, सुदर नासिका को शुक-चचु, मोहक नेत्री को मृग लोचनी, मस्त गति को गजगामिनी व्यक्त कर रीतिकालीन कवियो ने पर्याप्त रूप मे वर्णन किया है । किन्तु राजस्थानी कवियो ने शृगार वर्णन मे पशु-पक्षियो के सौन्दर्य के अतिरिक्त उनकी गति को योद्धाओ की गति, शस्त्र-सघात की चपलता और क्रोध की स्थिति को स्वाभाविक आक्रोश के रूप मे आलेखित किया है । योद्धाओ की युद्ध-क्रियाओ की जिन पक्षियो की क्रियाओ के साथ समता प्रकट की गई है, उनमे गरुड, अनिल पक्षी, सर्प, वाज, कोकिला (जल पक्षी), मत्स्य आदि का बडा ओजस्वी चित्रण उपलब्ध होता है । राजा अनिरुद्धसिह गौड पर भाषित गीत में प्रति नायक को गज और नायक को गरुड पक्षी बतलाया गया है । दो द्वाले अवलोक्य है–

धमस पाखरां रोळ गैणाग घूजे धरा, नड़े गजथाट पहाड नमिया ।
गरुड अनिरुध तणी झडप लागी गढां गढपति नाग दहवाट गमिया ॥१॥

झगरा गिरा सहरा थका झाटके, विम्मरा गिरां हूंता बिचाळै ।
नवनवा प्रसण नवकुळी जही नीवडे, किया आहूत धक-पंख काळै ॥२॥

गीतकारो ने यज्ञ, समुद्र मन्थन, मन्त्र, समाधि, ध्यान, समुद्र-शोषण आदि पौराणिक घटनाओ तथा शिव, विष्णु, इन्द्र, नारद, सूर्य, दुर्गा, वीर वैताल, हनुमान, रावण, सुग्रीव, राम, कृष्ण, अर्जुन, भीम, कर्ण, अगस्त्य, वीरभद्र, कार्तिकेय और नारद मुनि आदि के माध्यम से अनेक विध ओजस्वी गीतो का सर्जन किया है। राव शत्रुशाल हाडा पर कथित गीत मे शाहजादा औरगजेब तथा मुराद की सेना को समुद्र और गीतनायक राव शत्रुशाल को अगस्त्य ऋषि उद्घोषित कर एक गीत मे निम्न प्रकार वर्णन किया है—

तरंग सार धारा तणी निहग छबतां तरग, धरहरे गाज अंबाट घोखै ।
ऊफणै सैन दिखणाध वाळा उदधि, सता अगस्थि पखो कवण सोखै ॥१॥
लोह री लहरि नभ गहरि परसै लगस, वार चत्रवार तिणवार दीधा ।
विलवै वार समराथ जळ दळ बिगरि, कुंभ सुत जेमि सुतनाथ कीधा ॥२॥

आर्य सस्कृति मे पच देव पूजा और यज्ञ यागो के आयोजन का महत्व पुराकाल से ही प्रचलित रहा है । दैवी शक्ति की प्रसन्नता, अनिष्ट का शमन, शुद्धि, दीर्घायु की प्राप्ति, सुकाल और वायु मण्डल की शुद्धि आदि के लिए यज्ञ अनुष्ठानो को नित्य कर्म के रूप मे अनिवार्य स्थान दिया गया है । गीतों मे जनमेजय के नाग यज्ञ, नरमेध यज्ञ, दारिद्रयमेध यज्ञ, शत्रु-मेध यज्ञ प्रभृति विभिन्न यज्ञ मेधो के वर्णन प्राप्त होते हैं । बादशाह औरगजेब द्वारा राजा शिवा मरहठा को बन्दी बनाने पर राजा रामसिंह कछवाहा आमेर ने उसे मुक्त करवाया था। उल्लिखित घटना प्रसग की जनमेजय के नाग यज्ञ से तुलना की गई है–

सरपदाह जनमेजय पतिसाह झालण सिवो, प्रथीपत बिन्हे हठ पड़ै अणपार ।
सरणिसाधार खत्रभार धरिया सगह, आसतीक जेमि थियै गम आवार ।।१।।

परीछत साहिजिहान सुत कोपियो, तक्षण होमण ग्रहण साह सुत तांणि ।
तपोधनि जहीं हिंदवाण चडण प्रभति, जरू रखपाळ जैसिंघ सुत जांणि ।।२।।

करण अहिमेद अहवनहरो कोपियो, टळै न वळै जहांगीर हर टेक ।
वाहा पै गारयक जिम हूवो वहसि, अमै पजर महांसिघ हर अेक ।।३।।

राजस्थानी जन समाज मे देवी देवताओ, शकुन-स्वरोदय, तिथिपात आदि के प्रति अनन्य आस्था रही है। अकाल, अग्नि-कोप, व्याधि आदि की पूर्व जानकारी शकुनो से प्राप्त की जाती है। यह जानकारी प्रकृति के उपकरणों मे विकृति, पक्षियों की वाणी, मानव के अगों के स्फुरण आदि के माध्यम से भावी घटनाओ के शुभाशुभ परिणामों का बोध प्राप्त कर सावधान हो जाते हैं। राजस्थानी साहित्य में शकुनों पर स्वतन्त्र रूप में विस्तार से विचार हुआ है। गीतो में भी शकुनो की उपेक्षा नहीं की गई है। पक्षियो मे तीतर, चील्ह, गृद्ध, शृगाल, उल्लू, शकुन-चिड़िया, काक, मोर, टीटिहरी एव पशुओं मे बैल, गधा, भैंस, ऊंट तथा मनुष्यो मे ब्राह्मण स्वर्णकार, माली, तेली, किसान, वैश्य आदि के सामने से भेंटने, बोलने आदि से शकुनो का फल ग्रहण किया जाता है। मानव के अगो मे आंख, भुजा, ओठ, हथेली, पगथली, जघा आदि के स्फुरण, खुजलाहट, फड़कन से भी शकुन देखे जाते हैं। इस पंक्ति मे देखिए—

अति आगम वलू सुरग चै ओछव, धरिया नेह दूणा चित धांख ।
आंखिज फुरै दाहिणी अवळा, अछर फुरै ताय डावी आंख ।।

इस प्रकार अनेक गीतों मे शकुनों का वर्णन किया गया है। किन्तु शत्रु के चुनौती देने पर योद्धा को उसकी कुल परम्परा शकुनो की अनुकूलता प्रतिकूलता के कारण विचार करने का अवसर नहीं देती है। आगन्तुक रिपु का शस्त्रो द्वारा सत्कार करना क्षात्र परम्परा रही है। तब भला सच्चा वीर शकुनों की प्रतिक्षा में अपने योद्धा धर्म का विस्मरण कैसे कर सकता है। शकुन ही नहीं अपनी पत्नी द्वारा मना किए जाने पर भी वह अपनी वंश-परंपरा का अनुगमन करता है—

सबळां सू वाद न कीजै साहब, थ्है सारीखा वाद सही ।
कह्यो म्हांरो जो मानै कता, राजड सूं डरपतो रही ।।१।।

बार बार समझाऊं वालम, टूटता आखर कहूं तनै ।
खान तणां सूं मिळस्यो खागां, नह जदि मिळस्यो आंणि मन्ने ।।२।।

किन्तु शत्रु की प्रबलता के आतक और मृत्यु के भय से भीत होने के स्थान पर वह स्पष्ट रूप मे अपनी गौरवमयी परम्परा को दोहराते हुए कहता है—

भगवाट दुहेली कुळवट भारी, वैरो ओखळ नीख वरत ।
जैचद कहै जीवत्रो जुग परि, पदरा ऊपरै परत ।।

कुल-गौरव के परिपालन के लिए योद्धा अपनी प्रियत्तमा के कथन की उपेक्षा करता है तथा यौवन के सुख-विलास को दमित करते हुए कह उठता है —

बागै वार हाक लूंबिया बैरी, बागिया फारक बार बहै।
जीवन कहै कमां नीसरजे, करि भारथ कुळवाट कहै॥

यदि रणस्थल से वीर जीवन के प्रति मोहित होकर किनारा काटे तो सुमेरु गिरि चलायमान होने को उद्यत हो चले, सूर्य पश्चिम में उदित होने लगे और शेषनाग पृथ्वी को धारण करना त्याग दे—

भागै अनड भाण पछिम भति, धरा वेद जो उलटि धरै।
नहसैं नाग नाथ व्है नसतो, फिरै अरक तो पूठि फरै॥

अन्ततोगत्वा वह अपने स्वामी के नमक को उज्ज्वल कर शत्रु का सामना करता है। युद्ध में प्रवेश करते समय समवयस्कों में तो प्रतिस्पर्द्धा का भाव जागृत होना स्वाभाविक है पर पिता-पुत्र में सेना रूपी कामिनी के वरण के लिए होड लग जाना गीतों में ही मिलता है—

कजि लूंण तणै माझी कछवाहो, डर जिण रै हूं खरी डरूं।
बेटो कहै घडा हु बरिस्यूं, बाप कहै हू घडा बरूं॥

अन्त में पिता-पुत्र शत्रुओ का संहार कर घावो से लुन्ज-पुन्ज होकर घर लौटते हैं और सास-बधू उनके मरहम पट्टी करती हैं—

अरि भांजे घावा भरि आये, बदन करां उर पीड़ बणै।
सास बहू नीवडो सीचैं, ताय आंगणैं चाटसू तणै॥

इस प्रकार वीर गीतो में युद्ध के माध्यम से समाज, उद्योग-धन्धे, मानव प्रकृति, शकुन-सस्कार, स्वामि-धर्म, देश-प्रेम, कुल-गौरव प्रकृति के अङ्ग आदि पर व्यापक दृष्टि से विचार व्यक्त हुए है। मृत्युञ्जयी वीरो के शौर्य गानो से ओत-प्रोत गीत रूपको में विषय साम्य एवं वर्णन की एकरूपता होते हुए भी भावों की नवीनता तथा वर्णन वैविध्य है। ये हमारे वीरो के उदात्त चरित्र के कोश और भावी सतति के लिए प्रेरणा स्रोत है।

इस संकलन में १८६ गीतो को स्थान मिला है। अधिकांश गीत रूपक हैं जो मेरे अपने व्यक्तिगत सग्रह, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर में सुरक्षित कोटा के इन्द्रगढ ठिकाने के संग्रह, राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी के सग्रह, बंगाल हिन्दी मण्डल कलकत्ता के सग्रह, कुवर सवाईसिह धमोरा, आकाश वाणी जयपुर के सग्रह से प्राप्त हुए हैं। मैं इन सभी सस्थाओ तथा महानुभावों का आभार स्वीकार करता हूं।

सम्पादन मे गीतो का पाठ जिस रूप मे उपलब्ध हुआ है उसी रूप मे रहने दिया है। केवल छद की दृष्टि एवं वयण सगाई की संगति के लिए लघु-दीर्घ मात्राओ में कही कहीं परिवर्तन किया है। गीत के नीचे गीतसार और कठिन शब्दों के सरलार्थ देने का प्रयास किया है। अन्त मे गीतानुक्रमणिका और प्रत्येक गीत पर ऐतिहासिक टिप्पण दिए हैं जिससे गीतनायक और गीत-घटना की परिचिति सहजता से प्राप्त हो सके। टिप्पणियों एवं शब्दार्थ-निर्णयो मे महाराजा डा. रघुवीरसिहजी सीतामऊ और डा. नारायणसिह भाटी का सहयोग मिला है। मैं इन दोनो विद्वानो के प्रति कृतज्ञ हू।

यह संग्रह निवर्त्तमान् संचालक पूज्य चरण मुनि जिनविजयजी तथा आदरणीय पं० गोपालनारायणजी बहुरा के निर्देशन में तैयार किया गया था और श्रद्धेय डा० फतहसिंहजी के निर्देशन मे प्रकाश मे आ रहा है। एतदर्थ मैं इन तीनो विद्वानो की महती कृपा के लिए आभारी हूं। साधना प्रेस के विद्वान निर्देशक श्री हरिप्रसादजी पारीक के सहयोग और प्रकाशन-तत्परता का विस्मरण नहीं किया जा सकता।

राजस्थानी शोध सस्थान, चौपासनी,
जोधपुर

सौभाग्यसिंह शेखावत

राजस्थानी-वीरगीत-संग्रह

भाग १



१. गीत सरप रा बीनांण री महाराव सेखा कछवाहा री

कळह कौपिया किया फण अडै नित काकडां,
खळा उर जहर गत रूप खिभ्फरौ।
भ्फाप मभ्फ न आवै भ्रमै अरि भ्फाट सूं,
असौ मोकळ सुतन सरप अजरौ ॥१॥

प्रिसण तट न आवै तजै गारड़ि पणौ,
चुरस पण न रोपै बाधि-चाळो।
करि त्रिजड फूकरड हूत बटका करै,
कीलणो न मानै भुयग काळो ॥२॥

अरिहरा दळां सिर चखा भ्फळि ऊपटै,
रण सुणै ऊससै सिंधवौ राग।

---

१ गीत सार – इस गीत मे कवि ने महाराव शेखा कछवाहा की अजेयता को लक्ष्यकर सर्प का रूपक बांधा है। कवि कहता है कि मोकल-तनय शेखा ऐसा प्रबल नाग है जो अपने फन रूपी खड्ग को ऊपर उठा तथा कोपान्वित हो शत्रुओ की सीमाओ पर आक्रमण करता है। वह रिपुओ के प्रत्याक्रमण रूपी प्रहारो से अभीत बना उनके हृदयो मे विष तुल्य खलता रहता है।

---

१. कळह – युद्ध मे। कौपिया – रोष किए। काकडा – सीमाओ पर। खळां उर – बैरियो के हृदयो में। रूप खिभ्फरौ – क्रुद्ध रूप मे, विष के रग जैसा। भ्फापमभ्फ – प्रहार की लपेट मे। भ्रमै – भ्रमते हैं, चक्कर काटते हैं। भ्फाट सूं – प्रहार से। असौ – ऐसा। अजरौ – वीर, जबरदस्त।

२. प्रिसण – बैरी। तट न आवै – किनारे पर नही आते, सीमा के समीप नही आते। गारडि पणौ – गारुडी का कार्य, मान्त्रिकत्व। चुरस – चुरसाई का भाव, छेडछाड, श्रेष्ठता। बांधि चाळो – सेना को पक्तिबद्ध कर कमर कस कर। त्रिजड़ – तलवार। फूकरड – फूत्कार। हूत – से। बटका करै – टुकडे कर देता है। कीलणो – मत्र बधन। भुयग काळो – काला सर्प।

३. अरिहरा दळा – शत्रुसमूह। चखा भ्फळि – रोषान्वित नेत्र। ऊपटै – उमडती है। ऊससै – जोश से उफनते। सिंधवौ राग – युद्ध की रागिनी, सिंधु राग।

कार पतसाह री न मानै कुण्डाळो,
नरा मिणधर पति अमानौ नाग ॥३॥

आवै तटि तिकै तो आविया उराणै,
लाविया न धरमराज लेखै ।
तिका फिर न लागा मत्र जीवण तणा,
सार डक लगाया राव सेखै ॥४॥

२. गीत जिगन रा बीनांण रौ राव सूरजमल हाडा रौ

असि गयद अज्या नरमेद अपूरब, सुण्या हुवा जगि चहू साहाय ।
नुंवौ जिगन जिम करै नरावत, राणां किणहि न होमिया राय ॥१॥

बाजिद गज बाकर मानव बळ, पोहौ अनि होम हुवा वोहौ पूर ।
हाडा रिण तीरथ करि हीसळ, सारियौ राज मेघ जगि सूर ॥२॥

---

२ गीत सार – उपरोक्त गीत मे कवि ने राव सूरजमल हाडा और राणा रतनसिंह के पारस्परिक मरण को इंगित कर राजमेघ यज्ञ का रूपक रचा है। कवि का कथन है कि अश्व, गज, अज और नरमेघ यज्ञो का किया जाना तो चारो युगों मे सुना गया है, पर राजा की वलि देकर यज्ञ करना आज से पहिले कभी नहीं सुना गया। राव सूरजमल ने राणा रतनसिंह की वलि देकर 'राजमेघ' यज्ञ का अपूर्व आयोजन किया।

कार – मर्यादा। कुण्डाळो – सर्प। अमानौ – स्वच्छन्दगामी, वश मे न होने वाला।

४. तिकै – वे, उनके। आविया – आ गए। उराणै – नगे पैर, अधीनता मे, रक्षा में। लाविया न – नही आए वे मृत्यु के नाम लिखे गए। तिकां – उनको। जीवण तणां – जीवन का। सार डंक – शस्त्र रूपी डक, कस कर डक।

१. असि – अश्व। गयंद – गजेन्द्र, हाथी। अज्या – वकरा। सुण्या – सुने हैं। चहू – चारो में। नुवौं जिगन – नया यज्ञ। नरावत – नारायणदास का पुत्र। किणहि न – किसी ने भी। होमिया – होमे। राय – राजा।

२. बाजिद – घोड़े। वाकर – वकरे। वळ – वलि। पोहौ – राजा। अनि – अन्य। वोहौपूर – बहुत से। रिण तीरथ – रण-तीर्थ। हींसळ – युद्ध। सारियौ – सम्पन्न किया सिद्ध किया। जगिसूर – श्रेष्ठ वीर ने।

हैं सिंधुर छाळी नर होमे, लाभ च राणै राय लियौ ।
नापाहरै नई परिनीधक, काळै राजा होम कियौ ।।३।।

चहू पांचू मरण प्रब चक्रवति, जगन सूर आरंभे यसौ ।
चढै सदा न रण कर चढियौ, ताछौ न हूवौ कणी तसौ ।।४।।

३. गीत मराल रा बीनांण रौ पंचायण करमसौत रौ

मोताहळ कमळ चुणंतौ माझी, असमरि मुंह साजतौ अरि ।
पै लीलग पचायण पैठौ, सेर तणै दळ मानसरि ।।१।।

साह आलम घड सकत सरोवर, पै घड चखतो पोय पन ।
करमसिंहोत राजहस क्रमियौ, रिम रै खग चुणतौ रतन ।। २।।

मुख किरमाळ मेछ धू मांणक, सग्रहतौ करतौ समर ।
पावासर अरि सेन पचायण, पैठौ धीरठ तणी पर ।।३।।

रभ झूलणौ कमळ दळ रौदा, दुहू मझ भिड गत देख दिखाळ ।
प्रिसणां सीस चुगै पाणीहड, पाचौ हस चढै अगपाळ ।।४।।

---

३ गीत सार – ऊपर के गीत मे कवि ने शेरशाह सूरी और पचायनसिंह के युद्ध का मानसरोवर और हस के रूपक की छाया मे वर्णन किया है। कवि कहता है कि शेरशाह के असख्य सैन्य-सरोवर में पचायनसिंह रूपी मराल ने प्रवेश किया और अपनी तलवार रूपी चोंच से मोती रूपी अरि-मस्तको को चुन चुन कर आहार बनाने लगा।

---

३ है – हय, घोडे। सिंधुर – हाथी। छाळी – बकरी। राणै – राणा का। राय – राव ने। नापाहरै – नापा का पौत्र। काळै – वीर।

४ प्रव – पर्व। जगन – यज्ञ। सूर – सूरजमल। यसौ – ऐसा। ताछौ – बलिदान। कणी – किसी से। तसौ – तैसा, वैसा।

१. मोताहळ – मोती। कमळ – मस्तक। चुणतौ – चुनता। माझी – प्रमुख। असमरि – तलवार। साजतौ – मारता, प्रहारता। अरि – वैरी। पै – पय, जल। लीलग – हस। सेर – शेरशाह।

२. घड – सेना। सकत – शक्तिशाली। पोयपन – कमल, मस्तक। क्रमियौ – चला। रिम – रिपु। खग – तलवार। रतन – रत्न, मौक्तिक।

३ मुख किरमाळ – मुख रूपी तलवार से। मेछ धू मांणक – म्लेछो के मस्तक रूपी माणिक्य। सग्रहतौ – सग्रह करता, चुनता। समर – युद्ध। पावासर – मान सरोवर। पैठो – प्रविष्ट हुआ, घुसा। धीरठ तणी पर – हस की भांति।

४. रभ झूलणौ – अप्सराओ के विमानो अथवा समूह। रौंदा – मुसलमानों। दहु मझ – दोनो मे। प्रिसणा – शत्रुओ के। चुगै – चुगकर। पांणीहड – मोती। पाचौ – पंचायनसिंह, पचाननसिंह। अगपाळ – स्वर्ग के पालने मे, स्वर्ग की पाल पर।

४ गीत सिव रा बीनांण रौ राव कोलण रौ

बगतर अगछाळ सुरति आवुध वध, तप किरि तत पाव तोखार ।
चरणा भगति डडोता चाल्यौ, कोलण हैं तूठो केदार ॥१॥

सिलहे खाल हथियार अकळि सजि, अेम मिळण आरभे असा ।
सुत नरियण यू हुओ सूरातन, यूं वसि हुआ अजोणी जसा ॥२॥

आपोथापी गिरा घर थापे, आप तसौ कीधौ अचळीक ।
मोटै धणो चाकरी मानो, महादेव हाडा मंडळीक ॥३॥

५. गीत सूरज रा बीनांण रौ वीरमदे राठौड़ रौ

चद पूनम जेमि अनैरा चक्रवत, घटवै वदवै भाव घणौं ।
अरक तणो नित सोयेज ऊगमण, तरग सोयेज नित वीर तणो ॥१॥

---

४ गीत सार– इस गीत मे राव कोलण (किल्हण) योद्धा का महादेव के साथ रूपक रचा है। कवि ने लिखा है कि कोलण का कवच ही मानो शिव की मृगछाला है। आयुध सज्जित वेष ही शिव की ध्यानावस्थिति है। तपोवल ही मानो तत्व शक्ति है। यो दण्डवत् करता हुआ वह युद्ध में इस प्रकार चला मानो तृप्तिमान शिव ही चले हों।

१. बगतर – कवच। अगछाळ – मृगचर्म। सुरति – सूरत, रूप ध्यानावस्थिति। आवुध वंध – शस्त्र सज्जित। किरि – मानो, अथवा। तोखार – घोडा। डंडोतां – दण्डवत्। चाल्यौ – चला। तूठो – तृप्तिमान हुआ। केदार – महादेव, केदारेश्वर महादेव।

२ सिलहे – सन्नाह, कवच। खाल – चर्म। अकळि – अपार, ज्ञान, समस्त। अेम – इस प्रकार। आरभे – प्रारभ किया, युद्ध। असा – ऐसा। सुत नरियण – नारायण दासका पुत्र। सूरातन – वीरत्व। वसि – वश मे। अजोणी – अयोनिज, शिव। जसा – जैसा।

३ आपोथापी–अपने मन से कार्य करने वाला, अपने पौरुष के भरोसे चलने वाला। गिरां–पर्वतों मे। थापे – स्थापित कर। आप तसौ – अपने जैसा। कीधौ – किया। अचळीक – अचल, स्थिर। धणी – स्वामी। चाकरी – सेवा। मडळीक – मंडलाधीश।

---

५ गीत सार – इस गीत मे कवि ने योद्धा वीरमदेव का सूर्य के साथ रूपक बाधा है। कवि ने लिखा है कि अन्य नृपतियों की प्रतिष्ठा अथवा यश तो चन्द्रकला की भांति प्रतिदिन घटता-बढता रहता है किन्तु वीरमदेव रूपी रवि की कीर्ति रूपी किरणें सदैव एक समान प्रकाशित रहती हैं।

१ चद – चन्द्रमा। पूनम – पूर्णमासी। जेमि – जैसे, जिस प्रकार। अनैरा – अन्य। चक्रवत – चक्रवर्ती, राजा। घटवै वदवै – घटती बढती रहती हैं। घणौं – बहुत। अरक तणो – सूर्य का। सोयेज – सुशोभित होता है। ऊगमण – उदय होते ही। तरंग – दान देते हुए, दान रूपी किरण।

पूरण ससिहर मिळै बीया पोह, कळा रंग घट भग करत ।
दणियर अनै कमध वीरमदे, प्रहि नित चीत न किये पलटत ।।२।।

अैळ पख चद जही अनैकारा, हेळ कळा छाडै चित हेत ।
विथकै नही उगता अवता, सुत कासिव नर रयण सुवेत ।।३।।

६. गीत विमाह रा बोनांए रौ भोजराज खंगारौत रौ

घरर घोर पाखर घटा धमके घूघर, धरण पुड धूजि असमान धायौ ।
जोमरद कहर नादान जानी किया, डगै किम परणबा डैण आयौ ।।१।।

किलच किलमा चाढि घडा कणकण किया, हूबै हूकळ कळळ मैगळ हुवै ।
विखकन्या बीदणी बीद भोजौ विकट, जोजरौ वरै मोटचार जोवै ।।२।।

---

६ गीत सार – उपर्युक्त गीत मे कवि ने भोजराज खगारोत की युद्ध-क्रीडा की विवाह की क्रियाओ के साथ साहश्य दिखाते हुए रूपक बाधा है । कवि कहता है कि अश्व-सेना के पाखरों का घोर नाद तथा उनके घुघुरू की ध्वनि हो रही है । सेना के पदचापो की धमक से पृथ्वीतल धूज कर ध्वनि आकाश मे फैल गई और वह दुर्धर्ष वीर अवयस्क बरातियो को साथ लिए अविचलित भाव से युद्धस्थल (रूपी मडप) मे चला ।

---

२. पूरण ससिहर – पूर्णिमा का चद्र । मिळै – मिलते हैं । वीया पौह – दूसरे राजा । कळा – कला, अश । घट-शरीर । करत – करते । दणियर – सूर्य । अनै – और, अन्य । कमध – राठौड । प्रहि – उदय होते । चीत – चित्त मे, याद ।

३. अैळ – पृथ्वी के, व्यर्थ के । पख – पक्ष । जही – ज्यो ही । अनैकारा – अन्य । हेळकळा – उदारता का अश । छाडै – छोडते हैं । विथकै – थकता नही । उगन्ता – उदय होते । अवता – दान देते । सुत कासिब – सूर्य । रयण – रतन । सुवेंत – सुव्रती सुपुत्र ।

१. घरर – घुर घुर की ध्वनि । घोर – भयानक । पाखर – अश्व कवच । घटा – सेना । धमके – बजे । घूघर – घूघुरू । धरण पुड – धरातल । धूजि – धूज कर, काप-कर । धायौ – पहुँचा, दौडा । जोमरद – दुर्धर्ष वीर । कहर – योद्धा, युद्ध । नादान जानी – अबोध बराती, अवयस्क । डगै किम – विचलित कैसे हो ? परणबा – विवाह करने । डैण – वृद्ध ।

२. किलच – तलवार, युद्ध । किलमां – यवनो को । घडां – सेना, शरीरो को । हूबै – युद्ध मे । हूकळ कळळ – घोडो की हिनहिनाहट । मैंगळ – हाथी । विखकन्या – विष कन्या । बीदणी – दुलहिन । बीद – दुलहा । जोजरौ – जर्जरित, वृद्ध । वरै – वरण करता है । मोटचार – युवा । जोवै – देखते ।

काळ री झाळ कूरम कंगळ केसरचा, झाल तोरण खगां तुरी झोंकै ।
अचभै वराती बीद सो आज रा, कहर गति डोकरौ परी कोकै ॥३॥

फरि फरि अफरि फिरि देखि फौजा फरी, नरां जगमाल हर करै कूढो ।
चढावै मन तणा वसावो वसावणा, वरि गई वैकूठ बीद वूढो ॥४॥

७. गीत धरती रा अथाघ रा बीनांण रौ राणा प्रतापसिंघ रौ

किलव लाख केकाण गजवाण छेड़ै क्रमकमां, वरे पख दाखि वळियौ ।
आभ खूमाण चा माघ ऊहाड़तै, गरुड अकवर तणो गरव गळियौ ॥१॥

फौज वाजौ तूरे गयद दामणि फिरे, पांण हूं पड़ै परीयांण पाकौ ।
आभ अहमड चा माघ ओहाड चौ, थाघि वळ विहंग सुरितांण थाकौ ॥२॥

दळ सवळ पंख झड खाग वळ दाखवै, फौर पण नीगमे पड़ै फीटौ ।
ऊदउत गयण पुड़ तणी थव आणता, सीकरी सुपह घख-पख सीटौ ॥३॥

---

७ गीत सार – प्रस्तुत गीत मे कवि ने महाराणा प्रतापसिंह की असीमता और बादशाह अकवर के सैन्यप्रयाण का गरुडगति से रूपक वांधा है। कवि कहता है कि लक्षाधिक अश्वो की भयानक यवन सेना को लेकर अकवर रूपी गरुड़ महाराणा प्रतापसिंह रूपी असीम आकाश का पार पाने के लिए चला। किन्तु वह प्रयत्न कर के थक गया, और पार न पा सका।

---

३. काळ री झाळ – यमराज का कोप। कगळ – कवच। केसरया – केशर के रग का। झाल – ग्रहण कर, पकड कर। खगा – तलवारें। तुरी झोकै – घोड़े को वढा कर। डोकरौ – वृद्ध। परी कोकै – अप्सराओ को बुला कर।

४. कूढो – ढेर, समूह। वरि गई – वरण कर के गई। बींद वूढो – वृद्ध वर।

१. किलव – यवन। केकांण – घुडसवार। गजवाण – भयानक, वडी तोपें। क्रम क्रमा – क्रम पूर्वक चला, वार वार। वरे पंख – श्रेष्ठपक्षी, गरुड। वळियौ – लौट चला। आभ – आकाश। खूंमाण – खुमान का वंशज। माघ – मार्ग। ऊहाड़तै – आच्छादित करता, रोकता। गरव गळियौ – गर्व मिट गया।

२ फौज वाजौ – सेना का युद्ध। तूरे – घोडे, वजता है। गयंद – हाथी। दामणि – विद्युत, तलवार। पाण हू – हाथ से, वल से। परीयाण – वंश गौरव। ओहाड – ढांपता। थाघि वळ – वल का अनुमान कर, थाह लेकर। विहग – पक्षी, गरुड। थाको – थक गया।

३ सवळ – वलवान। पख झड – पखो की झपट। फौरपण – दुर्वलता प्राप्त कर। नीगमे – मार्ग, नहीं चल पाया। पडै फीटौ – फीटा पड गया, अपमानित हो गया। ऊदतण – उदयसिंह-तनय। गयण – आकाश। थघ – थाह। घख-पंख – गरुड। सीटौ – थक गया।

हीये बळ दाखवै बाजि धीरा हुवा, सरिखा बिहू पर हंस सहिया ।
बिहद आकास पुड़............ , रवद पख-राव हद माहि रहिया ॥४॥

—राजा सादू रौ कह्यौ

८. गीत नाग रा बीनांण रौ राणा प्रतापसिंघ रौ

आलापै रागि गारडू अकबरि, दीयै त्रीस खट कुळि दाउ ।
रांण सेस वसुधा खत्र राखण, रागि न पातरियौ अहिराउ ॥१॥

मणिधर छत्रधर अवर डुळै मन, ताई धर रज धर सीध तण ।
पूंगीधर पतसाह फिरतै, फिरै कमळ तन सहसफण ॥२॥

गढ गढ राफ राफ मेटै गह, रेण खत्री ध्रम लाज अरेस ।
पडरवेस नाद अण पीणग, सेस न आयौ पात नरेस ॥३॥

अनि आया असपति आवाहनि, भुअवै भुयग हुआ दळ भंग ।
रहियौ रेण खत्री ध्रम राणौ, सेत उरग कळौधर संग ॥४॥

—गौरधन बोगसा रौ कह्यौ

---

८. गीत सार — इस गीत में कवि ने बादशाह अकबर को गारुडी और महाराणा प्रतापसिंह को शेषनाग बना कर रूपक की रचना की है । वह कहता है कि अकबर रूपी गारुडी छत्तीसों कुलों के राजाओं रूपी सर्पों को अधीनस्थ बनाने के लिए मोहक रागिनी का आलाप करता है । अन्य नरेश तो उसकी रागिनी पर मुग्ध होकर बंधन में आ गए हैं, परन्तु महाराणा प्रताप रूपी शेषनाग उसके प्रलोभन में नहीं आया ।

---

४. पर हंस — गरुड के पंख । रवद — यवन । पख राव — गरुड ।

१ आलापै — आलापता है । गारडू — गारुडिन, सपेरा । त्रीस खट — छत्तीस । कुळि — वंश । दाउ-दाव, घात । सेस — शेषनाग । वसुधा खत्र — वसुधा पर क्षत्रियत्व को । राखण — रखने के लिए । पांतरियौ — भूला, भ्रम में आया । अहिराव — सर्पराज, शेषनाग ।

२ मणिधर — सर्प । छत्रधर — राजा । अवर — अन्य । डुळै मन — चलायमान हो गए । ताई धर — आततताई धर, बादशाह । रजधर — राजापन को धारण करने वाला । सीध — सिद्ध, गारुडी । पूंगीधर — सपेरा । फिरतै — फिरते । कमळ — मस्तक, फन ।

३. गह — गर्व, दृढता । रेण — पृथ्वी । अरेस — निष्कलंक, वेदाग । पडरवेस — मुसलमान, बादशाह । अण पीणग — न पीने वाला, मुग्ध न होने वाला । पात — प्रतापसिंह ।

४. अनि — दूसरे । असपति — बादशाह । आवाहनि — बुलाने पर । भुअवै — भूमि के । भुयग — सर्प । दळ भंग — कायल, खिन्न-चित्त । खत्रीध्रम — क्षात्र धर्म को पालने वाला । सेत उरग — श्वेत सर्प । कलौ-धर — कला को धारण करने वाला । संग — सांगा की ।

९. गीत हंस रा बीनांण रौ जगमाल सीसोदिया रौ

वळोवळी गोळा वहै वीर हक वापरै, चच खग बाहतौ काढ़तौ चाल ।
देवडा तणी घड माही सीसोदियौ, माल्हियौ मानसर हस जगमाल ॥१॥

चच तरवारियां रतनसर चुगतौ, कमळ पग दियतौ घडां काही ।
सुचळ जिम चालियौ उदैसी समौभ्रम, माल्हियौ आबुआ सेन मांही ॥२॥

सार दळ वीळ जळ-बोळ सीरोहियौ, विरुदपत भूलियौ घणै बाणै ।
प्रसण जिम चालियौ पोडणी चपतौ, जगौ पाबाहरौ हस जाणै ॥३॥

हस जिम हस जगमाल हालै सगह, धार आबाहले लहर धायौ ।
सार सत्र मार अरियणा लोपै सघण, पार सांगाहरै सुरग पायौ ॥४॥

---

९ गीत सार – कवि ने प्रस्तुत गीत मे वीरवर जगमाल सीसोदिया के रण-चातुर्य्य का हस के जल-विहार के साथ रूपक-विधान किया है। कवि लिखता है कि बारम्बार तोपो के गोलो की वर्षा हो रही है। वीर गण वीर हाक कर रहे है। परन्तु तलवार रूपी चचु के प्रहार करता हुआ वह जगमाल रूपी हस देवड़ाओ की सेना रूपी मानसरोवर मे तीव्रगति से बढता चला।

---

१. वळोवळी – अनवरत। वहै – चलते हैं। वीरहक – वीर घोष। वापरै – होता है। चच खग बाहतौ – कृपाण रूपी चोच चलाता। काढतौ – निकालता। देवड़ा तणी – देवडा (सिरोही के शासक) की। घड – सेना। माही – मे। माल्हियौ – मस्त गति से चला। मानसर – मानसरोवर।

२. रतन सर – सिर रूपी रत्न। चुगतौ – चुनता हुआ। कमळ – कमल-पुष्पो पर, मस्तकों पर दियतौ – देता हुआ, धरता हुआ। घड़ा – सेना, शरीरो। काही – पानी का मैल, सिवाल। सुचळ – सुन्दर गति वाला, हस। उदैसी समौभ्रम – उदयसिंह का पुत्र। आबुआ – आबू वालों (देवडों) की।

३. सार – तलवार, शस्त्र। जळ बोळ – प्रलय करता। सीरोहियौ – सिरोही के। भूलियौ – नहाया, जूझा। प्रसण – शत्रु। पोडणी चपतौ – पुष्पों को चापता। जगौ – जगमाल। पाबाहरौ – पाबासर का।

४. हस – जीव। हालै – चला। सगह – सगर्व। आबाहले – जलधारा मे। धायौ – चला। अरियणा – वैरियो को। लोपै – लोपकर। सांगाहरै – सग्रामसिंह का पौत्र।

१०. गीत असतांन रा बीनांण रौ पूरणमल भांणावत रौ

अवसांण तेल खळ खाग ऊपरै, असि खुरि गहणि गंगोदक आणि।
सूरा वडां तणै सपाड़ै, पूरो सांपडियो पीठाणि ॥१॥

तरण आप ईकोतरि तारण, मुगल तणै दळ सूध-मणौ।
पैठां जिण वैकुठ प्रामिजै, तिण सर पैठो भाण तणो ॥२॥

वप सामध्रम करै वेदोगति, थाट असुर में तीरथ थियौ।
पिड-भुंइ धार ऊजळी पडता, काळै सार सिनांन कियौ ॥३॥

वारागना वसत्रे वीटाणौ, घाइ घाइ तरण करै घणौ।
ऊदाहरै नाखिया अळगा, पौति अनै अवतार पणौ ॥४॥

---

१०. गीत सार – कवि ने प्रस्तुत गीत में पूर्णमल्ल भाणावत के युद्ध-कौशल का तीर्थ-स्थान के साथ रूपक रचा है। वह कहता है कि वीर पूर्णमल्ल ने युद्ध मे शत्रुसेना का तलवार रूपी तेल से मर्दन किया। तदनन्तर अश्वचापो से रणभूमि को खूद कर पवित्र गगाजल निकाला और तब फिर महान् योद्धाओं को असिधारा मे नहला कर स्वय ने रणभूमि में स्नान किया।

---

१. अवसाण – युद्ध, अवसर। खळ – शत्रु। खाग – खड्ग। असि खुरि – अश्व चाप। गहणि – रौंद कर, ग्रहण पर्व। गगोदक – गगाजल। आणि – लाकर। सपाड़ै – स्नान करा। पूरो – पूर्णमल्ल। सापडियो – स्नान किया। पीठाणि – युद्ध मे।

२ तरण – तरने का भाव। आप – स्वय। ईकोतरि – एकोत्तर, एक सौ। सूध मणौ – शुद्ध मन, पवित्र मन का। पैठा – प्रवेश करने से। जिण – जिनमे। प्रामिजै – प्राप्त होता है। तिण – उस। सर – सरोवर। भाण तणौ – भाना का पुत्र।

३. वप – वपु, शरीर। सामध्रम – स्वामिधर्म। थाट – समूह, सेना। थियौ – हुआ। पिड़-भुइ – रणभूमि मे। धार – धारा। काळै – वीर। सार – लोहा से, शस्त्र से।

४ वारागनां – अप्सराओ के। वसत्रे – वस्त्रो से। वींटाणौ – आवेष्टित हुआ। घाइ घाइ – घाव घाव। तरण – तरने को। नाखिया – डाले। पौति – नाव, जहाज।

११. गीत वाराह रा वीनांण रौ जोधा सिसोदिया रौ

घर थभ वाराह जूनौ जिकौ जोघडौ, प्रहसमो वीटियौ उवर पारा ।
वका फाटै न गौ त्रहकते बरघूम्रे, घका दे चालियौ मारि घारां ।।१।।

दोड हजार फौजा गजा दिली रा, हूह काळो बळा जूह हांकी ।
पवंग घड़ फाड़ि ऊजेडतौ पाखरां, चालियौ भाखरा वाधि चाकी ।।२।।

पाळ रौ काळ वैरीहरा पाड़तौ, बिफ्फड ओफाड़तौ सेल बेके ।
पठाणा होक फोका देयतौ पाधरै, ठोक जाडां गयौ मूळ ठेके ।।३।।

१२. गीत पौढ़ण रा वीनाण रौ सुरताण मानावत रौ

पाखतियां बिहू सिरांती पगाती, पड़िया भड़ घड़ आप प्रमांण ।
समहर कहर अजर जरि सूतौ, साथरि अरि पाथरि सुरताण ।।१।।

---

११. गीत सार – प्रस्तुत गीत मे वीर जोधा सिसोदिया के अरि-सेना का सहार करते हुए सकुशल निकल जाने का वराह के साथ रूपकायोजन किया है । कवि कहता है कि मुसलमानो की दो हजार सेना द्वारा चारो ओर से घिर जाने पर वह जोधा रूपी वराह भयभीत नही हुआ और बरघू वाद्य के रणनाद करने पर वह कापुरुषो की तरह मुह मोड कातरता पूर्वक नही भागा । अपितु शत्रु सेना को तलवार के प्रहारो से पीछे धकेलता हुआ सेना के उस पार निकल गया ।

१. घरथंभ – घरा का स्तम्भ । जूंनौ – प्राचीन, वृद्ध । जिकौ – वह, जो । जोघड़ौ– योद्धा । प्रहसमो – आनन्द मे । वीटियौ – आवेष्टित । उवर पारा – आरपार । वका फाटै न गौ – भय से मुह फाड़े भागकर नही गया । त्रहकते – बजते । बरघूम्रे– वाद्य विशेष । धका दे – धका मार कर । मारि धारा – शस्त्र धाराओ मे ।

२. गजां – हाथियों की । दिली रा – दिल्ली के । हूह काळो – भयावह, वीर । बळा –विपत्तिकारी । जूह – यूथ, समूह बद्ध । हाकी – चलाई । पवंग घड – अश्व सेना । फाडि – विदीर्ण कर । ऊजेडतौ – नाश करता, छिन्नभिन्न करता । पाखरा – पक्खरधारियो को, कवचो को । भाखरा – पर्वतो की ओर । बाधि चांकी – निशानी बांध कर ।

३ पाळ रौ – गोपाल का पुत्र । काळ – मृत्यु, वीर । वैरीहरां – वैरियो को । पाडतौ – रणभूमि मे पटकता । बिफ्फड – तलवार । ओफाडता – चलाता, प्रहार देता । सेल वेके – विकट गिरि की ओर । होक फोका – ललकार कर, शस्त्रो की चोटें । पाधरै – सीधे ।

---

१२. गीत सार – प्रस्तुत गीत मे सुरतान भाटी के रणशयन का चित्रमारी शयन के साथ रूपक रचा गया है । कवि कहता है कि सिरहाने और पैरो दोनों पार्श्वों की ओर

१. पाखतियां – पार्श्वों । बिहूं – दोनो । सिरांती – सिरहाने । पगाती – पगान्त, पैरो की ओर । भड घड – वीरो के शरीर । समहर – सग्राम । कहर – शत्रु । अजर जरि – अपराजित को जीत कर । सूतौ – सो गया । साथरि – बिछौना । पाथरि – सोया, शयन किया ।

पखा करै अछर बिहू पासै, पखणि सेव सचपै पाव।
सिरदारा पाथरि वीसम्मियौ, समहरि निसभरि मान सुजाव ।।२।।

गीध गहकि त्रम्बक धुनि गिण, गहमह अपछरि राज गति।
पह पौढ़ियौ डहे पाखतियां, पिंड देसौता देस पति ।।३।।

परि जिम घरणि घरै पौढतौ, पडि तिम रिण पौढै खग पाणि।
माडेचौ जीवतौ मरतौ माणिग, माणिग गयौ बिन्है कळि माणि ।।४।।

१३ गीत महादेव रा बीनांण रौ राव महेसदास राठौड़ रौ

सिधां सावता सहेतौ आखाडे सोहियौ, राग सिंघू बजे खाग रीठौ।
समर भूपाळ आदेस करतां सहू, दळां माहेस माहेस दीठौ ।।१।।

योद्धाओं के असख्य शरीरो की शैय्या रूपी सुख सेज बना रण भूमि मे अविजित वीरों का सहार कर वह वीर सदा के लिए सो गया।

२. अछर – देवरमणियां। बिहू पासे – दोनो पार्श्वों मे। पखणी – पक्षी, गृद्धनी। सचपै पाव – पग चम्पी करते हैं। वीसम्मियौ – मृत्यु को प्राप्त हुआ। मान सुजाव – मानसिंह-तनय।

३. गीध – गृद्ध पक्षी। गहकि – मधुर ध्वनि, उल्लसित ध्वनि। त्रम्बक धुनि – नगारो की ध्वनि। गहमह – धूमधाम। राजगति – राजलोक के उत्सव की भांति। पह – राजा। डहे – मथन कर। पिंड – शरीर। देसौतां – देशपतियों के।

४. परि – अप्सरा। घरणि – पत्नी। घरै – घर पर। पडि – पडवे मे, पड कर। माडेचौ – माड प्रान्त का, जैसलमेर का भाटी-वशीय। माणिग – भोगी। कळि माणि – युद्ध का भोग कर।

---

१३. गीतसार – प्रस्तुत गीत मे गीत रचयिता ने राव महेशदास राठौड़ द्वारा दक्षिण प्रान्त के दौलताबाद स्थान पर लडे गए युद्ध का शिव के साथ रूपक बांधा है। कवि कहता है कि महेशदास रूपी शिव सिद्ध रूपी सामन्तो को साथ लिए युद्ध रूपी अखाडे मे खड़ा शोभित हुआ और युद्धोत्साही सिंघू राग के वाद्य बजने पर खड्गाघात रूपी ताण्डव नृत्य करने लगा। इस प्रकार सेनानायक के युद्धारंभ का आदेश देते ही वह महेशदास भगवान महेश के सदृश्य रण कौतुक करता हुआ दिखाई दिया।

१. सिधा – सिद्धो। सावता – सामन्तो, वीरों। सहेतौ – सहित। अखाडे – युद्ध-भूमि मे। राग सिंघू – युद्ध की रागनी। बजे – होने पर। खाग – तलवार। रीठौ – प्रबल प्रहार करने लगा। समर – युद्ध का। आदेस – आज्ञा, अभिवादन। दळा – सेना में। माहेस – महेशदास। माहेस – शिव। दीठौ – दिखाई दिया।

ऊघडे जिरह कंथां सिधां आवधां, भेख भगुवां हुवै रुहिर भांति ।
जिसौ जोधा-हरी सोहियौ महाजुध, जिसा जोधार बणिया जमाती ॥२॥

खाग री भुगत ढालां पतर खड़हड़ै, खळ स चाढे कमध खेळौ ।
मधकरे वडे सिध लोहड़ै मिळ तै, महा सिधा हुवौ दिखण मेळौ ॥३॥

दला रौ दौलतावाद टल्लै दिया, वाद भांजि दिखण नाद वागौ ।
दीह सिवरात री भांत दीठी दळा, लागुवा इसौ गुर कान लागौ ॥४॥

१४. गीत विमाह रा बोनांण रौ गोपालदास चांपावत रौ

घणी करै वाखांण सत्त करै मगळ घमळ,
सहूवर साथ अणवर सहोधा ।
माडवे परणजे कमध गोपाळमल,
जानियां साथ रिणमाल - जोधा ॥१॥

---

१४. गीत सार—प्रोक्त गीत में प्रसिद्ध कवि दुरसा आढा ने गोपालदास की युद्ध-क्रीड़ा का विवाह की रीति रस्मो के साथ रूपक बांधा है। वह कहता है कि उसकी वीरता का बहुतेरा बखान करती हुई अप्सराएं मगल गान करती है । उसके साथ अनेक ओहदे वाले अन्यवर सम्मिलित है। वह अपने सरक्तीय रणमल और जोधा के वंशजो की बरात लिए, रणभूमि रूपी मंडप मे विवाह करने को तत्पर हुआ ।

---

२. ऊघडे – खुले । जिरह – कवच । कथा – सिद्धो या फकीरो के पहनने की गुदडी, चोला । आवधा – अस्त्रशस्त्र । भेख – भेष । भगुवा – गैरुवें रग का । रुहिर– रुधिर । जिसौ – जैसा । जोधाहरी – जोधा का पौत्र । जोधार – योद्धा, भट । जमाती – जमात, समूह के ।

३. भुगत – भिक्षा, भोज । पतर – पत्र । खडहड़ै – ध्वनि करते हैं । खळ – वैरी । कमध – राठौड । खेळौ – खेल, युद्ध । मधकरे – महेशदास । लोहड़ै – अस्त्र-शस्त्र तलवार । मिळ तै – मिलते, टकराते । मेळौ – मेला, सम्मेलन ।

४ दला रौ – दलपत का पुत्र । टल्लै – टक्कर । वाद – युद्ध, विवाद । भांजि – त्याग कर, नष्ट कर । वागौ – वजा । दीह – दिन । दीठी – दिखी । लागुवा – वैरियो । इसौ – ऐसा । गुर – गुरु मंत्र । कांन – कर्ण ।

१. घणी – बहुतेरा । वाखांण – बखान, प्रशंसा । सत्त – सतियां, परियां । मगळ घमळ – मगल गान । अणवर – अन्य वर । सहोधा – ओहदेधारी, मन्सब वाले, सुयोद्धा । माडवे – मडप मे, मांडव स्थान । जानिया – बराती, वरयात्री । रिणमाल – राव रणमल्ल के वंशज । जोधा – राव जोधा के वंशज, योद्धा ।

पुड करै पंखणी अपछर पूंखणै, धार तोरण अणी वदे खग धौड ।
विकट लाडी बणी बीद बाकौ त्रिबक, मयक रौ परणजे बाधियौ मौड ।।२।।

मडे नव तेरही नवे ग्रह माडिया, ब्राह्मण फिरै नारद बिचाळै ।
रोद्रणी बोदणो छोहडा राळिया, रुध्रर तम्बोळ मुख हूत राळै ।।३।।

मांडवो विखम गति सगा बाके मुंहे, विखम चढिया भला बिन्है बिखवाद ।
बीद मुरधर तणो सितर ची बीदणो, नवल गति परणियौ सिन्धवै नाद ।।४।।

हूवो जस दायजे पात पळचर हुवै, खरच सत्र दाम वरियाम खूटा ।
जोत मे पोढियो मोहले जसाहरो, छेहडा अवतरण तणा छूटा ।।५।।

—दुरसा आढा रौ कह्यो

१५. गीत परणोजण रै बीनांण रौ राजा गोपालदास गौड़ रौ

आहुड़िया सूर थटै गढ ऊपर, अपछर रथ खडिया ओमाह ।
बेटौ बाप सेहरो बाधै, गौड चढै तोरण गजगाह ।।१।।

---

१५. गीत सार—प्रस्तुत गीत मे कवि ने राजा गोपालदास गौड के युद्ध रूपी पाणिग्रहण का वर्णन किया है कवि कहता है कि इधर तो ठट्ठा दुर्ग स्थान पर वीर सेना टक्कर लेने के लिए आई और उधर से आकाश मार्ग से उत्सव मनाती अप्सराओ के विमान उतरने लगे। युद्ध रूपी तोरण द्वार पर सेहरा बाँध कर पुत्र और पिता पाणिग्रहण करने को चले ।

---

२ पखणी – गृद्धादि पक्षी । अपछर – अप्सराएं । पूखणं – स्वागत-सत्कार । धार–तलवार की धार । अणी – सेना । वंदे – वदन करता है । खग – तलवार । लाडी – दुलहन । बीद – वर । बाको – बाकुरा । त्रिबक – विकट वीर । परणजे – विवाह करता है । बाधियो मौड – मुकुट बांधे हुए ।

३. बिचाळै – वीच बीच मे । रोद्रणी – असुर सेना । छोहडां राळिया – घूघट निकाले हुए, पल्ला डाले । रुधिर तम्बोळ – रुधिर रूपी पान रस । हूत – से । राळै – गिराती ।

४ विखम गति – विषम गति । सगा – सम्बन्धी । बाके मु हे – टेढे मुख वाले, यवन । बिन्है – दोनो पक्ष । बिखवाद – विषम विवाद, हठ । सितर ची – शत्रु की । परणियो – विवाहित । सिन्धवै नाद – सिन्धुरागिनी के घोष मे ।

५. हूवो जस दायजे – यश रूपी दहेज प्राप्त हुआ । पात पळचर हुवै – मासभक्षी रूपी कवि हुए । जोत मे – ज्योति मे । जसाहरो – जैसा, जयसिंह का पौत्र । छेहडां – घूघट । अवतरण – जन्म का, उत्पन्न होने का ।

१ आहुडिया – युद्ध करने को उमड कर चले । थटै ठट्ठ – ठट्ठा दुर्ग पर । अपछर रथ – अप्सराओं के रथ, विमान । खडिया – चले । ओमाह – उत्साह पूर्वक, उत्सव मना कर । सेहरो – मुकुट । गजगाह – गजग्राह, युद्ध ।

सर आखा गोळा वरसै सिर, अपछर घमळ दियै ऊधाम ।
पूत पिता सागै परणीजे, रण गोपाल अनै वळरांम ।।२।।

अगन सोर है मरण आहवि, नारद वेद भणै निरवाण ।
फिर फिर लिग्रै अछर वर फेरा, अजमेरा परणे आराण ।।३।।

कारण वरण धाव दावा कर, भख पंखण पूजिण भाराथ ।
वेटो वाप विन्है रथ वैठा, सास वहू अपछर कर साथ ।।४।।

१६. गीत परणबा रा बोनांण रो बलू चांपावत रौ

सिर बाधे मोड करे केसरियां, चांपा इण चळ रीत चलू ।
अेकण लगन रोद घड अपछर, वेहू ठौड़ां परणीजे वलू ।।१।।

गोळा नाळ गुणजीन गावै, लसकर अमर जानिया लार ।
माडण हरो दिपन्तो मिळियो, साम्हे ले बीड़ो घणसार ।।२।।

---

१६. गीत सार—प्रस्तुत गीत मे राठोड़ वल्लू चांपावत के युद्ध का विवाह की विधियो के साथ रूपक बनाया है । कवि कहता है कि केशरिया रग मे रगे विवाह के वस्त्र धारण कर तथा मस्तक पर सिरमौर लगा एक ही मुहुर्त्त मे बल्लू शाही सेना और अप्सराओ से विवाह करने लगा ।

---

२ सर आखा – वाण रूपी अक्षत । घमळ – मगल गीत । ऊधाम – प्रसन्नता मे, उत्सव से, मस्तो मे । सागै – एक साथ । परणीजे – व्याहते हैं । अनै – और ।

३. अगन – अग्नि । सोर – वारूद । आहवि – युद्ध । भणै – पढता है । निरवाण– निर्वाण का । फेरा – भांवरे । अजमेरा – अजमेर प्रान्त के स्वामी । आराण – युद्ध ।

४. धाव – आक्रमण । दावा कर – दावा करने वाले, अधिकार जताने वाले । भख – भोजन । पंखण – पखवाली, गृद्धनी । भाराथ – युद्ध । विन्है – दोनों । वहू – वधू ।

१. मोड़ – सेहरा । चांपा – चापावत शाखा का राठोड़ वल्लू । चलू – प्रारम्भ, चल कर । अेकण – एक ही । लगन – लग्न । रोद घड़ – मुसलमान सेना । अपछर – अप्सरा । वेहूं ठोडा – दोनो जगह । परणीजे – विवाह करता है ।

२. गोळा नाळ – तोपो के गोले । गुणीजन – गायक । गावै – गाते हैं । लसकर – सेना । उमर – उमराव, अमरसिंह के । जानियो – बराती । लार – पीछे, साथ । माडण हरो – माडण का पौत्र । दिपन्तो – दैदिप्यमान होता । मिळियो – मिला । साम्हे – सम्मुख । घणसार – कपूर ।

पाल तणी तोरण पेखीजै, बड बेहड़ा धुर टोप बिचाळ ।
आखा तीर आरती असमर, वामे अग घाले वरमाळ ॥३॥

ब्रहमा नारद करै वेदोगत, चौरी होम कटक चिरियौ ।
फिरियौ नहीं अमर खत फाटे, फेरा कमध इसा फिरियौ ॥४॥

भालां साळ पोढियौ भाजे, काळौ राती सेज करूर ।
माथो त्याग करै राव मारू, सूर तणै रथ बैठौ सूर ॥५॥

१७. गीत राव दूदा हाडा रौ

खळकै अग जरद न पाखर खळहळ, झबकै रूक न साबळ झळहळ ।
घड़ बेहड़ां करै नह खग धौकळ, दूदडौ गयौ स करतौ दमगळ ॥१॥

घण थट प्रकट न पाखर घरहर, थरकै नयर न गिरवर थरहर ।
धाहे नह पतसाह तणी घर, सुरजन तणौ गयौ सत्र सगहर ॥२॥

---

१७ गीत सार—अगों पर न कवचो की ध्वनि होती है और न अश्वो को पाखरें बजती हैं । न तलवारें चमकती न भालो को ही चमक दिखाई देती है । और न उभय पक्षीय सेनाएँ खड्गाघात ही करती हैं । क्योंकि युद्ध करने वाला राव दूदा युद्ध लडते हुए वीर गति को प्राप्त हो गया ।

---

३ पाल तणी – गोपालदास का पुत्र । पेखीजै – देखा जाता है, सराहा जाता है । बड वेहडा – बडा कलश । आखा – अक्षत । असमर – तलवार । वामे – वाएँ । घाले – डाले, पहिनाये ।

४. व्रहमा – ब्रह्मा । वेदोगत – वेद का उच्चारण, वेदविधि । चौरी – चवरी, वेदी । होम – हवन । कटक – सेना । चिरियौ – ? । फिरियौ – फिरा, घूमा । फेरा – भावरे । कमध – राठोड । इसा – ऐसा । फिरियो – फिरा ।

५. भालां साळ – भालो की चित्रसार मे । काळौ – वीर । राती – रक्तिम । सेज– शैय्या । माथो – मस्तक । त्याग – दान । सूर तणै – सुर सुन्दरियो के, सूर्य के । सूर – वीर ।

१ खळकै – हिलने से होने वाली ध्वनि । जरद – कवच । पाखर – घोडो के कवच । खळहळ – खलखल की ध्वनि । झबकै – चमकती है । रूक – तलवार । सावळ– भाला । झळहळ – झिलमिल की चमक । घड वेहड़ां – उभय सेनाएँ । खग – तलवार । धौंकळ – युद्ध । दूदडौ – राव दूदा हाडा । दमगळ – युद्ध ।

२. घण थट – सैन्य समूह । घरहर – ध्वनि । थरकै – भय से कांपते है । नयर – नगर । थरहर – धूजते हैं । धाहे – क्रन्दन करती है । तणी – की । तणौ – पुत्र । सत्र संगहर – शत्रुओ का सहार करने वाला ।

जोखम सत्रां दीयंती जाडो, लोहे वडा कवारी लाडो।
असपति राव वहते आडो, हय थट गयो हलावण हाडो ॥३॥

साह जलाल तणो उर साळण, पौहतो वाहर थाहर पालण!
घण जूंझार घणा घर भालण, हाडो गयो स आडो हालण ॥४॥

१८. गीत कसूम्बा रा वोनांण रो आईदान गाडण रो

दळ वजियां घोट उकत पुट दे दे, चित ऊंडे कूंडे रंग चाढ।
आईदान छकावै अधपति, कायब तणो कसूवो काढ़ ॥१॥

वायक लवग मसाला वाटे, जीभ सकर मीठय जेम।
सौहड़ां कज कोडा परसा सुत, आखर तणो राम रस प्रेम ॥२॥

गळवंध तणै भकोळै गळणे, सीह अभिनमै सुगड़ सुगाढ।
गढ़पति प्रकट छकाड़ै गाडण, कयना तणो रगड व्रत काढ़ ॥३॥

---

१८ गीतसार–प्रस्तुत गीत मे कवि ने गाडण आईदान के काव्य की प्रशसा करते हुए काव्य के रचना-प्रकार का कसूम्बा के साथ रूपक रचा हैं। वह कहता है कि चित्त रूपी कुण्डी मे, अक्षर रूपी पत्रो को डाल उक्तियों का पुट देकर खूब घोटता है, जब वह घुटकर सरस बन जाता है तब काव्य रूपी कसूम्बा के प्रेमी नरेशों को पिला कर मस्त बना देता है।

---

३. जोखम – हानि, नुकसान। जाडो – गहरा, घने। लोहे घड़ा – शस्त्रधारी सेना का। लाडो – दूल्हा। असपति – अश्वपति, बादशाह। वहते आडो – विपरीत चलता, विरुद्ध चलता। हय थट – अश्व सेना को। हलावण – चलायमान करने वाला।

४. उर साळण – हृदय मे खटकने वाला। वाहर – आक्रमणकारियो का पीछा करने वाला।

१. दळ – पत्र। घोट – घोट कर, घोटने का पात्र। उकत – उक्ति। ऊंडे – गहरे। कूंडे – खरल। छकावै – मस्त करे। कायब तणो – काव्य का। कसूवो काढ – अफीम का रस या घोल, अफीम को पानी में घोल कर पेय बनाने को कसूंबा निकालना कहते हैं।

२. वायक – वचन। वाटे – पीस कर। जीभ सकर मीठय – जिह्वा के मीठास की शक्कर। सौहड़ां कज – सुभटों के लिए। कोडा – प्रसन्नता से। परसा सुत – परशुराम का पुत्र। आखर तणो – अक्षरो का।

३. गलवध – कण्ठों के। भकोळै – हिला हिला कर, रट कर। गळणे – छानने के वस्त्र से छान कर। सीह अभिनमै – अभिनव सिंह ने। सुगड़ – वढिया। सुगाढ – गहरा घुटा हुआ। गढपति – राजा। छकाड़ै – छकावे, मस्त करे। गाडण – गाडण जाति का चारण आईदान। रगड – घोट कर।

छांणद पाल करै तत छांणै, घण ठाहो कर भरै गियांन ।
गाढा पाय पियाळा गडवै, गढ़पतिया कीधा गळतान ।।४।।
—बसराम रावळ रो कह्यो

१६. गीत महादेव जहर जारचौ जणी बोनांण रौ आसकरण राठौड़ रौ

मछरीक कमध रिण महण मथतां, उड़ै पैसे ईसवर ।
जोधहरो प्राजळतो भळहळतो, जाळोरै पीधो जहर ।।१।।
मिळ मारूग्रे अनै मछरीके, मथियो कारण बे महण ।
काळा नाथ चळु हे कीधो, काळ-कूट सरखो करण ।।२।।
झाळ कराळ बोम लागी झळ, सुरा थीयै दोरा सकळ ।
गरळै गळै आसकन गिळियो, गवरीपत जिही गरळ ।।३।।
बिहुये दळै देव दांणव बिहु, ईसर अकळ कीयो आदेस ।
जहर इसो कुण बियो जारिवै, जूना चंद तणा जोगेस ।।४

---

१६. गीतसार—उपर्युक्त गीत में कवि ने देव-दानवो के समुद्र-मथन के रूप मे चहुवानो और राठौड़ो के मध्य लड़े गए युद्ध का वर्णन किया है। युद्ध नायक आसकर्ण राठौड को विषपायी महादेव अंकित किया है ।

---

४. छाणद – छाणस, चापड, मैल निकाल कर । तत – तत्व, सार । छाणै – छाने, छान कर । ठाहो – विचार पूर्वक । गाढा – घुटा हुआ । पाय – पिला कर । पियालां – प्याले । गडवै – गढ़वा, कवि । गळतान – मस्त, सराबोर ।

१. मछरीक – चहुवान । कमध – राठौड । रिण-महण – रण रूपी समुद्र । मथता– मथन करते । जोधहरो – राव जोधा का वशज । प्राजळतो – प्रज्वलित । झळहळतो – अग्नि की तरह चमकता । जोळोरै – जालोर राज्य का स्वामी ।

२ मारूग्रे – मारवाड के राठौड । अनै – और, अन्य । मथियो – विलोडन किया । वे – दोनो ने । काळा नाथ – महादेव ने । चळु हे-चुल्लू । कीधो – किया । काळकूट – विष । सरखो – समान । करण – प्रति योद्धा का नाम ।

३. झाळ कराळ – कराल ज्वाला । बोम – आकाश के । झळ – लपटें । थीयै – हुए । दोरा – बेचैन, दुःखी । गरळै – विष, कठ में डाल कर पेय पदार्थ को पीने की क्रिया । गळै – कठ मे । गिळीयो – पीया, पान किया । गवरीपत – शिव । जिहीं – जैसे ही ।

४. बिहुये – दोनो । दळै – सेनाएं । अकळ – समर्थ । आदेस – आदेश, नमस्कार । कुण – कौन । जारिवै – पचावे, सहन करे । जूनां – प्राचीन, वृद्ध । जोगेस – योगीराज ।

२०. गीत विरखा रा बीनांण रौ वीठलदास गौड़ रौ

बीळण खळ सबळ झमाझम बीजळ, केकाणे कौतिल कळळ ।
बरसाळा वाळा जिम बादळ, दोड़ै वीठळ तणा दळ ।।१

किलमा समहर कहरि किरमर कर, हैमर पखर परवा हुलास ।
जळधर मास लहर जिम सखरा, जकै जोगाहर तणां जळदास ।।२।।

भादवी घटा ऊलटता भारथ, औघट घटा धार ओधार ।
दिन बळ वटा करै दिस दसा, जिकै पाळउत तणा जोधार ।।३।।

२१. गीत विम्राह रा बीनांण रौ जुध रौ अरजण गौड़ रौ

ऊजेणि मडप जुध अवरग मांडे, कगळ केसरियां अजै किया ।
तोरण थिया तणां तरवारचा, थांभ सावळा तणा थिया ।।१।।

---

२०. गीतसार—कवि ने प्रस्तुत गीत मे राजा विट्ठलदास गौड़ की सेना का वर्षा ऋतु की घटा के साथ रूपक रचा है। कवि कहता है कि सवल रिपु-सेना को जल प्लावित करने के लिए विजली की चमक की भाँति रण साज से सज्जित अश्व आभासित होते है और वर्षाकालीन नालो की भाँति सेना रूपी वादल दौड़ते हैं ।

१. बीळण — डुवाने के लिए । सवळ — सबल । झमाझम — ध्वनि विशेष । बीजळ— बिजली, तलवार । केकाणे कौतिल — जलूसी घोडे । कळळ — कोलाहल । बरसाळा — वर्षा ऋतु के । वाळा — नाले, वाले, मेघ । वीठळतणा — विट्ठलदास के । दळ — सेना ।

२. किलमा — मुसलमान । समहर — समर । कहरि — प्रलय । किरमर — तलवार । हैमर — घोड़े । पखर — पाखरें, घोड़े की झूल । हुळास — उल्लास । जळधर-मास — भाद्रपद मास । लहर — हिलोर । जिम — जैसे । सखरा — श्रेष्ठ, अच्छे । जकै — जो, वे । जोगाहर तणा — जोगीदास के पौत्र के । जळदास — सैनिक रूपी मेघ ।

३. भादवी घटा — भाद्रपद मास की मेघ घटा । ऊलटतां — उमड़ती । भारथ — युद्ध । औघट घटा — विकट सेना, भयानक रूप में । धार ओधार — धारा प्रवाह, झड़ी । दिस दसा — दश दिशाओं, दिशा विदिशा में । जिकै — वे । पाळउत — गोपालदास के पुत्र के, विट्ठलदास के । जोधार — योद्धा, सैनिक ।

---

२१. गीतसार—प्रस्तुत गीत में गीतकार ने वीर अर्जुन गौड के उज्जयिनी संग्राम का विवाह के साथ रूपक बांधा है। गीत मे वर्णन है कि उज्जयिनी के समरस्थल रूपी मडप मे अर्जुन ने केशरिया पोशाक धारण कर प्रवेश किया और वहाँ तलवारों के तोरण और भालो के स्तंभ वना कर विवाह की रस्में पूर्ण कीं ।

१. ऊजेणि — उज्जैन । अवरंग — औरंगजेब । माडे — माडा, विवाह मंडप, रचा । कगळ— कवच । अजै — अर्जुन ने । थिया — हुए । तणा — का । तरवारचा — कृपाण के । थाम — थांभे, स्तम्भ । सावळां — भालों के ।

गौड मौड़ बध ठौड गराजू, राजू सूरति सिरी रढाळ ।
दुलहणि जोय वीठळ री दुलहौ, मन उलही मेळै वरमाळ ॥२॥

चतुरंगी गवरगी चातुर, वर आतुर अजमेरि वर ।
घूघट ढाल तणां घातिया, भाळी तीछि कटाछि भर ॥३॥

कँवर बांण जमूर अखति कढि, हाथां किये जमदढि हथलेव ।
फिरि फिरि अफिरि किये सुज फेरा, जोगणि घेरा राग जमेव ॥४॥

खेत महल बीचि रहसि वहसि खगि, तिहसि मिहसि कसी ऊससि ताव ।
लोहां लाट लाल रंग लाडै, घट घट घाट ऊपरै घाव ॥५॥

अडथड़ मिरड भिरड झड अवझड़, नवड़ भवड वड निवड नड ।
आवट कूटि तूटि कसणांवटि, छूटि जड़ावटि फूटि छड़ ॥६॥

अपछर हर भूचर खेचर अग, लग आपोपण लाग लिया ।
त्याग दिया अजमल वड त्यागी, कारण वाद मुराद किया ॥७॥

---

२. मौड वध – मुकुट वध, दूल्हा । गराजू – । राजू सूरति – राजा की सूरत, सुन्दर सूरत । सिरी – श्री, सिर पर बांधने का आभूषण । रढाळ – हठीला । जोय – देख । उलही – उल्लसित । मेळै – मिलाए । वरमाळ – वरमाला ।

३. चतुरगी – चतुरगिनी सेना । गवरंगी – गौरांगना । आतुर – उद्विग्न, व्याकुल । घातिया – डाला, ओढा । भाळी तीछि – टेढी दृष्टि । कटाछि भर – कटाक्षपूर्ण ।

४ कँवर – धनुष । बांण – तीर । जमूर – छोटी तोप । अखति – अक्षत । कढि – निकाल कर । जमदढि – कटार का । हथलेव – हथलेवा । अफिरि – न मुडने वाली । फेरा – भावर । घेरा – मण्डल बना कर । राग जमेव – प्रीति प्रकट करती है, राग आलापती है ।

५. खेत महल – रणक्षेत्र रूपी महल । बीचि – मध्य । रहसि वहसि – विहँसता, रस जताता । खगि – तलवार । तिहसि मिहसि – तहस नहस कर । ऊससि – उँमग मे भर, उल्लसित हो । लाल रंग – रुधिर । लाडै – दूल्हा । घट घट घाट – शरीर के प्रत्येक भाग पर ।

६ अडथड – लडखड़ाते । भिरड मिरड़ – भिड तथा मसल कर । झड़ अवझड – तलवार के तिरछे प्रहार देकर । नवड़ – । भवड़ – । निवड़ – । नउ – झुका । आवट कूटि – सहार, नाश कर । तूटि – टूट कर । कसणांवटि – कंचुकी के कसने । जडावटि – आभूषणो का जडाव, कवच । फूटि – फूट, पार निकल । छड – भाला ।

७. अपछर – अप्सरा । हर – शिव । भूचर खेचर – भूत-प्रेत । वाद – युद्ध । मुराद – शाहजादा मुरादबक्स ।

साहां वदै न चूको सावौ, राखै दहु राहा विचि टेक ।
वड जानी जसवत बीछड़तां, वीद वीदणी मिळै विसेक ॥८॥

—कल्याणदास राव रौ कहयौ

२१ गीत सिलावट रा व्रीनांण रौ राजा अनिरुद्ध सिंघ गौड़ रौ

कवराउ सिलावट अखर कवाडा, मोटी नींम घरे मन मोट ।
अनरघ किया जगत ऊपर-वट, कीरत तणा पड़े नह कोट ॥१॥

गीत गजाड चाढ गज पाते, वांण सुकेव घवि राड़ ।
वीठळ-तणौ माडिया विगतां, प्रसघ तणा ऊजळा पहाड़ ॥२॥

अडिया भला गयण लग अनरघ, वयण तणा कमठांण बीया ।
करण सवर बळ तणै कमांणा, तै कारीगर तिकै कीया ॥३॥

चेजा चाढ बध चौरासी, घरिया अहल कहल गुण घौड ।
जाअै नही दीहडै जाते, गीतां तणा भीतड़ा गौड ॥४॥

---

२२. गीतसार–प्रस्तुत गीत मे कवि ने राजा अनिरुद्ध सिंह गौड़ का शिल्पकार के साथ रूपक बांधा है । लिखा है कि कविराज रूपी शिल्पी ने अक्षरो के कमठाण की रचना करते हुए उदारता के भावो की सुदृढ़ नीम रख प्रसिद्धि के भवन का निर्माण किया है, जो अनेक युगो के प्रभावों से भी नष्ट नहीं होगा ।

---

८ सावौ – विवाह का मुहूर्त । दहुं राहां – हिन्दू और मुसलमान दोनो धर्मों को मानने वालों मे । टेक – विशेषता । वड जानी – वड़े बराती, सेनापति । जसवंत – राजा जसवन्तसिंह राठौड़ । बीछडतां – बिछुड़ते, रण से पलायन करते । विसेक – विशेष स्नेह के साथ ।

१. कवराउ – कविराव । सिलावट – शिल्पकार, चेजारा । अखर – अक्षर । कवाड़ा – कमठाना । पडै नह – ध्वस्त नही होते । कोट – दुर्ग, भवन ।

२ गीत – डिंगल का गीत नामक छंद । गजाड – गर्जना करवा कर, रचना करवा कर । चाढ – चढाकर । गज – हाथी । पाते – कवियो को । वांण – वांणी से । वीठळ तणौ – विट्ठलदास का पुत्र । माडिया – मण्डित किए । विगता – ब्योरे, वार । प्रसघ तण – प्रसिद्धि का । ऊजळा – उज्ज्वल ।

३. अडिया – जा लगे । गयण लग – आकाश तक । वयण तणा – वचनो के, काव्य के । करण – राजा कर्ण । सवर – राजा शिवि । तिकै – वे उसी के अनुरूप ।

४. चेजा – चुनाई का कार्य । बंध चोरासी – चौरासी प्रकार के गीत रचकर । अहल– अडिग, अव्यर्थ । दीहडै – दिवस, समय । जाते – बीतते । भीतडा – दीवारें, भीतें, भवन ।

२३. गीत गुरड़ रा बीनांण रौ राजा अनिरुद्धसिंघ गौड़ रौ

धमस पाखरा रौळ गैणाग धूजे धरा, नड़े गजथाट पहाड नमिया ।
गुरड अनरघ तणी झडप लागी गढा, गढपती नाग दहवाट गमिया ।।१।।
झगरा गिरां सहरां थका झाटके, विम्मरां गिरा हूतां बिचाळै ।
नव नवा प्रसण नवकुळ जही नीवड़ै, किया आहूत धख-पख काळै ।।२।।
आपड़ै औझडै घड़ै वीठळ तणै, कोढिया बाढ दाटक करारा ।
आस पामे गया नास समदा तटे, सास गिणता रहै प्रिसण सारा ।।३।।
गुरड़ जेम पाखिया नाग अगमांगमे, गौड़ गज बध धज बध गोड़े ।
अवर पखियां जही ताळीयै न उड़ै, माळियै सोहियो प्रिसण मोड़े ।।४।।

२४. गीत राजा अनिरुद्धसिंघ गौड़ रौ

कथा अेमि अदभूत सायर कहै गग सुणि, प्रगट परवाह नै भेद पायै ।
साथ ताहरै तिको गुपत बहती सदा, आज किम सुरसती प्रगट आयै ।।१।।

---

२३. गीतसार—इस गीत मे गीतकार ने राजा अनिरुद्धसिंह का गरुड के साथ रूपक बांधा है । गरुड गिरि-कन्दराओं, विटपो के सघन समूहो और विवरो मे छिपे नागो को अपनी पख-झपटो से नष्ट कर डालता है, वैसे ही राजा अनिरुद्धसिंह भी अपने शत्रुओं को नगरो, दुर्गों और दुर्गम आश्रयस्थलो से खोज कर मार डालता है ।

१. धमस – ध्वनि विशेष । पाखरा रौळ – अश्व कवचो की ध्वनि । गैणाग–आकाश । धूजे – कांपते है । नडे – झुकते हैं, बंधन मे पड जाते है । गजथाट – गज सेना । नमिया – नम्र हुए, झुक गए । झडप – झपट, पंख-प्रहार । गढपति नाग – गढाधीश रूपी सर्प । दहवाट – नष्ट हो गए ।

२. झगरां गिरा – पर्वतो में की सघन विटपावळिया । थका – सहित । झाटके – प्रहार करे । विम्मरा – विवरो मे । हूता – से । बिचाळै – मध्य मे । प्रसण– रिपु । नवकुळ – नव कुलो के सर्प । नीवडै – समाप्त हुए । आहूत – आमन्त्रित । धख-पख – गरुड ।

३. आपडै – भगते हैं, ताप से । औझडै – प्रहारो से । काढ़िया बाढ – तलवारो मे से निकाले । पांमे – पाकर । नास – भाग गए । तटे – किनारे । सास – श्वास ।

४. पाखिया – पखो वाले । नाग – सर्प । अगमांगमे – अगम्य स्थानो पर गमन करने वाले । धजबध – ध्वजधारी, अश्वपति । ताळीयै – ताली बजाने से । माळियै – महलो मे, अटारी में ।

---

२४ गीतसार—प्रस्तुत गीत मे कवि ने राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ के पराक्रम को प्रकट करने के लिए समुद्र और गगा के सम्वाद के रूप में युद्ध की भयानकता का वर्णन किया है । समुद्र ने गंगा से पूछा—हे गगे ! तेरे प्रबल प्रवाह का रहस्य नही मिला और सरस्वती, जो सदा गुप्त रूप से भूगर्भ में बहती थी, आज वह अचानक प्रकट कैसे हो गई ?

१. अेमि – इस प्रकार । सायर – सागर । परवाह – बहाव, प्रवाह । नै – को, नहीं । ताहरै – तेरे । तिको – वह । गुपत – गुप्त, लुप्त । बहती – प्रवाहित । किम – कैसे ।

ऊह अचरिज थयौ सुरसरी ईखता, लाल जळ विमळ नो कदी लहियौ ।
प्रछन रहियौ तिको प्रगट किम पेखजै, ब्रहम सुत तणौ परवाह वहियौ ॥२॥

रटै भागीरथी सुणौ लहरी रवण, लाल रग रुधिर चौ नीर लागौ ।
कळह तटि गवड हे गै भडा कचरिया, भिड़ै पूरव तणौ साह भागौ ॥३॥

मछ घड खोपरी तिरै कछ माछळै, येमि जमना वहै दळ अपूठै ।
असो जुध जीतियौ महाराजा अनौ, अजै गगा तरंग लाल ऊठै ॥४॥

२५. गीत परणवा रा वीनांण रौ दूदा नगराजोत रौ

वरीयाम सदा फिरतो रिण बानै, अचळा हरौ वीद आंमांन ।
दिखणी घड़ा पर जै दूदो, जोगणपुरा तणा दळ जान ॥१॥
पुड घर पख जोगणी पूंखै, नीधक घाव दमांम नीहाव ।
चौरग सूधे पगे चालियौ, रौद घड़ा दिस वाको राव ॥२॥

---

२५. गीतसार—उपर्युक्त गीत मे युद्ध-क्रीडा का विवाह के दस्तूरो के साथ रूपक बाधा हैं । वीर दूदा दिल्ली की सैन्य दल रूपी बरात को सज्जित कर दक्षिण प्रदेश के विद्रोही शासको की सेना रूपी दुलहिन का वरण करने के लिए सग्राम रूपी मडप मे विचरण करता है ।

---

२ ऊह – यह । थयौ – हुआ । सुरसरी – गंगा । ईखतां – देखते । कदी – कब से, कभी भी । लहियौ – लिया, प्राप्त किया । प्रच्छन – अप्रकट । तिको – वह । पेखजै – देखे । ब्रहमसुत तणौ – सरस्वती नदी का । वहियौ – बहा, चला ।

३ रटै – कहती है । भागीरथी – गगा । लहरि रवण – समुद्र । रुधिर चौ – लोहू का । लागौ – लगा । कळह – युद्ध । तटि – तट, किनारा । गवड – गौड क्षत्रिय । है – हय, घोड़े । गै – गय, हाथी । कचरिया – सहार किया । भिड़ै – भिड कर । पूरव तणौ – पूर्व प्रान्त का । शाह – शाहजादा, शाह शुजा । भागौ – भाग गया ।

४. मछ – मत्स्य । घड – घट, शरीर । खोपरी – कपाल, खोपडी । तिरै – तैरते हैं । कछ – कछुए । मांछळै – मछलियां । जमना – यमुना नदी । अपूठै – उलटा, पीछे की ओर । असो – ऐसा । अनौं – अनिरुद्धसिंह ने । अजै – अब तक । ऊठै – उठती है ।

१. वरीयाम – श्रेष्ठ वीर । रिण बांनै – युद्ध की पोशाक । वीद – दुलहा । आंमान– दृढ । घडा – सेना ।

२. पुड़घर – पृथ्वीतल । पूंखै – स्वागत करती है । दमाम – नगारे । नीहाव – घोष । चौरग – चवरी, चतुरगिनी सेना । रौद घड़ा – मुसलमानो की सेना । वांको राव – विकट राव, बांका योद्धा ।

अछर उछाह आवाज आरती, घडियौ मोहरत विकट घणौं ।
ऊपर बाण पड़तै आखा, तोरण गौ नगराज तणौं ।।३।।

बाजै हाक बीर धुन वेदा, चवै महारिख मंगळाचार ।
घड भड बेहड़ आडीयै धारे, वर लाडीयै हुग्री वौहोवार ।।४।।

दिली वैरात छात पत दौळा, दूदौ वर राजा दिखण ।
सवगण हरौ वरे साहिजादी, रायजादौ पोढियौ रिण ।।५।।

२६. गीत बिलोवरणा रा बीनाण रौ दूदा नगराजौत रौ

समहर गजबोळ रौळिग्रै साबळ, वैसर बैसर तोलतौ बळ ।
दिली सहायत अचळ दूसरौ, दूद विरोळै दिखण दळ ।।१।।

आहव मांट थाट ऊलटता, नेजडां भाट रवाट नैहाव ।
खाटा थाट दही जेम खागे, रौदा मथै बांकड़ौ रावट ।।२।।

मिळ मथांण धाराळ तणै मुंह, जत्र कत्र सत्र होयै जणौ जण ।
वार वार दध जेम विलोग्रै, ताईयां दळ नगराज तण ।।३।।

---

२६ गीतसार—इस गीत मे कवि ने शत्रु सेना के विघटन का दधि मथन के साथ रूपक बाँधा है । कवि का कथन है कि वीर-श्रेष्ठ दूदा ने युद्धांगण रूपी मटके मे अरि रूपी दधि को खड्ग रूपी मथनी से मथकर यश रूपी मक्खन निकाल लिया ।

---

३. अछर — अप्सरा । उछाह — उत्सव । घडियौ मोहरत — घडिया मुहूर्त्त, समय के मान विशेष का मुहूर्त । बाण — तीर । आखा — अक्षत । गौ — गया । नगराज तणौ — नगराज का तनय ।

४. चवै — बोलते हैं । महारिख — नारद । आडीयै धारे — तिरछे प्रहार । लाडीयै— दुलहिन के ।

५. वैरात — बरात । छातपत — छत्रपति । दौळा — चौतरफ । हरौ — वंशज । रायजादौ — राजकुमार ।

१. समहर — युद्ध । गजबोळ — गजव्यूह, गजसेना । रौळिग्रै — रौंदता है, कुचलता है । साबळ — भाला विशेष । वैसर बैसर — पृथक पृथक ।

२. आहव — युद्ध । मांट — मटका, विलोने का पात्र । थाट — सेना, दल । नेजडां — भालों के । भाट — प्रहार । रवाट — रई, मथनी । नैहाव — ध्वनि । खाटा थाट — रिपु सेना । दही — दधि । रौदा — मुसलमानो को । मथै — मथने की क्रिया का भाव ।

३. धाराळ — तलवार । जत्र कत्र — खंड विखंड । सत्र — शत्रु । जणौ जण — जन जन । वारवार — बारम्बार । विळोग्रै — मथे । ताईया दळ — आततायी समूह को ।

कळ चाळण चद्रसेन कळोधर, कळहि कळहिये वहै कस ।
काळा तै दळ मथै कांढियौ, जुग मांखण ऊजळो जस ॥४॥

२७. गीत ससंद सोखण रै बौंनांण री राव सत्रसाल री

रिम अुदधि सतौ अगसति रुख, रिमहर पनिग सतौ पखराज ।
रम झळ मगळ सतौ जळ ची रुख, रिम तरवर सत्रसल गजराज ॥१॥

सत्र भुज वीस राम सुजि सत्रसल, कहर कोप रुद्र आप कितौ ।
सत्र दळ थाळ विसाळ नाथ सुत, सत्र दंताळ लंकाळ सतौ ॥२॥

सुजि अरि रयण गयण मणि सत्रसल, वळी अरजन सर सो वीधन ।
अरि घट अध्रम सुध्रम घट सत्रसल, अरि ईंधण सत्रसल अगन ॥३॥

---

२७. गीतसार–गीतकार ने प्रस्तुत गीत में बूंदी नरेश शत्रुशाल हाडा का अगस्त, गरुड, जल और गजराज तथा शत्रु दल को समुद्र, सर्प, अग्नि, वृक्ष आदि कह कर रूपक रचा है । वह कहता है कि शत्रु सेना अथाह समुद्र है तो उसका शोषण करने के लिए शत्रुशाल अगस्त ऋषि है । शत्रु पक्ष अग्नि की प्रचण्ड लपटें हैं तो शत्रुशाल उसको शान्त करने के लिए जल है । शत्रु क्रुद्ध नाग है तो शत्रुशाल गरुड है । शत्रु तरुवर हैं तो शत्रुशाल उनका उन्मूलन करने के लिए मदोन्मत्त गजराज है ।

---

४. कळ – कला । कळोधर – कुल को धारण करने वाला, कुल का उद्धारक । कळहि – युद्ध । कळहियै – योद्धाओं के । कस – सार, निचोड़ । काळा – वीर । तैं – तुमने । काढ़ियौ – निकाला । माखण – मक्खन । ऊजळो जस – उज्ज्वल कीर्ति ।

१. रिम – रिपुजन । उदधि – सागर । सतौ – शत्रुशाल । अगसति – अगस्त ऋषि । रुख – तरह, स्वभाव का । झळ मगळ – अग्नि ज्वाला । जळ ची – जल की । तरवर – वृक्ष ।

२. सत्र – शत्रु । भुज वीस – रावण । सुजि – वह । कहर कोप – भयानक क्रोध, जहर । रुद्र – शिव । थाळ – स्थल । विसाळ – विशाल भूमि । नाथ सुत – गोपीनाथ का पुत्र, शत्रुशाल । दंताळ – हाथी । लंकाळ – सिंह ।

३. सुजि – वे । अरि – शत्रु । रयण – रात्रि । गयण मणि – सूर्य, गगन मणि । अरिघट – शत्रु सेना, अधर्म । ईंधण – ईंधन, लकड़ी । अगन – अग्नि ।

२८. गीत व्याल रा ओनाण रौ राव सत्रसाल हाडा रौ

घर चलियौ झाळ ववरहर विखधर, भर बावी अजमेर भर ।
नाग दवण सत्रसल नेडाणौं, डसे न रांणौ तेण डर ।।१।।

आलम चील अखील आवियौ, पाये तखत रांको पीराण ।
सारग नवण नजीक नाथ सुत, खायँ न तिण सकियौ खूमांण ।।२।।

साहिजिहांन बराड़ अध्रप सरप, महि अजमेर दराड़ मडाण ।
विख बळ गुमण आसनौ वसियौ, रहियौ तेण अडसीयौ राण ।।३।।

चगथौ पनंग हळाहळ चाढण, रतन कळोधर जडी रयण ।
आहड नाथ झटक नह आयौ, फरियौ पाछौ पटकि फण ।।४।।

---

२८ गीतसार–प्रस्तुत गीत में बादशाह शाहजहाँ रूपी विषधर द्वारा क्रुद्ध होकर महाराणा मेवाड को डसने के लिए प्रयाण करने पर ,राव शत्रुशाल द्वारा उसे बंधन में लेने (रोकने) का रूपकात्मक वर्णन हैं । कवि कहता है कि बादशाह रूपी विषधर ने कुपित होकर मेवाड़ को पराजित करने के लिए दिल्ली से प्रस्थान किया और बाबी रूपी अजमेर दुर्ग मे आकर ठहरा। परन्तु उस नाग को शत्रुशाल ने बीच ही मे अवरुद्ध कर दिया, जिससे वह राणा को डस नही सका ।

---

१. झाळ – विष ज्वाला । ववरहर – बाबर का पौत्र या वंशज । विखधर – विषधर । वांवी –,सर्प का विवर । भर – बालुका का बडा टीला, समूह । नागदवण – नागदमण । नेडाणौ – बांध दिया, नाथ डाल दी । डसे – काटता, डसता । तेण – उसके ।

२. आलम चील – बादशाह रूपी सर्प । अखील – रुष्ट होकर । पाये – चरणो मे । तखत – तख्त । पीराण – पीर के, ख्वाजा साहब से प्रयोजन है । सारग – सर्प । नवण – नमाने को । खायँ न – खा नही सका, डक नही लगा सका ।

३. बराड – भयानक, हलाहल, विष से भरा । अध्रप – अतृप्त, भूखा । दराड मडाण – विवर बना कर । विख बळ – सेना रूपी विष के बल पर । आसनौ – आश्रय, ओट । अडसियौ – विना डक लगवाए । रांण – राना, मेवाड नरेश ।

४. चगथौ – मुसलमान । पनग – साप । हळाहळ – विष । रतन कळोधर – रत्नसिंह के कुल का उद्धारक, शत्रुशाल । जडी – बूंटी । आहड नाथ – आहड नरेश, महाराणा । पाछौ – पीछे ।

२६. गीत अगस्थि रा बीनांण रौ राव सत्रसाल रौ

तरग सार धारां तणी निहग छवतां तरळ, घरहरे गाज त्रंबाट घोखै ।
ऊफणै सैन दिखणाध वाळा उदधि, सता अगस्ति पखौ कवण सोखै ।।१।।

लोहरी लहरि नभ गहर परसै लंगस, वार चत्रधार तिण वार दीधा ।
विळवै वार समराथ जळ दळ विगरि, कुंभ सुत जेमि सुत नाथ कीधा ।।२।।

ऊपडै वजर गगन दुरसि आभड़ै, भरै घट पांण आरांण रै भाय ।
थाट साहाण समद लक वाळा थया, रीख जेही पिया बूंदी तणै राय ।।३।।

आखजै जोड़ पै वोड अेतौ अन्तर, खग अगनि प्रचड जळ जेम खीजै ।
अपच लागौ समद मुनिंद ऊतारियौ, वारि दळ जारियौ भोज बीजै ।।४।।

---

२६. गीतसार—प्रस्तुत गीत में कवि ने गीत नायक राव शत्रुशाल हाडा को अगस्त ऋषि और दक्षिण प्रान्त के प्रान्तपाल औरंगजेब और मुराद को समुद्र के रूप मे अंकित कर रूपक बनाया है। गीत मे लिखा है कि आयुध धारा रूपी चंचल लहरें आकाश क स्पर्श करने लगी और रणवाद्य का घोष उदधि जल के समान गर्जना करने लगा। दक्षिण प्रदेश की असीम सेना रूपी अथाह जल राशि को राव शत्रुशाल रूपी अगस्त मुनि के अतिरिक्त अन्य कौन रोक सकता है ?

---

१. तरग – लहर। सारधारां – शस्त्रधाराएँ। निहग – आकाश। छवता – स्पर्श करता। तरळ – चपल, वेगवती। घरहरे गाज – घुरघुर की गर्जन। त्रम्बाट – नगाड़े। घोखै – घोष करते। ऊफणै – जोश मे भर कर। उदधि – सागर। सता – शत्रुशाल। अगस्ति – अगस्त ऋषि। पखौ – विना।

२. लोहरी – आयुधों की। लहरि – लहर। नभ गहर – आकाश मे गंभीर। परसै – स्पर्श करे। लंगस – सेना, पक्तियां। वार – प्रहार, जल। चत्रधार – चौधाराओ ने। तिण वार – उस समय। विलवै – रोके। समराथ – समर्थ। जळदळ – सेना रूपी जल। कुंभ सुत – अगस्त ऋषि। सुतनाथ – शत्रुशाल।

३. वजर – वज्र। गगन – आकाश। आभड़ै – स्पर्श करे। घट-पांण – सेना रूपी जल। आरांण – युद्ध। थाट – सैन्य समूह। लकवाळा – दक्षिण प्रान्त वाले। थया – हुए। रीख – ऋषि। पिया – पी गया।

४. आखजै – कहते है। खीजै – नाराज होकर। अपच – बदहजमी। समंद–समुद्र। वारिदळ – सेना रूपी जल। जारियौ – पचाया। भोज बीजै – अभिनव भोज ने, राव शत्रुशाल ने।

३०. गीत नाव रा बीनाण रौ राव सत्रसाल हाडा रौ

जळाबोळ दिखणाद धरा सेन चढिया जरै, धार धारां केई रूप धरिया ।
तेण जळ बूडतै सकळ हींदू तुरक, तिजड़ सता राव री नाव तरिया ।।१।।

ऊहू साहू बिहूं दिखण धरा ऊफणै, भमण दळ आलमां जळा भव का ।
पाळ रा बिहु बल डूबतां पैरिया, नाथ रा तणी बाणास नवका ।।२।।

पांण महराण दिखणाद वाळा पसण, छोळ आउध मुखे जैत छीजै ।
तारिया हूत गरकाब ढीली तणा, बिजड बेड़ा करै भोज बीजै ।।३।।

खड़ग कएत तणां तका लागा खडै, ऊबरे तका जळधार वारै ।
गहर भर तारियौ छतौ खत्रियां गुर, तवै संसार गुर सदा तारै ।।४।।

---

३०. गीतसार—उपर्युक्त गीत में कवि ने शाहजादे मुराद और औरगजेब की फौज को प्रलय-कालीन जल तथा राव शत्रुशाल की कृपाण को नाव बना कर रूपक-विधान किया है। वर्णन हुआ है कि प्रालेय जल के समान अनेक धाराओ में विभाजित दक्षिण प्रान्त की सेनाएँ उमड कर चली। उस अगाध जलराशि तुल्य सेना मे हिन्दू और यवन सभी डूब जाते, किन्तु राव शत्रुशाल की तलवार रूपी नौका का सहारा पाकर बच गए ।

---

१. जळाबोळ – भयकर, जलप्लावित । दिखणाद धरा – दक्षिण धरा, दक्षिण प्रान्त । सेन – सेना । जरै – जब । धारधारा – अनेक धाराओ मे । रूप धरिया – रूप किए हुए । तेण – उस । बूडतै – डूबते । तिजड – कृपाण। सताराव री – राव शत्रुशाल की । तरिया – तरे, बच गए ।

२. ऊहू – उमग, जोश मे । साहू बिहू – दोनों शाहजादे । ऊफणै – जोश से उफनते । भमणदळ – सेना रूपी भ्रमर । आलमां – ससार । जळाभव – जलकार । पाळरा – किनारे वाले, अवरोधक । पैरिया – तरे, उबरे । नाथरा तणी – गोपीनाथ के पुत्र की । बाणास नवका – तलवार रूपी नौका में । पांण महराण – समुद्र जल । पसण – शत्रु । छोळ – लहर । आउध – शस्त्र । छीजै – क्षीण होते है ।

३. हूत – से । गरकाब – जलमग्न, डूबे हुए । ढीली – दिल्ली । बिजड – तलवार । बेडा – नौका । बीजै – दूसरे ।

४. खडग – कृपाण । तका – वे । वारै – बाहर । गहर भर – गर्व धारण कर । छतौ – शत्रुशाल । खत्रियां गुर – क्षत्रिय-गुरु, क्षत्रिय श्रेष्ठ । तवै – कहता है । गुर – गुरु ।

३१. गीत राव सत्रसाल रौ धोलपुर रा वेढ़ रौ

पड़ै जागिया अखमी रौळ विखंमी नोहाव पड़ै,
रैण धोम लागी वोम रुकै पंख राह ।
तेडै रथ गीरभा रा रंभा रा लड़ग तूटै,
साहां वेहुं सीस जूटै वळा वध साह ॥१॥

खेलै कळाधार धीग डडाळां पखाळां खमैं,
रणकै भेरी वीरूप सूरा भरै रीस ।
खेळा मिळै वीर चंडा मारतडा पंग खड़ै,
अड़ै ऊभो सुरत्ताणां चहूवाणां ईस ॥२॥

कोमडां भणकै गुणां उड़ै तीर केवराण,
अरावा धड़ूकै किनां फाटै आसमाण ।

---

३१ गीतसार–प्रस्तुत गीत मे गीतकार ने राव शत्रुशाल हाडा के धोलपुर के समरांगण में वीर-गति प्राप्त करने का ओजस्वी वर्णन किया है । कवि वर्णन करता है कि इधर तो युद्ध वाद्यो पर चोटें पड़कर विकराल वीरनाद गूजने लगा और उधर तोपो के गोलादि के भयानक प्रहार होने लगे । गोलो की ज्वाला रणभूमि से उठ कर आकाश के जा लगी । पक्षियों का मार्ग रुक गया । आकाश मे देवताओ और अप्सराओं के विमानों की पंक्तियां जुड गई । यों दोनों शाहजादो की सेना से बूंदी नरेश घमासान युद्ध करने लगा ।

---

१ जागिया – नगारो पर । अखमी – असह्य, विकराल । रौळ – ध्वनि । विखमी–विषम । नोहाव – प्रहार । रैण – भूमि, धूलि । धोम – धूम, ज्वाला । वोम – व्योम, आकाश । पखराह – पक्षियों का मार्ग । तेडै – हांके, चलाए । गीरम्भा–देवता । रभारा – अप्सराओ के । लडग – पंक्तियां । साहां – शाहजादो । वेहू – दोनो । जूटै – जुडे, जूटे । वळावंध साह – बूंदी राज्य का स्वामी ।

२ कळाधार – जांगिड़, नक्कारची । धींग – जबरदस्त, वीर । डडाळां – भाला, दण्डक । पंखाळा – बाण । खमैं – सहन करते है । रणकै – ध्वनि करते हैं । भेरीं – वाद्य विशेष । वीरूप – भयावह । रीस – क्रोध, रोष । वीर – बावन वीर, शिव के गण । चडा – चण्डिका पुत्र । मारतंडा – सूर्य । पंग – अरुण । खडै – खडा रहा । ऊभो – खडा । सुरत्ताणा – मुराद और औरंगजेब से । चहूंवाणा ईस – शत्रुशाल ।

३. कोमडा – धनुषो की । भणकै – ध्वनि करती है । गुणां – प्रत्यंचाएं । केवराण–तीरो के फल, गांसी । अरावा – तोपें । धड़ूकै – दहाडती हैं, गर्जती हैं । किनां – अथवा । फाटै – विदीर्ण होता है । आसमाण – आसमान .

जामळा ऊछळै छडा रायजादो साहिजादा,
औरंगा मूराद सतो तेवडै आराण ॥३॥

घंघूमै आरीठ घटा आवटै मथाण घाण,
उडै फाड़ कूंभाथळा वरगा उरग ।
राकसा बिभाडै पाडै अखाडै बजाडै रूक,
नाथ रौ सूरां रमाडै ऊपाड़ै निहग ॥४॥

सड़क्कै जनेवा साट काटमे दडक्कै सीस,
डोळ छूटै असुडां खळक्कै सूडा डड ।
कड़ां झडै किरम्मां बरम्मा पडै रूक झीक,
ऊछळै चरम्मां हस आकासे उडत ॥५॥

पाड़ै धजां चम्मरा सु पक्खरा थडमां पाड़ै,
नरां गिरा पाड़ै करा ऊधडां निराट ।
पाडै थूळ बगाळा अडाळां दळा झूळ पाडै,
साहां बेहू सीस पाडै भीड़ फाडै बाट ॥६॥

जामळा – जोडे, दोनो । ऊछळै – उछलते है । छडा – भाले । रायजादो – राजा का पुत्र, शत्रुशाल । औरगा – औरगजेब । सतो – शत्रुशाल । तेवड़ै – प्रारभ करे । आराण – युद्ध ।

४. घंघूंमै – गजसमूह, चारों ओर चक्कर लगा कर घूमते हैं । आरीठ घटा – शत्रु सेना के । आवटै – सहार करें, उत्तेजित । मथाण घाण – भयानक युद्ध । फाड– फटकर । कूंभाथळा – हाथियों की सूडे । वरगा – टुकड़े, खड । उरग – छाती के । राकसा – असुरो, मुसलमानो । बिभाडै – सहार करते । पाडै – भूमि पर गिराते है । अखाड़ै – रणस्थल मे । रूक – कृपाण । नाथ रौ – गोपीनाथ का पुत्र । रमाडै – रमण करवाता है । निहग – योद्धा ।

५. सडक्कै – सडड की ध्वनि । जनेवा – तलवारें । साट – शस्त्र विशेष । दडक्कै– ध्वनि विशेष । असुडा – कुम्भस्थल । खळक्कै – गिरते हैं । सूडाडड – शुण्डदण्ड । कडां – कडियां । झडै – खुलते है, कट कर पडते है । किरम्मा – किरचे होकर, तलवारो से । वरम्मा – कवच । रूक – तलवार । झीक – प्रहार । चरम्मां – ढालें, शरीर, चर्म । हस – प्राण । उड त – उडते है, निकलते हैं ।

६. धजां – ध्वजाएँ, अश्व । चम्मरां – चवर । पक्खरां – पाखरें, घोडो की झूलें । थडमा – समूह मे । करां – हाथो से, हाथी । निराट – बिलकुल । थूळ – समूह, स्थूल । वगाळां – मुसलमानों । अडाळा – सामना करने वालो को । झूळ – समूह । फाडै – चीर कर रास्ता बना कर । बाट – मार्ग ।

लद्धा भोग वारंगना धूरजटी माळ लद्धा,
　　धापै चडी श्रोण लद्धा भाखै धिनौ धिन्न ।
घड़ा भार गोम लद्धा बावने आहार लद्धा,
　　राम तेज धांम लद्धा दूसरै रतन्न ॥७॥

३३. गीत हाथी रा बीनांण रौ महाराजा जसवंतसिंघ रौ

मद मोख वहै आंकुस नह मांनै, लंगर सदा वणावै लाज ।
अरियण सहर तणां आमूळै, राजा जसो असो गजराज ॥१॥

व्रख जड़ तोड़ मोड वैरियां, घर धारूजळ दांत धरै ।
मारू राव असो मद मैंगळ, कोट गढ़ां सैंलोट करै ॥२॥

गजन सुतण साह छळ गाढो, भाजे भुरज उरड़ भैभीत ।
पाण सुजड ऊपाडै पोगर, जोरावर अेहो रिण जीत ॥३॥

---

३३. गीतसार—प्रस्तुत गीत में महाराजा जसवंतसिंह के पराक्रम की हाथी से तुलना करते हुए लिखा है कि वह अपनी मस्ती में मद प्रवाहित करते हुए निरंकुशता पूर्वक विचरण करता है। वह लज्जा रूपी लंगर धारण किए रिपुओं के नगर रूपी वृक्षों का जड़ से उन्मूलन करता चलता है ।

---

७. लद्धा – प्राप्त हुआ। वारंगना – अप्सराओं को। धूरजटी – शिव को। धापै – तृप्त हुई। चडी – देवी। श्रोण – रक्त से। भाखै – कहती है। धिनौ धन्न – धन्य हो धन्य हो। घड़ा भार – सैन्य समूह को। गोम – आकाश लोक, पृथ्वी लोक। बावने – बावन वीरों को। दूसरै रतन्न – द्वितीय राव रतन ।

१. मद मोख – निर्बंध मस्ती से, मद बहाता। वहै – चलता है। आंकुस – अंकुश, भय। लंगर – पुरुषों के पैरों में पहिनने का स्वर्णाभूषण। अरियण – वैरियों के। आमूळै – उन्मूलन करता। जसो – जसवंतसिंह, यशवंतसिंह। असो – ऐसा।

२. व्रख – वृक्ष। जड़ तोड़ – जड से उखाड़ कर। धारूजळ – तलवार। दांत – दन्त। मारूराव – मारवाड़ का स्वामी। मद मैंगल – मस्त गज। सैंलोट – सपाट, समतल।

३. गजण सुतण – गजसिंह का पुत्र। छळ – युद्ध। गाढ़ो – दृढ़। भाजै – ध्वस्त करे। भुरज – बुर्ज, किले। उरड – जोश में भर कर। पाण सुजड – तलवार की शक्ति से। ऊपाड़ै पोगर – शुण्ड उठाकर। जोरावर – प्रबल। अेहो – ऐसा।

धणों श्रोप पवाड़ा घूघर, बाज धज स डाण बीनांण।
चमर बाधै गुणै चरचियौ, नाद घटा बाजै नीसांण ॥४॥

३४. गीत नाग दाह रा बीनांण रौ राजा रामसिंघ रौ

सरपदाह जनमेजय पतिसाह झालण सिवौ, प्रथीपत बिन्है हठि पड़े श्रणपार।
सरणि साधार खत्रभार धरिया सगह, श्रासतीक जेमि थियै रांम श्राधार ॥१॥

परीछत साहिजिहांन सुत कोपियौ, तक्षक होमण गहण साह सुत तांणि।
तपोधनि जही हिंदवाण चाढण प्रभति, जरू रखपाळ जैसिंघ सुत जाणि ॥२॥

करण श्रहिमेद श्रहवन हरौ कोपियौ, टळै न वळै जहांगीर हर टेक।
बाहा पै गारयक जिम हूवौ बहसि, श्रभै पंजर महासिंघ हर श्रेक ॥३॥

श्रखिल रजरीत रा सिध लागा श्ररसि, भुवणि मेछाण रा माण भागा।
निभै नरनाथ श्रहि हाथ निरवाहियौ, श्रहि सिवौ दोइण दिलेस श्रागा ॥४॥

---

३४ गीतसार—प्रस्तुत गीत मे कवि ने राजा रामसिंह कछवाहा द्वारा राजा शिवा मरहठा को बादशाह औरंगजेब के कैतवपाश से बचाने का राजा जन्मेजय के नागदहन यज्ञ के साथ रूपक रचा है। कवि ने लिखा है—बादशाह रूपी जन्मेजय ने शिवा रूपी तक्षक का नाश करने के लिए युद्ध रूपी यज्ञ का अनुष्ठान किया किन्तु आस्तिक (शुकदेव मुनि) रूपी राजा रामसिंह ने रक्षक बन कर शिवा को उबार लिया।

---

४. श्रोप – उपमा योग्य, शोभायमान। पवाड़ा – प्रशसा, प्रशस्ति। घूघर – घुघरू। बाज – घोड़े। धज – योद्धा। डाण – मद। चरचियौ – चर्चित किया। बाजै – बजते हैं।

१. नागदाह – सर्पों को जलाने का यज्ञ, नागयज्ञ। बीनांण – विज्ञान। झालण – बन्दी बनाने के लिए, भस्म करने। सिवौ – छत्रपति शिवा मरहठा को। बिन्है – दोनों। हठि पडै – हठ चढे। श्रणपार – अपार, अति। खत्र भार – क्षत्रियपन के दायित्व का भार। धरियां – धारण किए। सगह – सगर्व। श्रासतीक जेमि – आस्तिक की भाँति, शुकदेव मुनि की तरह। थियै – हुए। राम – राजा रामसिंह।

२. परीछत – परीक्षित (रूपी)। तछक – तक्षक नाग। गहण – पकडने के लिए। साह सुत – शाहू के पुत्र शिवा को। तपोधनि जहीं – तपस्वी की भांति। प्रभति– प्रभा, कान्ति। जरू – सुदृढ। रखपाळ – रक्षक।

३. श्रहिमेद – सर्पमेध यज्ञ। श्रहवन हरौ – अभिमन्यु का पौत्र, परीक्षित। टळै न वळै – न छोडता न मुडता। टेक – प्रतिज्ञा से, निर्णय से। गारयक – गारुडिक। बहसि – आगे बढ कर।

४. श्ररसि – आकाश। मेछांण रा – मुसलमानो का। माण – मान, प्रतिष्ठा। निरवाहियौ – निर्वाह किया, बचाया। दोइण – शत्रु। श्रागा – सामने से।

उभै राहां सिरै वधे कूरम आगड़ा, मने जगदीस सवळां तणा माग ।
खोद अरि अमावौ थकौ आडा खड़ै, खोंद सों रांम ऊपाडियैं खाग ॥५॥

—नरहरिदास बारहठ रौ कह्यौ

३५. गीत धोबी रा बीनांण रौ सिवा सीसोदिया रौ

सूरातन सुजळ सार करि सावू, धौवण लागौ सिवौ सधीर ।
पिंड भुंई सिला ऊपरैं पटके, मरे डरे घट काटे मीर ॥१॥
खूम इसी चाढ़ी खूमाणै, धोया इसैं अनोखैं धौत ।
दसतां पडै वीछड़ै डाडर, पिंड कापड़ आवै अणपौत ॥२॥
खग मोगरां घणां खळ खोटै, साह सुतन ओरंग चो सैन ।
इसड़ै चौंप आणियौ अणभंग, मारे कित दिखावै मैन ॥३॥
भाग जिकै कूंड मझि भिळिया, रहे तिकै जुग चाढ़े रूप ।
साह सुतन सेवौ वड सावत, भाजे खग मुह धोया भूप ॥४॥
धोवट घाट अनोखा धोया, सारां मुंह ऊजळा सरीर ।
सिवला तणी वीछळण साम्प्रत, चौळ तणं रंगीया अण चीर ॥५॥

—मोहकमसिंघ मेड़तिया रौ कह्यौ

---

३५. गीतसार—प्रस्तुत गीत में योद्धा कवि ने गीत नायक राजा शिवा मरहठा के रणकौशल का धोबी के कार्य के साथ रूपक बांधा है । कवि कहता है कि वीरत्व रूपी निर्मल जल में लोहा रूपी साबुन लगा कर शिवा रूपी धोबी यवन अमीरों रूपी कपड़ो को धोने लगा । वह नवाबो के शरीर रूपी वस्त्रो को रणभूमि रूपी शिला खण्डों पर पछाट पछाट कर निर्मल करने लगा ।

---

५. वधै – वढे । आगड़ा – प्रतिष्ठा । माग – मार्ग । खोद – खाविंद, बादशाह ।

१. सूरातन – वीरत्व । सुजळ – स्वच्छ जल । सार – लोहा, शस्त्र । सावू–साबुन । धौवण लागौ – धोने लगा । पिंड – शरीर । भुई – भूमि, रणभूमि । सिला – शिला । घट – शरीर । काटे – काटता है, मारता है । मीर – अमीरों के, मुसलमान योद्धाओं के ।

२. खूम – भट्टी का भभका । इसी – ऐसी । चाढ़ी – चढाई । खूमाणै – मेवाड के शासक रावल खुमाण का वंशज, शिवा । धौत – धोने की क्रिया । दसता पड़ै – आतक जन्य भय । वीछडै – विछिन्न होते हैं । डाडर – वक्षस्थल । अण पौत– अन्यतम पौत, सफाई ।

३ मोगरां – मुग्दर । घणां – बहुत से । चो – की । इसड़ै – ऐसे । चौंप – चाह, कीर्ति । आणिया – लाया ।

४ कूंड – कुण्ड, धोबी की कूडी । मिळिया – मिल गए । वड सावत – बड़ा सामंत, महान् वीर ।

५. भांजे – तोड कर । धोवट घाट – धोबी घाट । सारा मुंह – तलवारों की धारा मे । चौळे – लाल रग, रुधिर से ।

३५. गीत दरजीरै बीनांण रौ जगतसिंघ सीसोदिया रौ

दरजो अवरंग बणाई दोमझि, तरकी सुजडि कूत खग तीर ।
रोम रोम खीलाणौ रावत, सद कथा ताहरो सरीर ॥१॥

किलमांपति भेंटे कारीगर, कारी घाव निहाव कर ।
बाळ बाळ जुड़ियौ थारो विप, पैवद आइस तणी पर ॥२॥

पड वुसताज आहणे असपत, दुजडै देतौ खळां दुख ।
केस केस संधियौ कैलपूरा, रावळ अबर तणी रुख ॥३॥

सुत परताप धागां भर सारां, अेळा उजीण दुकान इम ।
काया अमर वुदड़ी कीधी, जगपत गोरख नाथ जिम ॥४॥

---

३५. गीतसार – प्रस्तुत गीत मे कवि ने गीत नायक जगतसिंह सिसोदिया के शस्त्राघातो से आपूरित शरीर का गोरक्षनाथ की कथा के साथ रूपक रचा है। विपक्षी भट बादशाह औरंगजेब को दर्जी तथा उज्जैन के रणक्षेत्र को दर्जी की दुकान बना कर वर्णन किया गया है।

---

१. अवरंग – बादशाह औरंगजेब ने। बणाई – बनाई, की। दोमझि – युद्ध मे। तरकी – कारी, चकती। सुजडि – कटार। कूत – भाला। खग – तलवार। तीर – बाण। खीलांणो – धागे से सिलवाया। रावत – रावत पदवी वाला। सद कथा – सद्य निर्मित कथा, गुदडी। ताहरो – तेरा, तुम्हारा।

२ किलमापति – मुसलमानो के स्वामी, बादशाह। भेंटे – भेंट की। कारीगर – दर्जी। कारी – पैवन्द, थेगली। निहाव कर – प्रहार कर। बाळ बाळ – रोम रोम। जुडियौ – जुडा। थारो – तेरा। विप – वपु, शरीर। आइस तणी – योगी की।

३. पंड वुसताज – शरीर के कारीगर, दर्जी। आहणे – क्षत-विक्षत किया। असपत – बादशाह। दुजडै – तलवारो से। केस-केस – रोम रोम। संधियौ – संधा, जुडा। अबर – वस्त्र। रुख – भांति।

४. धागा – डोरा। सारां – शस्त्रो। अेळा – पृथ्वी, मैदान मे। उजीण – उज्जैन। इम – इस प्रकार। वुदडी – गुदडी। कीधी – की।

३६. गीत गुडी रा बीनांण रौ राणा जगतसिंघ रौ

ग्रहते सत डोर जगा खत्रियांगुर,-बोहो मौजां वित अतुळ बळ ।
उडी जगत ऊपर आहाड़ा, कीरत गुडी तणी कळ ॥१॥

कव कव मुख जयकार करंती, अेळा हूंता गम अगम अुडै ।
मेर सिखर ऊपर मेवाड़ा, चंग जंही गुण वाण चडै ॥२॥

करण सुजाव बधै तो करगां, कळ हूता गम अगम कीया ।
चांढ़े धू - मण्डळ चीतोड़ा, धू धारक जिम व्रम्म धीया ॥३॥

जस वाखांण राज पंछ वाजे, अखिल भुयेण सुणे इम ।
राणा अवर घणां दिन रहसी, जुग जुग पंगी चग जिम ॥४॥

---

३६. गीतसार—प्रस्तुत गीत मे महाराणा जगतसिंह की वदान्यता का वर्णन करते हुए कवि ने उनकी कीर्त्ति का पतग के रूप मे चित्रण किया है । उनकी प्रशंसा करते हुए कवि कहता है—हे क्षत्रियश्रेष्ठ जगतसिंह ! तेरे सत्य की डोरी ग्रहण करते ही यशरूपी पतग ससार मे उड़ने लगी । वह कवियों की वाणी पर बिराजी हुई यत्र-तत्र जयकार करती विचरण करने लगी ।

---

१. ग्रहते – पकडते । सत – सत्य की । डोर – रस्सी । खत्रियांगुर – क्षत्रिय श्रेष्ठ । बोहो मौजा – बहुत सा दान । वित – द्रव्य । अतुळबळ – अपार बल । आहाडा – आहड़ नरेश । तणी – की । कळ – यन्त्र, डोर ।

२. कव मुख – कवि वाणी मे । करती – करती हुई । अेळा – पृथ्वी । हूता – से । गम अगम – गम्य अगम्य । मेर शिखर – सुमेरुगिरि । चग – पतंग । गुणवाण– गुणगाथा । चडै – चढ़े ।

३ करण सुजाव – कर्णसिंह के पुत्र । करगां – हाथो में । कळ – ससार मे, यत्र । धू मडळ – ध्रुव लोक । धू धारक – ध्रुव धारण वाले । धीयां – पुत्री, वाणी ।

४ जस वखाण – कीर्त्ति-वर्णन । राज पछ – राजपक्षी, पतंग । भुयेण – भवन, लोक । पंगी – कीर्त्ति । चंग – पतंग ।

३७. गीत सरप रा बीनांण रौ पेमसिंघ राठौड़ रौ

वर दीनौं सगत वडे गिरवसियौ, खीजवियौ प्रिसणां नै खाय ।
पढ़िया मत्र बिनाई पेमैं, ऊदौ नाग जगायौ आय ।।१।।

पूगी नाळ गाजियौ परबत, पन्दरै सहस गारड़ी पूठ ।
फणधर डसण ऊठियौ फौजां, मत्र जड़ी लागै न मूठ ।।२।।

सजे जमात नवा सिनियासी, करबा जुध आया कहर ।
बाघहरा वाळौ दाटक विख, लागौ ज्यू वागी लहर ।।३।।

भांण हरौ घूबड़ै भुयगम, बाजा जैत बजावै ।
गढ कोटां मोटां गारड़वा, ऊवाही हाथ न आवै ।।४।।

—ऊकाजी बोगसा रौ कह्यौ

---

३७ गीतसार—इस गीत में कवि ने गीत-नायक प्रेमसिंह राठौड को नाग और प्रतिनायक उदयसिंह को सर्प-मान्त्रिक बना कर रूपक का सर्जन किया है। कवि कहता है कि प्रेमसिंह रूपी सर्प ने देवी से वरदान प्राप्त कर विकट गिरि-स्थान मे आवास किया तथा दुर्गम स्थली का आश्रय प्राप्त कर पिशुनो का सहार करने लगा। उसके उपद्रव को समाप्त करने के लिए उदयसिंह रूपी मान्त्रिक ने शक्ति रूपी मत्र को सिद्ध किए बिना ही उससे छेड़ छाड करने लगा।

---

१. वर – वरदान। सगत – शक्ति, देवी ने। गिरवसियौ – गिरि घाटो में आवास बना कर रहने लगा। खीजवियौ – रुष्ट होकर, कुपित होकर। प्रिसणा – बैरियो को। बिनाई – बिना ही।

२. पूंगी – पूगी वाद्य। नाळ – तोप। गाजियौ – गूजने लगा। गारडी–मान्त्रिक। पूठ – पृष्ठ पर। फणधर – सर्प। डसण – दश मारने के लिए। ऊठियौ – उठा। जड़ी – ओषधि, बूटी। मूठ – मुष्टिका, मूठी में चावल जव आदि अन्न के दाने मंत्रित कर फेंकने से यहां मूठ का भाव है।

३. नवा सिनियासी – नवो सन्यासी, नव प्रसिद्ध सिद्ध जो नव नाथ कहलाते है। करबा – करने हेतु। कहर – भयानक, क्रुद्ध होकर, उग्रता धारण कर। बाघहरा – बाघसिंह के पौत्र का। दाटक विख – घातक विष। वागी लहर – तरगें उठ।

४. भांणहरौ – भाना का पौत्र। घूबडे – घाव करने लगा, प्रहार मारने लगा। भुयगम – सर्प। जैत – विजय का। गारड़वां – गारुड़िको के। ऊवाही – उनके भी। हाथ – वश मे।

३८. गीत दालि्दमेद रा बीनांण रौ रांणा जगतसिंघ रौ

असमेद हुआ जुग च्यार ऊपरै, सुज गजमेद वळे सुणिया ।
रांणा जगा जंही राजवीयै, किणही न दाळद मेद किया ।।१।।

अजा दहण गज दहण किया अत, उरंग तुरग नर दहण उधोर ।
आतम दहण किया अधपतीयै, रांणा जही न दहिया रौर ।।२।।

होमिया नाग अजा नर हैमर, गढ़पतीयँ होमिया गयंद ।
करण तणा जेम होम न कीधा, कूटां चहुंअै तणा कुरद ।।३।।

अे वड ज्याग हुआ नह आगै, घणा हुआं पोहौ घणा घणां ।
दाळद होम किया दस सहसै, नव कुळ जेम नव खंड तणा ।।४।।

---

३८. गीतसार–प्रस्तुत गीत मे कवि ने महाराणा जगतसिंह की वदान्यता का अश्वमेघ यज्ञ का रूपक रचा है। चारों युगों मे अश्वमेघ, गजमेघ, अजामेघ और नरमेघ यज्ञ किये जाने का वर्णन तो पढा है किन्तु दारिद्रयमेघ के विषय मे कही नहीं पढा। महाराणा ने अन्य यज्ञो से महान् यह दारिद्रय मेघ किया है ।

---

१. असमेद – अश्वमेघ। गजमेद – गजमेघ। वळे – पुन., फिर। राणां जगा – राणा जगतसिंह। जंहीं – जैसे। राजवीयै – अन्य किसी राजा ने। किणहीन – किसी ने भी। दाळदमेघ – दारिद्रयमेघ।

२. अजादहण – अजामेघ। उरंग – सर्प। तुरंग – घोडे। उघोर – श्रेष्ठ, ऊँचा। आतमदहण – आत्मदाह। अधपतीयै – अधिपति, राजा। रौर – दरिद्रता।

३. होमिया – जलाए। नाग – सर्प। अजा – वकरा। हैमर – हयवर, घोडा। गयद – हाथी। करण तणा – कर्णसिंह के पुत्र ने। कूंटा चहुअै – चारों दिशाओ मे। कुरद – दरिद्रता।

४. अेवड – ऐसा, ऐसा वड़ा। ज्याग – यज्ञ। आगै – पूर्वकाल में, पहिले। घणां – बहुत। पोहो – राजा। दाळद – निर्धनता। दस सहसै – दश हजार ग्रामो के स्वामी ने। नवकुळ – सर्पयज्ञ, सर्प नव कुली माने जाते हैं। जेम – जैसा।

३९. गीत जोग रा बीनांण रौ गोपीनाथ रौ

आसत खग लिया करामत ईजत, सोहड़ा चेलां लियां समाथ ।
आठी पोहर जरद ऊपावै, नाथ नवा जिम गोपीनाथ ।।१।।

जोधां लार अपार जमातां, नाद सुजस सुबजै नीसांण ।
सगता हरो पवण नह साधै, अर साधणां करै आरांण ।।२।।

सार छत्रीस छड़ी साहिया, जोग असो जिण अजर जरै ।
पातल तणा रूप संपेखै, केवी तणा आदेस करै ।।३।।

---

३९ गीतसार–प्रस्तुत गीत मे योद्धा गोपीनाथ का योगिराज के साथ रूपक रचा गया है । गीतकार ने लिखा है । कि गोपीनाथ रूपी योगिराज आस्तिकता रूपी खड्ग धारण कर सुभट रूपी शिष्य-समाज को साथ लिए हुए कवच सहित शोभित होता है । वह योगियों की तरह श्वास की गति की साधना नही करता अपितु अरियो के उन्मूलन की साधना करता है ।

---

१. आसत – आस्तिकता । खग – खड्ग । करामत – करामात, चमत्कार की शक्ति । ईजत – इज्जत । सोहडा – सुभटो का । चेला – शिष्यो का । समाथ – सुसमर्थ । जरद – कवच । ऊपावै – शोभा पावे । जिम – जैसे ।

२. जोधा – योद्धा, भट । लार – पीछे, साथ । अपार – अपरिमित । नाद सुजस – सुयश रूपी नाद । सु बजै – सुशब्द करते हैं । नीसांण – नक्कारे । सगता हरो– शक्तिसिंह का पौत्र । पवण – पवन, श्वास । साधै – सिद्ध करता है । अर – अरि । साधणां – साधना । आराण – युद्ध मे ।

२, सार – हथियार । छड़ी – दण्डक । साहियां – पकडे हुए, लिए हुए । जोग – योग । असो – ऐसा । जिण – जिसने । अजर – जो पराजित नही किए जा सकें । जरै – पराजित करे । पातल तणा – प्रतापसिंह के पुत्र का । सपेखै – देखे । केवी तणा – बैरियो के पुत्र, बैरी । आदेस करै – नमस्कार करते है ।

४०. गीत जींमण रा बीनांण री बलराम राठौड़ री

अख रतौ मदां करेवा अचड़ां, वैर वाराह कमध वरियाम ।
आअैं दळे सांमहो आयो, रूक भुगत करवा बळरांम ।।१।।

चौरग पांत फौज चौवड़ती, फूल धार वारणी फरै ।
कुते हूले मिळै करणावत, काळ भात मनवार करै ।।२।।

भर भर दियै पियाला भालां, अवळे काधे पड़ै अयार ।
मारू दळां करै राउ मारू, माथा ऊपहरी मनवार ।।३।।

घाउ घाउ पांचाम्रत घाते, जण जण पूगौ जुआ जूअौ ।
मेळियौ गळ बाहां मतवाळां, मरणीकां छेतरे मूऔ ।।४।।

---

४०. गीतसार—कवि ने उपर्युक्त गीत में वलिराम राठौड़ की रण-लीला का भोज्य पदार्थों के साथ रूपक रचा है। वह लिखता है कि राठौड़ श्रेष्ठ वीर वलिराम संसार मे अपनी श्रेष्ठ कीर्त्ति का प्रसार करने के लिए क्रोध रूपी मद से आरक्त नेत्र किए आगन्तुक अरि-सेना को भोज्य बनाने के लिए सामने आया ।

---

१. अख रतौ – रक्तिम नेत्र किए। मदां – मद्य से। करेवा – करने के लिए। अचड़ा – उत्तम कार्य, सबसे ऊपर कार्य। वैर वाराह – वैर लेने वाला, प्रतिशोध लेने के लिए। कमंध – राठौड़। वरियाम – श्रेष्ठ वीर। आअैं – आने पर। दळ – सेना। सांमहो – सामने। रूक – तलवार। भुगत – भोजन। करवा– करने के लिए।

२. चौरंग पात – चारो पंक्तियां। चौवड़ती – चारों ओर। फूळधार – शस्त्र प्रहार। वारणी – मदिरा। फरै – फिरे। कुते हूले – भालो के प्रहार, भाले और हूल नामक शास्त्र। करणावत – कर्ण का पुत्र, करणोत शाखा का राठौड़। काळ – मृत्यु। भात – तरह की।

३. पियाला – प्याले। अवळे – उलटे। कांधे – कंधे। अयार – अमित्र, दुश्मन। माथा – मस्तक. ऊपहरी – भेंट, ऊपर से।

४. घाउ घाउ – प्रत्येक प्रहार के द्वारा। घाते – डाले। जूआ जूऔ – अलग अलग। मेळियौ – मिलाए गळबाहां – कंठालिगन। छेतरे – छल से। मूऔ – मारा गया।

४१. गीत राव अमरसिंघ राठौड़ नागौर री

कथन पातसाह सू बुरा मुख काढतो, जोरवर राह तिम राह जूटो।
मयण लटकी किनां छिटकियौ मेरगिर, तड़ण तटकी किनां गयण तूटो ।।१।।

सिलाबत धकेलियौ सिंघ गज सिंघरा, भड़ां रै धाघरट निपट भिड़ियौ।
लळकियौ सोनगिर घरा का इळ उळथळी, पडी कांई बीज कै आभ पड़ियौ ।।२।।

असुरां झाट झड दीयंतो अमरसिंघ, थाट हजारियां तणौ धरियौ।
हुआ काई गोम पुड वोम पुड़ हेकठा, खिवी दामण किनां बजर खिरियौ ।।३।।

छत्रपत छत्रपत पाड़ छतो छाजियौ, बाजियौ कमध जिम राह बटको।
आग झटकी किनां कटहड़ै ऊपरां, कटहड़ै ऊपरां बीज कटकी ।।४।।

---

४१. गीतसार–यह गीत नागौर के राव अमरसिंह राठौड़ द्वारा बादशाह शाहजहाँ के दरबार में बख्शी सलावत खांन को कटार से मार कर धराशायी करने की इतिहास-प्रसिद्ध घटना से सम्बद्ध है। गीतकार ने राव अमरसिंह की कटारी की विभिन्न प्रकार से इसमें प्रशंसा की है।

---

१. काढ़तो – निकालता, बोलता। राह – राहु। तिम – वैसे ही, उसी प्रकार। जूटो – भिड़ा, लड पडा। मयण – समुद्र। किनां – अथवा। छिटकियौ – टूट कर पड गया। मेरगिर – सुमेरुगिरि। तडण – तड़िता, बिजली। तटकी – तड़क से गिरी। गयण – आकाश। तूटो – टूट पड़ा।

२. सिलावत – सलावत खांन। धकेलियौ – धक्का मार गिरा दिया। भडा – भटो। धाघरट – समूह मे। भिडियौ – भिड गया। लळकियौ – झुक कर गिर पड़ा। सोनगिर – स्वर्ण पर्वत। का – अथवा। इळ – पृथ्वी। उळथळी – उथेला खाकर उलटी आ पड़ी। काई – क्या। कै – अथवा। आभ – आकाश।

३. असुरां – मुसलमानों। झाट झड़ – भयकर चोट। दीयतो – देता हुआ। थाट – समूह, ठाठ बाट। हजारियां – हजारों के मनसब वाले शाही सेवक। तणौ – को। धरियौ – कपित हो गया, डर से ठण्डा पड गया। गोम पुड – पृथ्वी खड। वोम– आकाश। हेकठा – एकत्रित। खिवी – चमकी। दामण – दामिनी, बिजली। बजर – इन्द्रायुध, वज्र। खिरियौ – खंडित हो पड़ा, टूट पड़ा।

४. पाड़ – पछाड कर, गिरा कर। छाजियो – शोभित हुआ। बाजियौ – लड़ा। झटकी – झटकने की क्रिया का भाव। कटकी – कड़कने का भाव।

४२. गीत महाराणा जगतसिंघ सीसोदिया रौ

किरणधारियां लहर पौढिम कळा रित कुळ, तेज तोय दिढ अमी लहर सिरताज ।
चकव मीनां अमर चकोरा चाडवा, रवि उदधि मेर ससि राण जगराज ॥१॥

गम निसा तिस भुयण ताप दाळिद गमण, धूप जळ सरण समपण सुधा घन ।
दन प्रियां मछ सुरा रज प्रिया दुथिया, किरणधण महण गिर सोम सुत क्रन ॥२॥

उदह वेळा वडिम महारस दानेत, जौति जळ अचळ सीतळ प्रवळ जांण ।
कोक जलचर निजर दमगचर पाळ कव, मीत सागर गिरद चद खूमाण ॥३॥

नव सपत असट नव लाख नव खंड मभि, ग्रहां सर अनड़ उडपहां उतंग ।
सीरोरह सलिल सीर कमद पातां सरस, सूर सर सिथर हेमकर वियौ संग ॥४॥

---

४२ गीतसार—इस गीत मे कवि ने महाराणा जगतसिंह प्रथम की वदान्यता का वर्णन करते हुए लिखा है कि जैसे चक्रवाक पक्षियो के लिए तेजधनि रवि, मछलियो के लिए तोयनिधि समुद्र, देवताओं के लिए अविचल स्वर्णगिरि आदि आश्रयण हैं, वैसे ही याचक रूपी चकोरो के लिए चन्द्रतुल्य महाराणा जगतसिंह दान देकर सुख प्रदान करने वाला है ।

---

१. किरणधारिया – किरण वालों मे । लहर – तरंगों वालों मे । पौढिम – अचलों मे । तेज – तेजवानो में । तोय – जलवालो मे । दिढ – दृढो मे । अमीलहर – अमृत-तरगो वाला । सिरताज – सिरमौर । चकव – चक्रवाक । अमर – देवता । चाडवा – चारणो, कवियो । रवि – रवि । उदधि – सागर । मेर – सुमेरुगिरि । ससि – चद्र ।

२. गमनिसा – निशा को नष्ट करने वाला । तिस – प्यासो के लिए । भुयण – पृथ्वी । ताप – उष्णता । दाळिद गमण – निर्धनता मिटाने वालो मे । धूप – आतपधारियो में । जळ – पानी । सरण – आश्रयदाता । समपण सुधा – अमृतदाता । घन – द्रव्य । दनप्रियां – दिवस प्रिया, चकवा । मछ – मछली । सुरा – देवताओं । रजप्रिया – रात्रि प्रिया । दुथियां – कवियों । किरण धण – रवि । महण – महार्णव, सागर । गिर – सुमेरुगिरि । सोम – चन्द्र । सुतक्रन – राणा कर्ण का पुत्र ।

३. उदह – उदय । वेळां – लहर । वडिम – स्थिर, बडा । जौति – प्रकाश । अचळ – स्थिर, पर्वत । सीतळ – शीतल । पाळ कव – कवियो के पालक । मीत–सूर्य । गिरद – स्वर्णगिरि । खूमांण – खुमाण का वंशज, जगतसिंह ।

४. सपत – सप्त सिंधु । नवलाख – नवलक्ष नक्षत्र । मभि – मध्य । ग्रहां – ग्रहो मे । सर – सागर । अनड – गिरि । उडपहा – नक्षत्रों मे । उतंग – श्रेष्ठ । सीरोरह – कमल । सीर – सरोवर । कमद – कमोदिनी । पातां – कवियो । सर – मान सरोवर । सिथर – स्थिर, सुमेरुगिरि । हेमंकर – चन्द्रमा । सूर – सूर्य । वियौ – दूसरा । सग – महाराणा सग्रामसिंह ।

४३. गीत लेखण रा बीनांण रौ सादूल पंवार रौ

करि लेखण कूंत पुहि करि कागद, मस करि मांसि रुधिर करि मूळ ।
मांडे मंडोवर मेड़ता माथै, सबळा खत लिखिया सादूळ ॥१॥

कलम छड़ियाळ समर करि पाठो, घण खळ सुद्रब आखरां घाव ।
साखां तेर सम्हे समर करि, सल्है वैर धरि माल सुजाव ॥२॥

लेख घणौं साबळां लिखाणौ, अंग असि मसि करि दोति अरि ।
धार पुरा लगि कटि धूहड़ा, कळि-नामौ राखियौ करि ॥३॥

---

४३ गीतसार—इस गीत मे कवि ने श्रीनगर के स्वामी राव शार्दूल पवार के राठौडो से लडे गए युद्ध का लिखावट के साथ रूपक रचा है । कवि ने लिखा है कि भाला को लेखिनी, पृथ्वीतल को कागज, और रक्त मास की रोशनाई बना कर राव शार्दूल ने मेडता और मडोर के युद्ध-स्थलो मे सशक्त पत्र लिख दिए ।

---

१. लेखण – कलम । कूंत – भाला । पुहि – पृथ्वी तल । मस – रोशनाई । मांसि – मास, आमिष । रुधिर – लोहू । मांडे – लिखे । माथै – पर, ऊपर, सिर पर । सबळा – सशक्त, अमिट । खत – पत्र, ऋणपत्र । लिखिया – लिखे ।

२. छड़ियाळ – भाला, सेल । समर – युद्ध । पाठो – कागज । घण – बहुत । खळ – शत्रु । सुद्रब – द्रव्य, चोट दे कर । आखरा – अक्षरो । घाव – घाव, प्रहारो के निशान । साखा तेर – राठौड क्षत्रिय तेरह शाखाओ मे विभाजित है । सल्है वैर – प्रतिशोध लिया, कवच रूपी वैर । माल सुजाव – मालदेव का पुत्र, शार्दूल ।

३. लेख – लिखत, इबारत । घणौं – बहुत । साबळा – भालो से । लिखाणौं – लिखाया, लिपिबद्ध किया । असि – तलवार । मसि – स्याही । दोति – दवात । अरि – वैरी । धारपुरा – धारापुरी, धार राज्य, पवार । धूहडा – धूहड के वंशज राठौड । कळिनांमौ – ससार मे ख्याति का नाम ।

४४. गीत नग रा बीनांण रौ राव सत्रुसाल हाडा रौ

सुज आया कहर जुंहरी सत्रसल, माल दुरायो नही मही ।
हणियौ घणौं सावळा हाडे, नग मुहडौ राखियौ नही ॥१॥

बाघ घरे ओपत वैरागर, ताअ गळियौ न घाय तन ।
दूजै रतन भांज घड़ दीठौ, रण अहरण भूरौ रतन ॥२॥

ओरसतां आवटियै आयो, पौरस तणी आकरै पांण ।
खीरां तप लागा मुंह खांगा, चीरां हीर हूवौ चहुआंण ॥३॥

---

४४. गीतसार—यह गीत बूदी राज्य के शासक शत्रुशाल हाडा पर रचित है । गीतकार ने राव शत्रुशाल हाडा को जोहरी और मुख को नगीना बना कर रूपक का सर्जन किया है । कवि कहता है कि विपत्तिकाल रूपी शत्रुओ के आने पर जोहरी रूपी शत्रुशाल ने अपने द्रव्य को भूगर्भ में छिपाने का प्रयत्न नहीं किया । और उस वीर ने भालो रूपी घनो के प्रहारो द्वारा मुख रूपी नगीने को अभग नही रहने दिया ।

---

१. नग – नगीना । सुज – वह । कहर – भयानक, युद्धार्थ, संकट मे । जुहरी – जोहरी, रत्नपरीक्षक । दुरायो – छिपाया । मही – पृथ्वी मे । हणियौ – कुचला, पीटा, मारा । घणौं – बहुत ही, घन नामक औजार । सावळा – भालो से । हाडे – चौहानो की हाडा शाखा वाला । मुहडौ – मुख ।

२. बाघ – बाधा के । ओपत – शोभा पाने वाला, उत्पन्न हुआ । वैरागर – वैर रखने वाले । ताअ – ताप से । घाय-तन – शरीर पर घाव लगने से । दूजै – द्वितीय । रतन – राव रत्न सिंह । भाज – तोड़ कर । घड – सेना । दीठौ – दिखाई पड़ा । रण अहरण – रणस्थल रूपी अहरन में, लुहार, सुनार आदि के काम में आने वाला उपकरण विशेष । भूरौ – बहादुर । रतन – रत्न ।

३. ओरसता – अवरस, युद्ध मे । आवटियै – क्रोध में आगबबूला होकर । पौरस तणी – पुरुषार्थ, पराक्रम की । आकरै – तेज, करारे । पांण – बल । खीरां – अंगारो का । तप – ताप, गर्मी । लागा – लगा । खागा – तलवारो का । चीरां – विदीर्ण, घाव से चीरा गया । हीर – हीरा । हूवौ – हुआ । चहुआण – चहुवान कुलोत्पन्न राव शत्रुशाल ।

४५. गीत पदमसिंघ राठौड़ बीकानेर री तरवार रौ

पडै बीज अणगाळ री कडो भूतेस पण, झाळ बंबाळ चखवाळ झडियौ ।
सुद्रसण झाळ बगाळ रै बहे सिर, पदम किरमाळ किरि बजर पड़ियौ ॥१॥

तडित बळागि अंबनागि भसमागि तिम, जागि प्रैलाग री आगि जहियौ ।
खध रौ बहै पण कळस घीआगि खति, कमध रो खागि बरजागि कहियौ ॥२॥

सघण री छटा किरि उपटा अणसरण, सकरण चुवड़ि पण घरण सीधौ ।
बधव री ग्रहण करि उग्रहण अणसरण, करण तण नळ बरण भखण कीधौ ॥३॥

बिन्हा आउध घसण यळ ईस आवध बिन्हैं, नकौ आउध की मन जेम नतीठौ ।
बिहू राह बदै नमौ आमखास बिच, दुजड पांचम तणै रूप दीठौ ॥४॥

---

४५. गीतसार—कवि ने इस गीत में बीकानेर के राजा पदमसिंह राठौड़ की तलवार के प्रहार का मेघ की अग्नि, शकर का भस्मी कडा, त्रिनेत्र की ज्वाला और सुदर्शन चक्र के अमोघ प्रहार से समता करते हुए वर्णन किया है ।

---

१. बीज – विद्युत । अणगाळ – बादल की, अचानक की । कडो भूतेस – शिव का भस्मी कडा । पण – हाथ का । झाळ बबाळ – क्रोध, आग, प्रज्वलित ज्वाला । चखवाळ – नेत्रवाले, शिव । झडियौ – झड़ा, पडा । सुद्रसण – सुदर्शन चक्र । बगाळ रै – यवन के । बहे – चले । सिर – मस्तक पर । पदम – राजा पदमसिंह की । किरमाळ – तलवार । किरि – अथवा । बजर – वज्र ।

२. तडित – बिजली । बलागि – बलाग्नि, लिपट कर । अबनागि – आकाश की अग्नि, नग्न । भसमागी – भस्म करने वाली अग्नि । तिम – तैसे । जागि – जग कर, यज्ञ की, धधक कर । प्रैलागि – प्रलय कालीन । आगि – अग्नि । जहियौ – जैसी, ज्योंही । खध रौ – कधे पर । बहे – चलती है । घीआगी – भयानक अग्नि, करारी । खति – भाँति, रीति । खागि – तलवार । बरजागि – वज्राग्नि ।

३. सघण री छटा – मेह की बिजली । उपटा – उमडी । संकरण – शकर का । चुवडि – वलय, चूड़ा, कडा । उग्रहण – रक्षा । करण तण – कर्णसिंह तनय । नळ बरण – आग वर्णीय । भखण – नाश, आहार ।

४. बिन्हां – बिना, दोनो । आउध – आयुध, हथियार । नतीठौ – अधीर । बिहू – दोनो । राह – हिन्दू मुसलमान धर्म वाले । बदै – कहते हैं । नमौ – नमस्कार करते हैं । दुजड – तलवार । पाचम – पचानन, सिंह । दीठौ – दिखा ।

४६. गीत गुरड़ रा बीनांण रौ दुरगादास राठौड़ रौ

इसौ आग वरजाग औरंग नुगरौ असुर, फिरड अरि दिलीसुर फवाळो ।
असमरा झाड़ ओनाड दुरगौ अडर, करड ले घातियौ नाग काळो ॥१॥

मानतौ जंत्र न मंत्र नह मानतौ, वैंण नह मानतौ मडतौ वीक ।
गुरड़ जिम आसकंन तणौ गावड़ ग्रहे, पिटारे घाळियौ पनग पुंडरीक ॥२॥

खेध पर धांख कर वैरिया गम खरे, जहर करतौ जिकौ जगत जांणै ।
नरदा नीवा तणै छावडे झाल नस, अेतामे भुयग विख कीध आंणै ॥३॥

हमैं निरपख हुओ झाट नाखै नहो, घातियौ सांकडे घणौ घेरे ।
पय उदक भोगवै सरप आठौं पौहर, फूंक फण करै नहो पूछ फेरे ॥४॥

---

४६. गीतसार—इस गीत मे कवि ने वादशाह औरंगजेब रूपी नाग को दुर्गादास रूपी गरुड ने चारो ओर से घेर कर पिटारे में डाल कर प्रभावहीन करने का वर्णन किया है । कवि ने लिखा है कि दिल्लीपति औरंगजेब हलाहल से पूर्ण निगुरा सर्प है, जिसे दुर्गादास रूपी गरुड ने तलवार रूपी पंखों से झाड कर पिटारे मे वन्द कर दिया है ।

---

१. इसौ – ऐसा । आग वरजाग – वज्र की आग जैसा । औरंग – वादशाह औरंगजेब । नुगरौ – मंत्र से भी वश मे न आने वाला, निगुरा । फिरड – विरोधी । अरि – वैरी । दिलीसुर – दिल्लीश्वर, वादशाह । फवाळो – फवने वाला । असमरा – तलवारो से । झाड – प्रहार देकर, गिरा कर, प्रभावहीन कर । ओनाड़ – वीर, अनम्र । दुरगौ – राठौड़ वीर दुर्गादास । अडर – निर्भय । करड – छावड, पिटारा । घातियौ – डाला, बंध किया । नाग काळो – काला सर्प ।

२. मानतौ – मानता । नह – नही । वैंण – बचन । वीक – चलता, गमण करता । जिम – जैसा । तणौ – पुत्र, तनय । गावड़ – गर्दन । ग्रहे – पकड कर । घालियौ – डाल दिया । पनग – सर्प । पुंडरीक – ? ।

३. खेध – युद्ध । धांख कर – क्रोध कर, प्रतिज्ञा धारण कर । जिकौ – जो, वह । जांणै – जानता है । नरंदा – नरेन्द्र । नीवातणै – नीवा के पौत्र ने । छावड़े – पिटारे । झाल नस – गर्दन पकड कर । भुयग – सर्प । विख – विष । आंणै – लाकर ।

४. हमैं – अव । निरपख – निर्पक्ष, पक्षविहीन । झाट – फूत्कार । नाखै – डाले । सांकड़े – निकट के, संकीर्ण । घेरे – घेरा, मंडल मे । पय उदक – जल रूपी दूध । फूक फण – फन की फूत्कार । पूंछ फेरे – दुर्वल वना पूछ फेरता रहता है ।

४७. गीत मछ रा बोनाण री वीरमदे गौड़ रौ

उलटै जिम इद अरीहर आयै, करिवा अंत कथा आकाहि ।
वहतै जळधारा वीरमदे, मांछा जही चढियो जळ मांहि ॥१॥

धुर वरसाळ जेमि सत्र धारी, साधे काळ सुजस रस सामि ।
साम्हे नीर खड़ग भाखर सख, मीन जेम धसियौ संग्रामि ॥२॥

पावस जिम सत्रहर ऊलटिया, रचि दिन मरण रहण क्रित रंगि ।
ऊभै वारि सार अचळाउत, जळ तिय तिम चढियो रण जगि ॥३॥

पुळिंद प्रीति खत्रवट पारिखतै, जीति जौति सत्रहर जस जीति ।
सोहै तोहि हिळोहि गौडां सख, चढियौ रुख सारग रणि चीति ॥४॥

---

४७. गीतसार—इस गीत में कवि ने गीत-नायक वीरमदेव गौड का मत्स्य के साथ रूपक बांध कर चित्रण किया है। कवि ने लिखा है कि जिस प्रकार जलप्लावित करने को इन्द्र उमड़ कर आता है उसी प्रकार वैरियो का दल चढकर आया। किन्तु वीरमदेव ने मत्स्यो की भाँति खड्ग धाराओ मे बढकर उनसे लोहा लिया ।

---

१. उलटै – उमड कर, उलट कर। इद – इन्द्र, मेघ। अरीहर – शत्रुता रखने वाले। करिवा – करने। अन्त कथा – प्रलय, अन्तिम कथा। आकाहि – समर्थ, बली। वहतै – प्रवाहमान। माछा – मछलियो। जही – ज्योही।

२ धुर – पहली, उत्तर दिशा की। वरसाळ – वर्षा। जेमि – जैसे, जिस प्रकार। सत्रधारी – शस्त्रधारी, शत्रुता रखने वाले। साधे – सिद्ध करने। काळ – मृत्यु। सांम्हे – सन्मुख। भाखर सख – भाखरोत शाखा वाला वीरमदेव। मीन – मत्स्य। धसियौ – घुसा, पैठा। सग्रामि – युद्ध मे।

३. पावस – वर्षा। ऊलटिया – उमड कर आए। ऊभै – दोनो। वारि – जल। सारि – तलवार। अचळावत – अचलदास का पुत्र। जळतिय – मछली। तिम – तैसे, वैसे, उसी तरह।

४. पुळिन्द – मेघ, चलकर। खत्रवट – क्षत्रिय मार्ग। सत्रहर – शत्रु। जस जीति – यश प्राप्त कर। हिळोहि – चलायमान कर, मथन कर। गौडा सख – गौड शाखा वाला। रुख – तरह। सारग – जल, मत्स्य। चीति – भाँति, स्मरण कर।

४८. गीत लोहार रा बीनांण रौ रावत मेघ सीसोदिया रौ

वरहासा नास धमण वाजती, घांसारव साजे धमसांण ।
वांकडौ रावत मेघ वीनाणी, अरियण दळां धमै आराण ॥१॥

ओरै है कं वाळै औ गाळै, गोधाउत विपरीत गत ।
घाउ नीहाउ वडौ घाटैहड़ो, भाजै घट कौ कमीण भत ॥२॥

घड घड़ पड़ै धीव छड धारां, त्रडै मुडै उजड़ै विण ताव ।
रिमां तणा घर ऊपर रावत, घस लागौ वाहै घण घाव ॥३॥

पड पड भांज भाज परमारा, ऊभौ घण असमर ऊभार ।
कळहण मेघ जिसौ कारीगर, कोय बीजौ न कियौ करतार ॥४॥

---

४८. गीतसार—कवि ने इस गीत में रावत मेघ चूंडावत के युद्ध का लुहार की क्रियाओ के साथ रूपक-विधान कर युद्ध-वर्णन किया है। वह लिखता है कि घोड़ो की नासिका रूपी धमनी को बजाते हुए वाका वीर रावत मेघ सेना को सजाकर रणभूमि मे वैरियों को तलवार रूपी घन से घड़ता है ।

---

१. वरहासां – घोडों की । नास – नासिका रंध्र । धमण – धौंकनी, फूंकनी । वाजंती – बजते हैं, आवाज करते हैं । घासारव – सेना को । साजे – सजाकर । धमसाण – भयंकर युद्ध, । वांकड़ो – विकट । रावत मेघ – रावत पदवी धारी मेघसिंह । वीनाणी – लुहार । अरियण दळा – शत्रुसेना को । धमै – नष्ट करता है । आराण – युद्ध मे ।

२. ओरै – प्रवेश कराकर । है – हय, घोडा । वाळै – जलाता है । गाळै – गलित करता है । गोधाउत – गोधा या गोवर्द्धन का पुत्र । गत – गति से । घाउ – घाव । नीहाउ – प्रहार । घाटैहडो – विशालकाय, विकट स्थान । भांजै – खण्डित करता है, तोडता है । घट कौं – शरीर को । कमीण भत – लुहार की भांति, लुहार खाती और कुम्हार आदि जातियो को राजस्थान मे 'कमीण' कहते हैं । यहाँ कमीण का अभिप्राय हल्का या अपमान जनक नहीं है ।

३ घड़ घड – शरीर शरीर पर, घडाघड़ ध्वनि । धीव – प्रहार । छडधारा – भाले के वार । त्रडै – टूटते हैं, तडकते हैं । ताव – ताप । रिमा – शत्रुओ के । घस – वैर, विरोध । घण – घन ।

४ पंड पंड अग अग । भाज भांज – नाश कर कर । परमारां – परमार क्षत्रिय । ऊभौ – खडा । घण असमर – घन रूपी तलवार । ऊभार – ऊपर उठाए हुए । कळहण – युद्ध मे । कोय – कोई भी ।

४६. गीत अगन रा बीनांण रौ महाराजा अजीतसिंघ राठौड़ रौ

चखा चौळ रोसाळ झाळा झपट चापडै, क्रोधतां आगरा दीली क्रजळै ।
अजा महाराज रा ताप माहे असुर, पतंग महताप रा तेम प्रजळै ॥१॥

बराळा धोम चख रोस चाळा बिढण, तखत ढीली तणी सामळै तेम ।
जसावत तणा खग तेज माहे जळै, जवन खळ कीट आतस भबक्कै जेम ॥२॥

चुवता मुराड़ा दमग झाडां चखां, आगरा दिली करता उखेळा ।
महाराजा तणै ताप आगै मुगल, भमर नर जळै झळ मगळ भेळा ॥३॥

---

४६. गीतसार—इस गीत में कवि ने महाराजा अजीतसिंह राठौड का अग्नि के साथ रूपक रचा है। कवि ने लिखा है कि जब अग्नि रूपी अजीतसिंह क्रोध में आरक्त नेत्र हो युद्धाभिमुख होता है तब उसके भय से दिल्ली और आगरा के बादशाह का मुख फीका पड जाता है और उसके आतप में वह बादशाह रूपी कीट गिर कर जलने लगता है ।

---

१. चखां चौळ – आरक्त नेत्र । झाळा – ज्वाला । झपट – आक्रमण । चापडै – युद्ध, मैदान । क्रजळै – कज्जल वर्ण के हो जाते है। अजा – अजीतसिंह । माहे – मे । असुर – मुसलमान । पतंग – भुनगे । महताप रा – अग्नि का । तेम – जैसे । प्रजळै – जलते हैं ।

२. बराळा धोम – प्रचण्ड अग्नि । चख – चक्षु । रोस – रोष, क्रोध । चाळा विढण – युद्धारंभ, छेडछाड । तखत – तख्त । ढीली – दिल्ली । तणी – का । सामळै – श्यामल । तेम – जैसे । जसावत तणा – जसवतसिंह तनय । खग तेज – तलवार के आतप मे । जवन खळ – यवन रूपी वैरी । कीट – पतगे । आतस – अग्नि । भबक्कै – भभक मे, लपट मे ।

३. चुवता – चूने, टपकते । मुराडा – श्मशान । दमग – अग्नि, स्फुलिंग । झाडां – झरते, गिरते, झाड़ियाँ । उखेळा – युद्ध । आगै – सम्मुख, आगे । भमर नर – भ्रमर नर, पतगे । झळ मगळ – अग्नि ज्वाला । भेळा – शामिल ।

५०. गीत राजाधिराज वखतसिंघ नागौर रौ

वागा नेजाळां कजाक बीर वेताळा चा हाक वागा,
माळा चाढ़ वागा डाक डमरू महेस ।
हाथियां मदाळां काळां वाथियां जैसिंघ हूता,
बाधचाळां निराताळां वागा वखतेस ॥१॥

सौर मे व्रजागा लूमै घूमै काळा नागां सेन,
साकुरा पनागां वागा ऊपडै सधीर ।
खेड़पती सावळां त्रभांगा कीधा लागा खेव,
वागा खागा गैणागां व्यलागा महावीर ॥२॥

---

५० गीतसार–इस गीत मे कवि ने राजाधिराज वख्तसिंह नागौर के गगवाणा स्थान पर सवाई जयसिंह, महाराजा जयपुर की सेना से लडे गए ऐतिहासिक सग्राम का वर्णन किया है। कवि ने लिखा है कि नेजाधारी योद्धाओ के प्रहार होने लगे। बावन वैतालो की रण हाक होने लगी। नर मुण्डमाला प्रिय रुद्र का ढ़ाक-डमरू वाद्य वजने लगा और महाराजा सवाई जयसिंह के मदोन्मत्त गजारोहियो के मस्तको पर राजाधिराज वख्तसिंह के प्राणघातक शस्त्राघात होने लगे।

---

१. वागा – वजने लगे। नेजाळां – भालाधारी। कजाक – वीर। वीर वेताळा – वीर वैताल। चा – का। हाक – वीर हाक। वागा – होने लगी। माळा – मुण्डमाला। चाढ़ – चढाने वाले, धारण करने वाले। डाक – ढाक वाद्य। डमरू – डमरू वाद्य। मदाळा – मद वहते, मदमस्त। हूता – से। वांध चाळां– समूह वद्ध, वस्त्राचल वांधकर। निराताळां – अपार।

२. सौर – वारूद। व्रजागां – वज्राग्नि। काळा नागां – काले गजो की, वीर नागा साधुओं की। साकुरा – घोड़ो। पनागा – हाथियो। वागा – लगाम, अंकुश। ऊपड़ै – वेग से वढ़े। खेड़पती – खेड स्थान के स्वामी, राठोड़ों, वख्तसिंह। सावळां – भाले। त्रभागा – तीन धाराओं वाले, भाले। खेव – युद्ध। वागा खागां – तलवार चलाते हुए, तलवारें और घोडो की लगामें, तलवारें और योद्धाओ के वागे वस्त्र के छोर। गैणागा – आकाश मे। व्यलागा – लगने लगे, स्पर्श करने लगे। महावीर – महान् वीर।

करिमा रा छूटा गाढ जूवळा अफूटा क्रमे,
रथां छूटा पीतंमरा लूटा बरां रंभ।
तूटा बाढ बीजळां वीछूटा आभ बीजू तेम,
खूटा सीस साकुळा हू जूटा जैतखंभ ॥३॥

जोगणी उबक्कै पत्र हुबक्कै हवाई जत्र,
लोथि छक्कै घुबक्कै लटक्कै गजा लोघ।
भुटक्कै अकारी सेन बैढेगारी क्रोधां भाय,
जोधारौ हुचक्कै अजारौ महाजोध ॥४॥

जांगी डडारोड़ धौंस भडा गाड़ि थडां जाड़ा,
तेग घोड़ां भड़ा घड़ां निजोड़ा नत्रीठ।
भालोडां अरावां तोड़ां आछोड़ा घमौडां भालां,
राठोड़ां कुरम्मा बागौ चौडां घा ां रीठ ॥५॥

---

३. कारिमा रा – कायरों के। छूटा गाढ – दाढ्र्य छूट गया। जूवळा – कदम, पैर। अफूटा क्रमे – पीठ फेर कर भगते है। रथा – रथो, विमानो। पीतमरा – पीले वस्त्र। बरां – वरो, पतियो। रभ – अप्सराए। तूटा – टूटे। बाढ – धाराएँ। बीजळां – तलवारो की। वीछूटा – बिछुडे, गिरे। आभ – आकाश, मेघ। बीजू – विद्युत। खूटा – खुले। साकुळा हू – सांकलो से, शृखलाओ से। जूटा – जुड़े, भिडे। जैतखभ – विजय के स्तंभ, योद्धा।

४. जोगणी – योगिनी, देवी। उबक्कै – छलके, वमन करे। पत्र – खप्पर, पात्र। हुबक्कै – चलती है। हवाई जंत्र – तोपे। लोथि – लोथें, धड, मृत शरीर। छक्कै – भरे हुए, पूरित, मस्त। घुबक्कै – अत्यधिक क्रुद्ध। लटक्कै – लटकते हैं। भुटक्कै – टक्कर मारते हैं। अकारौ – तेजस्वी, प्रवल, बंधन मे, लाने वाला। वैढेगारौ – युद्धप्रिय, युद्ध चाहने वाला। भाय – भट्टी की अग्नि। जोधारौ – योद्धा, जोधा का वशज। हुचक्कै – झपटता है, उछल-उछल कर चोट देता है। अजा रौ – अ जर्तसिंह का।

५. जागी – ढोली, नक्कारची। डडारोड – नक्कारे वजा कर। धौस – धूसा वाद्य। थंडां जाडा – सघन समूह, सैन्य समूह। तेग – तलवार। भडां – योद्धाओ। घडां– सेना, शरीरो। निजोड़ा – सधिहीन कर। नत्रीठ – अधीर। भालोड़ा – बाणो, भालों। अराधा – तोपो। तोड़ा – पलीते। आछोड़ां – अच्छे अच्छो के। घमौड़ा – प्रहारो। भालां – भालो के। बागौ – हुआ, बजा। चौडां-धाडां – खुले आम, चौडे मैदान मे। रीठ – भयानक युद्ध, प्रहार।

आभ तोल भूडडा विरोळ थंडां खंडां आडां,
रौळ झुंडां सूंडांडंडां श्रोण भू-रंगैव ।
वाणां सोक वाग सत्रां थोक भांग जेण वेळां,
गाज थार झोक लाग दूसरा गंगैव ॥६॥

खाग मे वळक्क झाटि काटिमे व्यभाग खळां,
सामळां खळक्क कुंभाथळां सूंडाडंड ।
लागा वुरां ढूढाहडा घडां पुरा झगं लोह,
भडा देखि आदेसं कमंधां भुजाडंड ॥७॥

छडाळां ऊपाड़ि चाड़ि जैंसिघ रा भडां छाती,
भूडडा वजाड़ि यूं धपाड़ि चंडां भाव ।
पाड़ि झडां छाकियां घूमाड़ि जाडा थंडां पूर,
राड़ि जीतौ झाड़ि खडा धाड़ि मारू राव ॥८॥

---

६ आभतोल — आकाश मे ऊपर उठाकर । भूडडां — भुजादण्डों । विरोळ — तहस-नहस कर. संहार कर । थंडां — सेना । खडा आडा — तिरछे प्रहारो से । रौळ — रौंद कर, कुचल कर । झुडां — समूह । सूंडांडंडा — शुण्डों के अग्रभाग । श्रोण — श्रोणित । भूरंगैव — भूमि को रक्त से रग दी । वाणां सोक — तीरो के चलने की ध्वनि । वाग — वजकर, ध्वनित हो कर । सत्र थोक — शत्रु समूह । भाग — तीतर वितर कर । जेण — उस । वेळां — समय । गाज — माला । झोंक — प्रहार । गगैव — राव गांगा ।

७ वळक्क — बलपूर्वक । झाटि — प्रहार, आघात । काटिमे — काट कर । व्यभाग-विभाग — दो खंड, टुकड़े कर । खळा — वैरिया । सांमळां — भाले विशेष । खळक्क — वहकर, चलाकर । कुंभायळा — कुंभस्थल । लागा — लगे । वुरां — उरों, हृदयो मे । ढूढाहडां — कछवाहों. ढूढाड़ वालों । घड़ां — सेना । पुरां — पूर्ण । झगं लोह — शस्त्राघातों से देदीप्यमान । भड़ां — योद्धा । आदेसं — नमस्कार किया, अभिवादन किया । भुजाडंड — भुजदण्डो को ।

८. छडाळां — भाले । ऊपाड़ी — उठाकर । चाड़ि — चढाकर, घाव देकर । जैंसिघ रा — महाराजा सवाई जयसिंह के । छाती — वक्षस्थल । वजाड़ि — वजाकर, प्रहार कर । धपाड़ि — छका कर, तृप्त कर, परेशान कर । पाड़ि — गिराकर, उपाड़ कर । झंडां — ध्वज । घूमाड़ि — चक्राकार फिराकर, घुमाकर । राड़ि — युद्ध । झाड़ि — गिराकर । खंडा — तलवारो से । धाड़ि — युद्ध, वीर । मारू राव — मारवाड का योद्धा ।

५१. गीत राजाधिराज बखतसिंघ नागौर रा धणी रौ

झंडा फरक्कै बयडा पीठ कोमंडां चा चळा झलै,
घूवांरोळ आतसा नगारां पड़ै ध्रोह।
छड़ाळा घमौड़ि मौड़ि कुरम्मा री फौडि छाति,
दोटै चाढि लेगयौ ढूढाड़ा घोळै द्रीह ॥१॥

बहै सेल दूधारा चौधारा धारा रुद्र बहै,
उड़ै सीस केवाणां निराळा हुवै अग।
काळा सोर ऊछळै कराळ झाळ दहू कानी,
जोधपूरा आमेरा मडांणौं महाजग ॥२॥

गोळा छूटि कैमरां हैमरा नरा पड़ै गरां,
ऊठी बाग हैमरां हरोळां जूटै।
किरम्माळा वोहो मचै घूम झाळां निसा काळी,
जैंसिंघ री सेना हुई मूग थाळी जेम ॥३॥

---

५१. गीतसार—प्रस्तुत गीत मे कवि ने जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह कछवाहा और नागौर के राजाधिराज वख्तसिंह राठौड के मध्य गगवाणा के रणक्षेत्र मे लड़े गए युद्ध का वर्णन किया है। गीत मे लिखा है कि हाथियो पर ध्वजाएँ फहराईं और धनुषो की प्रत्यचाएँ खीची जाने लगी। नगाडो के नाद गूजने लगे तथा तोपो की धूआरोल से पृथ्वी-आकाश धूमिल होगया। भालो के करारे प्रहारो से कछवाहो की सेना को पीछे धकेलता हुआ वख्तसिंह गेंद पर सोटे के वार की भाँति चोटें देने लगा।

---

१. फरक्कै – लहराए। बयडा पीठ – हाथियो की पीठ पर। कौमडा चा – धनुषो के। चळा – धनुष की प्रत्यंचा। झलै – ऊपर उठाए, खेंचे। घूवांरोळ – धुआंधोर। आतसां – तोपों की अग्नि। ध्रोह – प्रहार, ध्रीह ध्रीह की आवाज। छड़ाळा – भाले। घमौडी – घूमाकर, प्रहार कर। मौड़ि – मोड़कर। कुरम्मा – कूर्मों, कछवाहो। फौडि – छेदकर, खण्डित कर। दोटै चाढि – चोट के मुह चढाकर। घोळै द्रीह – धोले दिन, दिन दहाड़े।

२ बहै – बहते हैं। सेल दूधारा – दो धाराओ वाले भाले। चौधारा – चार धाराओ मे। धारा रुद्र – रुधिर धाराएँ। केवाणा – तलवारो से। निराळा – अलग। काळा सौर – बारूद। झाळ – ज्वाला। दहूकांनी – दोनों तरफ। मडाणौ – रचा, शुरू किया। महाजग – घमासान लडाई।

३. कैमरां – तोपो के, धनुषो के। हैमरां – घोडे। गरां – ढेर, समूह। ऊठी – उठाई। बाग – रास, लगाम। हरोळा – सेना की अग्रिम पंक्ति। जूटै – भिडे। किरम्माळां – तलवारो। बोहो – बहुत। घूमझाळां – धूम्रज्वाला। निसा – काळी – काल रात्रि जैसी। मूंगथाळी जेम – थाली में रखे हुए मूग धान्य की भाँति आन्दोलित, चलायमान।

अजा रै जगाई जका सवाई सवाई ऊठै,
लाख दळां बिरोळै बुझाये न ज्वाळा लाय ।
कूरमा सीसोधां हाडां चहुवाणां सारां केतां,
धजा नेजां गजां सूधी लेगयो धकाय ॥४॥
अच्छरा कंवारी सारी बरबा चै काजि आई,
मोटो हार पोवा काजि आवियो महेस ।
वागा डाक जोगणी बावने बीर हाक वागा,
बीस राजा हूंत खागां वागो बखत्तेस ॥५॥
गाजीसाह दूसिरो दीयतो आयो रीठ गोळां,
ताळ बजी नारदां बीचाळै करो तान ।
वहे सूर बीजळां ऊजळां सहे अणी बाड़,
हौदा छोडि छोडि हुवो सवाई हैरान ॥६॥
खड़ैचो धकाई फौज कोस तांई मारि खागां,
बाढिया छंछाळां करै नेजाळां बरंग ।
देवताई गमाई सवाईजी री धोळै दीह,
जवाई रा भाई सूं न कीजै कदै जग ॥७॥

---

४. अजा रै – अजितसिंह के पुत्र, बख्तसिंह ने । जगाई – प्रज्वलित की । जका – वह, जो । सवाई – जयपुर नरेश सवाई जयसिंह । सवाई – सवा गुनी । ऊठै – धधके, जले । लाख दळां – लक्षाधिक सेना । बिरोळै – मथे, रोंदे । बुझाये – बुझाने से भी । ज्वाळ लाय – प्रचण्ड आग । सारा केता – सब के लिए कहना समझें । धजां – ध्वजाएं । नेजां – राज्य चिन्ह, निशान । सूधी – सहित । धकाय – धकेल कर ।

५ अच्छरां – अप्सराएं । कवारी – अविवाहित, कुमारी । सारी – सब । बरवा चै – वरण करने हेतु । काजि – लिए । हार – कंठा । पोवा – पोने के लिए । आवियो – आया । वागा – बजा, निनादित हुआ । डाक – ढाक वाद्य । जोगणी – योगिनी, युद्ध देवी । बावने बीर – रुद्र के बावन गण । हाक – हल्ला । वागा – करने लगे । हूंत – से । खागा – तलवारों से । वागो – भिड़ा, लड़ने लगा ।

६. गाजीसाह दूसिरो – अभिनव गजसिंह । रीठ – प्रबल प्रहार, टक्कर । ताळ – ताली । बजी – बाजी । बीचाळै – युद्धभूमि में । बीजळां – तलवारें । ऊजळां – उज्ज्वल कुल वाले, वीर । सहे – झेलते हैं, सहन करते हैं । अणी बाढ– नोंको के घाव, भालों की नोंकें और तलवारों की तीक्ष्ण धाराएं । सवाई – सवाई जयसिंह ।

७. खेड़ेचे – खेड़पति, खेड़ राजधानी के कारण राठौड़ खेड़ेचे कहलाते हैं । धकाई – धकेल दी । कोस तांई – दो मील तक । मारि खागां – खड्ग प्रहारों से । बाढिया– काट डाले । छछाळा – घोड़े । नेजाळा – भालों, निशान । बरंग – टुकड़े । गमाई– खोई, नष्ट की । सवाईजी री – सवाई जयसिंह की । कदै – कभी भी । जंग–युद्ध ।

५२. गीत सालमसिंध देवल री पांडोस री

पैणी चामुडा त्रसूळ दंणी आराम पळासी पखा,
धाम त्रवैणी गेम बळांसी हाणास ।
चढती जळासी नदी खायणी खळासी चलै,
बीजळा झळासी चक्र-कळासी बाणास ।।१।।

महाकाळी कुत हाथां सालमेस क्रोध मढ़ी,
प्रवाग त्रधारा पढी बहती पैराक ।
कराड़ा तारगी चढ़ी बढ़ी वज्र झाळा किना,
आभा आवढीस कढ़ी ऊकढ़ी अैराक ।।२।।

चहती अमाप जगा रंगी श्रोण सूळ चडी,
वेणी त्रव सगी पाव बहती बनेब ।
छबती आपगां ज्या भू डहंती कुद्रसैणी छटा,
ज्वाळा सुद्रसैणी लटा बहती जनेब ।।३।।

---

५२. गीतसार—पूर्वोक्त गीत में लेखक ने गीतनायक सालमसिंह देवल की तलवार की देवी चामुण्डा के त्रिशूल, त्रिवेणी सगम, वेगवती नदी और विद्यु-ज्वाला से समानता दिखाते हुए वर्णन किया है । गीतकार ने लिखा है कि सालमसिंह की तलवार चामुण्डा के त्रिशूल सदृश्य, तीक्ष्ण, पक्षियो को मास से तृप्त करने वाली, पापियो के पापों का त्रिवेणी धारा के समान नाश करने वाली तथा वर्षाकालीन वेगवती नदी के प्रवाह की भांति वैरियों का सहार करती चलती है ।

---

१. पैणी — पैनी । दंणी — देने वाली । पळासी — मास की इच्छा वाले । पखां — पक्षियों को । गेम — पाप । हाणास — नष्ट करने वाली । चढती — उमड़ती । जळासी — जलधारा । खायणी - खाने वाली, संहार करने वाली । खळासी — शत्रुता रखने वालों को । बीजळा झळासी — विद्युत ज्वाला-सी । बाणास—तलवार ।

२. कुंत — भाला । मढी — मण्डित, भरी हुई । प्रवाग त्रधार — प्रयाग की त्रिवेणी धारा । बहती — वहती । पैराक — प्रवीण, तैरने वाली । कराडां — दोनो किनारों तक । तारगी — तरगो वाली नदी । वज्रझाळा — वज्र की ज्वाला । किनां — अथवा । आवढीस — उमड़ कर । कढी — निकली हुई । ऊकढी — उकटा कर निकाली गई । अैराक — मदिरा ।

३. चहती — चाहती । अमाप — अमित । जगा — युद्धों । सूळ चडी — चण्डिका का त्रिशूल । वेणीत्रव — त्रिवेणी । संगी — संगम । पाव वहंती — जल प्रवाह वाली, पैरों चलने वाली । बनेब — वन प्रदेश मे । छबती — छवि बिखेरती । आपगा — नदी । जनेब — तलवार ।

सूळ पार फूटा मधि खूटा नदी जूटा सोघ,
खीज वीज तूटा छूटा दयंता खांडीस ।
आपाजे जेहडी जगां कराळा गोपाळ वाळी,
प्रळै भाळा भगं लगी पराळां पांडीस ॥४॥

५३. गीत गोठ रा वीनांण री सादै सेखावत री

केवाण भगत रचै राव कूरम, भाड़े ग्रिसण आंवळा भूळ ।
त्रिजडां मुंह हिंदवा तुरकां, समहर गोठ करै सादूळ ॥१॥

रूकां भात गोळियां रोटा, सुजड़ां घीरत सोहिता सार ।
सारां सरां सावळां सूळा, अण-रुचता पुरसिया अणपार ॥२॥

---

५३. गीतसार—उपरोक्त गीत मे कवि ने शार्दूलसिंह शेखावत के मुसलमानो से किए गए युद्ध का दावत के साथ रूपक बाघते हुए लिखा है कि कछवाहो के स्वामी शार्दूलसिंह ने वैरी रूपी अतिथियो को तलवारो के प्रहार तथा तोपो के गोले रूपी रोटियां परोसी । फिर तलवार धारा से रक्त-घृत और तीरों तथा भालों से शूलें (मांस विशेष) परोस कर अन भावता भोजन खिला कर तृप्त कर दिये । इस प्रकार युद्ध रूपी दावत का आयोजन किया ।

---

४. सूळ – त्रिशूल । पार – उस ओर, इधर से उधर । खीज – रोष, नाराजी । वीज – विजली । दयंतां – दैत्यो, वैरियो । खांडीस – खण्डित करने वाली, मारने वाली । कराळा – भयानक । गोपाळ वाळो – श्रीकृष्ण के चक्रायुध तुल्य । भगं– जग कर । पराळां – वैरियो के । पांडीस – तलवार।

१. केवांण – कृपाण । भगत – भुक्ति, भोजन । रचै – रचे, बनाये । राव कूरम – कछवाहो का स्वामी । भाड़े – मारे, गिरावे । ग्रिसण – शत्रु । आंवळा-भूळ – सुसज्जित होकर । त्रिजड़ां – तलवारें । मंह – मुख, धारा । समहर – युद्ध । गोठ – दावत । सादूळ – शार्दूलसिंह ।

२ रूका – तलवारें । भात – चावल । रोटां – बाटे, रोटियां । सुजड़ां – तलवारें, कटारियां । धीरत – घृत । सोहिता – चावल और मांस को शामिल पका कर सोहिता बनाया जाता है । सार – अस्त्र-शस्त्र, तलवार । सारां – तलवारो । सरा – शलाका, तीरों । सावळां – भालो । सूळा – शूले, शूल्याक । अण रुचता – अभावते, अरुचिकर । पुरसिया – परोसे । अणपार – अपार ।

रण सांकड़ै जगावत रावत, भोजन सार छतीसै भात।
ईकण पात जीमिया आइसडा, पाड भूअ चढा न दूजी पात ॥३॥

थड विहड करै अरि थाटा, खग झाटा खत्रवाट खरै।
कळहण भगत कैमळो कमधां, हद कीधा जूझार-हरै ॥४॥

भोज विया इसड़ी भूजाई, नाठा जिका गमाई नेक।
वध जीमिया जिका वासमिया, अध जीम्या नोसरिया अनेक ॥५॥

आडे लोह धपाई इसड़ा, धड फाडा बहिया धारूळ।
आरभ राम फतै कर आयौ, समहर अर भाजै सादूळ ॥६॥

५४. गीत सिव रा बोनांण रौ राव सिवसिंघ सेखावत रौ

सीकरि कयलास जिम सोहे, दोळा बहो घण लिया दळ।
सिव रूपी सेवौ सेखावत, करिमर काकण तणो कळ ॥१॥

---

५४. गीतसार—उपर्युक्त गीत में कवि ने राव शिवसिंह शेखावत को शिव रूप में अंकित कर रूपक का सर्जन किया है। कवि ने लिखा है कि शिव के निवास कैलाश की भाँति तो सीकर नगर शोभित है। गणों के रूप मे उसके साथ सैनिक चलते है। भस्मी कडा मानो उसकी तलवार है। इस प्रकार शिव के रूप मे शेखावत शिवसिंह आभासित होता है।

---

३. साकडै — संकीर्ण, घेरा। जगावत — जगरामसिंह का पुत्र। भांत — प्रकार के। ईकण पांत — एक पक्ति मे, एक समान। आइसडा — आयस, गूढ। पाड-गिरने। भूअ — भूमि।

४. थंड बिहड — छिन्नभिन्न। अरि थाटां — अरि-समूह, सेना। खग झाटां — तलवार के आघात। खत्रवाट — राजपूती मार्ग। कळह — युद्ध। हद — बेहद। कीधा — किया। जूझार हरै — जूझारसिंह के पौत्र।

५. भोज विया — अभिनव भोजराज ने। इसडी — ऐसी। भूंजाई — भूना हुआ मास, दावत। नाठा — भाग गए, लौट गए। नेक — बढ़िया। जिका — वे। वासमिया — मारे गए। अध — आधे। नीसरिया — निकले।

६. आडे लोह — तिरछे प्रहार। धपाई — तृप्त किए। इसडा — ऐसे। धड — घट, बिना मस्तक के शरीर। धारूळ — तलवार, लोही। आरभ राम — युद्ध प्रारम्भ कर। अर भांजै — वैरियो को नष्ट कर।

१. सीकरि — राव शिवसिंह की राजधानी, सीकर नगर। कयलास — कैलासगिरि। जिम — जैसा। सोहे — शोभा पाता है। दोळां — चारों तरफ। बहो घण — अत्यधिक। दळ — सेना। सेवौ — शिवसिंह। सेखावत — कछवाहा क्षत्रियो की एक शाखा। करिमर — तलवार। कांकण — कड़ा, कगन।

चंचळ वैल पलांणै चक्रवति, जरद भभूति जड़ै अग जोध।
जाळण दैत जहि भुज जडळग, लसकर गण लीघां खळ लोघ ॥२॥

सेल असूळ माळ गळ सेली, सुधा चक्खां वोहौ मयक सिरि।
असिमर करग भसम गिर ओपै, गढ़पति सीकरि संकर गिरी ॥३॥

रुद्र ब्रह्म तणौ दळावत रावत, धरि गंग सिरि जग साधार।
करिमर कड़ा तणौ मोहि केवौ, आवटि घटे कटे अणपार ॥४॥

समझण जोग घणा रिणि साभण, दछि जिगि जिम रिमां घट देस।
वरद दियण लियण जस वाचा, भड़ सेवौ राजे भूतेस ॥५॥

—नाया बारहट रो कह्यौ

---

२. चचळ — घोड़ा। पलाणै — जीनादि साजत से तैयार कर। चक्रवति — चक्रवर्त्ती, राजा। जरद — कवच। भभूति — भस्मी। जड़ै — कसे, चर्चे, लेपन करे। जोध — योद्धा, वीर। जाळण — दहन करने। दैत — दैत्य। जहि — जैसे, उसी प्रकार। जडळग — तलवार। लसकर — सैन्य समूह। लीधां — साथ लिए। खळ — शत्रु।

३ सेल — भाला। असूळ — त्रिशूल। माल गळ — गले पर माला, कंठाभूषण। सेली — नाथ सम्प्रदाय के योगियों की माला विशेष जो गले मे पहनते हैं। सुधा — अमृत। चक्खा — नेत्रों में। मयक — चन्द्र। सिरि — मस्तक पर। असिमर — तलवार। करग — हाथ में। भसम — भस्म। ओपै — सुन्दरता देती है। संकरगिरी — कैलासगिरी।

४ तणौ — का, तनय। दळावत — दौलतसिंह का पुत्र। रावत — रावत उपटक वाला। गग — गंगा। जग साधार — जगत को आश्रय देने वाला। कडा — शिव का चूड। मोहि — मुग्ध कर। केवा — वैरी। आवटि — क्रोध मे उबल कर। घटे — शरीरो को। कटे — काटता है। अणपार — अपार, अगणित।

५. घणा — बहुत अधिक। रिणि — युद्ध में। साभण — मारने। दछि जिगि — दक्ष प्रजापति के यज्ञ। रिमां — वैरियों। घट देश — शरीर और राज्य। वरद— वरदान। दियण — देने वाला। लियण — लेने वाला। जस वाचा — यशवाणी, कीर्त्ति, प्रशंसा। भड़ — योद्धा। राजे — शोभा पाता है। भूतेस — शिव।

५५. गीत भवरा रा बीनांण रौ तेजसिंघ सेखावत रौ

परठि पांच पौरिस तणी भणणियो पाधरै,
चंमरबध करंण नमि वंति चेंजो ।
विघूसै सैद फुलवादि रूकां विढ़ण,
त्रविध घड़ बाग विचि भमर तेजो ।।१।।

केतकी मीर मसळै तुरी केवड़ा,
रंग बहै धरा सिरि रुधिर रातो ।
ताईयां सेनि बाडी विचै ऊदतण,
मधप रंगि रमै मैमत मातो ।।२।।

गुलावां मीरजां निबाबां गाहटै,
गळोबळ घातिया हेत गाढ़ै ।
फरोळै पाखड़ो आंत उर फीफरा,
काळजा कज-लत भमर काढ़ै ।।३।।

---

५५. गीतसार—इस गीत मे कवि ने तेजसिंह शेखावत कछवाहा को भ्रमर के रूप मे चित्रित कर रूपक का विधान किया है। लिखा है कि भ्रमर रूपी तेजसिंह सैयदों के सेना रूपी बगीचे मे प्रविष्ट होकर खड्ग प्रहारो से फुलवाद रूपी योद्धाओ का मर्दन करता है ।

---

१. परठि — (?) । पौरिस — पौरुष । भणणियो — गुजार किया । पाधरै— खुले मैदान मे, सीधे । चमरबध — चवरधारी । चेजो — चुनाई, चुनना । विघूसै— विध्वंश करता है । सैद — सैयद । फुलवादि — फुलवाद । रूका — तलवारो से । विढ़ण — लड, युद्ध कर । त्रविध — तीनो प्रकार के प्रहार, तीनो ओर से । घड — सेना । विचि — में । भमर — भ्रमर । तेजो — तेजसिंह ।

२. मीर — अमीर, मुसलमान योद्धा । मसळै — मर्दन करे । तुरी — घोडे । केवडा — केवड़ा के पुष्प । बहै — बहता है । धरासिरि — पृथ्वी पर । रुधिर — रक्त । रातो — रक्तिम । ताईयां — आततताइयो, बैरियो । बाडी — बाग । ऊदतण — उदयसिंह का तनय । मधप — भ्रमर । रमै — क्रीड़ा करे । मैमत मातो — मस्ती मे उन्मत्त ।

३. मीरजा — मिर्जा उपटंक धारी, अमीरजादे । गाहटै — मथकर, रौंदकर । गळोबळ— गलबांह, बांहालिगन । घातियां — डाले हुए । हेत गाढै — घने स्नेह से । फरोळै— उलट पुलट कर बिखेरे । आंत — आंते, अन्त्रावली । फाफरा — फेफडे । काळजा— कलेजा । कजलत — कमल वेल । काढै — निकाले ।

अनोखो सिलीमुख साहदळ ऊपरै,
क्रमे कूरम जही कमर कूतां।
लागियां समो वाणास मोह खांचि ले,
हंस मकरंद घट फूल हूंता ॥४॥

५६. गीत बगीचा रा बीनांण रौ महाराजा बहादरसिंघ रौ

वडा राग रा हुवै सुर अछर घूघर वजै, ठणक रिख जंत्र सिव उगठ ठांणै।
दळां उचरग रै जगीचै बहादरे, जंग रै बगीचै रंग जांणै ॥१॥

हांम मद छाक चित्र धाम जंगी हवद, वीर नूत कांम नटवर वणावै।
जाम खग ताळ सुर ग्राम जोगण जमै, पोह कंवर तांम आराम पावै ॥२॥

त्रबक धुन अदग विकराळ रज धोम तम, ज्वाळ धख मसालां तोप ज्वाळा।
भामणां कितां मन कितां अणभामणां, असी अध्रियामणां कमंधवाळा ॥३॥

---

५६. गीतसार—ऊपर के गीत मे कवि ने महाराजा बहादुरसिंह के युद्ध का उद्यान के साथ रूपक रचा है। गीत में लिखा है कि सैंधव राग के स्वर अलापे जा रहे हैं। अप्सराओ के घुंघरूओ का क्वणन गूंज रहा है। नारद वीणा-वादन कर रहे हैं और शिव नृत्य के लिए उद्यत हैं। संसार मे उत्सव मनाये जाते हैं उसी प्रकार बहादुरसिंह युद्धभूमि रूपी बगीचे मे राग रग खेलता है।

---

४. सिलीमुख — भ्रमर, अली। साहदळ ऊपरै — शाही सेना पर। क्रमे — चलता है, गमन करता है। कूरम — कूर्म। कूता — माले। समो — समय। बाणास — तलवार। मोह — मोहित। हंस — प्राण। मकरद — पुष्प पराग। घट फूल हूंतां — शरीर रूपी पुष्प से।

१. बड़ा राग रा — सिंधू राग के। सुर — स्वर। अछर — अप्सराओ के। बजै — ध्वनि करते हैं। ठणक — ठन ठन की ध्वनि। रिख — नारद। जंत्र — यंत्र, वीणा। ठांणै — प्रारंभ करते हैं। दळां — सेना। उचरग — उत्सव। जगीचै— संसार मे। बहादरे — बहादुरसिंह। जगरै — युद्ध के।

२. हाम — इच्छा। मद छाक — मद्य से छके। चित्रधाम — चित्रसार। जगी — युद्ध के, सुदृढ़। हवद — हौज। नूत काम — नृत्य के लिए। नटवर — शिव, नटराज। जाम — याम। खग — तलवार। ताळ — ताल। तांम — तब।

३. त्रवकं — नगाड़े। धुन अदंग — दुंदुभि की ध्वनि। विकराळ — भयावह। रज — धूलि। धौम तम — धूम्र और अंधकार। ज्वाळ धख — क्रोध की ज्वाला। मसाला — चिरागे। तोप ज्वाळा — तोपो की आग। भामणां — मन भाते। किता — कितने। अण भामणां — अन चाहे, अप्रिय। असी — ऐसे, तलवारें। अध्रियामणां — भयंकर।

अंत तर घायलां लता तत अळूझै, फबै रुधिर होद चादर फुहारा ।
कीत बाणी सझै रातळां कोकिलां, बधै आणंद दिला तेण बारां ।।४।।

पेख सिव नीख रिम सीस चाढै पोहप, ओख खत्रवाट कुळवट अराधो ।
सोख माणे जसी रमे रांमत ससत्र, जोख मांणे असी रायजाधो ।।५।।

सार भर मार गुलजार पळ गूद सत्र, अलल गुंजार गोळा अलीजै ।
साज धर जरद सामाज धर सांतरा, राजधर नरेसुर सुतन रीझै ।।६।।

प्रथी भुगते तरण फतै पणै, हूंसनायक पणै मुनन्द हंसियौ ।
मानहर धाड़ रे धाड़ जोवन मसत, राड़ रै वगीचं तणौ रसियौ ।।७।।

---

४. मततर – आंते रूपी तरु । लतातंत – लता तन्तु । अळूझै – उलझते है । फबै– फबते । चादर – जलधारा । फुहारां – फव्वारे । कीतबाणी – कीर्ति कथा । रातळ – गृद्ध विशेष । कोकिलां – कोयलें । बधै – बढता है । तेणबारां – उस समय में ।

५. पेख – देख कर । नीख – अनूठा दृश्य । रिम – शत्रु । पोहप – पुष्प । ओख– मर्यादा, बंधन । खत्रवाट – क्षत्रिय का मार्ग । कुळवट – वंश गौरव का मार्ग । अराधो – विचार, आराधना । माणे – भोगे । जसी – जैसी । रमे रांमत – क्रीडा करता है । ससत्र – शत्रुओं से, शस्त्रों से । जोख – आनन्द, हर्ष । असी – ऐसी ।

६ सार – शस्त्र, तलवार । भरमार – भरपूर । गुलजार – पुष्प । पळ – मास । गूद – मज्जा । सत्र – शत्रु । अलल – भ्रमर । गुंजार – गुंजन । अलीजै – भ्रमर के समान । साजधर – वाद्य यंत्र । जरद – कवच । सांतरा – सुन्दर । राजधर – राजसिंह । रीझै – प्रसन्न हो, दान दे ।

७. भुगते – भोगते हैं । तरण – तरुणी । फतै – विजय । पणै – रूप में । हूंसनायक – शौकीनी, छैलापन से । मुनन्द – नारद । मानहर – मानसिंह का पौत्र । धाड रे धाड – धन्य है, धन्य है । मसत – मस्त । राड़ रै – युद्ध के । रसियौ – रसिक, प्रेमी ।

५७. गीत रावराजा ऊमेदसिंघ हाडा बूंदी रौ

वागा अखाड़ै चौगान वाळ आंमी-सांमां नेतवंध,
सूरां घू आयास लागा साहंसी असंभ।
केदार माधजी सतो अहु जेठी अेक आडी,
अेक आड़ी दीवाण उम्मेद अड़ीखंभ ॥१॥

खागां सेलां डोरिया वीरता मत्ता वीर खेत,
मांझी दत्ता जानकू अजार जांणी मीच।
उभै मेक मलां हूं समाथ हाथ कियां आयो,
भाराथ रौ पाथ राव अेका अेक भीच ॥२॥

गोळां रीठ वाज खंभां गोरभां नीहाव गाजै,
भाजपै मचक्कां पीठ कुरभा भवांन।
वुधा नद करतो पराजै त्रैव वळढीया,
अग्राजै अखाड़ां जीत बलट्ठी अमांन ॥३॥

५७. गीतसार—इस गीत मे बूंदी के शासक राव राजा उम्मेदसिंह हाडा और कोटा के स्वामी राव शत्रुसाल तथा उसके पक्षधर मरहठे सेनानायक केदार और महादा के मध्य बूंदी पर लड़े गये युद्ध का वर्णन हुआ है।

१. वागा – भिडने लगे। अखाडै – युद्ध मे। चौगान वाळ – खुले मैदान मे। आंमी सामां – एक दूसरे के सामने। नेतवंध – ध्वजधारी, युद्ध-चिन्ह विशेष वाले। घू – मस्तक। अयास लागा – आकाश के जा लगे। असभ – वीर, अद्वितीय। सतो – राव शत्रुसाल। जेठी – ज्येष्ठ, प्रधान। अेक आडी – एक ओर, एक भाग मे। दीवांण – राजा मेवाड के महाराना। अडीखम–महान् वीर, अडिग वीर।

२. खागा – तलवारो। सेला – भालो। डोरियां – धनुषो। मत्ता – मस्त। खेत–रणक्षेत्र। मांझी – मुखिया। दत्ता – जयापा मरहठा का भाई दत्ताजी। जानकू–जयापा का पुत्र, जनकूराव मरहठा। अजार – बिना रुग्ण हुए ही, अचानक। जांणी–समझी, अनुभव की। मीच – मौत। उभैमेक – तीन। मला हू – योद्धाओ से। समाथ – ऊपर, मस्तक की ओर, समर्थ। भाराथ रौ – युद्ध का। पाथ – पार्थ, अर्जुन। अेकाअेक – अेकाकी। भीच – महा भट।

३. गोळा रीठ – गोलो के प्रहार। वाज – बजने से, ध्वनि होने से। खभां – आकाश, कंदराएँ, दो पर्वत श्रेणियों के मध्य का भाग। गोरभां–पृथ्वी, आकाश। नीहाव–आवाज, तोपें। भाजप्पै – टूटने लगती है। मचक्का – मचक्कों से, भार के कारण हिलने डुलने से। कुरभा – कच्छप की। वुधानद – महाराव वुधसिंह का पुत्र, महाराव उम्मेदसिंह। पराजै – पराजित। त्रैव – तीनों। बळढीया – बलवानों को, सेनानायकों को। अग्राजै – गर्जना करता, रण में ललकारता। अखाड़ांजीत–युद्ध विजेता। बलट्ठी–प्रबल।

जोधां जोध जूटता अढार दीह भागा जोर,
बूदी थांन बागा जगी जैत रा बिधांन ।
जमी मोर लागा नीसा पथ लागा ग्रहूं जेठो,
जोरावर चोथौ जेठी जाणियौ जिहांन ॥४॥

५८. गीत ब्याव रा बीनाण रौ उदैभांण राठौड़ रौ

दिन येता रही वरे नह दूजौ, जुध केता बाता जम जाळ ।
साही चाल अछर तिय सहति, ब्राही उतरि हेठ वरमाल ॥१॥

वारगना रही धारे व्रत, अ्रत स्यामावत तणै उमाह ।
पिड़ि खुरसाणै बीद परखियौ, वळि कुडाणै हुवा बिमाह ॥२॥

सौर सराब वाण सज छूटा, ऊडी अराब बीनोरै आगि ।
अखौ वांह वर खेंचि आंणियो, बणिया कमध बीद वरजागि ॥३॥

---

५८. गीतसार—उपर्यंकित गीत मे कवि ने बादशाही सेना रूपी अविवाहित दुल्हिन के साथ उदयभानु राठौड़ के युद्ध-विवाह का रूपक रचा है । कवि ने युद्धाकांक्षिणी सेना के मुह से पाणि पीड़न की कामना प्रकट करवाते हुए लिखा है कि कितने ही भयानक युद्धों मे भाग लिया किन्तु अद्यावधि किसी ने वरण करना स्वीकार नही किया । फलस्वरूप अप्सराओ का समूह साथ लिए कुमारी जहाँ-तहाँ भटकती रही ।

---

४. जोधा जोध – योद्धाओ से योद्धाओ के । जूटतां – जुटने पर, भिड़ते ही । बूदी थान – बूदी स्थान । बागा – बजे । जगी जैतरा – युद्धविजय का । जमी मोर– भूमि की पीठ पर, पृथ्वी पर । लागा – जा लगे, पड़ गए, विवाद चढे । ग्रहू जेठी– तीनो प्रमुख । जोरावार – जोरावर. बलवान । जाणियो – जाना गया । जिहांन– ससार ने, ससार मे ।

१. येता – इतने । वरे नह दूजौ – कोई दूसरे का वरण नही करती । केता – कितने ही । बीता – व्यतीत हुए । जमजाळ – वीर, छोटी तोप । साही – बादशाह की सेना । अछर – अप्सरा । तिय – त्रिया । सहति – सहित, प्रीति पूर्वक । हेठ– नीचे, हठ । बरमाळ – वरमाला ।

२. वारगना – अप्सरा, दुल्हिन । धारे व्रत – व्रत धारण किये । अ्रत – मृत्यु । स्यामावत – श्यामसिंह तनय । तणै – के । उमाह – उत्साह । पिड़ि – युद्ध । खुरसाणै – मुसलमान । बीद – दूल्हा, वर । परखियौ, परखा, परीक्षा का । बळि – फिर । कुडाणै – स्थान का नाम । बिमाह – विवाह ।

३. सौर – बारूद । सराव – मदिरा । बाण – तोपें, तीर । ऊडी – उडी, ऊपर उठी । अराब – तोप की । बीनोरै – बिनोरा, बारात चढने के पूर्व दूल्हा के लाड-कोड की रस्मे । आगि – अग्नि । अखौ – अक्षयसिंह । आणियो – ले आया । बणिया – बने, सजे । कमध – राठोड । वरजागि – वज्राग्नि, प्रचण्ड वीर ।

फिरि फिरि अफिरि फिरै धाय फेरा, हुवो न यसड़ो ब्याह हुवै ।
वंधव विन्है सुरां रथ वैठा, दौर जिठांणी अछर दुवै ।।४।।

५६. गीत महादेव रा बीनांण रौ महेसदास कूंपावत रौ

घावां बाणांसां तिलक्का धू सावळां गंगाजळां घोक,
बील पत्रां कटारां अखत्तां गोळी वांण ।
सोर धूप झाळां दीप माळा फळां गोळां सीस,
पूजे यूं सतारा दळां माहेस पीठांण ।।१।।

हरी हरा रहां चहूं तरफां असेस होत,
नमेस इसट्टां वार खत्रीं वट्टां नेम ।
पड़े पावां सार झट्टां हजारां भ्रकट्टां पेस,
अरच्चै भूतेस-नांमी मारहट्टां अेम ।।२।।

---

५६. गीतसार—इस गीत मे कवि ने ठाकुर महेशदास कूंपावत के मेड़ता स्थान पर लड़े गए युद्ध का शिव के साथ सांग रूपक रचकर वर्णन किया है। कवि उम्मेदराम ने लिखा है कि तलवारों के घाव तो मस्तक का त्रिपुण्ड है। भालो की चोटो से बहने वाला रक्त गगा की धारा है। कटारें विल्वपत्र और तोपों के गोले अक्षत हैं। बारूद का धुआ धूप, तथा उनकी ज्वाला दीपो की अवली और गोलें ही फल हैं। इस प्रकार सतारा (मरहठो) की सेना द्वारा युद्ध मे महेशदास पूजा जारहा है।

---

४. फिरि फिरि — घूम घूम कर। अफिरि — अपूठी। धाय फेरा — दौडती हुई फेरा लेती है। यसड़ो — ऐसा, इस प्रकार का। ब्याह — विवाह। हुवै — हुआ। वंधव विन्है — दोनो भाई। सुरां रथ — देव विमानों में। दौर जिठाणी — देवरानी और जेठानी। अछर — अप्सरा। दुवै — दोनो।

१ घावा — घावों। वाणासां — तलवारो के। तिलक्कां — तिलक, टीके। धू—मस्तक। सावळां — भाले विशेष। घोक — तेज प्रवाह। बीलपत्रां — विल्वपत्रो। कटारां— कटार, छुरें। अखत्ता — अक्षतों। सोर — बारूद। धूप — गंध द्रव्य। झाळा — ज्वाला। फळां — फल, रसाल। पीठाण — युद्ध।

२. नमेस — नमस्कार। इसट्टा — इष्टदेवो। खत्रीवट्टां — क्षत्रिय मार्ग। पांवां — पैरो में। सार झट्टा — तलवारो के प्रहारो से। भ्रकट्टां — भ्रकुटी, मस्तक। अरच्चे — अर्चना करते है। भूतेसनामी — महेशदास। मारहट्टां — मरहठे। अेम — इस प्रकार।

टणकारां गै घंट्टां झालरी झणकार टोपां,
घारा फूल चौसरां गळां रा जांगी घूस ।
रुण्ड नच्चै मोती थाळ आरती उतारै रंभा,
रुद्र गोती गनीमां चरच्चै इसी रूंस ॥३॥

पिनाकी रीझियौ कूंपौ सताबी विरोध पूजा,
बगस्से निरभ्भै धाम काटै पाप बंध ।
केवांण भसम्मी कड़ा हूंत कीधा प्रळै-कारां,
कैलास लेगयौ सारां पूजारा कमंध ॥४॥

—ऊमेद सांदू रौ कह्यौ

६०. गीत कमठांण रा वीनांण रौ मोहकमसिंघ रूपावत रौ

(तन्नै) थिरू दिराड़े समेधा नींम चहु वेदां विणै थंभ,
सुभेदां आखरां चेजां हलाये सुरेस ।
चौजां राखै जाळियां सहेलां जोखां छाजे चीत,
महेलां कीरती गोखां राजे मोहकमेस ॥१॥

---

६०. गीतसार—इस गीत मे कवि ने मोहकमसिंह रूपावत की वदान्यता की भवन-निर्माण-कला के साथ रूपक रच कर सराहना की है। गीत में वर्णन किया है कि मेधा रूपी नींव लगवा कर चारो वेदो के थभे स्थापित किये। तदनन्तर उसमे काव्य-भंदो की जालियाँ तथा छज्जे रखवा कर कीर्ति रूपी प्रासाद का निर्माण किया है।

---

३. टणकारां — ध्वनि विशेष। गै — हाथी। घंट्टा — घटे। झालरी — झालर, घड़ियाल। झणकार — आवाज विशेष। टोपा — टोप, शिरस्त्राण। धारांफूल—तलवारो की पैनी धाराएँ। चौसरां — चौसरो वाले हार। गळांरा — हर्ष-ध्वनि। जागी घूस — नक्कारे और घूसा नामक बाजा। नच्चै — नाचते है। रुद्र — शिव। गोती — गोत्र वाले। गनीमां — बैरियों। इसी — ऐसी। रूंस — तरह।

४. पिनाकी — शिव, धनुष। रीझियौ — प्रसन्न हुआ। कूंपौ — कूंपावत शाखा वाला, महेशदास। सताबी — शीघ्र। बगस्सै — प्रदान करे। निरभ्भै धाम — निर्भय धाम। बंध — बन्धन। केवाण — तलवार। भसम्मी कड़ा — भस्मीभूत कर डालने वाला कड़ा। हूंत — से। सारां — सब, तमाम को, तलवारों। पूजारां — सेवकों को, भक्तों को।

१. थिरू — स्थिर। दिराड़े — दिलवा कर। समेधा — श्रेष्ठ बुद्धि। विणै थभ — स्तम्भ बने। सुभेदा — रहस्य, मर्म। आखरां — वर्णों का। चेजा — चुनाई, मकान निर्माण कार्य। चौजां — आनद के लिए, विनोद मे। जाळियां — छिद्र मय हवादान। सहेलां — सैर। जोखा — आनन्द। छाजे — छज्जे, शोभा। महेला — प्रासादो। कीरती — कीर्त्ति। गोखां — झरोखे, गवाक्ष। राजे — शोभित होता है। मोहकमेस — मुहकमसिंह।

कलावूतांवां कियो चहु' पै साठ वांधे कळां,
आठ दसां पुराणां चाढे पताका अख्यात ।
जंवूरां वाजतां नद्दां पीवतां पियाला जोस,
छाजां वैठो पंगीरा अगाजै रूपां छात ॥२॥

सिलप्पी रचाये जे रूपकां असी चार सोझे,
विणाये रतन्ना विधा कांगरां वुवाह ।
आभासा अनोखां गोखां पराभा मेघ भासे असा,
दांन रा सोभा झरोखा विराजे दुवाह ॥३॥

६१. गीत वैनांणी रा वीनांण रो जोरावरसिंघ खींवसर रो

अस चालव धमण जागवी अहरण, सांजत कर असमर कर साप ।
सात्रव लोह ताप साकेलो, तैं काटिया सूं हेकण ताप ॥१॥

आरण रण रचतां ऊदावत, दाव घण सिर घाव दिया ।
केवी गांज भांज करड़ावण, कवळा नरम हलीम किया ॥२॥

---

६१. गीतसार—इस गीत में कवि ने ठाकुर जोरावरसिंह करमसोत को लुहार बनाकर युद्ध गीत की रचना की है । योद्धा के रण कार्य और लुहार के कर्म की समानता दिखाई है । कवि ने लिखा है कि लोह तुल्य बलिष्ठ वैरियों को घन रूपी तलवार के प्रहारों से पीट तथा यंत्र में से खींच कर पतले नम्र बना दिये ।

---

२. कलावूतांवां — कलावतून, वस्त्र विशेष । चहू साठ — चौसठ । बांधे — निर्माण कर । आठदसा — अठारह । अख्यात — आख्याति, प्रसिद्धि । जवूरां — छोटी तोपें । वाजतां — बजते । नद्दां — नाद, ध्वनि । पियाला — प्याले । छाजां — छज्जे, गोखड़े । पगीरा — कीर्त्ति के । अगाजे — गर्जता है । रूपा छात — राठोड़ों की रूपावत शाखा का स्वामी ।

३. सिलप्पी — शिल्पी । रूपका — काव्य, राजस्थानी में चौरासी प्रकार के काव्य रूपक प्रसिद्ध हैं । असी चार — चौरासी । सोझे — शोध कर । कांगरां — कंगूरे । वुवाह — वाह वाह, उसके । आभासां — अभ्रवारा से । पराभा — प्रभा । भासे — भासित होते हैं । असा — ऐसे । दुवाह — दोनों हाथों से प्रहार करने वाले वीर ।

१. अस — अश्व । चालव — हांक कर । धमण — धमनी यंत्र । अहरण — लुहार के बधे का उपकरण । असमर — तलवार । सात्रव — शत्रु । ताप — तपा कर । सांकेलो — लोह की किस्म । हेकण ताप — एक ही आग से ।

२. आरण — लुहार का लोह तपाने का चूल्हा । ऊदावत — उदयसिंह का पुत्र । दाव— दांव । घण — घन, अधिक । केवी — रिपु । गांज — मार कर । भाज — तोड़ कर, टुकड़े कर । करड़ावण — बड़प्पन, मरोड़ । कवळा — कोमल । नरम — नम्र । हलीम — सीधा, शान्त ।

गहिया सार सत्रू सह गाळे, बाळे जिणगी जठी बळे।
जोरै घाल काढिया जत्री लुळता तत्री जेम लुळे ॥३॥

काळै सार बडे कारीगर, जीजरियां रण जुवा जूआ।
पर लोहार किया सर पाधर, हाले सात्रव ज़ेर हूआ ॥४॥

—सादू तेजसी री कह्यौ

२. गीत भंमर रा बीनाण री चांदसिंघ री

समर बाजियां खाग फौजां डंमर सालुळी, ओप भर गुमर पौरस अमांमौ।
उरड़ पड़ियौ त्रविधि घड़ा ऊपर अतर, सार धारा बिचै भमर सांमौ ॥१॥

गुलाबां चटक आतस झटक गमागम, दुगम रातळ पळळ भळळ दारू।
बखतसीं तणा निजदळ कमळ तणै बिच, मिळै अळियळ कंदळ राव मारू ॥२॥

---

६२. गीतसार—इस गीत मे चांदसिंह को भ्रमर के रूप मे चित्रित कर रूपक रचा है। योद्धा चांदसिंह महाराजा अभयसिंह के पक्ष मे राजाधिराज वख्तसिंह की सेना से लड कर वीरगति को प्राप्त हुआ था। ज्योही सेनाएँ रणस्थल की ओर प्रस्थान कर तलवारो के प्रहार करने लगी त्योही अपरिमित गर्व से परिपूर्ण चांदसिंह उत्साह मे भरकर सेना पर प्रहार करने के लिए सन्मुख चला।

---

३. सार – तलवार। गाळे – गलित, पिघला कर। बाळे – जलाकर। जोरै – जोरावरसिंह। घाल – डाल कर। काढिया – निकाले। लुळता – लचकता है। तत्री – ततु। लुळे – लचकते हैं।

४. काळै – वीर। सार – तलवार। जीजरिया – (?)। जुवाजूआ–जुदा जुदा। सर पाधर – पराजित कर सीधे सरल बना दिये। हाले – चलते है। सात्रव – शत्रु। जेर हूआ – अधीन बने हुए।

१. समर – युद्ध। बाजियां खाग – तलवारें चलने पर। फौजा – सेनाएँ। सालुळा – चली। ओपभर – दीप्तिमान् होकर। गुमर – गर्व। पौरस – बल। अमांमौ – अप्रमाण। उरडपडियौ – बलात् झपट पड़ा, जोश मे आकर झपटा। त्रविधि – तीनों प्रकार के वार करता। घडां – सेना। अतर – पुष्पो की सुगन्धी का सार, अत्ति। सार धारा – शस्त्रो की धाराओ। बिचै – बीच मे। सामौ – सन्मुख।

२. चटक – चपल, नखरायुक्त। आतस – अग्नि। गमागम – चारो ओर, एक साथ। दुगम – दुर्गम, कठिन। रातळ – युद्ध विशेष। पळळ – आमिष। भळळ – अग्नि, भरलाट करती। दारू – बारूद। निजदळ – निजी सेना। कमळ – कमल, सिर। अळियळ – भ्रमर। कंदळ – युद्ध।

सुकर सेलां धजर पाड़तौ घणां सत्र, अभग चाचर अंवर जाय अड़ियौ ।
अमा रौ मधुप जिम वीर सारां अगर, पौहप धारां वगर तूट पड़ियौ ।।३।।

बिजाई हरियंद इळ कीरत वरण, जगत जामण मरण मेट जांदौ ।
केवियां घाय रिण हुवौ काटे करम, चरण पंकज परम सरण चांदौ ।।४।।

६३. गीत खाती रा बींनांण रौ नगा रौ

यसा सूत सू काम वरियाम तू यम करै, लकड़ मांनै तरस जकड़ लागां ।
वसेला घाव सेलां तणा बींदणा, खळां रा डोळ करि घड़े खागां ।।१।।

याही कारीगरी सारी जग ऊपरै, घड़ा रजवट तणी घरट घाटै ।
किरमरां केळि परि कव्हाडां कीमती, काठ जिम अरयां रा थाट काटै ।।२।।

---

६३. गीतसार–इस गीत में नगा (नगराज) योद्धा की युद्ध-क्रियाओं की बढ़ई के धंधे के कार्यों से समानता दिखाते हुए रूपकात्मक वर्णन किया है। कवि ने लिखा है कि नगराज ऐसी विधि से खाती का धंधा करता है कि वधन में आने पर लट्ठ रूपी शत्रु भयभीत हो उठते हैं। वह खाती की भाँति तलवार रूपी बसोला और भालों रूपी बींजनों से वैरियों को काट-छाँट कर उनकी घड़ाई करता है ।

---

३. सुकर – हाथ । सेलां – भालों से । धजर – तलवार । पाड़तौ – नष्ट करता । घणा – बहुत । सत्र – शत्रु । अभंग – अखंडित । चाचर – मस्तक, क्रीड़ा । अंवर – आकाश । अड़ियौ – लग गया । अमा रौ – अमरसिंह का । मधुप – भ्रमर । अगर – आगे । पौहप-धारां – तलवारों, धाराओं में । वगर–फलांकुर ।

४. विजाई – दूसरा । हरियंद – हरिसिंह । इळ – पृथ्वी । जामण मरण – जन्म और मृत्यु । मेट – मिटाकर । केविया – वैरियो । काटे करम – कर्म वधन नष्ट कर । पंकज – कमल । परम सरण – परमात्मा की शरण में । चादौ–चांदसिंह ।

१. यसा सूत सू – ऐसी विधि से, ऐसे विचार से । वरियाम – श्रेष्ठ । यम – इस प्रकार । लकड – काष्ठ, लट्ठ । तरस – त्रास । जकड़ लागां – चारों ओर से वध जाने पर । बसेलां – खाती का औजार । सेलां तणा – भालो के । बींदणा – विद्ध करना, छेद करने का औजार । खळा – दुष्टों, वैरियो । डोळ – काट छाँटकर सुन्दराकृति में लाना । घड़े – घड़ता, निर्माण करने की क्रिया का भाव ।

२. सारी – तमाम । घरट घाटै – घर की रीति । किरमरां – तलवारें । केलि – क्रीड़ा । कव्हाड़ा – कुल्हाड़े । अरयां रा – वैरियों के । थाट काटै – समूह का नाश करता है ।

मोहरै महरांण रै दळां रा महाबळ, भुजा बळ वन पती कीध भैरी ।
राजि रा पमाड़ा हबै सह रीधिया, बीधिया कवाड़ां जही बैरी ॥३॥

रीति खांती तणी चीति राखी रूड़ां, पेढ साखा सहत घड़त पाती ।
तरवरां ऊपरै केई नर तरछिया, खरौ हूंनर लियां नगा खाती ॥४॥

६४. गीत आग रा बीनांण रौ प्रथीराज राठोड़ रौ

असमरि अगनि कड़ाई आरियण, लाकड़ सोहोड़ घख कुळ लाज ।
दूध कुसळ पोहतौ खीची दळ, पाणी आवटियौ प्रथीराज ॥१॥

खरहड अगनि साथ खोंदाळम, नर ईंधण जाळजे नरेस ।
रासै न्हासि खीर राखियौ नीर, प्राजळियौ खेड़ नरेस ॥२॥

चामरियाळ घड़ा चूडाक्रम, अधपति काठ जळ अहकार ।
हरराजउत अंब होमतां, पैजा-उत पोहतौ पार ॥३॥

---

६४. गीतसार—इस गीत में कवि ने गीत नायक पृथ्वीराज राठोड़ की तलवार का अग्नि के साथ रूपक रचा है। कवि ने लिखा है कि तलवार रूपी अग्नि से रणभूमि रूपी कड़ाह में योद्धा रूपी ईंधन को डालकर सेना को जलाने लगा।

---

३. मोहरै — मुह आगे। महरांण रै — महाराना के। दळां रा — सेना का। वनपती— वनस्पती, वर्ण-प्रमुख। भैरी — एकत्रित। राजि रा — आपका। पमाडा—प्रशस्ति, कीर्ति कथा। हबैं — अब। रीधिया — प्रसन्न हुए, सफल हुए। बींधिया — छिद्र किये। कवाडा — कुल्हाड़े।

४. चींति — चित्त में, स्मरण मे। रूडां — सुन्दर रूप मे। पेढ — पेढ। पाती — औजार, तलवार, पत्ते। तरछिया — छिन्नकरण किए, तराश डाले। हूनर — कला।

१. असमरि — तलवार। कडाई — कड़ाह। आरियण — रणभूमि। लाकड—ईंधन। सोहोड़ — योद्धा। घख — अग्नि की लपट, प्रबलेच्छा। कुळ लाज — कुल गौरव। पोहतौ — पहुँचा। खीची — चौहान क्षत्रियों की शाखा का नाम। पानी — जल। आवटियौ — गर्म हुआ, खौलने लगा।

२. खरहड — सेना, घोडा। खोंदाळम — यवन। नर ईंधण — मानव रूपी ईंधन। जाळजे — जलाता। न्हाखि — डालकर। खीर — दूध। प्राजळियौ — जल गया। खेड नरेश — राठोड़ राजा, राठोड़ योद्धा।

३. चामरियाळ — मुसलमान, अश्व। घडा — सेना। चूडाक्रम — चोटी। काठ — काष्ठ, लकड़ी। अंब — जल। होमतां — हवन करते। पार — उस ओर।

सत्रदळ वीनळ विढ़ण विढतै सुज, वळै तेज वहो मान वळ ।
अम्रत धारू-हरो उवरियो, सूर हरो जळियो सुजळ ।।४।।

६५. गीत गिड़ रा वीनांण रो घासीराम हाडा रो

ओखळै खागि दातीयां अणभग, छळै वप खत्रवाट छिति ।
अरि पचमुखा न आवै आगिम, गिड़ जिम घासी कहर गति ।।१।।

खीवर नरनिघड़क घर खायक, डार लियां अणपार दळ ।
खळ नाहरां तणा उर खटकै, कला तणो वाराह कळ ।।२।।

तुंडारतो वहै घड़ा त्रजड़ै, अेकळ पख भोमैं अचळ ।
भड़ असगां वाघां अण-भावो, महोकम हर डाढाळ मल ।।३।।

आदू अेह प्रथी अवखांणो, पण चहूवांण पवाड़ां पूर ।
सूरां बीचि न पीवै सीहण, सीहा बीचि वळे पीवै सूर ।।४।।

---

६५ गीतसार—इस गीत मे कवि ने गीत-नायक घासीराम हाडा को वाराह और शत्रु योद्धा को सिंह बनाकर युद्ध-वर्णन किया है। कवि ने लिखा है कि वह वाराह रूपी वीर घासीराम खड्ग-दन्तुसल के प्रहार देता हुआ ससार में क्षत्रियत्व को सुशोभित करता है। उसके प्रहारों के भय से शत्रुरूपी सिंह सामने नहीं चढ़ते हैं ।

---

४. वीनळ — अग्नि, वन्हि। विढ़ण — युद्ध। विढते — लड़ते। अम्रत — दूध, अमृत। धारूहरो — धारा का पौत्र। जळियो — जल गया। सुजळ — श्रेष्ठ, नीर।

१. ओखळै — प्रहार करता है। खागि दातिया — तलवार रूपी दन्तुसल के। अणभंग—वीर, योद्धा। छळै — छलकता है। वप — शरीर। खत्रवाट — क्षत्रित्व। छिति — पृथ्वी, ससार। अरि — वैरी। पचमुखा — सिंह। आगिम — सामने, आगे। गिड़ — वाराह। घासी — घासीराम। कहर — भयावह, विपत्तिदायक, युद्ध।

२. तुंडारतो — टूण्ड के प्रहार करता। वहे — चलता है। घड़ा — सेना। त्रजड़े — तलवार। अेकळ — अकेला रहने वाला, एकाकी। भोमैं — पृथ्वी पर। भड़ असगां — शत्रुयोद्धा। अणभावो — अपने से विरोधी, अप्रिय। डाढाळमल — योद्धा, शूकर।

४. आदू — आदिकाल से। अेह — यह। अवखाणो — आख्यान, कहावत। पवाड़ा — प्रवाडो में, प्रशस्तियों मे। पूर — पूर्ण। सूरा — सूअरों। पीवै — पीते। सीहण — शेरनी, सिंह। वळै — फिर भी।

६६. गीत घांणी रा बीनांण रौ घासीरांम हाडा रौ

खत्रवट श्रेम निपाई खेती, भाड़ि पाड़ि अरि भोळविया ।
अरियण करि ईख घड़ा करि घांणो, रूक लाठि करि रोळविया ॥१॥

मौजां समद बीजाई महोकम, चावां घिन खग चौ चरिया ।
कोलू करि कटक पीसण करि सांठो, खेढ आवुध खग खरिया ॥२॥

घण दळ लियां घासी घण-नांमी, सुसवट सुबद बदोती साखि ।
भेरू घड़ पाड़ि बाड़ बिधि वैरी, करि भेळा येळा कमळाखि ॥३॥

पाट रिछपाळ कलाउत परगट, पीया पिसण तिता पचिया ।
रस-कस घणां लिया रायजादै, बीजा बाकस होय बचिया ॥४॥

---

६६. गीतसार—इस गीत मे कवि ने योद्धा घासीराम के युद्ध की कोल्हू यन्त्रके साथ साम्यता दिखाते हुए चित्रण किया है। कवि ने लिखा है कि घासीराम ने शत्रु को ईख और सेना को कोल्हू बनाकर तलवार-लाठ से पेलकर उसका रस निकाल लिया ।

---

१. खत्रवट – क्षत्रियत्व की। श्रेम – ऐसी रीति से। निपाई – उत्पन्न की। खेती – कृषि। भाड़ि पाडि – गिरा तथा पटक कर। अरि – वैरी। अरियण – शत्रु। ईख – गन्ना। घडा – सेना। घाणो – कोल्हू। रूक – तलवार। लाठि – कोल्हू के मध्य का लट्ठ। रोळविया – पेल डाले, कुचल दिए।

२. मौजां – रीझ कर दान देने वाला। बीजाई – दूसरा। महोकम – मुहकमसिंह। चावां – प्रसिद्ध। खग – तलवार। चौ – को। कोलू – कोल्हू, घानी। कटक – सेना। पीसण – वैरी। सांठो – ईख। खेढ़ – युद्ध (?)। आवुध– आयुध। खरिया – चीर डाले, मार दिए।

३. घण दळ – विशाल सेना। घासी – घासीराम। घण-नामी – बहुत नामवरी वाला। बदीती – कही गई। साखि – साक्षी। बाड़ – गन्नो का खेत। भेळा – इकट्ठे। कमळाखि – मस्तक।

४. पाट – सिंहासन। रिछपाळ – रक्षक। कलाउत – कल्याणसिंह का पुत्र। पीया– पान किया। पचिया – हजम हुए। रस-कस – घानी, कोल्हू, रस निकालने का यन्त्र। बीजा – दूसरे। बाकस – रस रहित, शुष्क। बचिया – जीवित रहे।

६७. गीत सूअर रा बीनाण रौ बैरीसालोत हाडां रौ

नीघसिया तूर पट्ठा नीसरिया, बीजळ सजि दांतळ बिड़ूदैत ।
फौजां धज नेजा फरहरिया, जुध हेकल ठाहरिया जैत ॥१॥

बिजडां झाट त्रमांट बाजतां, स्यामध्रम सूरातन साहि ।
सत छाडे टेभा अवछडिया, गिड़ भूरा मडिया गज-गाहि ॥२॥

खळ भीमेण तणा दळ खाधा, बीजळ हुळ दांतळ करि बाह ।
खड़भड़ि डार घरा दिसि खड़िया, बैराहर जुड़िया बाराह ॥३॥

घणी निबाहि बाहि खगधारां, भीम तणा भड़ घणां भंजि ।
अछरा बर मिळिया आखाड़े, मिळिया खीवर जोति मजि ॥४॥

---

६७ गीतसार–इस गीत में कवि ने बैरीशाल हाडा के वंशजों को शूकर बनाकर युद्ध का वर्णन किया है। कवि ने लिखा है कि तूर्य वाद्य के शब्दायमान होते ही बहुत से अवयस्क पट्ठे-युवा शूकर मैदान त्याग कर भाग निकले। किन्तु फौजों के ध्वज और नशान फहराने पर रणभूमि में विजयाकांक्षी वाराहतुल्य वीर डटे रहे।

---

१. नीधसिया – बजने पर। तूर – तूर्य बाजा। पट्ठा – छोटी आयु के शूकर, शावक। नीसरिया – निकल गए। बीजळ – तलवार। दांतळ – दाढे, दांतले। धज – ध्वजाएँ। नेजा – निशान। फरहरिया – फहरे। जुध – युद्ध। हेकल–अकेला रहने वाला, टोली से अलग रहने वाला। ठाहरिया – ठहरे रहे। जैत – विजया-कांक्षी।

२. बिजडां – तलवारों के। झाट – आघात, वार। त्रमांट – नगाडे। सूरातन – शूरता का भाव। साहि – धारण कर। सत – सत्त्व, पुरुषार्थ। टेभा–शावक। अवछडिया – भाग गए। गिड़ – सूअर। भूरा – वीर, वीर का विशेषण। मंडिया–लड़े। गजगाहि – युद्ध, गजग्राह।

३. खळ – वैरी। भीमेण – भीमसिंह का। खाधा – खा गए, मार डाले। बीजळ–तलवार। हुळ – प्रहार, तोप। दांतळ – दाढो के। करि बाह – प्रहार कर। खडभड़ि – विचलित हो, उलट फेर। डार – समूह। खड़िया – भागे। बैराहर–बैरीशाल का वंशज। जुड़िया – जुटे, लडे।

४. घणी निवाही – स्वामिधर्म का पालन कर। बाहि – चलाकर। खगधारां – तलवारें। घणां – बहुत। भजि – नष्ट कर। अछरां बर – अप्सरा और उनके वर। मिळिया – मिले, लडे। आखाड़े – युद्ध। खीवर – अप्सराओं के वर, योद्धा। मंजि – मध्य, में।

६८. गीत कालीनाग रा बीनांण रौ राव भीमसिंघ हाडा रौ

गयो खीजियो थको स देस हू सूरगुर, टळण परदेस री न कर टाळी ।
धार फूलां लहरि बहरि ले ले धुकै, कहर रवदां रमै जहर काळी ।।१।।

फुणाटां झाट बीजड़ां भडा ऊफणा, खुणाटां वोवड़ै थाट खेदी ।
बादगीरां हंदा साद घट बीचते, भीम मुगलां मिळै नाद भेदी ।।२।।

खमैं सरणांट तुपकां सरां है-खुरां, बीजड़ भड़े ऊपाटां पाट बूठौ ।
पांव बिमुहां खड़ै धडहडै असुर पिंड, शाव अहराव रै भाव रूठौ ।।३।।

---

६८. गीतसार—इस गीत में राव भीमसिंह हाडा के युद्ध का वर्णन है। कवि ने युद्ध की क्रियाओं को नाग की क्रियाओ के समान अकन कर रूपक रचा है। कवि ने लिखा है कि वह वीरगुरु रांव भीमसिंह स्वदेश से प्रस्थान कर परदेश में युद्ध लडने के लिए गया। वहाँ उसने अपने आपको बचाने की कामना कर किनारा नही काटा और तलवार रूपी फनों की चोटें करता अहिराव के समान क्रुद्ध होकर मुगल सेना के सम्मिलित हुआ और विरोधी यवन सेना से लडता हुआ काम आया।

---

१. खीजियो – नाराज। थको – हुआ। सँ देस हूं – स्वदेश मे। सूरगुर – वीर श्रेष्ठ। टळण – अलग हटने, बचने। टाळौ – किनारा काट, बहाना बना। धार फूला – फूलधारा, तलवार की धारा। लहरि – लहर। धुकै – भभके, धूम्र उठे, जले। कहर – युद्ध, भयानक विपत्ति। रवदां – मुसलमानो से। रमै – रमता है, खेलता है। जहर – विष। काळी – सर्प।

२. फुणाटा – फनो। झाट – चोट, वार। बीजड़ां – तलवारें। भडां – योद्धाओ। ऊफणा – उमड कर, क्रोध कर। खुंणाटां – तलवार के प्रहार की ध्वनि करता। वोवडै – बरसाता हुआ। थाट – सेना, प्रमुख। खेदी – ईर्ष्यालु, हठ करने वाला। बादगीरां – विवाद करने वालो, युद्ध करने वालो। हुंदा – का। साद – आवाज, शब्द। घट–शरीर, सेना। नाद भेदी – नाद मर्मज्ञ, नाद के रस को जानने वाला।

३. खमैं – सहन करता, झेलता। सरणांट – आवाज विशेष। सरा – बाणो। है-खुरां – अश्वों का पदाघात। खुरा – सुम। बीजड़ – तलवार। ऊपाटां – ऊपर तक, उछल कर। वूठो – बरसा। विमुहा – बिमुख। खड़ै – चले। धडहड़ै – कम्पित, धडकने का भाव। पिंड – शरीर। अहराव–शेषनाग, नागराज। रूठो – रुष्ट हुआ।

झाग विख अरावां आगि माथै झड़ै, लड़थड़ै अड़ै गैणागि लागो।
झपेटां भाग किलमां करै झोवरै, नाग जिम राम रो खाग नागो ॥४॥

परळ जळ गरळ दळ जळै पांडेसवो, नराग्रंत कळ कळै वळै नीड़ो।
केहरी वियो मुणिसाळ रळतो कळै, ताइयां जांणियो काळ तीड़ो ॥५॥

घाव आखा सवद वाहि थाका घणां, मूगला फरोळै दाव मांटै।
अवनि धरि संभरी सुनि चढ़ियो उरे, ऊबरे न जाय म मुलक आंटै ॥६॥

साख साखां सिरै राखि चढियो समर, लाख फौजां गजां तणो लाडो।
बंधण आवागवणि तोड़ि सूधो विघन, हर चंदण विलूधो राव हाडो ॥७॥

---

४. झाग विख — विष के फैन, सर्प के झाग। अरावां — तोपें। आगि — अग्नि। माथै — सिर, ऊपर। झड़ै — गिरती। लड़थड़ै — लड़ते भिड़ते, लड़खड़ाते। अड़ै — स्पर्श करे। गैणागि — आकाश। झपेटां — झपट मार कर, वार कर। भाग — फन, टुकड़े। किलमां — मुसलमानों के। झोवरै — नाश करे। नागो — नग्न, बिना म्यान।

५. परळ जळ — प्रलय जल। गरळ — विष। जळै — जले। पांडेसवो — तलवार के प्रहार, यवनपति। नराग्रंत — नरान्तक, मृत्यु, यमराज, संहार। कळ कळै — कलकलता, गर्म, क्रुद्ध। नीड़ो — नीड़, घर। केहरी — केशरीसिंह। वियो — द्वितीय। मुणिसाळ — मानव श्रेष्ठ। ताइयां — आततायियों ने, वैरियों ने। काळ तीड़ो — काल-कीट, सर्प।

६. आखा — अक्षत। सवद — शब्द, मन्त्र। वाहि थाका — चला कर थक गए। घणां — बहुत। मूगलां — मुगल शाखा के यवन। फरोळै — मारकाट कर बिखेर दिए। संभरी — चहुवान। ऊबरे — बच कर निकले। म — मत, नहीं। आंटै— लिए, विरोध में।

७. साख साखां — शाखा विशाखाओं में। सिरै — श्रेष्ठ। समर — युद्ध। तणो — का। लाडो — दुलहा। आवागवणि — जन्म मरण का, आवागमन का। तोड़ि— तोड़ कर, नाश कर। सूधो — सीधा, सरल। बिघन — विघ्न। हर चंदण — हरि रूपी चंदन, चंदन विशेष। बिलूधो — जा लिपटा।

६९. गीत गहली रा कलस रा बीनांण रौ भींवसिंघ हाडा रौ

फौजा खळ सबळ साबळा फुरळै, ऊछळि पळ जळ छींछ अति ।
भारत टूक हुवौ खग भींमौ, गहली रा बेहूड़ा गति ॥१॥

सेना प्रसण रौळतो सेलां, नीर रुधर जू छूटि नळ ।
बटकां समर हुवौ चद बीजौ, गहली वाळा कळस कळ ॥२॥

भारथ सुजाव बाहतौ भाला, तोय रगत बह चलै तटि ।
कुटकां हुवौ समर केवाणां, बेंडी रा घट तणी बटि ॥३॥

सूरा नमौ आखियौ सूरां, भारथ करै साखियौ भाण ।
पांणी गौत चढाय बिरद पत, चत्रभुज जौत मिळै चहुवांण ॥४॥

---

६९. गीतसार—इस गीत में भीमसिंह हाडा के युद्ध-मरण का वर्णन किया गया है। गीत रचयिता ने खड्ग प्रहारो से क्षतविक्षत भीमसिंह के शरीर को चित्तभ्रमित नारी के सिर पर धारण किए जलघट की स्थिति से समानता दर्शाते हुए चित्रण किया है ।

---

१ खळ – वैरी । सबळ – सामर्थ्यशाली, बलवान् । साबळा – भाले विशेष । फुरळै – इधर उधर बिखेर कर, फरोलना । ऊछळि – उछल । पळ – मांस । जळ–जल, पानी । छींछ – छींछड़े, मास के टुकडे । भारथ – युद्ध मे । टूक – टुकडे, खंड । खग – तलवार से । भींमौ – भीमसिंह । गहली रा–पागल नारी के । बेहूडा – द्विघट, दुघड ।

२. प्रसण – शत्रु । रौळतो – कुचलता, नष्ट करता । सेलां – भालो से । रुधर – रुधिर, लोहू । जू – ज्यों, जैसे ही । बटका – टुकडे टुकडे । समर – युद्ध मे । चद – चन्द्रसिंह । बीजौ – दूसरा । कळस – कलश, मिट्टी का जलपात्र । कळ – भांति, रीति ।

३ भारथ – भारतसिंह । सुजाव – पुत्र । बाहतौ – प्रहार करता । भाला – भाला, आयुध । तोय – जल । रगत – रक्त । तटि – तट, किनारे । कुटका – टुकड़े । केवाणां – तलवारो से । बेंडी रा – पगली के । घट – घड़ा । तणी – की । बटि – मार्ग, रीति से, खड खड हो ।

४ आखियौ – कहा । साखियौ – साक्षी दी । भाण – भानु, सूर्य ने । पाणी – जल, कान्ति । गौत – गोत्र । जौत – ज्योति मे । मिळै – मिल गया ।

७०. गीत जिह्मग रा बीनांण रौ भींवसिंघ हरदावत रौ

जागीयौ काळ अरि ढाळ करतौ जकां, खाग झाळे फुणां फौज खेदी ।
झाळ विख नांख किरमाळ अरि झोकतौ, भींव वाके आयौ राग भेदी ॥१॥

झगळा कांचळां झळम नांखे कंवळ, फुरळि फौजां गजां पार फूटौ ।
फुणा मतरा दीया घणा जग फेरतौ, तुरी रण राग पर नाग तूटौ ॥२॥

डाढ़ घर सागि घण गारडू बिखतौ, कहर काळौ असौ कोप कीयौ ।
अनड़ रण सघवा ऊपरै आवियौ, वाच - वंघ जेम हृदमाल वीयौ ॥३॥

कार मांनै नकौ वळे जुध अकारौ, जड़ौ फुण वादियां फेरि जाडौ ।
सुतन भारथ परै स्यो तणै सिघायौ, हार तणियर गळै राव हाडौ ॥४॥

---

७० गीतसार—यह गीत भीमसिंह हृदयनारायणोत हाडा की युद्ध-वीरता का है । गीतकार ने भीमसिंह की समर-भूमि की युद्ध-क्रियाओं की नाग की क्रुद्ध क्रियाओं से सादृश्यता प्रकट करते हुए वर्णन किया है ।

---

१. जागीयौ — जगा, जागृत हुआ । काळ — मृत्यु, काला सर्प । अरि — वैरी । ढाळ- गिराता । जकां — जिनको । खाग झाले — तलवार पकड़े । फुणां — फनो । खेदी — वैरी । झाळ विख — विष ज्वाला । नाख — गिरा, पटक । किरमाळ — तलवार । झोंकतौ — चलाता, मारता । भींव — भीमसिंह । राग भेदी — रागिनी- विद्, सर्प ।

२. झगळा — कवचो । कांचळा — कचुकियां । झलम — टोप के नीचे धारण करने का लोह जाली का रक्षा उपकरण । कवळ — मस्तक । फुरळि — छिन्नभिन्न कर । पार फूटौ — इधर से उधर निकला । घणां — बहुतो को । जंग — युद्ध । फेरतो — घुमाता । तुरी — तूर्य । रणराग — सिंधूराग । तूटौ — तुष्ट हुआ, झपटा ।

३ डाढघर — सर्प । सागि — शस्त्र विशेष । गारडू — मांत्रिक । कहर — भयानक,विपत्ति । काळौ — काला सर्प । असौ — ऐसा । अनड़ — अवंध्य, जो बाधा न जा सके । सघवा — सिंधूराग । वाच-वध — वचनों मे बंधने वाला, सर्प, मांत्रिक । हृदमाल — हृदय- नारायण ।

४. कार — मर्यादा । नको — किसी की, कोई की भी नही । वळे — पुनः । अकारौ- वलवान्, तेजस्वी । जड़ौ — चोट की । बादियां — विपक्षियों के । सिघायो — गया । तणियर — शिव । गळै — कठ ।

७१. गीत दणियर रा बीनांण रौ राव दुरजणसाल हाडा रौ

जळ भरियौ बरसि घणौं यंदज सिंध, बदि बदि ऊपटतौ बिरुध ।
सूरज तप थारै दुरजणसल, सोखै ईसर कियौ सुध ॥१॥

भीम तणा ग्रीखम भासकर, तेज भुजाडंड लागि तिस ।
कूरम तणौ सोखियौ कस करि, रसक न रहियौ तेण रस ॥२॥

बिनां अजाद हालतो बहतो, बधतो क्रोध हीलोळ बप ।
नीर बिना कीधौ अमनेरौ, ताहांरो सोखा वीर तप ॥३॥

रीतै अपथ वीयौ वड़ राजा, दूद धिनौ तप दन्नकर ।
भादव जनम दूसरै भरसी, सूखा ईसर तणौ सर ॥४॥

---

७१. गीतसार–यह गीत राव दुर्जनशाल हाडा और महाराजा ईश्वरीसिंह कछवाहा के युद्ध से सम्बन्धित है। गीत मे राव भीमसिंह-तनय को सूर्य और महाराजा ईश्वरीसिंह को समुद्र अंकित कर रूपक बाधा गया है ।

---

१. बरसि – बरस कर। घणौं – अत्यधिक, घना। यंदज – इन्द्र। सिंध – सिंधु, सागर। बदि बदि – हठ ठान कर, विवाद कर। ऊपटतौ – उमड़ता। बिरुध – विरोध मे। थारै – तेरे, तुम्हारे। सोखै – शुष्क किया। ईसर – ईश्वरीसिंह। सुध – निर्मल।

२ भीम तणा – भीमसिंह-तनय। ग्रीखम – ग्रीष्म ऋतु का। भासकर – सूर्य। भुजाडंड – भुजदण्ड। तिस – प्यास, उनके। कूरम तणौ – कछवाह का, ईश्वरीसिंह का। कस करि – किरणो में पकड़ कर, खीच कर। रसक – एक बूंद भी। रहियौ – रहा, अवशेष रहा। तेण – उसमे। रस – जल, कान्ति।

३. हालतो – चलता। बहतो – प्रयाण करता। बधतो – बढ़ता। हीलोळ – लहर। बप – वपु, शरीर। कीधौ – किया। अमनेरौ – आमेर वाले को, ईश्वरीसिंह को। ताहांरो – उसका, तेरा।

४. रीतै – रिक्त, खाली। अपथ – प्रतिष्ठा विहीन, जल रहित, पथविहीन। वीयौ – हुआ। दूद – दुर्जनशाल। धिनौ – धन्य है। तप – आतप, प्रताप। दन्नकर– दिनकर, सूर्य। भादव – भाद्रपद मास मे। भरसी – भरेगा, पूर्ण होगा। सूखा– शुष्क। सर – सरोवर, समुद्र।

७२. गीत ग्रीखम रा ताव रा बोनांण रौ राव दुरजणसाल हाडा रौ

अहर दळां अथाह रजवाट भरियौ अनंत, सकळ हिंदवांण तरंगां दवे साह ।
जसा सायर तणो नीर निसदिन जळै, दूदरज खडग आतस तणै दाह ॥१॥

लसकरां फिरै अग धाव चढ़तो लहर, आलमा दाव भवणां अलोड़ै ।
समद कछवाह तणो बरण सुकज, माधहर तणा खग झाळ मुहोड़ै ॥२॥

थाट तण विसन ऊपाट रजवट अथग, जगत हीलोळ वळेवळ जोस ।
उदधि कछवाह वाळो उदक ऊकळै, रूक तण भीम ज्वाळा तणै रोस ॥३॥

कूरमा नाथ सानाळ अहरां कहर, उपट बोळै मुलक रवद वाळा ।
मानहर महण रो मगज जळ वळ महा, जळै महाराव रै बीजड़ै ज्वाळा ॥४॥

---

७२. गीतसार—इस गीत में महाराव दुर्जनशाल हाडा और महाराजा सवाई जयसिंह के पारस्परिक युद्ध का वर्णन है । कवि ने दुर्जनशाल की ज्वाला से सवाई जयसिंह रूपी समुद्र के जल को नित्य प्रति जलकर समाप्त होने का रूपकमय वर्णन किया है ।

---

१ अथाह – अपार । रजवाट – राजपूती । सकळ – समस्त । तरगां – लहरो से । जसा – सवाई जयसिंह । सायर – समुद्र । जळै – जलता है । दूदरज – दुर्जनशाल । खडग – खड्ग । आतस – उष्णता, ताप । दाह–जलन ।

२. लसकरां – लश्कर, सेनाएँ । अग – अग्र । धाव – धावा, गमन । आलमा – संसार । अलोडै – मंथन करे । समद – समुद्र । वरण – वर्ण । माधहर– माधवसिंह के पौत्र, दुर्जनशाल । खग झाळ – खड्ग-ज्वाला । मुहोडै – सम्मुख ।

३. थाट – समूह, सेना । विसन – विष्णुसिंह । ऊपाट उमडना, उखाडना । रजवट– राजपूती । अथग – असीम, अथाह । हीलोळ – तरंग, लहर, उमग । वळेवळ – अनवरत । उदधि – समुद्र । उदक – जल । ऊकळै – उबलने का भाव । रूक – तलवार । तण – तनय । तणै – के । रोस – क्रोध ।

४. कूरमानाथ – कछवाहो के स्वामी । सानाळ – ? । कहर – भयावह, युद्ध, कोप । उपट – उमड कर । बोळै – डुबोवे । रवद – मुसलमान । महण – समुद्र । मगज – गर्व । जळ वळ – जलभुन कर, जल-शक्ति । बीजड़ै – तलवार के । ज्वाळा – ज्वाला, ताप ।

अवाजां गाज तरगा कटक ऊससै, झाळ दहुवे राहां गरभ ढांणां ।
आमेरा उदध रा रतन प्राक्रम उदकि, परजळै दुझल रा खड़ग पांणां ।।५।।

७३. गीत सिणगार रा बीनांण रौ गौरधन कल्याणौत रौ

धुर दाता येम कहै गोवरधन, हेड - बरीस कल्याण हरो ।
किसू सिगार हुवै तन कीधा, कीरति तणो सिगार करो ।।१।।

दाखै कान तणो यम दूजा, आमेरो अे वड आरीख ।
प्रसिधि तणा भूखण नोहो पहरै, सोवन ज्या दूखण सारीख ।।२।।

वप नूमळ नीम्रळ सुध बाजै, आठ पहर मौजा उदार ।
करां सगार दान रो कीजै, श्रवणे कीरति तणो सिगार ।।३।।

---

७३. गीतसार—यह गीत गोवर्द्धन कल्याणोत कछवाहा का है । गीत में कवि ने गोवर्द्धन के मुख से दान की सराहना कराते हुए कहा है—दानियो मे श्रेष्ठ गोवर्द्धन कहता है कि—हे सरदारो ! अपने शरीर पर शृंगार करने से क्या हो ? वास्तविक शृंगार तो कीर्ति प्राप्त करना है । अतः । हाथी-घोड़ो का दान करके यश अर्जित करो ।

---

५. अवाजां – ध्वनि । गाज – गर्जना । तरंगां – लहरें । कटक – सेना । ऊससै – जोश मे उफने, जोश मे उमड़े । झाळ – क्रोध, ज्वाला । दहुवे राहां – दोनो धर्मों के अनुयायियो के । गरभ – गर्व । ढाणा – खर्वित करना, गिराना । आमेरा – आमेर के स्वामी, कछवाहा नरेश । प्राक्रम – पराक्रम । उदकि – जल, काति । परजळै – जलता है । दुझळ – दुधर्ष वीर । पाणां – बल से, प्रताप से ।

१. धुर – अग्रगण्य, श्रेष्ठ । दाता – दानी । येम – इस प्रकार । कहै – कहता है । हेड बरीस – हाथियों का दान करने वाला । कल्याण हरो – कल्याणसिंह का पौत्र, कल्याणोत शाखा का कछवाहा । सिगार – शृंगार । कीधा – किये । कीरति तणो – कीर्ति का ।

२. दाखै – कहता है । कांन तणो – कानसिंह का पुत्र । अे – यह । वड – बड़ा । आरीख – बराबर वालो को, तुल्य वैभव वालो को । भूखण – आभूषण । नोहो – नही । सोवन – सोने के । दूखण – दूषित, कलक । सारीख – सदृश्य ।

३. वप – शरीर । सुध – शुद्ध, बुद्धि, विचार । बाजै – कहलाते है । मौजा – दान का आनन्द, रीझ । करा – हाथो से, कभी तो । कीजै – कीजिये । श्रवणे – कर्णो मे ।

७४. गीत अनड़पंख रा बीनाण रौ सगता गौड़ रौ

भागा केई पकड़ि किता भिरड़िया, धरि सूरापण परा धख ।
सत्रदळ गजां ऊपरै सगतौ, पड़ियौ जांणं जटा - पख ।।१।।

खेसाणा बाधा केई खाधा, बाजूकरी प्रारंभ बरण ।
अजमेरौ गज खळां आवियौ, काठीर उरा सीर करण ।।२।।

काछबियौ पखरूप कोपियौ, धाधेड़ै रज धख धई ।
खळां गजा रणताळ खेलियौ, दळथभ वाळौ काळ दई ।।३।।

वाहजी वाह उसताज अरजण हरा, दियौ मोटौ किसब तूझ देबी ।
काटि जड़ मूळ सू तै किया ऊपळा, कूपळां न मेळै वळै केबी ।।४।।

---

७४. गीतसार—यह गीत शक्तिसिंह गौड वंशीय क्षत्रिय योद्धा के रणकौशल का है। कवि ने शक्तिसिंह की रणक्रियाओं को अनिल पक्षी की हस्तियो को मारने की क्रियाओं के साथ साम्यता दिखाते हुए वर्णन किया है ।

---

१ भागा – रण छोडकर भागे। केई – कई, कतिपय। किता – कितने ही। भिरड़िया – भिडाकर मार दिये। धरि – धारण कर। सूरापण – शूरता। परा – विपक्षी, वैरी, पंख। धख – क्रोध, उमंग, विचार। सत्रदळ – अरिसमूह। गजा – हाथियो। सगतौ – शक्तिसिंह। पडियौ – टूट पड़ा, झपटा। जटापख – अनिल पक्षी।

२. खेसाणां – नष्ट हुए, खिसक गए, भाग गए। बाधा – बन्दी बन गए। खाधा – मार डाले। बाजूकरी – सिंह। अजमेरौ – अजमेर का स्वामी, गौड़ शक्तिसिंह। गज खळां – गज रूपी वैरियो। आवियौ – आया। काठीर – सिंह, अनिल पक्षी।

३. पखरूप – पक्षिराज के रूप मे। कोपियौ – क्रुद्ध हुआ। धांधेड़ै – पराजित करे। धख – क्रोध, उमग। दळथंभ वाळौ – दलथभन का।

४, वाहजी वाह – वाह वाह, धन्य है धन्य है। अरजण हरा – अर्जुन के पौत्र। किसब – हुनर, कारीगरी। तै – तुमने। ऊपळा – लकड़ी के डडे, चारपाई मे लगाए जाने वाले सिरहाने और पैरों की तरफ के डडे, लकड़े। कूपळा – कोपलें। वळै – फिर। केवी – दुश्मन।

७५. गीत हाडां कछवाहां रौ पाचोलास रा जुद्ध रौ

बाजा बाजिया अमाट बीरां साभिया निघात सूरा,
बधै पूरा आवधा अराधा बधै बाड़ि ।
फाड़ि फौजां लोहडां मडाणां दोय फौजा पती,
राजावता हाडा किनी अनोखी-सी राड़ि ॥१॥

घूरै जांगिया नगारा नाद नाळिया निहाव घूरै,
साद फूरै मारका धकाविया निसक ।
बळे लोह ढूंढाडा ऊघाडा बीर बळाबध,
कियौ पारथे प्रमाण कळू भारथे भैंचक ॥२॥

कोजू फतमाल बहादर घासी कळाधार,
बायणा बचाणा अभैमाल कळह बीचि ।
सुणै सुरताणा दिल्लो उदैपुरा राणा सुणो,
कछवाहा चव्हाणा मचाणां रणे कीच ॥३॥

---

७५. गीतसार—गीतकार ने इस गीत मे पाचोलास ग्राम के रणक्षेत्र मे जयपुर और बूंदी के मध्य हुए घमासान युद्ध का वर्णन किया है। गीत मे उभय पक्ष के प्रसिद्ध प्रसिद्ध योद्धाओ का स-नाम उल्लेख हुआ है। युद्ध के बाजे बजे। वीर शस्त्र सज्जित हुए और तोपों की बाड को विच्छिन्न कर हाडो और कछवाहो ने अद्भुत रणक्रीडा की ।

---

१. अमाट – ताम्बा के पेंदे के नक्कारे। निघात – प्रहार। आवधा–आयुधो। अरावा – तोपें। बाडि – घेरा, ओट, सीमा। फाडि – चीर कर। लोहडा – शस्त्रों। मडाणां – मडित, खेले। किनी – की। राडि – युद्ध।

२. घूरे – गर्जन करे। जांगियां – नक्कारची। नगारा – नक्कारा। नाद – गर्जना, ध्वनि। नाळियां – तोपें। निहाव – घोष, तोपें। साद फूरै – ललकार देकर। मारका – योद्धागण। धकाविया – सामने बढे, पीछे धकेलने को सामना किया। बळे – फिर। ढूढाडा – ढूढाड राज्य के कछवाहे योद्धा। ऊघाड़ा – विनो म्यान, नग्न। बळाबध – बूंदी राज्य के हाडा वीर। पारथे – अर्जुन। कळू – कलियुग में। भारथे – महाभारत-सा, युद्ध। भैंचक – भयानक।

३. कोजू – कोजूराम ईसरदा का ठाकुर। फतमाल – फतहसिंह शिवाड का ठाकुर। बहादर – बहादुरसिंह। घासी – घासीराम, योद्धा का नाम। कळाधार – कला को धारण करने वाले। वायणा – वचन। अभैमाल – अभयसिंह हाडा। कळह – युद्ध। मचाणां – मचाया। रणे कीच – युद्ध मे कीचड।

वहे हाथ रावतां रा आवधां छतीस वहे,
कळ रहे सारां चा वाखाण सांच कत्थ।
आवेरा वळा रा रवताळा अै दताळा असा,
वाहरू धरा रा लड़े पड़े लथौ-वत्थ ॥४॥

हुकम्मे जैसिंघ वुधसिंघ रै विना हुकम,
वहस्सै रहस्सै लड़े वूंदी परै वीर।
मान रा भोज रा पौता पाचोळास खेत मांझी,
नाराजां राजान चाढै महाराजा नीर ॥५॥

आहारां ओझणां धाअै खेचरा भूचरां पाये,
नारदा नचाये सिव लीधा सीस न्याय।
वीजैहरां वैराहरा वांकड़ां बिमाणां वैसि,
अपछरां झुण्ड मिळै जौति मिळै जाय ॥६॥

---

४. वहे – चलते हैं। रावता रा – रावत पद वालो के, सामंतो के। सारां चा – लोहे का, युद्ध का। आवैरां – आमेर के कछवाहे। वळारा – अर्बुदाचल वाले, वूदी के हाडे। रवताळा – योद्धा, बड़े उमराव। दंताळा – हाथी। बाहरू – गई भूमि को वापस जीतने वाले। लथौवत्थ – बाथमबाथ, गुत्थमगुत्थ।

५. हुकम्मे – हुक्म से। जैसिंघ – महाराजा सवाई जयसिंह के। वुधसिंघ रै – महाराव राजा वुधसिंह के। वहस्सै – ललकार कर, हठ ठानकर। रहस्सै – आवेश मे आकर। वूंदी पूरै – वूंदी राज्य के योद्धा। मान रा – राजा मानसिंह कछवाहा के। भोज रा – राव भोज हाडा के। पौता – पौत्र, वशज। पाचोळास – गाँव का नाम जहाँ यह युद्ध हुआ था। खेत – रणक्षेत्र। मांझी – मुख्य, मध्य। नाराजां – तलवारो। राजांन – राजाओं। चाढ़ै – चढाया। नीर – आब। कान्ति।

६. आहारां – भोजन। ओझणां – गृद्धनियाँ। धाअै – तृप्त हुए, छक गई। खेचरा– आकाश गामी, भूत प्रेतादि। भूचरा – पृथ्वीवासी, पिशाच, शिव। पाये – प्राप्त किए। नचाये – नृत्य करवाए। लीधा – लिया। वीजैहरा – विजयसिंह के पौत्र। वैरहरां – बरसिंह के पौत्र। वांकडां – विकट वीर। विमाणा। वैसि – विमानों पर बैठकर। अपछरा – अप्सराओ के। मिळै – मिले। जौति– ज्योति मे। जाय – जाकर।

७६. गीत हाथी रा बीनाण रो महाराज छत्तरसिंघ रो

बाजै जसवाद बीर घट बळ बळ, सिर आकुस प्रम लीयां सीघाळ ।
खग पोगर खळ रूख उखाळै, छावो मद आयो छाताळ ॥१॥

घुघर घणण कीरति घर घण, रामहेक गजबाग रत ।
भुजळक दत सत्र तरा भीचरड, मेघ तणो हसती मसत ॥२॥

विडदां लंगर असत पांय बांधा. बीजो यद्रसळ महाबळ ।
अजड़ां मुंहै पीसण ब्रख तोडै, कुंवर बहता गयद कळ ॥३॥

दहुंव पटां लगो खग दांने, गोडे खळ करणा गरद ।
लख दळ मिल्यां दळां चो लाडो, हाथी हाडो मसत हद ॥४॥

---

७६. गीतसार–कवि ने योद्धा महाराज छत्रसिंह हाडा को मदमस्त गजराज के रूप मे चित्रित किया है । गजघट, घुघरू, दंत और शुण्ड की यशवाद्य तथा तलवार के साथ समता की गई है । शत्रुओं को वृक्ष कहा गया है । इस प्रकार योद्धा की युद्ध-क्रियाओं का गजराज की क्रीड़ाओ के साथ रूपक बांधा गया है ।

---

१. जसवाद – यश के वाद्य । बीरघंट – हाथी के घटे । बळ बळ – बार बार । आंकुस – अंकुश, हाथी को काबू मे रखने का लोहे का यत्र । सीघाळ – श्रेष्ठ हाथी । खग – तलवार । पोगर – शुण्डादण्ड । खळ रूख – शत्रु रूपी वृक्षो को । उखाळै – उखाड़ता है, नष्ट करता है । छावो – पुत्र, शावक । छाताळ – छत्रसिंह ।

२. घुघर – घुघरू, पदाभूषण । घणण – घनन ध्वनि । कीरति – कीर्त्ति । घण – बहुत । गजबाग – अंकुश । भुजळक – तलवार । सत्र तरा – शत्रु रूपी तरु । मेघ तणो – मेघसिंह तनय । हसत मसत – मस्त हाथी ।

३. विड़दां – विरुदो का । लंगर – पैर में पहिनने का स्वर्णाभूषण । पांय – पैर । बीजो – द्वितीय । यंद्रसळ – महाराज इद्रशाल । अजडा – तलवारों के । मुहै – मुख । पीसण व्रख – वैरी रूपी विटप । तोड़ै – नष्ट करता है ।

४. दहुव पटां – दोनों पट्टा शस्त्र । दाने – मस्ती से । गोडे – पास, निकट, वृक्ष के तनें । गरद – सहार । मिल्या – मिलने पर । चो – का । लाडो – प्रिय योद्धा, लाडिला, दुलहा । हद – असीम ।

७७. गीत महाराज छत्तरसिंघ हाडा री

वृछ री या रीत या रीत विहंग री, पाळि आया करि आया पाळ ।
पछो फळ कतरै पत्र फाडै, तरवर नह दाखै छाताळ ॥१॥

इद बिया आगां ह्वै आई, सतर खगां आ रीत सजै ।
चुग चुग फळ चूखै नख चाढै, अब न काढै वयण अजै ॥२॥

घर न गम पछी पाटौ-घर, हेकठ जुग युग घणा हुवा ।
दळ फळ डाळां पछो दूखावे, द्रुमग म खावै रतन दुवा ॥३॥

चख नख चुगरै पख झड़ फड पण, कवि पंछी दाखवै कत्रो ।
छाहां दीयै दियै फळ छत्रपती, छेह न दे द्रुम वडा छत्री ॥४॥

मोटां रीति अेह मेघाउत, ताप सहै दुख सहै तनी ।
मोटा करै दियै फळ मोटा, मोटा आण नथी मनी ॥५॥

---

७७. गीतसार—कवि ने इस गीत में दाता को वृक्ष और पाता (याचक) को पक्षी बतला कर दान-दाता की सहिष्णुता तथा उदारता और याचक की उत्पथगामिता का वर्णन किया है ।

---

१ वृछ री – वृक्ष की । या रीत – यह रीति । विहग – पक्षी । पाळि – विनोद में, क्रीडा मे । फळ कतरै – फलो को कतरते (काटते) हैं । पत्र फाडै – पत्तों को चीरते हैं । तरवर – पेड़ । नह दाखै – भला बुरा नही बोलते, ताडना नहीं देते । हे छाताळ – हे छत्रसिह ।

२. इद विया – द्वितीय इन्द्रसिंह । आगां – पूर्वकाल से ही । ह्वै आई – चलती आ रही है । सतर – सुतरु । खगा – पक्षियो की । चूखै – चूसते है । नख चाढै – नाखूनों से छेद देते हैं । अब – आम्रवृक्ष । वयण – वचन ।

३. पाटौघार – पट्टधारी, राजा । हेकठ – एकत्रित । घणा – बहुत । दळ – पत्ते । डाळा – शाखाएँ दो दो टुकडे । द्रुमग – पेड़ । म–मत, नही । खावै – खाते हैं, सहन करते हैं । रतन दुवा – हे दूसरे रतनसिंह ।

४. चख – स्वाद लेकर । कत्री – कितनी, कतरते हैं । छेह – अन्त । द्रुम – वृक्ष । छत्री – क्षत्रिय, राजा ।

५. मोटा – बडो की । मेघावत – हे मेघसिंह तनय । नथी – नही ।

७८ गीत इन्द्र रा बीनांण रो महाराज छत्तरसिंघ हाडा रो

वणै सिंधुरां घटा बरसै छता महाबळ, दादुरा दोहोक कवि कोहोक दोळां ।
बारही मास बरसण सुव्रत बधंतो, छतो इद्रगढ तपै इभ छोळा ॥१॥

दुरद मघवाण सोभ धजां दामणी, ईहगां चात्रगां पूरवण आस ।
भरता गजां अैराकिया तणो झड, मेघ रो मेघ जिम बारहे मास ॥२॥

हलक्कां गजां वाजा हुवै हकाला, भड़ा छक आवळां अोघ भाला ।
हेतुवा पातुवां तणो दाळद हरो, हरो इद राजीव इद व्हाळा ॥३॥

रति छह मेह अणछेह दूजो रयण, तेह राखण जुगा चार ताई ।
घरा बर दीयो बर मिल्यो हवै धरती, सुरपती जिसो अधपती सांई ॥४॥

---

७८ गीतसार—कवि ने ऊपर के गीत मे महाराज छत्रसिंह को इद्र और कवियो को दादुर, पपीहा आदि के रूप मे उल्लिखित कर रूपक की रचना की है । और गज समूह का मेघ घटा के रूप में वर्णन किया है ।

---

१. सिंधुरा — हाथियो । घटा — मेघघटा, सेना । छता — छत्रसिंह, पृथ्वी । दोहोक — दादुरो की ध्वनि । कोहोक — यश-ध्वनि । दोळा — चतुर्दिश, चारो ओर । बधंतो — बढता है । तपै — तपता है, राज्य करता है । छोळा — दान की लहरें ।

२. दुरद — हाथी । मघवाण — इन्द्र । धजा — ध्वजा-पताकाएँ । दामणी — विद्युत । ईहगां — याचको, कवियो । चात्रगा — पपीहों । पूरवण — पूर्त्ति करने । झरतां — मद झरते हुए । अैराकिया — घोडो । झड — सघन वर्षा, झडी । मेघ रो — मेघसिंह का पुत्र । जिम — जैसे ।

३. हलक्का गजा — हाथियो के हलके, एक सो हाथियो के समूह को एक हलका कहा जाता है । वाजां — घोडो के । हकालां — गर्जन, कोलाहल । भडा — योद्धाओ । छक — उन्मत्त । आवळा — भयकर, सज्जित । अोघ भाला — भाला शस्त्रो के समूह । हेतुवां — प्रियजनो के । पातुवां — याचको, प्राप्तकर्त्ताओ के । दाळद हरो — दरिद्रय का हरण करने वाला । हरो इद — इन्द्रसिंह का वशज । व्हाला—प्यारा, वाले, नाले ।

४. रति छह — षट् ऋतुओं मे । मेह — वर्षा । अणछेह — अपार । रयण—रत्नसिंह । तेह — अन्त, तत्व । ताई — तक । घरावर — इद्र । हवै — अब । साई — स्वामी, राजा ।

७९. गीत महाराज छत्तरसिंघ हाडा री

किरिण धारिया घड़ां जळ प्रसिधि ऊजळ करां,
अभंग स्रब वेळ सत मेघ अजवाळ ।
चकव केकी मछा सिधा दन चारणां,
तरण घण महण मुर नयण छाताळ ॥१॥
गमण नसि रोर तसि पाप उणति गमण,
तेज स्रव लहरि सिध रीझ तुड़ तांण ।
सुरक सारंग रंग मीन संत सुपातां,
चकर धर यदर दध ईस चहुंवांण ॥२॥
वहण वीध कुरद सपक्र दाळिद वहण,
तप पड़ंग तरंग अगभाव अवतार ।
कोक सिख जड़ळ जोगेसरां कविदां,
सूर सक्र अथग सिव बियौ सरदार ॥३॥

---

७९ गीतसार–कवि ने इस गीत में गीतनायक महाराज छत्रसिंह मे सूर्य, इन्द्र, समुद्र और शिव के गुणो का एकत्रीकरण कर वर्णन किया है। वह कहता है कि चक्रवाक को आनन्द देने वालों मे सूर्य, मोर और मत्स्यो को प्रसन्न करने वालों में मेघ और सिद्धो मे श्रेष्ठ शिव हैं उसी प्रकार चारणो का दारिद्रय नाश कर सुखी बनाने वालो मे महाराज छत्रसिंह श्रेष्ठ है ।

---

१ किरिण धारिया – किरण धारण करने वालो। घड़ा – घटा, मेघघटा। जळ – समुद्र । प्रसिधि – प्रसिद्ध । ऊजळ करा – उज्वल हायो वालो, उज्वलकर्त्ता । अभग – अखड, पूर्ण, तेजस्वी । स्रब – दानी, देने वाला, बरसने वाला । वेळ – लहर । चकव – चक्रवाक । केकी – मोर । मछा – मछलियाँ । सिधां – सिद्धो, योगियो । तरण – सूर्य । घण – बादल, इन्द्र । महण – समुद्र । मुर नयण – त्रिलोचन, शिव ।

२. गमण नसि – निशा का नाश करने वाला । रोर – गरीबी, दरिद्रता । तसि – प्यास, जैसे । उणति गमण – अभाव को मिटाने वाला । स्रव – दान देने वाला । रीझ – प्रसन्न होकर दान करने वाला । तुड – शाखा, समूह । सुरक – चकवा । सारग – मोर । मीन – मछली । सत – साधु, सिद्ध पुरुष । सुपातां–सुकवियो । चकरधर – कुण्डलाकृति, चक्राकृति, चक्रधारी । यदर – इन्द्र । दध – समुद्र । ईस – शिव । चहुवाण - छत्रसिह ।

३. वहण – गमन करने वाला । वींध – पति, राजा । कुरंद – दरिद्रता । सपक्र – जल, कीच सहित । दाळिद – दरिद्र । वहण – भगाने वाला, चलने वाला । पड़ग – वून्द । तरंग – लहर । अंगभाव – अंगो में क्रान्ति देने वाला । कोक – चकवा । सिख – शिखी, मोर । जडळ – मछली (?)। सक्र – इन्द्र । अथग – समुद्र, अथाह । बियो – दूसरा। सरदार – सरदारसिंह ।

सर नव बार सत तीस मुर छतीसा,
जोति ब्रव पाज नधि राज जाडो ।
पाळ चक मोर भक भंगत तत पातवां,
हस यंद समद हर राव हाडो ॥४॥

८०. गीत विंणज रा वीनांण रौ महाराज छत्तरसिंघ रौ

उपजिया सुकवि तणा मन सरवर, उकती सीप महें बड वार ।
आडा-बळै मोतियां असड़ो, हाडो छतो खरीदण हार ॥१॥
स्वाति बूद बुधवंत सरजिया, बाणी जोति नीर बाखाण ।
किमति नारी तणा गहणा कजि, चाहि लिया अमज चहूवाण ॥२॥
बेचै सुकवि वडां व्योपारी, दरसण जिहाज भरै समराथ ।
किमति करि असा वायक कण, नित प्रत लिअै दूसरो नाथ ॥३॥
मैंहघा मोल दियै मेघाउत, लियै अपार नफो जस लाह ।
आडाबळै मोतिया असड़ो, सोदो करै बळापति साह ॥४॥

---

८०. गीतसार—यह गीत महाराज छत्रसिंह हाडा के काव्य-प्रेम तथा वदान्यता की प्रशसा का है । कवि ने लिखा है कि सुकवियों के मन-सरोवर रूपी सीप में उत्पन्न उत्तम उक्ति रूपी मोतियो को छत्रसिंह खरीदता रहता है ।

---

४. मुर – तीन । जोति – ज्योति । पाज – मर्यादा । नधि – निधि । पाळचक – चक्रवाको का पालक । भक – मछली । पातवा – कवियो, चारणो । हस – सूर्य । यद – इन्द्र । हर – शिव ।

१. उपजिया – उत्पन्न हुए । तणा – का । उकति – उक्ति । महे – मे । बडवार – स्वाति काल । आडाबळै – आडावला पहाड, बूंदी राज्य । असड़ो – ऐसा । हाडो – चौहान क्षत्रियो की एक शाखा । छतो – छत्रसिह ।

२. बुधवत – विद्वान् । सरजिया – सर्जन किया । बाणी – वाणी । नारि–स्त्रिया । गहणा – आभूषण । कजि – लिए । अमज – अबुज – मोती ।

३. बेचै – विक्रय करे । समराथ – समर्थ, समृद्ध । असा – ऐसा । वायक – वचन । कण – मोती ।

४. मैंहघा – महगा । मेघाउत – मेघसिंह का पुत्र । अपार – बहुत, अपरिमित । नफो – नफा, लाभ । जसलाह – यश-लाभ । सोदा – खरीदी, क्रय-विक्रय । बळापति साह – आडावाळ का बादशाह, बळानाथ अथवा बळापति बूंदी के हाडाओं का विरुद है ।

८१. गीत सिंघ रा बीनांण रौ महाराज छत्तरसिंघ हाडा रौ

घरहरतां भिड़ज घणा भड़ घूमर, धूजै चहुचक सहर धर।
अरिहर गजां करै खग आहर, नर नाहर छीतर निडर ॥१॥
अति जळ चचळ वहीत रावत दळ, ओसक चत्रबळ नयरयळ।
खग मदभरा करण गळ खड़गा, कँवर सदाहर सीहिकळ ॥२॥
साकुर झपट सोहोड़ थट सामट, थरहर जगि जस थह थरट।
दोयण दताळ करण गट दुजड़ां, मळै ओ होट दूछर मरट ॥३॥
सत दत प्रभति वखत छति सूरति, चवै जग यम भोज चति।
मेघावत चहुवाणा महपति, गूजै हाडौ बाघ गति ॥४॥

---

८१. गीतसार–इस गीत मे कवि ने महाराज छत्रसिंह को सिंह और विपक्षी योद्धा को गज बनाकर रूपक का सर्जन किया है। कवि ने लिखा है कि अश्वो की हिनहिनाहट की गर्जना तथा वीरो के रण प्रवेश से शत्रुओ की राजधानियो और उनके शासित ठिकानो के ग्रामवासी कापने लगते हैं। वह सिंह रूपी छत्रसिंह अरि सेना रूपी गज समूह को खड्ग प्रहार कर आहार बना लेता है।

---

१. घरहरता – गर्जन करते। भिड़ज – घोड़े। घणा – बहुत। भड़ – योद्धा, वीर। घूमर – घूमते। धूजै – कांपते है। चहुचक – चारो दिशाएं, चौतरफ। अरिहर– [illegible]। आहर – अहार, भोजन। नाहर – सिंह।
२. [illegible] – समुद्र, मेघ समूह। चचळ – घोडे, चपल। रावत दळ – रावत पद [illegible] वीरो का समूह। ओसक – भयशंकित, भयभीत। चत्रबळ – चारों ओर। नयर – नगर। [illegible] – भूमि। मदभरा – हाथियो। गळ – आहार। खड़गा– [illegible]। कँवर – कुमार, पुत्र। सदाहर – सरदारसिंह का पौत्र। कळ – [illegible]।
३. साकुर – घोड़े। झपट – दौड़कर आक्रमण करना। सोहोड़ – योद्धा। थट – सेना। सामट – समूह, सामंत (?)। थरहर – कांप कर। थह – स्थान। थरट – (?)। दोयण – शत्रु। दताळ – हाथी। गट – गटके, ग्रास, भोजन। दुजड़ां – [illegible]। ओहोट – [illegible], रोष, [illegible], युद्ध। दूछर – सिंह। मरट – घमंड, गर्व।
४. सत – सत्यवादी, सत्यवान्। दत – दान। प्रभति – प्रभृति। वखत – समय। [illegible] – [illegible]। सूरति – [illegible]। चवै – कहता है। यम – यों, इस प्रकार। भोज [illegible] – [illegible]। गूजै – गर्जना करता है, दहाड़ता है। बाघ – सिंह, [illegible]। गति – [illegible]।

८२. गीत ब्रिज उबारण रा बीनांण रौ महाराज देवसिंघ हाडा रौ

घटा उमडे अपार सेन वोचडे विकट घाट,
गोळां सरां मार घूमे त्रमागळां लागा गाज ।
ब्रज नाथ इन्द्र आगे राखी ब्रज धार वूठां,
सार बागा कोटो देवै राखियौ सकाज ।।१।।

बादळां दिखणी दळां लूबिया चहुवै वळां,
दामणी चमके कुंत रचै महा दूंद ।
ऊबारियो नंद-धाम नद रै पुळिन्द्र आया,
नंद-ग्राम ऊबारियो छाताळ रै नद ।।२।।

आंवतां सुरेस घड़ा नरेसां आवता अठै,
भार पडै बिहू ठौड रचाणो भाराथ ।
देवतां दुळभ थान जको थाभै नाथ देवा,
नाथ हाडा थान थाभै बळा-वंध नाथ ।।३।।

---

८२. गतिसार-यह गीत महाराज देवसिंह हाडा के युद्ध-वर्णन का है। कवि ने देवसिंह द्वारा मरहठो के आक्रमण से कोटा राज्य की रक्षा करने का वर्णन देवराज इन्द्र के कोप पर श्री कृष्ण द्वारा व्रजमण्डल की रक्षा करने के पौराणिक आख्यान के साथ रूपक मये किया है।

---

१. घटा – सेना। उमडे – उमडे। वोवडे – बरसे। विकट घाट – भयानक रूप से। सरां – बाणो। घूमे – घूमते। त्रमागळा – नगाडे। लागा गाज – गर्जने लगे। व्रजनाथ – श्रीकृष्ण। आगै – सामने, पहले। राखी – रक्षा की, बचाया। धार वूठा – जलधारा बरसाते। सार – शस्त्र, तलवार। बागां – चलने पर, प्रहार होने पर। देवै – देवसिंह ने।

२. दिखणी दळां – मरहठो की फौज। लूबियां – घेरलिया। चहुवै बळां – चारो ओर से। दामणी – बिजली। कुत – भाला। महादुद – विकट युद्ध, महाभारत। ऊबारियो – रक्ष की। नद-धाम – व्रजमण्डल। पुळिन्द्र – इन्द्र। नद ग्राम – कोटा नगर। छाताळ – छत्रसिंह। रै – के। नद – पुत्र ने, देवसिंह ने।

३. सुरेस – इन्द्र। घड़ा – मेघघटा, सेना। अठै – यहां। बिहू – दोनो। ठौड – स्थान। रचाणो – रचाया, लडा, किया। भाराथ – विकट लडाई। दुळभ थान – व्रज प्रदेश। जको – वह, उसको। थाभै – नष्ट होने से रोका, बचाया। वळांनाथ वध – बूंदी नरेश के भाई ने।

देवां देवसाहि बाण मेळेगा अपूठा दूठ,
घरा नीर चढाड़े बजाड़े खाग धार।
वाहरू बस रा सदा आपरा सहाय बिहू,
सुरां नाथ देवौ सार बदीता संसार ॥४॥

८३. गीत सिंघरा बीनांण रौ महाराज सरदार सिंघ हाडा रौ

करै मार तरवारि आहार नर कुंजरां,
ऊपाडै पंज जाहर समर वार।
गलारै बीर थाहर खड़ौ इद्रगढ,
सपौ नाहर तणै रूप सिरदार ॥१॥
भारथै चाढ़ उरड़ तस डांण भरि,
घड़ा रिम तोड झझोड़ घाये।
हीक गज गौड़ बिछौड़ घड़ हाथळां,
दूसरौ इंद तख जौड़ दाये ॥२॥

---

८३. गीतसार—प्रस्तुत गीत में रचयिता ने महाराज सरदारसिंह की सिंह के साथ साम्यता दिखाते हुए लिखा है कि सिंह तुल्य वीर सरदारसिंह युद्ध वेला में अपने तलवार रूपी पञ्जे को उठाकर नर रूपी गजराजो का भंजन करता है। इस प्रकार वह दुर्ग मे खड़ा निर्भयता पूर्वक हर्ष-ध्वनि करता है।

---

४. मेळेगा – भिडकर गए। अपूठा – वापस, पीछे की ओर। दूठ – दुष्ट, वैरी, योद्धा। नीर – आब, कान्ति। चढ़ाडै – चढाकर। बजाडे – बजाकर, चलाकर। खागधार – तलवारधारा। वाहरू – रक्षक। सार – तलवार।

१. आहार – भोजन। नर कुंजरां – सरदारसिह के पक्ष मे मानव और सिंह के पक्ष में हाथियों का। उपाडै – उठाता है। पंज – पञ्जा, हाथल। समर वार – युद्ध काल मे। गलारै – हर्ष ध्वनि करता है। थाहर – सिंह की गुफा। नाहर तणै – सिंह के।

२. भारथै – युद्ध मे। उरड – उमग, उद्वेग। डांण – मद, कदम। घडा रिम – शत्रु सेना को। झझोड – हिलाकर, विचलितकर। घाये – घायल कर। हीक – प्रहार। गज गौड़ – गजसेना को नष्ट कर। बिछौड – विघटितकर। घड – सेना। हाथळा – सिंह का पञ्जा। तख – अनुरूप। जौड़ – बराबरी का।

महो पोहो घाड ओनाड़ कजि आमखां, जाड नद फाड़ खग नखा जाडो ।
पखां बिहु साह गाजी तणो बिड़दपति, हेक बड लखा आबीह हाडो ॥३॥

ऊजळां नहर सिरि बळै ऊपाडिया, थळां बापी यळा मांडि थाहो ।
मैंगळां खळां पळचरा गळबा मयद, बळै चाढै नळां खाग बाहो ॥४॥

८४. गीत महाराज भगतरांम हाडा री तरवार रौ

थडै काहुळा विखमीनाद तडै बे बीराण जूथ,
मडै कै घुरदी जोध मट्ठां छडै मांण ।
सुरत्थां समत्थां जुत्था खासा झडां होदा सीस,
करी मुंडां तूझ वाळी उमडै केवांण ॥१॥

बाघळा हुचक्कै बे कजाका सेन बादो-ब्रदां,
तोपा झाळ बंभकै कारीमा सूकै त्रास ।

---

८४. गीतसार–कवि ने युद्ध की विषम वेला में रणभूमि में रणवाद्यो के भयावह घोष, युद्ध-प्रिय दोनो सेनाओं के पारस्परिक आघात और कायरो के प्राण नाश जन्य भय का प्रतिपादन करते हुए महाराज भगतराम की तलवार के प्रहारो की सराहना की है ।

---

३. महो – पृथ्वी के । पोहो – राजा, योद्धा । घाड़ – आक्रान्ता, आतंककारी । ओनाड़ – अनम्र । कजि – लिए, कार्य । आमखा – आमिष । जाड–गिराकर । खग नखा – तलवार रूपी नाखूनो से । जाडो – सघन, मोटा । पखा बिहुं – दोनो पक्षो मे, पितृ व मातृ पक्ष । बिडदपत – बडे विरुद वाला । हेक – अकेला । लखां – लाखो के लिए । आबीह – निडर । ४. ऊजळो – उज्ज्वल । नहर–नाखून । थळां – स्थल । बापी यळा – विपिन भूमि, बापी कराई हुई भूमि । मांडि – स्थापित कर । थाहो – कदरा, दुर्ग । मैंगळां – हाथियों । खळां – शत्रुओ । पळचरां – मासभक्षियो । गळबा – मास पिण्ड । मयद – सिंह । बळै – अरावली के, फिर । नळा – नालो मे, नलियां ।

१ थडै – सैन्य समूह । काहुळा – बडा ढोल वाद्य, भयानक । विखम्मी नाद – विषम ध्वनि । तंडै – नृत्य करते है । जूथ – समूह । मडै – लडते हैं । कै – कई । घुरदी – धुरन्दर, प्रवीण । मट्ठां – कापुरुष । मांण – मान, सम्मान । सुरत्था – सुरथी, अच्छे योद्धा । समत्थां – मस्तको पर, समर्थो । जुत्थां – समूह । खासा झडां – सेनापति के ध्वज पर । करी मुडां – हाथियो के मस्तकों पर । उमडै – उमडती है । केवाण – तलवार ।

२. बाघळा – श्रेष्ठ वीर । हुचक्कै – उछल उछल कर प्रहार करते है । कजाका – भयानक, बलवान् । बादोबदा – हठ ठान कर । झाळ – ज्वाला से । बंभकै – भभकती है । कारिमा – कायरों के । सूकै त्रास – भय से (प्राण) सूखते है ।

वंवाळां उवक्कै पत्र चंडी बीर डाक बक्कै,
बीर भगतेस हाथां झवक्कै वाणास ॥२॥

मैमंतां विभाड़ रथ्थी प्राहां रगा भाराथ में,
महा वंकी वार पांव अचल्लां माडीस ।
वारुंवार भूतळेस ले रुण्डहार भार वणै,
प्रथीनाथ जंही वार झाटकै पांडीस ॥३॥

हेठि हेठि रिमां पाड़ घरा रा कवाड हाडा,
मैमंता विभाड़ सा ओनाड़ दूजा मेघ ।
नेत-बध बळा-नाथ दोय राहां छता नंद,
तुरक्का हिंदवा वदै तूझ वाळी तेग ॥४॥

८५. गीत महाराज भगतरांम हाडा री तरवार रो

करै मन क्रोध तप दसटि धार जकां, भसम होय तका रण जोड़ भूरा ।
अभंग भगतेस खग झाळ थारी अगां, पिसण नह पांगळै कधी पूरा ॥१॥

---

८५. गीतसार—गीतकार ने गीत में महाराज छत्रसिंह हाडा की तलवार का आतप प्रकट करते हुए लिखा है कि हे वीर ! तू अपने समान बल वाले वीरो पर रणभूमि मे जब कोपान्वित होता है और तलवार उठा कर प्रहार करता है, तो तेरे शत्रु जड मूल से नष्ट हो जाते हैं और फिर कभी पुन. सामना करने के योग्य नही रहते ।

---

२. ववाळा – रुधिर, वंव ध्वनि । उवक्कै – छिलते हैं । पत्र चडी – देवी का पात्र । बीर – बावन वीर । डाक – ढाक वाद्य । बक्कै – बजाते हैं, बकते हैं । झवक्कै – चमकती है । वाणास – तलवार ।

३. मैमता – मदोन्मत्त । बिभाड़-नष्ट कर । प्राहा – आघातों से, वारो से । बार – समय मे । माडीस – रोपे, स्थिर किए । भूतळेस – रुद्र । झाटकै – प्रहारते हैं । पाडीस – तलवार ।

४. रिमा पाड़ – शत्रुओ को गिराकर । कवाड़ – कपाट, रक्षक । ओनाड़ – अनम्र, निर्बन्ध । नेतवध – वीरता सूचक चिन्ह विशेष वाले । बळानाथ – आडावला का स्वामी, बूंदी राज्य वासी । दोय राहां – दोनों धर्मो वाले । वदै – सराहना करते हैं ।

१ दसटि – दृष्टि । जकां – जिनके ऊपर । तका – वे । जोड़ – समान बल वाले । भूरा – वीर का विशेषण है । अभग – वीर, निडर । खग झाळ – खड्ग-ज्वाला । थारी – तेरी । अगा – सामने । पिसण – पिशुन, वैरी । पांगळै – अंकुरित । कधी – कभी भी, कब । पूरा – पूर्ण रूप से ।

धरै मन रीस जोवै चखां जोर धर, जुडै जुध बार जे जोम जेलै ।
अडिग चहुवाण असि त्रास वाळी अगां, महपति दुजण नह कोहोर मेळै ।।२।।

पड़ै झळ दसटि बळ छूट बिखम प्राजळ, पाणधर नका तोय आंण पूगै ।
करां तोय तेग नजि लपट लागै कहर, अरिहरां कूपळा नथी ऊगै ।।३।।

छाताळ तण तूझ पौरिस नमो बीर छळ, असुर गिर न पाणां थियै आडा ।
जोम खग तुहाळै आवै जका, हुवे रिम रांण यम राव हाडा ।।४।।

८६. गीत महाराज भगतरांम हाडा इंद्रगढ़ रा धणी रो

राजै सुरां में सुरेस रूप खगां मे खगेस राजा,
समाजै द्वीजेस गणां मुन्या में मुनेस ।
ग्रहां में ग्रहेस छाजै बसू मे गोलोक नामी,
नरा में बिराजै असो संभरी नरेस ।।१।।

---

८६. गीतसार—गीत मे महाराज भगतराम हाडा को इन्द्र, गरुड, चद्र, मुनिराज, सूर्य, विष्णु, ऐरावत गज, अग्नि, गणेश, समुद्र, शेषनाग, शिव, सुमेरुगिरि, बादशाह, हनुमान, ब्रह्मा आदि विशिष्ट गुणो वालो के उन सभी गुणों का पुन्ज वर्णित किया है ।

---

२. जोवै – निहारे । चखा – चक्षुओ से । जुडै – भिड़ते हैं । जोम जेले – गर्व धारण कर । असि – कृपाण । त्रासवाळी – भय देने वाली । महपती–राजा । दुजण–शत्रु । मेळै – मिलाते ।

३ बळ छूट – बलहीन होकर । बिखम – भयानक । प्राजळ – प्रज्वलित । पाणधर–बलधारी । नका – कोई नहीं । तोय – तेरी, तुझको । पूगै – पहुँचे । लपट – लपटें । कहर – जबरदस्त, भयकर, ज्वाला । अरिहरां – शत्रुओ के । कूपळा – कोंपलें । नथी – नहीं । ऊगै – अकुरित होते हैं, उगते ।

४. छाताळ तण – छत्रसिंह तनय । पौरिस – पौरुषता । छळ – युद्ध, लिए । न पाणां – बलहीन, पत्ते रहित । आडा – टेढ़े । रिम – वैरी ।

१. राजै – शोभा पाते हैं । सुरेस – इन्द्र । खगेस – गरुड़ । द्वीजेस – चंद्रमा । ग्रहां – नक्षत्रों मे । ग्रहेस – सूर्य । छाजै – शोभित होता है । बसू – ससार मे । असो – ऐसा । समरी नरेस – सांभर राज्य का स्वामी, सांभर प्रान्त पर चौहानों का आधिपत्य रहने के कारण उन को समरी नरेश कहा जाता है ।

गजा ऐरापती जेहि तेज सुरांमुख गिणां,
गणां मेकदंत राजै आपगां में सिंध ।
भार में भरेस राजै ध्यांन में भूतेस पुणां,
वदीतो छाताळ नंद सोहे वळा-बंध ।।२।।
गिरां में सुमेर ओपै सुरताण राहां गणां,
जत्या मे मारूत प्रजापती रिखा जांण ।
जाप में अजपा जहि सांचो बळी राजा जिसो,
महाराजा तपै लोयां हीदवां चो मांण ।।३।।
माघवांन वैनतेह अमीधार मुनी तेज,
कुंज नाग ज्वाळा गणे सिंध कहूं सेस ।
ईस मेर साह हनू ब्रघी अजै जाप ओप,
ब्रहु खटां वे मेक सो राजै भगतेस ।।४।।

८७. गीत महाराज भगतरांम हाडा इन्द्रगढ़ रा धणी रो

पंड वळानाथ रा करां अनेका वाखांण ओपै,
बुधा मेकदत सिद्धां ताव वाम ।
वेद में विधाता हरी सत रो चदेस वाच,
माघवान छोळ ओप रिखीकेस नांम ।।१।।

---

८७. गीतसार—प्रोक्त गीत मे महाराज भगतराम हाडा की बुद्धि मे गणेश, क्रोध में शिव, विधाविदो मे विधाता, सत्यवादियो में राजा हरिश्चन्द्र, उदारता में देवराज इन्द्र, कान्तिमानों में सूर्य, सुन्दरता मे चन्द्र और सहिष्णुता में शेषनाग आदि से उपमित कर प्रशंसा की है ।

---

२. ऐरापती – ऐरावत । सुरामुख – अग्नि । मेकदत – गणेश । आपगा – नदियो । सिंध – समुद्र, सिंधनद । भार – वजन उठाने वालो मे । भरेस – शेषनाग । भूतेस – शिव । पुणा – कहते है । वदीतो – कहलाता है । सोहे – शोभा पाता है ।

३ गिरा – पर्वतों । ओपै – शोभित होता है । राहां – हिन्दू और यवन दोनो धर्मो वोनों में । जत्यां – यतियो । मारूत – मारुति नदन, हनुमान । प्रजापती–ब्रह्मा । जाप – मंत्रों । अजपा – जिसका उच्चारण न हो सके, एक मंत्र विशेष । बळीराजा – राजा वलि । जिसो – जैसा ।

४. माघवान – इन्द्र । वैनतेह – गरुड़ । अमीधार – चंद्रमा । कुंज – हाथी । नाग–सर्पराज । ज्वाळा – अग्नि । गणे – गणपति, गणो मे । सिंध – सागर । ब्रघी – विधाता । ब्रहु खटा – नव लोकों में । वे मेक – तीनो खडो मे ।

१. पड – शरीर । वळा – बलवानो में । मेकदत – गणेश । तावदाम – महादेव । वाच – वाणी का । माघवान – इन्द्र । छोळ – उदारता की लहर । ओप – उपमा । रिखीकेस – हृषिकेश ।

क्रांति ग्रहांपती कळा अमीधार तणी कहै,
ओप सेख भार पणां बीर कोघ आरीख ।
बाणां कौंवतेस जेम रूकां सत्रसाल बळी,
सिंघ डाण सम्रधीक कुबेर सारीख ।।२।।

गिरा में सुमेर ज्यूंही सीरां मान सीर गिणां,
वाच में जुजोठ दूठताइयां गंगेव ।
न्यांन मे गोरख्ख जिसो घोर पुत्र न्याव गिरां,
ईहगां चमीरा अवै भूप क्रन देव ।।३।।

हरी नंद बिधी चंद इंद रांमचद हस,
सोम सेख भीम अजो सतो सी अमांन ।
कुंभ गेर सेत जूजी गग गोर ध्रम क्रन,
अहूं सतां वेमेक सो छाताळ सुतांन ।।४।।

---

२. क्रान्ति – कान्ति । ग्रहापती – सूर्य । कळा – कला, अंश । अमीधार तणी – चंद्रमा की । सेख – शेषनाग । भारपणा – भार को सहने वालों में । आरीख – समान, तुल्य । बाणा – बाण चलाने वालो में । कौंवतेस – कौन्तेय, अर्जुन । रूकां – तलवार चलाने वालो मे । सत्रसाल – राव शत्रुशाल बूंदी नरेश । सिंघ – हाथी, समुद्र । डाण – मद मे । सम्रधीक – समृद्धिवानो मे । सारीख – बराबर ।

३. गिरां – पर्वतों । सुमेर – सुमेरुगिरि । सीरां – स्रोतों मे; निर्झरणों में । मानसीर – मानसरोवर । वाच – वचन । जुजोठ – युधिष्ठिर । दूठ ताइयां – प्रचण्ड वीरो मे । गगेंव – भीष्म पितामह । गोरख्ख – गोरक्षनाथ । न्यावगिरां – न्याय करने वालो मे । ईहगा – याचको को । चम्मीरां अवै – स्वर्णदान करने वालों मे । क्रन – राजा कर्ण ।

४. हरी – विष्णु । नद – गणेश । बिधी – ब्रह्मा । हस – सूर्य । सोम – चन्द्र । अजो – अर्जुन । सतो – शत्रुशाल । कुभ – ऐरावत हाथी । गेर – सुमेरुगिरि । सेत – मान सरोवर । जूजी – युधिष्ठिर । गग – भीष्म । गोर – गोरक्षनाथ । ध्रम – युधिष्ठिर, धर्मरा ।

८८. गीत महाराज भगतराम हाडा इंद्रगढ़ रा धणी रौ

किरण धारियां सुजळ घण डमर खत्रवाट कुळ,
ऊगै पय छट जिम जौति धर वेस।
चकव मछ केकीयां वरन खट चाडवां,
भाण सामंद सकर नरिंद भगतेस ॥१॥

तेज अंब श्रवण जग ऊपरां दान तिम,
तिमर तिस द्रुभख हर रौर ततकाळ।
कोक भक मोर कवि पाळ मोटा करण,
तरण सिंघ यंद जिम सुतन छाताळ ॥२॥

रसम हीलोळ अंग छौळ कर दान रुख,
प्रकासित गजित झड़ गुणां पुंजो।
कमळ हंस नीळकंठ जेम पाळण कव्यां,
दुड़िंद सागर मघण मेघ दूजो ॥३॥

ग्रहां सिरि सरां देवां सिरै गढपत्यां,
स ऊजळ हलूरां उरड़ साभाव।
जेठ आसोज नभमास बारह जतू,
रवि उदधि पुल्यंदर संभरी राव ॥४॥

---

८८. गीतसार—प्रस्तुत गीत मे महाराज भगतराम हाडा को तेजस्वियो मे दिवसपति रवि, दान दाताओ मे उदार महासागर और दुर्भिक्ष को नष्ट करने वालो मे मेघराज इन्द्र के समतुल्य अपनी कृपाओ की वर्षा करते रहने वाला चित्रित किया है।

---

१. किरणधारियां — सूर्य। सुजळ — समुद्र। घण डमर — इन्द्र। खत्रवाट कुळ — क्षत्रिय वंश। ऊगै — उदय। पय — जल। छंट — बूंदे। चकव — चक्रवाक पक्षी। मछ — मछली। केकीयां — मयूर पक्षी। बरन खट — छह वर्ण। सकर — सक्र, इन्द्र।

२. अंब — जल। श्रवण — राजा कर्ण। तिमर — अन्धकार। तिस — प्यास। द्रुभख — दुर्भिक्ष। रौर — दरिद्रता। कोक — चकवा। भक — मछली। तरण — रवि। यद — इन्द्र। जिम — जैसे, उसी प्रकार। सुतन छाताळ — छत्रसिंह का पुत्र।

३. रसम — रश्मि, किरण। हीळोळ — लहर, ऊर्मि। छौळ — तरंग। गजित — गर्जित। झड़ — अनवरत वर्षा, झड़ी। पुंजो — समूह। कमळ — कमल। नीलकठ — मयूर। दुड़िंद — सूर्य। मघण — मेह, इन्द्र।

४. ग्रहां सिरि — सूर्य। सरां — सरोवर मे मान सरोवर। देवां सिरै — देव श्रेष्ठ, इन्द्र। गढ़ पत्यां — राजाओं मे, दुर्गपतियों में। सऊजळ — प्रकाशमान। हलूरां — तरंगों। उरड़ — जोश, उमग। साभाव — स्वभाव। नभ मास — श्रावण और भाद्रपद मास। पुल्यंदर — इन्द्र।

८९. गीत महाराज भगतराम हाडा इन्द्रगढ़ रा धणी रौ

पीनाकी चक्रधारियां ज्यूं श्रेम ओपै तेगा पांणां,
गणां मध्य देवा बीचा राजवै उपेग ।
विभूती अग पीतपट सुधारे जेहो बनौं,
सभु नाथ माधव ज्यूं दुवौ इद तेग ॥१॥
चापमान तेज धार सोभवै अरया रै बीच,
सिद्धां मे सुरेसा तेज नरां में सुवेंग ।
राजै रेणसारी रसु पाट ओपै नरां बीच,
पंच घुव स्याम ज्यूही भूपाळ पांणेग ॥२॥
धानंखी रथांग धार मेर विबुधान पाणा,
किन्नरां अम्मरां नरा धरा ओपवै सुधाक ।
अंग रज्जै राजवै सुपाट धाम येण पाणां,
जटीस वसु स्याम धाम छतारौ जोधाक ॥३॥
पीनाक कराग्र बास बांचवै सुभट पाणां,
गध्रपां निरजरा धरा ओपगै बीरांण ।
धवळ सुधार पीत पट राजै येम धाम,
नेत घूव स्याम ज्यूंही ओपै चहूवांण ॥४॥

---

८९ गीतसार—इस गीत मे कवि ने भगतराम हाडा की शिव और विष्णु से सादृश्यता प्रकट करते हुए लिखा है कि गणो मे विभूति चर्चित शिव तथा देव समाज मे पीताम्बर पहने चक्रधारी विष्णु शोभित होते है, उसी प्रकार वह दूसरे इन्द्रशाल तुल्य महाराज भगतराम नृपति समाज मे शोभा पाता हैं ।

---

१. पीनाकी — धनुषधारी शिव, शिव का धनुष । चक्रधारिया — चक्रधारण कर्त्ताओ में । ओपै — शोभा प्राप्त करते हैं । तेगा पाणां — हाथ मे तलवार ग्रहण किए, तलवार बल वालो मे । गणा मध्य — गणो मे । राजवै — कान्तिमान् होते है । उपेग — समान, सबसे ऊपर । सुधारे — भली भाँति पहिने । जेहो — जैसा । बनौं — बनडा, दुलहा । दुवौ इद — दूसरा इन्द्रशाल तुल्य । तेग — तलवार लिए ।

२. चापमान — धनुर्धर । तेजधार — चक्र । अरया रै — बैरियो के । सिधां — सिद्धो मे । सुरेसा — देवताओ मे । सुवेंग — श्रेष्ठ वीर । रेणसारी — अखिल पृथ्वी मे । रसुपाट — पृथ्वी के भूपालो मे । पच — शिव, समूह । धुव स्याम — ध्रुव के स्वामी, विष्णु । मेर — मुखिया । विबुधान — देवो मे । पाणा — बली । अम्मरा — सुरों मे । सुधाक — आतंक वाला । जटीस — शिव । वसु स्याम — विष्णु । छता रौ — छत्रसिंह का । जोधाक — पुत्र, वीर ।

४. बाचवै — पढते हैं, वर्णन करते है । निरजरा — सुरो मे । ओपगै — उपमा पाते है । बीराण — शूरवीरो मे । धवळ — नंदि के सवार, शिव । धाम — वैकुण्ठ लोक में । नेत — त्रिनेत्र, शिव । धूव स्याम — विष्णु । चहूवाण — चहुवान कुलोत्पन्न भगतराम ।

९०. गीत महाराज भगतराम हाडा री तरवार रौ

घड़ी अनोखै पांण मालै जड़ी सु घाटिक, उमंडै खळां पूरण चडी आस ।
ताहरा हाथि भगतेस ओपै तिको, बहे गज चाचरां परां बाणास ॥१॥

भडूडा पांण दईवांण दामणि भळक, हक फिरि किरोई काळिजा हेर ।
तुहाळै बणी भुज जिका छाताळ तण, सिर गयंद ऊपरां बहे समसेर ॥२॥

खळा सुज निजुड़ै भरै जोगणि खपर, चळूळां डळां मस पळां चरती ।
बिजड थारै बण करग जगबध बीयां, कमळ गजराज वेहरार करती ॥३॥

जहर छक फुंणाळां ऊक ऊटै जिकां, असी किरवाण सभरी तणी आज ।
घणै दईवाण बीरांण वाहण घण, निजुड़ै सिंधुरां कंध नाराज ॥४॥

---

९०. गीतसार—प्रस्तुत गीत में महाराज भगतराम हाडा की तलवार के निर्माण और प्रहार की अचूकता की प्रशंसा करते हुए कवि ने लिखा है कि—हे भगतराम, तेरे हाथ में शोभा पाने वाली तलवार सिकलीगर ने अद्भुत हाथों से सुन्दर बनाई है। जब वह गज-यूथों पर चलाई जाती है तब आमिष भोजी चण्डिकाओं की भोजन-आशा पूर्ण हो जाती है।

---

१. पाण—हाथ से। मालै जडी—माला यंत्र में जकड कर। सु घाटिक, सुन्दरा-कृति। उमडै—जोश मे भर कर, उमड कर। खळां—दुष्टों के। पूरण—पूरी करने। चडी आस—चडिका की आशा। ताहरा—तेरे। तिको—वह। चाचरा—मस्तकों पर। परां—ऊपर। बाणास—तलवार।

२. भडूडा—आग-सी धधकती। पांण—तेज धार। दामणि—दामिनी। भळक—दमकती। हळक—कण्ठ। किरोई—वक्षस्थल की हड्डी। काळिजा—कलेजा। हेर—ढूढकर। तुहाळै—तेरे, तुम्हारे। जिका—जो, वह। गयंद—गजेन्द्र, हाथी। बहे—चले। समसेर—तलवार।

३. खळां—शत्रुओ के। सुज—वह। निजुडै—संधि रहित करती। भरै—भरती है। खपर-खप्पर—नर की खोपडी का बना पात्र। चळूळा—रक्त, यवन सैनिक। डळां मंस—मांस के टुकडे। पळाचरती—मास भक्षण करती, मांस चारियो को भक्ष्य देती। बिजड़—तलवार। करग—हाथ में। गज वध बीया—दूसरे गज-सिंह तुल्य। कमळ—सिर। वेहरार—चीरती, दो डाल करती।

४. छक—भरी हुई, तृप्त। फुणाळा—सर्प जैसी, सर्प मुखी। ऊक—अग्नि। असी—ऐसी। किरवांण—तलवार। निजुडै—बिना जोड़, छिन्न विछिन्न। सिंधुरां—हाथियो। कंध—कधे। नाराज—नाराच, तलवार।

६१. गीत नरसिंघावताररा बीनांण रौ भगतसिंघ हाडा रौ

खत्री भगतेस भड़ां सजि ओखळ, केवियां जाड उबाड़ करि ।
यळ अवतार गिरां छळ आडा, हाडा लायौ जेम हरि ॥१॥

अरि घट फाड़ बांबाड़ घुराव, नद छाताळ त्रंमाळ नीति ।
कमळा गळां तळां सूं काढ़ी, गाढी करि गोपाळ गति ॥२॥

छळ करि बळां कुळा धज छत्री, कूरमां घांण केवांण कसि ।
वसुधा तणौ लायक होय बळियौ, जगनायक जिम कीध जसि ॥३॥

भूपति धिनौ आखै धनि भूरा, सह पूरा खत्रवाट साराह ।
थरि मह गळै हीडोळै थांरै, बळै बीर बदीयौ बाराह ॥४॥

---

६१. गीतसार—इस गीत में कवि ने महाराज भगतराम हाडा और कछवाहो के मध्य हुए युद्ध का वर्णन किया है। कवि कहता है कि क्षत्रिय वीर भगतराम योद्धाओं को सजा कर शत्रुओं का उन्मूलन करता है। जिस प्रकार पाताल-लोक मे पृथ्वी को ले जाते हुए राक्षस से भगवान ने छीन कर उसकी रक्षा की थी, उसी प्रकार भगतराम ने कछवाहो के अधिकार मे जाती भूमि की रक्षा कर हाडाओ के अधिकार मे रखी ।

---

१. खत्री – क्षत्रिय । भडा – योद्धाओ । सजि – सजकर । ओखळ – युद्ध । केवियां – वैरियो की । जाड – दाढें । उबाड – उखाड । यळ – पृथ्वी, संसार । छळ – युद्ध, लिए । आडा – ओट, सामने, रोक । हरि – भगवान् कृष्ण ।

२. अरि – वैरी । घट – सेना, शरीर । फाड – चीर, विदीर्ण कर । बांबाड – नगाड़े । घुराव – घोष करा, वजवा । नंद – पुत्र । छाताळ – छत्रसिंह । त्रमाळ – तांबे के पेंदे के नगाडे । कमळा – लक्ष्मी, भूमि । गळा – कठो मे से । तळा – नीचे । काढी – निकाली । गाढी – दृढ । गति – रीति, चाल ।

३. छळ – युद्ध, छद्म । बळा – शक्ति से । धज – योद्धा । घाण – ध्वंस । केवाण – तलवार । कसि – कसकर, खींचकर । लायक – लाने वाला । बळियौ – लौटा, आया । जसि – जैसी ।

४. धिनौ – धन्य । आखै – कहते है । पूरा – पूर्ण । खत्रवाट – क्षत्रिय मार्ग मे । थरि – स्थिर । मह – महि, भूमि । गळै – गले । हीडोळै – झूले । थांरै – तेरे, तुम्हारे । बळै – फिर । वदीयौ – कहा । बाराह – वाराह, वाराहावतार ।

६२. गीत कुंवर सनमानसिंघ हाडा रौ

सुजळ कळा पौढ़िम श्रुवण दान घरियां सकौ,
ऊजळ पय सुरां छंट भुजा उनमांन ।
मछांचर दमग वड चात्रगा मागणां,
समंद चंद गिरंद इद कुंवर सुनमांन ।।१।।

अथग सीतळ अचळ छौळ कर उपट्टां,
वेळ ऊजळ अनम पाळ कुळ वेस ।
सुफर चख चकोरां देव मोरां सुकवि,
सध सोम समेर सक्र नद-भगतेस ।।२।।

रतन पव अवत उमड खत्रवट रिध,
जळ कळा सघन ध्रव वरद उजवाळ ।
हस रज प्रिया रिख पाळ जग हेतवां,
अतर ससि मेर यद वियौ छाताळ ।।३।।

---

६२. गीतसार—इस गीत में कवि ने महाराज कुवर सनमानसिंह की दानवीरता का वर्णन कर समुद्र, चन्द्र, सुमेरुगिरि और इन्द्र के साथ समता प्रकट की है ।

---

१. सुजळ – निर्मल जल । कळा – कला । पौढिम – सुमेरुगिरि । श्रुवण – स्वर्ण । पय – जल । सुरां – देवताओ । छट – बूंद । उनमान – समान । मछांचर – हस । दमंग वड – वड़वाग्नि । चात्रगा – चातको । मांगणां – याचको, कवियो । गिरंद – सुमेरुगिरि । इंद – इन्द्र ।

२. अथग – अथाह । सीतळ – सौम्य, शीतल । अचळ – अडिग । छौळकर – धारा कर । उपट्टा – दान, उछाल । वेळ – लहर । ऊजळ – उज्ज्वल । अनम – अनम्र, अविचल । पाळ – पालक । वेस – आश्रय । सुफर – मछली । चकोरा – चकोरो । देव – देवताओ । सुकवि – सुकवि रूपी मयूरो । सध – सिंधु । सोम – चन्द्र । सुमेर–सुमेरुगिरि । सक्र–इन्द्र । नंद भगतेस–भगतराम का पुत्र, सनमानसिंह ।

३. रतन – रत्न । पव अवत – अमृतवर्षी । खत्रवाट – क्षत्रियत्व । रिधि – ऋद्धि । ध्रव – द्रव्य । वरद – विरुद, वरदाता । ऊजवाळ – उज्ज्वल कर । हंस – मराल । रजप्रिया – रजनीप्रिय । रिख – ऋषि, देवता । पाळजग – संसार का पोषक, मेघ । हेतवा – कवियो, हित चाहने वालों । अतर – जो तैरा न जा सके, समुद्र । ससि–चन्द्र । मेर – सुमेरु । यद – इन्द्र । बियौ छाताळ – दूसरा ही छत्रसिंह ।

सतां तारिक अठा सुरां अग्र छतीसा,
डड पय अचळ अवत बड आच।
मीन कामोद सिंध मोयर कवि मिळै,
सरोवर सोम गिर घण कुवर सांच ॥४॥

६३. गीत महाराज सनमानसिंघ हाडा रौ मुक्ताग्रह

वाचां जाणजे जुजीठ सांचा आचा क्रन राजा बणै,
तेज सो खतग कळा गणा सोम ताय।
बळा कारी मारूत सो महि पिता बेद बांणी,
भूपताणो सुनमान अेकसै सुभाय ॥१॥

ग्यान रौ गोरख विक्र-तंड बुधान रौ गणा,
सिधां बामदेव मानसीरां मे समद।
छोळा माघवान बळाकार गदाधार छाजै,
नृप भूपाळ असौ उदीपियौ नद ॥२॥

---

६३. गीतसार—इस गीत में कवि ने महाराज सनमानसिंह को सत्यवादियो मे युधिष्ठिर, दानियो मे कर्ण, तेजस्वियो मे सूर्य, सौन्दर्यवानो मे चन्द्र, बलिष्ठो मे हनुमान, विद्वानो में ब्रह्मा, ज्ञानियो में गोरक्षनाथ, बुद्धिमानों मे गणेश, सिद्धो मे शिव और समुद्रो मे मानसरोवर के समतुल्य बताकर प्रशसा की है।

---

४. सता – सातो समुद्रो मे। तारिक – तारो मे, तैराको मे। अठा – आठों गिरियो में। सुराअग – देवताओ में प्रमुख। छतीसा – छत्तीसो राजकुलो मे। उड – गहरा। पय – अमृत। अचल – पहाड। अवत – दान मे। बड़ आच – बडे हाथ वाला, बडा दातार। घण – बादल।

१. वाचां – वचन। जाणजे – जानिये। जुजीठ – युधिष्ठिर। आचा – हाथो के उदार। क्रन राजा – राजा कर्ण। खतग कळा – चन्द्र। गणा – समूह। सुभाय – स्वभाव वाला, समता वाला।

२. विक्रतड – बाकी तुण्डवाला, गणेश। बुधांन रौ – बुद्धिमानो मे। बामदेव–शिव। मानसोरा – मानसरोवरो मे। छोळां – उमग वालो मे। माघवान – मघवा, इन्द्र। बळाकार – बलवान, हनुमान। गदाधार – भीम। छाजै – शोभता है। असौ – ऐसा। उदीपियौ – दीप्त होता है।

ब्रवा राव तणै घरे हसराज वाखांणवै,
सिंघां राव तणै घरे राकापती सोघ।
अजोध्या राव रै कोड़ी तैतीसां ऊबार असो,
जसो वळानाथ तणै सुनमांन जोघ ॥३॥

जुजीट करण हस अमीघार हणू जसो,
प्रजापती गोरख कमाळी गणाधेक।
मान यंद वोको-घीर सोम रिखीकेस मानू,
अठारा वी वेख जोड़ सुनमांन अेक ॥४॥

६४. गीत कुवर सनमानसिंघ हाडा री

सोहै श्रीनाथ रै काम सभूनाथ रै आरूढ़ सखी,
घी सहश्र हाथ रै करण वळाघार।
उग्र सोभा क्रति चद अपार पाय रै असो,
कै वळानाथ रै सुनमांन कळाघार ॥१॥

---

६४. गीतसार–कवि ने इस गीत मे कुमार सुनमानसिंह हाडा को सुन्दरता में प्रद्युम्न, वल में स्वामी कार्तिकेय, दातारो मे राजा कर्ण और प्रचण्डता मे सूर्य के सदृश्य प्रकट करते हुए वर्णन किया है।

---

३ ब्रवाराव तणै – मानसरोवर, ब्रह्मा। सिंवांराव – महासागर। राकापती – चद्रमा। कोडी तैंतीसा – तेतीस करोड़ देवताओ का। ऊबार – उद्धारक, रक्षक। असो – ऐसा। जसो – जैसा। वळानाथ तणै – आडावला के भूमिपति के। जोघ – वीर, पुत्र।

४. जुजीठ – युधिष्ठिर। करण – राजा कर्ण। हंस – सूर्य। अमीघार – चन्द्र। हणू – हनुमान। प्रजापती – ब्रह्मा। गोरख – गोरक्षनाथ। कमाळी–शिव। गणाधेक – गणपति। मान – मानसरोवर। वीकोघीर – वृकोदर, भीम। रिखीकेस – ऋषिकेश। अठारा वी – छत्तीस। वेख – देखा जाता है।

१. श्रीनाथ – श्रीकृष्ण। काम – प्रद्युम्न। आरूढ़ सखी – कार्त्तिकेय। घी – पुत्री, किरणें। सहश्र हाथ रै – सूर्य के। करण – राजा कर्ण। उग्रसोभा – उत्कट सौम्यता। चद – चद्र। असो – ऐसा। वळानाथ – अरावली पहाड के स्वामी, वूदी प्रदेश वाले। कळाघार – कान्तिमान्, कलाओं को धारण करने वाले, अंशावतार।

जोरावार भाउ सत्रसाल रै लुभाय जादो,
यूं दिली साहि रे पनो साहिजादो जूप ।
जाम रिखीस रै यू दुजीस जुधां तायजादो,
रायजादो भगतेस तणै काम रूप ॥२॥

अेम गधवाह रै प्राक्रमीस वज्रअगी,
जेठी बीसबाह रै अनम्मी इद्रजीत ।
बाकां एक रगी बेहू राहा रै वारै बदै,
दूवो छाताळ रै राजकुवार उदीत ॥३॥

काम जती सूर सोम भूपतीस सुती काहा,
बिप्र रुद्र तती ब्रन हथी जोप बार ।
माणीगार छरती प्रामती जो सुपंगी काहा,
सोहियो क्रामती रायजादां रो सीगार ॥४॥

---

२. जोरावार – बलवान । भाउ – राव भावसिंह । सत्रसाल – रावराजा शत्रुशाल के । लुभाय जादो – मोहने वाला राजकुमार । जूप–तेजस्वी, जीतने वाला । जाम रिखीस– जमदग्नि ऋषि । दुजीस – परशुराम । तायजादो – वीरपुत्र, उग्रस्वभाव वाला पुत्र, सहार करने वाला । रायजादो – राजकुमार । कामरूप – कामदेव के रूप वाला ।

३. अेम – ऐसे, उसी प्रकार । गधवाह रै – पवन के । प्राक्रमीस – परम पराक्रमी । वज्रअगी – वज्रतुल्य अगवाला, हनुमान । जेठी – जेष्ठ पुत्र । बीस बांहरै–रावण के । अनम्मी – किसी के सामने न नमने वाला । इद्रजीत – मेघनाद । वेहूराहा रै – हिन्दू और यवन दोनो धर्मों वाले की । बदै – कहते हैं । दूवो – दूसरे । छाताळ – छत्रसिह । उदीत – उद्योत ।

४. काम – कामदेव । जती – यति, शिव, हनुमान । सूर – सूर्य । सोम – चन्द्र । विप्र – ब्राह्मण, परशुराम । हथी जीपवार – गजसेना को जीतने वाला, भीम अर्थात् हनुमान । मांणीगर – उपभोग करने वाला । छरती – षट् ऋतुओ मे, प्रतिदिन । प्रामती – प्राप्त करने वाला । सुपंगी – सुकीर्ति । क्रामती – चमत्कारी, कान्तिमान् । सीगार – शृगार ।

९५ गीत महाराज सुनमानसिंघ री तरवार री

कहर मूठिमाळा जड़ी घडी वीजू कळामें, डख डखं सकति रत धापि डसणां ।
जडी असमर समर कवर सुनमान ज्यां, पड़ी वड़वाअनळ सीस पिसणां ।।१।।

दह गजर भुजगळे काळा दळां, समर दे दवा चौसठि सगाथे ।
डमर भर भगतउत जिकां नाराज डहे, मगळा सिंध वहे जिम खळा माथे ।।२।।

हलम्मा सुजळ रातळ भळळ हलूळां, भलूळा वाढ अवगाढ़ भवकी ।
अभिनमा छता जडकी दुजड़ वाम अंग, घड़ अगनि द्रोयणां कमळ घड़की ।।३।।

---

९५. गीतसार–इस गीत मे महाराज सनमानसिंह हाडा की तलवार के प्रभाव का चित्रण है। कवि ने लिखा है कि सनमानसिंह की तलवार विद्युत कला के तरीके पर बनाई हुई है। वह समर भूमि में उसे उठाकर प्रहार करता है तो ऐसा आभास होता है कि तलवार का प्रहार क्या हुआ मानो वैरियो के सिरो पर वाडवाग्नि ही गिर पडी हो।

---

१. कहर – भयावह, युद्ध, विपत्ति। मूठिमाळा – तलवार। घड़ी – बनी हुई। वीजूकळा में – विद्युत कला मे। डख डखं – डक डक की ध्वनि, द्रव्य पदार्थ को पीते समय होने वाली ध्वनि। सकति – शक्ति, युद्धदेवी। रत – रक्त। धापि – तृप्त हो। डसणा – दाढो से, भोज्य पदार्थों से। जड़ी – प्रहार की, चोट दी। असमर – असिवर। श्रेष्ठ तलवार। समर – युद्ध। वड़वाअनळ – वाड़वाग्नि। पिसणा – शत्रुओ।

२. भुजगळे – तलवार। काळादळां – गजसेना, योद्धा समाज। दवा – आशीश। चौसठि – चौसठ देवियां। संग्राथे – एक साथ, संग में। डमर भर – गर्व आपूरित। भगतउत – भगतराम का पुत्र। जिकां – जिन्हें, जिनको। नाराज – तलवार। डहे – मथता है, गिराता है। मगला सिंध – समुद्र की आग, वाडवानल। वहे – चले। खळां माथे – शत्रुओ के मस्तको पर।

३. हलम्मा – (?)। सुजळ – कान्ति, आभा। रातळ – रक्तिम। भळळ – चमचमाहट करती। हलूळां – (?)। भलूळां – (?)। वाढ – धारा। अवगाढ – वीर, धैर्यवान। भवकी – बहने की ध्वनि, भभकने की क्रिया का भाव। अभिनमा – अभिनव, नया ही। छता – छत्रसिंह। दुजड – तलवार। घड़ अगनि – शरीर की उष्णता। द्रोयणां – शत्रुओं। कमळ – सिर। घडकी – कांपी।

समर भर जीतणा कंवर घाड़ा सुरिन्द, कसि भड़ा घड़ां खत्रवट काटे।
बाळणो ढाळणां रूक भेळा बसे, अब पावक दहू खळां आंटे ॥४॥

९६. गीत महाराजा विजयसिंघ राठौड़ री तरवार रौ

महाभारथां कृतत दड्ढी किना पड्ढ़ी अढ़ी मत,
नदी हळासीक किनां अरदीक नाग।
जळाबोळ सिंधवाळी मानौं प्रळैकाळ जाळ,
खळां तळाबोळ बीजा तूझ वाळी खाग ॥१॥

कड़ौ घोम सभूनाथ हाथ री क महाकाय,
वरूथां छकैल छाक पाथ भाथ बांण।

---

९६. गीतसार—इस गीत मे कवि ने जोधपुर के शासक महाराजा विजयसिंह राठौड की तलवार के प्रताप की श्लाघा करते हुए लिखा है कि—हे महाराजा विजयसिंह, तेरे हाथ मे रहने वाली तलवार युद्धकाल मे संहार करने वाली यमराज की दाढ है किंवा अढाई मंत्र (मंत्र विशेष) स्वयं सिद्ध है। वह हलाहल युक्त नदी है अथवा अरि मर्दन हेतु नागराज की जिह्वा है। मानो वह प्रलयकालीन महासागर की अग्नि हैं जो रिपु समूह को अपने अचूक प्रहारों से जलाकर भस्म कर देती है।

---

४. समर – युद्ध। जीतणां – जीतने वाला। घाडा – धन्यवाद। सुरिन्द – सुरेन्द्र, इन्द्र। कसि – कसकर। भडा – योद्धाओ। घंडां – सेना। खत्रवाट–क्षत्रियत्व। वाळणा – जलाने। ढाळणां – गिराने। रूक – तलवार के। भेळा – शामिल। अब – जल, अमृत।

१. महाभारथा – घमासान युद्धो मे, महाभारत मे। कृतत दड्ढी – यमराज की दंष्ट्रा। किना – किंवा, अथवा। पड्ढी – सिद्ध किए हुए। अड्ढी मत – डायन का मंत्र विशेष जो अढाई अक्षरो का होता है। हळासीक – हलाहल की, विषकी। अरंदीक–अरियो का नाशक। नाग – सर्प। जळाबोळ – प्रचण्ड, भयकर। सिंधवाळी – समुद्र की। प्रळैकाळ जाळ – प्रलयाग्नि। खळां – वैरियो को। तळाबोळ – भूनने वाली, जड़ सहित जला देने वाली। बीजा – हे विजयसिंह! तूझवाळी – तेरी, तुम्हारी। खाग – खड्ग।

२. कड़ौ घोम – वलय की ज्वाला, भस्मी कडा की आग। सभूनाथ – शिव। हाथ री – हाथ मे का। क – अथवा। महाकाय – विशाल, अमित। वरूथां–सेना। छकैल – तृप्त करने वाली। छाक – मस्ती, उन्मत्तता। पाथ – पार्थ, अर्जुन। भाथ – तूणीर। बाण – तीर।

वज्र सुरांनाथ रो क मानो जज्रवाळो बाथ,
कमधां रा नाथ किनां तोवाळो केवांण ॥२॥

खळां घू नारंगां पीधां हुम्रै प्यासी लाग खेध,
केही वार गजां घू समूळगासी कीध ।
उतारे निबावां ग्राव थान साहां फेरी ग्रांण,
ताहीरा केवांण ग्रैण पांण तांण तीध ॥३॥

गाजीसाह बीजाई सवाई वखतेस गाढ़ा,
माराथां जैताई भू जोधाण धीस भांण ।
स्री हथां रूक सू उसचीतो खुरासाण सारो,
श्रीहथां रूक सूं नचीतो हिंदवांण ॥४॥

—भैरूदान बारैठ रो कह्यो

---

२. सुरनाथ रो – देवराज का, इन्द्र का । जज्रवाळो – महाकाल की, यमराज की । बाथ – भुजाओं में जकड़ना । कमधा रा नाथ – राठौड़ों के स्वामी । तोवाळो– तेरी, तुम्हारी । केवांण – तलवार ।

३. खळां – वैरियों । घू – मस्तक । नारगा पीधां – लाल रंग का पान किये हुए, रक्त पान किए हुए । लाग खेध – विरोध में लगकर, युद्ध में लगकर । केही वार–कितनी ही वेला । गजा घू – हाथियों के मस्तक । समूळगासी – समूल ग्रास । कीध – किया, की हुई । ग्राव – कान्ति, प्रतिष्ठा, प्रभाव । थानसाहां – बादशाही स्थानों अथवा सैनिक चौकियों । फेरी ग्राण – अपनी दुहाई फेरी । ताहीरा – तेरी । ग्रैण – इस प्रकार । पाण-तांण – पैनी की हुई । तीध – तीक्ष्ण ।

४. गाजीसाह – गजसिंह । बीजाई – दूसरे । वखतेस – वख्तसिंह । गाढा – दृढ । माराथां – युद्धों में । जैताई – विजयकारिणी । भू जोधाण धीस – जोधपुर राज्य के स्वामी । स्री हथां – श्री हाथों, आपके हाथों में रहने वाली । रूक – तलवार । उसचीतो – वह चिंतित । खुरासाण – यवन । सारो – तमाम । नचीतो – निश्चित, निडर । हिंदवाण – हिन्दू राज्य, हिन्दुस्तान ।

६७. गीत तिलोकसिंघ राजाउत कछवाहा रो

देख्यो तिण तमि हीज मीट दौडियो, हुवै बैर यम सदा हुवै ।
अमरापुर ओजूं आफळिया, दसतमखान तिलोक दुवै ।।१।।

किसन तणी काय कणि न कीधी, पौरस पिण्ड मांझी अपलि ।
किरमर कहर काढ़ कछवाहो, चगथा ऊपरि गयो चलि ।।२।।

अमर बड वडा दोड़ि आविया, आडा करण कजै ओनारि ।
तोगा राम दुहाई तोनू, तोगा मति बाहवै तरवारि ।।३।।

अमरां दिसी सुरताण अंगोभ्रम, कुरूम जपै येम सकाज ।
मेछ जको यळ मडळ मारियो, अमरापुर मारू सुजि आज ।।४।।

त्रनियण ब्रह्म कह हरि तोगा, सूरा कोप म करि खग साहि ।
अमर हुवै अमरापुर आयां, मरै नही अमरापुर मांहि ।।५।।

---

६७. गीतसार—यह गीत तिलोकसिंह कछवाहा और अजमेर के राज्यपाल दस्तमखांन के मध्य लडे गए युद्ध-विषयका है । गीत नायक तिलोकसिंह दस्तमखांन को मार कर स्वय रण मे काम आया था । कवि ने लिखा है कि अमरपुरी मे तिलोकसिंह ने ज्योही दस्तम खांन को देखा तो वह उस पर झपट पडा । तब देवताओ ने यह कह कर उसे शान्त किया कि स्वर्ग मे आने पर सभी कोई अमर हो जाते हैं । अत: अब यहां विग्रह मत कर ।

---

१. देख्यो – देखा । तिण – उसको । तमि हीज – तत्काल ही, तभी, त्योही । मीट – पल, क्षण । ओजूं – पुन:, दूसरी बार । आफळिया – लडने को तत्पर हुए, टक्कर लेने उद्यत हुए । दुवै – दोनो ।

२. किसन तणी – विष्णु भगवान् की । काय – कायदा, मर्यादा, प्रतिष्ठा । कणि न कीधी – किसी ने भी नहीं मानी । पौरस – पौरुष, । पिंड – शरीर । अपल – अत्यधिक, अप्रमाण । किरमर – तलवार । कहर – युद्ध, विपत्ति । काढ़ – म्यान से निकाल । चगथा – मुसलमान ।

३. अमर – देवता । आविया – आये । आडा – ओट । कजै – लिए । ओनारि– अनम्र, प्रचण्ड वीर । तोगा – तिलोकसिंह । दुहाई – शपथ । तोनु – तुमको । बाहवै – चलावे, प्रहार करे ।

४. दिसी – तरफ, दिशा मे । सुरताण – सुरतानसिंह । अगोभ्रम – पुत्र, वशज । कुरूम – कूर्म, कछवाहा । जपै – कहा । मेछ – यवन । जको – जो । यळ मडळ – पृथ्वी लोक में । सुजि – वह ।

५. त्रीनयण – त्रिलोचन, शिव । हरि – विष्णु । कोप – क्रोध । म करि – मत कर । खग साहि – तलवार उठाकर । अमरापुर – स्वर्ग लोक । मांहि–मे ।

९८. गीत राजा मानसिंघ कछवाहा आंबेर रौ

जुजिठळ कजि ज्याग इळाकजि अकबर, बधव भीच परठिया वेय ।
जुड़ि चहुं जिकै चारि दिसि जीती, जीतिस हेकण मान जुड़ेय ॥१॥

जुध वळि कूंट पंड सुत जीता, जिगन काजि चत्र बंधव जोड़ ।
किय वसि साहि सुछळि भगवत के, मान तिकै दुजण दळ मोड ॥२॥

भीम अजण सहदव नकुल भिड़ि, काजि अग्रज दिग-विजंज कीध ।
अेकणि मान जुड़े पह अराति, लोहा पाणि तिती भुय लीध ॥३॥

हर सुतन अनियें कूंतळ हर, वहिरो वीरति तणो विवेक ।
राजा तणा बधवा राजा, हुवौ चहूं वड भारथ हेक ॥४॥

—लक्खा बारहठ रौ कह्यौ

---

९८ गीतसार—इस गीत मे अकबर के दरबार मे सम्मान प्राप्त लक्खा बारहठ ने आमेर के कछवाहा नरेश मानसिंह की दिग्विजय का वर्णन किया है। कवि ने लिखा है कि महाराजा युधिष्ठिर ने दिग्विजय के लिए अपने चारो महावीर बंधुओं को भेजा और बादशाह अकबर ने अकेले महावीर मानसिंह को भेजा। उन चारो भाइयो ने युद्ध लड़ कर चारो दिशाओ की भूमि को अपने अधिकार मे ले लिया और इस (मानसिंह) ने अकेले ने ही युद्ध में बादशाह के विरोधियो को परास्त कर दिल्ली-शासन के अधीनस्थ बना दिये।

---

१ जुजिठळ – युधिष्ठिर। कजि – लिए। ज्याग – राजसूय यज्ञ। इळा – पृथ्वी। भींच – योद्धा। परठिया – भेजे। वेय – दोनों ने। जुड़ि – जूट कर। जिकै–वे। दिसि – दिशाएँ। जीतिस – जीते। हेकण – अकेले ने। जुडेय–लडकर।

२. वळि – बलवान। कूंट – दिशाएँ। पंड सुत – पाण्डव। जिगन – यज्ञ। चत्र बंधव – चारों भाई। जोड़ – मिलकर, जुटकर। वसि – वश में। साहि – बादशाह। सुछळि – लिए, युद्ध। भगवत के – राजा भगवतदास के पुत्र मानसिंह ने। तिकै – ये। दुजण – दुर्जन, वैरी। दळ – सेना। मौड़ – पीछे हटाकर पराजित कर।

३ अजण – अर्जुन। भिड़ि – लडकर। काजि – कार्य, लिए। अग्रज – जेष्ठ युधिष्ठिर। दिगविजंज – दिग्विजय। कीध – की। अेकणि – अकेले। पह – राजा। अराति – वैरी। लोहां पाणि – शस्त्र बल से। तिती – उतनी। भुय – भूमि। लीध – ली, की।

४। हर सुतन – भगवन्तदास के पुत्र। अनियैं – और, अन्य। कूंतळ हर – राजा कुंतलदेव के पौत्र। वहिरो – (?)। वीरति – वीरत्व। तणो–का। चहू – चारों। वड – वड़े। भारथ – युद्ध। हेक – अकेला।

६६. गीत राजा सूरसिंघ भगवन्तदासौत रौ

रामायण भारत इळा तणै रसि, पेखिया अनि अनि कळह स पूर।
पिंड भूय नाइक महीर पाइकां, सूर कहै हिक दीठौ सूर ॥१॥

ग्रहपति भरो सपेखै ग्रहतां, किताई असुर सुर धरा सकाम।
भगवन्त तणौ दीठ हिक भिड़तौ, सुपह अयारा मुहरि सग्राम ॥२॥

जुग चहु लगै वडा जुध जोया, भडा पराक्रम पयपै भाण।
माझी मीचा मुहरि सूर जिम, जुड़तौ नह को दीठ जूवाण ॥३॥

निय दळ अणी तणौ दळ नाइक, केवियां खड करतौ केवाण।
वळियौ अक तणौ वीरातन, भांण कळोधर पेखै भाण ॥४॥

—लक्खा बारहठ रौ कह्यौ

---

६६. गीतसार—उपर्यंकित गीत में कवि ने आमेर के राजा भगवन्तदास के पुत्र राजा शूरसिंह कछवाहा के युद्ध की सूर्य के मुख से प्रशंसा करवाते हुए लिखा है कि इस पृथ्वी-मण्डल पर रामायण और महाभारत जैसे युद्धों तथा अन्य अनेक युद्धों मे योद्धाओ को लड़ते हुए देखे हैं। परन्तु जिस प्रबलता से राजा शूरसिंह ने युद्ध किया वैसा अन्य किसी युद्ध को नही देखा।

---

१. भारत – महाभारत, कौरव पाण्डवो का युद्ध। इळा – पृथ्वी। तरणै – के। रसि – पृथ्वी (?)। पेखिया – देखे। अनि अनि – अन्य अन्य। कळह – युद्ध। स पूर – सम्पूर्ण। पिंड – भूमि, शरीर। भूय – भूप, राजा, भूमि। नाइक – एक भी नही, सेनानायक। महीर – सामने। पाइका – सैनिकों। सूर– सूर्य। हिक – एक। दीठौ – देखा। सूर – शूरसिंह।

२. ग्रहपति – सूर्य। भरणै – कहता है। सपेखै – देखे है। ग्रहता – पकड़ते, युद्ध करते। किताई – कितने ही। असुर – राक्षस। सुर – देवता। धरा–पृथ्वी। सकांम – कामना के लिए। हिक – एक। भिडतौ – लडता, टक्कर लेता। सुपह – योद्धा, राजा। अयारा – बैरियो। मुहरि – सम्मुख। सग्राम – युद्ध।

३. जुग चहुं – चारो युग। लगै – तक, लगातार। जोया – देखे। भडां–योद्धाओ का। पयपै – कहता है। भांण – सूर्य। माझी – मुखिया, सेनाध्यक्ष। मीचा–योद्धाओ। जिम – जैसे। नह को – कोई को भी नही, किसी को भी नही। दीठ – देखा। जूवाण – युवा, योद्धा।

४. निय दळ – निज सेना, अपनी फौज। अणी तणौ – अग्रिम पंक्ति के, हरावल का। दळ नाइक – दलपति, सेनापति। केविया – वैरियो को। खड – खडित, काट मारता, टुकडे टुकडे। केवांण – तलवार से। अक – अन्तिम अक्षर, सीमा। वीरातन – वीरत्व की। भाण कळोधर – सूर्य की कला धारण करने वालो को, शूरसिंह को। पेखै – देखा। भांण – सूर्य ने।

१००. गीत राजा नरायणदास खंगारोत कछवाहा रो

अकवर चै कांमि दिखण दळ ऊपर, असमरि ऊछजियै आरांणि ।
मुहरि हुवौ नरौ घाय मिळतौ, पुळियौ दळां हुवौ पछिमाणि ॥१॥

भारथि भडां खगार अंगोभव, खळ खांडण रिण झाले खाग ।
आगळि हुवौ वाग ऊपड़ती, वांसै हुवौ फिरंती वाग ॥२॥

कळहि चढै जगमाल कळोधर, जण जण मुंहडै जुवाजूवौ ।
मुहरै हुवौ अणी मेळन्तौ, हालियां पूठि रखौ हूवौ ॥३॥

कळह करै ऊबरियौ कूरम, भाजै सत्रा पडंती भीड ।
आगळि करै सेन ऊवेळै, वळि राखै पूठी रख वीड़ ॥४॥

—लक्खा बारहठ रौ कह्यौ

---

१००. गीतसार—इस गीत मे कवि ने नराणा संस्थान के अधिपति राजा नारायणदास खंगारोत कछवाहा की युद्ध वीरता का वर्णन किया है। वह लिखता है कि नरायणदास बादशाह अकबर के कार्य के निमित्त दक्षिण के विद्रोहियो पर तलवार उठाकर युद्ध मे भिड़ते समय शाही सेना के विचलित होने जाने पर उनके आगे न भाग कर उनकी रक्षा के लिए पृष्ठ रक्षक बन गया ।

---

१. चै – के। कामि – कार्य हेतु । दिखण दळ – दक्षिण प्रदेश के विद्रोहियों। असमरि–असिवर, श्रेष्ठ तलवार। ऊछजियै – प्रहार होते समय, ऊपर उठाए । मुहरौ – मुह आगे, सामने, मुकाबिले के सामने। नरौ – नारायणदास। घाय – वार, प्रहार । मिळतौ – मिलते, शस्त्रो की टक्कर होते। पुळियौ – भागते। दळा – समूह के । पछिमाणि – पश्चिम की ओर, पीठ रक्षक ।

२. भारथि – युद्ध। भडा – योद्धाओ, भिड़ते। खगार अगोभाव – राव खंगार के अग की भ्रान्ति देने वाला, खंगार का पुत्र, नारायणदास। खळ – वैरी। खाडण–नाश करने। रिण – रण में। झाले – पकड़ कर। खाग – खड्ग। आगळि–आगे, हरावल में। वाग ऊपडती – घोड़ों की लगामें उठा कर युद्ध मे झोकते । वांसै – पीछे, पीठ पर। फिरती वाग – पीछे की ओर मुडते, रण से विमुख होते ।

३ कळहि – युद्ध। कळोधर – कला को धारण करने वाला, कुलोद्धारक। मुंहडै – मुंह आगे। जुवाजूवौ – पृथक पृथक, अलग अलग। अणी – सेना, शस्त्रों की नोक। हालिया – भागते। रखौ – रक्षक ।

४ कळह – युद्ध। ऊबरियौ – बच रहा। कूरम – कूर्म, कछवाहा। भाजै–नाश कर। सत्रा – शत्रुओं। भीड़ – विपत्ति, सहायता। आगळि – आगे। ऊवेळै–रक्षा की। वळि – फिर। रख – रक्षक। बीड़ – भिड़कर, कसकर।

१०१. गीत मिरजा राजा जैसिंघ कछवाहा आमेर रौ

घर किधी धाक धूक गहै धज, भड दळ बादळ जिम मेघ बणाह ।
हेकण दिन मांहे महाराजा, जीतौ गढ बावन जैसाह ।।१।।

पोहमी पहठि कीध घर धूपटि खाग भड़ां अनडां ची खोय ।
दसमी दिवस मानसी दूजा, दुरग लिया खट बीसां दोय ।।२।।

पूना घर कोधौ सर पाधर, हैदळ गैदळ सबळ हीचि ।
पडतौ नह सेवौ आय पावा, बोट मारतौ समद बीचि ।।३।।

मोधा गिरा पाड़ि मैंगळ वट, पिसण किया सूधा पीठांण ।
मैंज फरि दिखणी दळ माथै, जीतौ पैंजबध जमरांण ।।४।।

---

१०१. गीतसार–यह गीत कछवाहा नरेश जयसिंह प्रथम द्वारा राजा शिवा मरहठा को पराजित करने मे विषयके है। गीतकार ने लिखा है कि—राजा जयसिंह ने तलवार उठाकर तथा मेघ समूह सदृश्य विशाल सेना का घेरा देकर एक ही दिन मे बावन दुर्गों पर अधिकार कर लिया ।

---

१ किधी – की । धाक धूक – आतंक जमा कर, हमला कर । गहै – पकड कर, धारण कर । धज – तलवार । भड – सुभट । बणाह – बनाकर । हेकण – एक । मांहे – मे । जीतौ –विजय किया । जैसाह – जयसिंह ।

२. पोहमी – पुहमी, पृथ्वी । पहठि – पैठ कर । धूपटि – कब्जे मे, नष्ट । खाग – तलवार । अनडा – अनम्रो । ची – की । दुरग – किले । लिया – लिये, कब्जे मे किए । खट बीसां दोय – बावन ।

३. पूना घर – पूना राज्य । कीधौ – किया । सर पाधर – विजय कर सीधे कर दिए, प्रभुत्व नष्ट कर सीधे सरल बना दिए । हैदळ – अश्व सेना । गैंदळ – गज सेना । सबळ – शक्तिशाली । हींचि – प्रहार कर, मार कर । पडतौ – गिरता । सेवौ–राजा शिवा । पावा – चरणो मे । बोट – जहाजो पर, काट कर । समद – समुद्र । बीचि – मध्य, मे ।

४. मोधां – उलटे । गिरा – पटक कर, पछाड़ देकर । मैंगळ वट – मदोन्मत्त । पिसण – वैरी । सूधा – सीधे, सरल । पीठांण – युद्ध मे । मैंज – सपाट करने का उपकरण । फेरि – घुमाकर । माथै – पर, मस्तक पर । पैंजबंध – म्यर्दाधारी । जमरांण – यमराज ।

१०२. गीत मिरजा राजा जैंसिघ कछवाहा रौ

सेरन मेरन समसेरं, वळि विढ़वा च्ढै न आवेरं।
वळि विढवा चढसे आवेरं, सेरन मेरन समसेर ॥१॥

दिखणाज दिखणी देस दरां, करि गहै न जैंसिघ लोह करां।
करि गहसी जैंसिघ लोह करा, दिखण न दिखणी देस दरा ॥२॥

गढ स गढज सेवौ सेवाळं, मल गहै न जैंसिघ करीमाळं।
मल गहसी जैंसिघ करीमाळ, सगस गढ सेवौ सेवाळं ॥३॥

पुर पट्टण ज हट्टण ज बीजपुरं, अरि हुवै न जैंसिघ तेणो डरं।
अरि होसी जैंसिध तेणो डर, पुर पटण न हटण न बीजपुर ॥४॥

क्रोधज जोधज गोळकुडं, डह डट्टैन जैंसिघ लोह डडं।
डह डट्टसी जैंसिघ लोह डड, क्रोध न जोध न गोळ-कुंड ॥५॥

दिल्ली न मलीन दिलगीर, भड भीड़ै न जैंसिघ अरि भिड़।
भिड़सी जैंसिध अरि भीडं,, दिल्ली न मलीन दिलगीरं ॥६॥

---

१०२ गीतसार—यह गीत मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा की दक्षिण विजय और राजा शिवा मरहठो को पराजित करने की युद्ध घटनाओ पर कहा हुआ है। कवि ने लिखा है कि शहरो और गिरिघाटो में तलवार नहीं चमकी, क्योंकि वीर जयसिंह युद्ध करने नहीं चढा। आमेर पति युद्ध करने चढ़ेगा और तब नगरो और पहाडों पर शमशेरे दिखने लगेंगी।

---

१. सेर न — शहर में नही। मेर — पहाड से। समसेर — तलवार। विढवा — युद्ध करने के लिए। आवेर — आमेर से। चढ़े से — चढ़ेगा।

२. दिखणी देस — दक्षिण प्रदेश। दरा — रास्ते, घाटियाँ। करि — हाथ में। गहै न— ग्रहण नहीं करे, धारण नहीं करता। लोह करा — हाथ मे तलवार, हाथ मे अस्त्र। गहसी — पकडेगा।

३. सेवौ — छत्रपति शिवा मरहठा। मल — मल्ल, योद्धा। करीमाळं — तलवार। गहसी — पकडेगा, धारण करेगा।

४. पुर — नगर। पट्टण — पत्तन, शहर। हट्टण — हाटें, दूकानें। बीजपुरं—बीजापुर। अरि — शत्रु। तेणो — तिनके, उसके। होसी — होगे।

५ जोधज — योद्धा। गोळकुडं — गोलकुण्डा स्थान। डह डट्टैन — नही ठहरते। लोहडड — लोहदण्ड।

६ मलीन — मलिन, श्री विहीन। दिलगीर — दिलगीर। भड — भट, वीर। भीडै न — संकीर्ण घेरा में नही लेता, भिड़ता नही। भिड़सी — लडेगा। अरि — रिपु। भीड़ — समूह, भिडेगा।

१०३. गीत कर्मसेन कल्याणोत कछवाहा रो

वागै वार हाक लूबिया बैरी, बागिया फारक धार बहै।
जोबन कहै कमां नीसरजे, करि भारथ कुळवाट कहै ॥१॥

पिंड धड़ धड तूटै पांचावत, थह लूबिया बिया गज थाट।
चालि कसन कहै अणिया चढ, बेस कहै निकळि भगवाट ॥२॥

केलण-हरो कदळ मे बटका, माझो बीरा रतण मोहो थाट।
कहियौ जोबन तणौं न कीधौ, कीधौ इम कहियौ कुळवाट ॥३॥

---

१०३. गीतसार—यह गीत कर्मसेन कल्याणोत कछवाहा पर रचित है। कवि ने जीवित रहने की कामना और कुल गौरव का वर्णन करते हुए लिखा है कि कर्मसिंह को युद्ध में वीर हाक कर वैरियो ने चारों ओर से घेर लिया। तलवारों के फुर्तीले प्रहार होने लगे। उस समय में यौवन ने तकाजा किया—कर्मसेन युद्ध त्याग कर रणभूमि से भाग निकल। किन्तु तभी कुल गौरव ने सतर्क करते हुए उत्तर दिया—युद्ध कर।

---

१. वागै – ध्वनित हुई। वीरहाक – वीरो की गर्जना। लूबिया – चारो ओर से घेर कर लडने लगे। फारक – फुर्तीले। धार – तलवारो के प्रहार। बहै – चले। कमा – कर्मसेन। नीसरजे – बचकर निकल जा। करि – कर। भारथ–युद्ध। कुळवाट – कुलमार्ग, वंश परम्परा का गौरव।

२. पिंड – शरीर। तूटै – टूटते हैं। पांचावत – पचम या पंचायनसिंह के पुत्र। थह – दुर्ग, स्थान। बिया – दूसरे। गजथाट – गजसेनाओ से। चालि – आगे बढ़कर। कसन – कुल गौरव (?)। अणियां चढ - शस्त्रो की नोको पर चढ़, सेना के हरावल से मुकाबिला कर। वेस – वय, आयु। निकळि – निकल। भगवाट– भागने के मार्ग से।

३. केलण-हरो – केलण का पौत्र अथवा वंशज। कंदळ – युद्ध। बटका – टुकड़े, खण्ड खण्ड। माझी – मुखिया। रतण – आमेर के राजा रतनसिंह। मोंहो – मुह के सामने, आगे। तणौं – को। कीधो – किया। इम – यो, इस प्रकार। कुळवाट – कुल रीति का वंश मर्यादा का।

१०४. गीत कंवर जैंसिघ नरूका कछवाहा रौ

उचकै जो मेर अरक फिरि ऊगै, तीजड़ घटै मटै तरसीध ।
कसिकै सेस कथन ह्वै काचो, जो पाछौ जोवै जैंसीध ।।१।।

भागै अनड़ भांण पछिम भति, धरा वेद जो उलटि धरै ।
नहसै नाग नाथ ह्वै नसतो, फिरै अरक तो पूठि फरै ।।२।।

मरण तर्णो वाखाण कळू मझि, राह खूम विचि अनै अरड़ीग ।
मिटतां पगां गजन सी मारचौ, सांमों मारि मुवौ जैंसीग ।।३।।

---

१०४. गीतसार—यह गीत कुवर जयसिंह नरूका कछवाहा के रणदाढर्य पर है। कवि ने लिखा है कि सुमेरु अपने स्थान से डिगे, सूर्य पश्चिम मे उदय हो, शेषनाग खिसकने लगे, गोरक्षनाथ के वचन असत्य हो तो महावीर जयसिंह रणभूमि मे प्रवेश करने पर घर लौट जाने की कामना से पीछे की ओर निगाह डाले ।

---

१. उचकै — स्थान छोड़कर चले, उछले । मेर — सुमेरुगिरि । अरक — अर्क, सूर्य । फिरि — फिर कर, पीठ पीछे, पश्चिम से । ऊगै — उदय हो । तीजड — तलवार । मटै — नष्ट हो । तरसींध — जबरदस्त योद्धा । कसिकै — खिसके, स्थिरता त्यागे । सेस — शेषनाग । काचो — असत्य । पाछौ — पीछे की तरफ । जोवै — देखे, लौटने का विचार करे ।

२. भागै — स्थान छोड़ चले, भागने लगे । अनड़ — गिरि, सुमेरु पर्वत । भाण—रवि । भति — तरफ । नहसै — सहन न करे, विचलित हुवे, नष्ट हुए । नाग — शेषनाग । नाथ — गोरक्षनाथ । न सतो । असत्यभाषी । फिरै — लौटे, पीछे की तरफ मुडे । पूठि फरै — रण से विमुख हो ।

३. कळू मझि — कलियुग में । राह — मार्ग । खूम — खाप (?) । अनै — अन्य । अरड़ींग — बलवान, शूर पुरुष । गजनसीं — गजसिंह गौड़ को । मुवौ — मरा, मृत्यु को प्राप्त हुआ ।

१०५. गीत जैचन्द कल्याणोत कछवाहा रौ

भगवाट दुहेली कुळवट भारी, बैरी ओखळ नीख बरत ।
जैचंद कहै जीवबो जुग परि, पदरा ऊपरै परत ॥१॥

अनमी कुळ काछड़ो न आणै, जुध भागा कन पाणिप जाय ।
पांचा सुत न जीव खळ पळक, नो खट बरस ऊपरै न्याय ॥२॥

केलणहरौ थाट मे कुटकां, आवधा मुंहडै हुवौ अछौ ।
जीवै नह हेक पल जैचद, पाच अनै दस बरस पछौ ॥३॥

---

१०५. गीतसार—गीतकार ने इस गीत मे जयचद कल्याणोत कछवाहा के पन्द्रह वर्ष की आयु मे रणभूमि में मरने की प्रतिज्ञा-निर्वहन करने का वर्णन किया है। कवि ने जयचंद द्वारा कहलवाया है कि भाग कर जीव बचाने का मार्ग बुरा है और कुल-परम्परा का पालन करते हुए मृत्यु को अगीकार करना श्रेयस्कर है। बैरियो को प्रहारो से मारने के श्रेष्ठ व्रत का पालन करने के लिए पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहना चाहिए। तदनन्तर जीवित रहना व्यर्थ है ।

---

१. भगवाट — भागने का मार्ग। दुहेली — द्विविधा पूर्ण, अप्रिय। कुळवट — कुल की श्रेष्ठता का व्रत। भारी — बोझिल, गुरुतर। ओखळ — प्रहार कर। नीख बरत— श्रेष्ठ व्रत। जीवबो — जीवित रहना। जुगपरि — युग के ऊपर, बारह वर्ष बाद। पदरा — पन्द्रह। परत — प्रतिज्ञा।

२. अनमी — अनम्र। न आणै — न लाये। पाणिप — प्रतिष्ठा, पानी, आव। पलक — निमेष। नो खट — पन्द्रह, नो और छह। बरस — वर्ष। ऊपरै — ऊपर, उसके उपरान्त।

३. केलणहरौ — किल्हण देव का वंशधर। थाट — समूह, सेना। कुटका — टुकड़े टुकड़े।

१०६. गीत जैंसिघ नरूका कछवाहा री

पाडण अरी घणं हट पडियो, वडा कंवर लघु वेसा ।
अपछर खडी विवाणां ऊपरि, जोवै वाटां जैंसा ।।१।।

केती वार हुई कछवाहा, घाय मचता घमसांणां ।
दाखै परी हरी-चद दूजा, विढ पोहो आव विवाणां ।।२।।

विढता घणी लगाई वळा, समहर सूर सवादा ।
सुर त्रीया साद करै सागावत, रथो आवो रायजादा ।।३।।

पाड़ण खळां डळां होय पड़ियो, रुक फताहर रसियो ।
अपछर रथा कंवर नह आयो, वढि अमरापुर वसियो ।।४।।

---

१०६. गीतसार–यह गीत कछवाहो की नरूका शाखा के कुमार जयसिंह कछवाहा के युद्ध का है । कवि ने इसमें वर्णन किया है कि—वह ज्येष्ठ कुमार अवयस्क आयु मे ही शत्रुओं का संहार करने के लिए हठ ठान बैठा । हे जयसिंह, तेरे वरण के लिए अप्सराएँ विमानो पर अतिक्षातुर खडी हैं ।

---

१. पाडण अरी – वैरियों को रणशायी करने के लिए, शत्रुओ का नाश करने हेतु । घणं – बहुत, अति । हट – हठ । लघुवेसा – छोटी आयु में । अपछर – अप्सराएँ । विवाणा – विमानो । जोवै – प्रतीक्षा करती है । वाटां – मार्ग मे । जैंसा – जयशाह, जयसिंह ।

२. केती वार – कितनी वेला, कितना समय । हुई – हुआ, होगया । घाय – प्रहार, शस्त्राघात । मचतां – होते हुए । घमसाणा – घमासान, भयानक युद्ध । दाखै – कहती है । परी – अप्सरा । हरीचद – हरिश्चन्द्र, पूर्व पुरुष का नाम । दूजा – दूसरा ही । विढ – लड़कर, मरकर । पोहो – योद्धा । आव – आओ ।

३. विढतां – युद्ध करते हुए, जूझ मरते । घणी – बहुत । लगाई – व्यतीत की । वेळा – वेला, समय । समर – युद्ध । सवादा – वाद ठानने वाले, हठ करने वाले । सुर-त्रीया – देव सुन्दरी, अप्सरा । साद करै – आवाज दे, हेला पाड़े । सागावत– संग्रामसिंह के पुत्र । रथो – रथ पर, विमान में । रायजादा – राजकुमार ।

४. खळांडळां – शत्रुओ के टुकड़े-टुकड़े । होय – होकर । पड़ियो – पड गया, गिर पडा । रुक – तलवार से । फताहर – फतहसिंह का पौत्र । रसियो – शौकीन, रसिक । रथां – रथों पर, विमानों पर । नह – नहीं । वढ़ि – कट कर, मर कर । अमरापुर – देवपुरी, वैकुण्ठ मे । वसियो – निवास किया, जा वसा ।

१०७. सुजाणसिंघ जगन्नाथोत कछवाहा रौ

दिखणी पतसाह राह दोय द्रोमझि, कडि आवध आविया कसि ।
वेस कहै घरि चाल वीरवर, समर कहै मरणौ अवसि ।।१।।

दळ नायक जगनाथ दूसिरा, साह दिखण आविया सूजाण ।
जीवन कहै चालि घर जावा, ईजति कहै रहौ आराण ।।२।।

सुत गिरमेर कूरमां सरहर, घडिया अरि जुध घाट घड़ि ।
दिन तो कहै चालि निज द्वारे, लाज कहै गजगाह लड़ि ।।३।।

कूरम कहै अमर नह काया, पुळवा कारिण हुवा पोहौ ।
मोहो बांधिया न जाये मरणि, सरम बाधिया मरै सोहो ।।४।।

---

१०७ गीतसार—यह गीत राजा जगन्नाथ कछवाहा के वंशज सुजानसिंह कछवाहा का है । कवि ने इस गीत मे सुजानसिंह के मुख से आयु (जीवन का आग्रह) और कुल गौरव की भाग का वर्णन करवाते हुए लिखा है कि दक्षिणी प्रान्तो के शाह कवच एवं आयुधो से सजधज कर युद्धार्थ आ पहुँचे हैं। ऐसी विकट परिस्थिति मे आयु तो कहती है कि हे वीर, घर को भाग चल और कुल गौरव रणभूमि मे जूझ मरने का तकाजा करता है ।

---

१ दिखणी – दक्षिण प्रान्त के । पतसाह – बादशाह, शाहजादे । द्रोमझि – युद्ध । कडि – कवच । आवध – आयुध, हथियार । आविया – आगए । कसि – कस कर, बांध कर । वेस – उम्र । घरि – घर । समर – रण । मरणौं–मरना । अवसि – अवश्य ।

२. दळनायक – सेनापति । सुजाण – हे सुजानसिंह । जीवन – यौवन, युवापन । ईजति – इज्जत । रहौ – ठहरो, काम आओ । आराण – युद्ध मे ।

३. गिरमेर – सुमेरसिंह । कूरमा – कूर्मक्षत्रियो के, कछवाहो के । सरहर – शिरोमणि । घडिया अरि – अरि सेना, दुश्मनो को काट छील कर घडे । जुधघाट – युद्धस्थल, युद्ध मे शरीर । घडि – घटा, सेना, घडने की क्रिया का भाव । द्वारे – द्वार, घर । गजगाह – युद्ध, गजग्राह । लडि – लड, युद्ध कर ।

४. नह – नही । काया – शरीर । पुळवा कारिण – भागने के लिए तो । पोहौ – राजा, योद्धा । मोहो – ममत्व मे । बाधिया – बधने से बढने से । सरम – लज्जा । सोहो – सब, समस्त, वह ।

१०८. गीत साहब खां भाखरोत कछवाहा रो

गाढां वाढ़णो अवगाढ महूगढ़, उतर प्रगट धर पैलां ।
सेलां झड़ मांडयौ साहबखां, वूठौ सरस वून्देला ।।१।।

तजडे सजड़े वेणाउत, जोध पछिम धर जांणै ।
कुंत घटा मांडी कछवाहे, राव लियो नीसांणै ।।२।।

वरसिंगदे फौजां सिर वागो, देखवियो दिखणाळां ।
आवुध सुध कूरम आंमेरै, छड़ियौ भलो छडाळां ।।३।।

---

१०८. गीतसार—इस गीत मे कवि ने भाखरोत शाखा के साहिब खांन कछवाहा योद्धा द्वारा बुन्देल खण्ड (ओरछा) के राजा वीरसिंह देव बुन्देला के विरुद्ध युद्ध लड़ने का वर्णन किया है । कवि ने लिखा है कि पर भूमि मे जाकर साहिबखांन ने महू दुर्ग पर युद्ध लड़ा और बलवान् कहे जाने वाले बुन्देलों का मान खंडित किया । उस वीर ने बुन्देला सेना पर सेलों के प्रहारो की सघन वर्षा कर वर्षा का दृश्य उपस्थित कर दिया ।

---

१. गाढ़ां – बलवानों, छलियों, अभिमानियो । वाढणो – काटना, सहार करना । अवगाढ़– युद्ध । महूगढ़ – महू स्थान का दुर्ग । पैलां – दूसरो की, सबसे पहले । सेलां – भालों का । झड़ – सघन वर्षा, अनवरत प्रहार । मांडयौ – मंडित किया, लड़ा । वूठौ – बरसा ।

२. तजड़े – तलवार । सजड़े – सहित झड़ी, सजकर । वेणाउत-वेणी – दास का पुत्र । जोध – बहादुर । कुंत – भाला । मांडी – रची । नीसांणै – निशान, राज चिन्ह विशेष, निशाना ।

३. सिर – ऊपर । वागो – लड़ा, बजाने लगा । दिखणाळा – दक्षिण वालों ने । आवुध – हथियार । कूरम – कूर्म, कछवाहा । आमेरै – आमेर वाला, आमेर राजवंशोत्पन्न । छड़ियों – हिला डुला कर साफ करने की क्रिया का भाव, छांट फटकार कर । भलो – भली प्रकार । छडाळां – भालो द्वारा ।

१०९. गीत राजसिंघ भाखरोत कछवाहा रौ

सबळां सूं बाद न कीजै साहब, ह्वै सारीखां बाद सही ।
कह्यो म्हारो जो मानै कंता, राजड़ सूं डरपतो रही ॥१॥

बार बार समझांऊ बालम, तूटता आखरां कहूं तन्नै ।
खान तणा सूं मिळस्यो खांगा, नह जदि मिळस्यो आणि मन्नै ॥२॥

कहूं केविया तणो कंत सूं कामणि, करडा वचन अणायर कोथ ।
कूरम तणै जावस्यो काकड, लडथडती आवसी लोथ ॥३॥

आयो धीग ढूंढाहड वाळो, भोरां सोस लो त्यो भानि ।
भों की आस छोड़ द्यो भोम्या, छावो कहूं डूंगरां छांनि ॥४॥

---

१०९. गीतसार—उपरांकित गीत में कवि ने भाखरोत शाखा के कछवाहा वीर राजसिंह का आतंक प्रदर्शन करते हुए प्रतिभट की पत्नि के मुख से कहलाया है कि—हे कन्त ! अपने से बलवान् से कभी विवाद मत कीजिए । सम बलवालों से किये जाने वाले युद्ध में ही सफलता मिल सकती है । यदि मेरा कहना मानते हो तो राजसिंह से किनारा काटते रहने में ही तुम्हारा हित है ।

---

१. सबळां सूं – बलवानों से, अधिक बल वालों से । बाद – विवाद, युद्ध । कीजै – कीजिए । सारीखां – जोड वालों से, सम बलवालों से । सही – सफल । कह्यो – कहा हुआ, कहना । म्हारो – मेरा । मानै – स्वीकार करें । कंता – कन्त, पति । राजड – राजसिंह । डरपतो – डरता हुआ ।

२. समझाऊं – समझाती हूँ, सावधान करती हूँ । बालम – हे पति । तूटतां – टूटते, अन्त के । आखरां – अक्षरों में, वचन में । तन्नै – तुमको, आपने । खान तणा – साहिबखान के पुत्र, राजसिंह । मिळस्यो – मिलोगे, विरोधी के रूप में भेंट करोगे । खांगा – तलवारों से । जदि – जब । आणि – लौटकर । कोथ – कुहित के, अनिष्ट के । काकड – सीमा पर, हद में । लड़थडती – लडखडाती । आवसी – आयेगी । लोथ – शव, लाश ।

४. धीग – प्रचण्ड वीर । ढूंढाहड वाळो – ढूंढाड़ देश वाला । भोरां – प्रात. । भों की – संसार में जीवित रहने की । आस – आशा । द्यो – दो । भोम्या – भोमिया, भूस्वामी, पति । छावो – छानो, बनाओ । डूंगरां – पहाड़ों पर । छांनि – छप्पर ।

११०. गीत नारायणदास दौलतखांन कछवाहा री

कजि लूंण तणै मांझी कछवाहो, डर जिणरै हू खरी डरू ।
बेटो कहै घड़ा हूं वरिस्यूं, बाप कहै हू घड़ां वरूं ।।१।।

सुत खान अनै नारियण समोभ्रम, छळ रजपूती तणा छता ।
पूत कहै अवरी हू परणू, पहली परणै तसी पिता ।।२।।

दौलत खान कंवर दुजड़ा हथ, आरण पड़ै ऊपड़ै आप ।
बावा तणौ जनेती बेटो, बेटा तणौ जनेती बाप ।।३।।

अरि भांजै घावां भरि आये, वदन करां उर पीड़ वणै ।
सास बहू नीवड़ो सीचं, ताय आगणे चाटसू तणै ।।२।।

---

११०. गीतसार–यह गीत कछवाहा नारायणदास और उनके उपपत्नि-पुत्र दौलतखान के युद्ध का है। गीतकार ने इस गीत मे लिखा है कि कछवाहो के प्रमुख नारायणदास और उसके पुत्र दौलतखान ने स्वामिधर्म के पालनार्थ युद्धारभ किया। विपक्षी सेना रूपी दुलहिन यह देखकर भयभीत हो गई। वह तो एक थी और ये पिता और पुत्र दोनों उससे युद्ध कर परिणय करने को अधीर थे।

---

१. कजि – लिए। लूण – नमक, स्वामि के नमक का प्रतिफल देने। माझी–प्रमुख, नेता। जिणरै – उसके। हू – मैं। खरी – सच्ची, पक्की। घडा – सेना। वरिस्यूं – वरण करूंगा। वरूं – वरण करूं।

२. खांन – दौलतखांन। अनै – और, अन्य। नारियण – नारायणदास। समोभ्रम– समानता की भ्रान्ति देने वाला, पुत्र। छळ – युद्ध। रजपूती – क्षत्रियत्व। तणा– का। छता – होते, प्रसिद्ध। अवरी – विना वरण की हुई, विना युद्ध लडी हुई। परणूं – विवाह करू। परणै – विवाह करे। तसो – वह, वैसा।

३. दुजडा हथ – खड्ग प्रहार। आरण – युद्ध मे। ऊपड़ै – पुन. उठे। बावा – बड़ा पिता, पिता का बडा भाई, बाप। तणौ – को। जनेती – बराती। बाप – पिता।

४. अरि – वैरी। भांजै – संहार कर। घावा भरि – घावों से परिपूर्ण हुआ। वदन – शरीर। पीड़ – पीडा। नींवड़ो – नीम वृक्ष। सीचै – पानी पिलावे, नीम के पत्तो के पानी से घावो को साफ करे। ताय – उसी, वहीं। आगणे – आगन में। चाटसू – भूतपूर्व जयपुर राज्य का एक कस्वा।

१११. गीत राजा जंसिंघ कछवाहा रौ

दिल्ली सुरताण थान ले दीजै, जांण ब्योत करण जैसाह।
कसि करि कसा बांधिया केवो, पळ हेक लियो पतसाह ॥१॥

कारी फेर लगो नह काई, थिर बागो नवखड थियौ।
ढिल्लो बाह थयी नह ढिल्लो, काठौ ढिल्ली बध कियौ ॥२॥

जोगणपुर सारीसो जामो, बणियौ नौरगजेब बणाव।
दूजा मान हाथि करि दीधौ, सारां सिरि ऊपर सरपाव ॥३॥

बांका जेह न लागा बीजा, साहिगाजो ओरग सुकठि।
हठि हठि घणौं चढायो हिंदू, हबै उतरसी घणै हठि ॥४॥

---

१११. गीतसार–इस गीत मे कवि ने मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा ने सहायता कर शाहजादा औरंगजेब को दिल्ली के सिंहासन पर बैठाया जिसका वर्णन किया है। गीत मे लिखा है कि राजनैतिक सलाह कर राजा जयसिंह ने औरगजेब को दिल्ली का सिंहासन दिलवाने मे योगदान दिया। उसने औरगजेब के विरोधियों को कसकर बन्दी बनाया और एक ही क्षण मे बादशाह को अपने अनुकूल बना लिया।

---

१. सुरताण – सुल्तान, शाहजादा औरगजेब। थान – स्थान। जांण ब्योत – अनुभव और युक्ति पूर्ण विचार। कसि करि – जकड कर। कसा – कसने, तस्मे। केवी – वैरी। पळ – क्षण। हेक – एक।

२. कारी – उपाय, युक्ति, पैबद। फेर – फिर। काई – कोई भी, कुछ भी। थिर– स्थिर। थियौ – हुआ। ढिल्ली – दिल्ली। बाह – भुजा। थयी – हुई। काठौ – मजबूत। बध – बधन।

३ जोगणपुर – योगिनीपुर, दिल्ली। सारीसों – समान, सदृश्य। नौरगजेब–औरगजेब। हाथि करि – अपने हाथ से हाथ मे लेकर। दीधौ – दिया। सारां सिरि – सबसे ऊपर। सरपाव – सिरोपाव।

४. बाका – बाँकुरे, वीर। जेह – जिसके, जो। बीजा – दूसरे, अन्य। साहि – शाह उपाधिधारी, शाहजादे। गाजी – उपटक विशेष वाले। सुकठि – कंठो के, प्यार से, निकट। हठि हठि – हठ पूर्वक। घणौं – घना, बहुत। हबै – अब। उतरसी– उतरेगा। हठि – हठ के बाद।

११२. गीत गजसिंघ नाथावत कछवाहा रौ

दोय राहा विचै जुग चारौं देखै, आदि जुगादी कहै ब्रह्म येम ।
आंबेरौ वैरायत आया, जुधि तजि न गो पमारां जेम ।।१।।

किसण नै मारिया हुवा दिन किताही, सक थेयो मेहो सिरताज ।
मोड़ा काय आया अजमेरा, आवेरौ दाखै पोहो आज ।।२।।

भरि कोठा परठा करि भारी, सभ्रम विहारी जुडण असीग ।
साम्हा अमल तिजारा सरबत, सत दळ मोकळिया गजसीग ।।३।।

कीधा वैर वळै केई करसी, लख जग खता पयपै लोय ।
यण विध कछवाहां सू अरि, करि करि अमल न लड़ियो कोय ।।४।।

ले चढि अनड पाछा लोहे, परि पूरा अव वर परा ।
साचौ आवेरा सोहोटण, खोटै जुग व्योपार खरा ।।५।।

---

११२. गीतसार–गीत रचयिता ने उपरोक्त गीत मे गजसिंह कछवाहा और राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ के युद्ध का चित्रण किया है। कवि ने ब्रह्मा के मुख से कहलवाया है कि हिन्दू और यवन दोनो धर्मो वालो के चारो युगो मे लड़े गए युद्ध को देखे हैं, जिनमें शत्रु के चढ आने पर योद्धा अपनी रक्षा के लिए प्रयत्नशील हो उठते थे। किन्तु वैरियों के चढ आने पर गजसिंह ने भय का अनुभव नहीं किया और न ही परमार योद्धा की भाँति रणभमि से भाग कर ही गया ।

---

१. दोय राहा विचै – दोनो धर्मों वालो मे, हिन्दू और यवनों मे। जुग – युग। आदि जुगादि – आदिकाल, प्रारम्भ से। आवेरौ – आमेर वाला, कछवाहा। वैरायत – वैरी, प्रतिशोध लेने वाले। न गो – नहीं गया। पमारा – पवार शाखा के क्षत्रिय।

२ किसण नै – किशनसिंह गौड़ को। किता ही – कितने ही। मोडा – विलम्ब से। काय – किसलिए। दाखै – कहता है। पोहो – योद्धा, राजा।

३ कोठा – कोठार। परठा – भेजा। सभ्रम – समान भ्रांति देने वाला, वशज। विहारी – विहारीदास। जुड़ण – युद्ध लड़ने। असीग – महान् वीर। साम्हा – सामने, मनुहार के लिए सम्मुख लेजाकर। अमल – अफीम। तिजारा – अफीम के डोडिये। सरबत – शर्बत। मोकळिया – भेजे।

४ वळै – फिर। करसी – करेंगे। लख – लाखों। खता – कथा, अपराध, झगडा। पयपै – वखानते हैं, कहते हैं। अरि – शत्रु, अड़कर, मुकाविला कर। करि करि अमल – अफीम का सेवन कर। कोय – कोई।

५, अनड – हाथी, किला। पाछा – पीछे, फिर कर। लोहे – हथियार। परिपूरा – परिपूर्ण, श्रेष्ठ कुल गौरव। सोहोटण – (?) । खोटै जुग – वुरा जमाना, कलियुग। खरा – सच्चा, सत्यता पूर्ण।

अनरध सूं ब्याज उग्राहिया, धार बिहारी खत जोड ।
दूणां चढ कछवाहा दीधा, गिण लीधा रण चढता गोड ।।६।।

११३. गीत दौलतसिंघ सेखावत कछवाहा रौ

असी बात अखियात जुग चारि रहसी अमर, गीत रूपग सुजस प्रथी गावै ।
पातिसाहा तणा घरा सूं पाधरा, दलौ दावौ लियौ लोह दावै ।।१।।

नागपुर बीकपुर मेडतो नृपती, अधपती राखिया घणां ओळै ।
पाटवी तणौ जसराज रै पाटवी, दळा बिच काढियो बैर दोलै ।।२।।

बैर केहरि तणौ सब्याजो बाळियौ, असा हुवै प्रवाडा भडा आही ।
सटै महाराज रै नूरदी साभियौ, मियां रौ भाणजो ब्याज माही ।।३।।

---

११३. गीतसार—यह गीत राव दौलतसिंह शेखावत कछवाहा द्वारा नुरुद्दीन खाँन को मारने विषयक है । गीतकार ने गीत में दौलतसिंह की श्लाघा करते हुए लिखा है कि यह वार्त्ता चारों जुगो तक ससार मे अमर रहेगी तथा इस कथा को गीत और रूपक काव्यो के माध्यम से कविगण लोक मे प्रचारित करते हुए कहेगे कि दौलतसिंह ने बादशाही घराने के व्यक्तियो को युद्धभूमि मे मार कर प्रतिशोध लिया ।

---

६. अनरध सूं — राजा अनिरुद्धसिंह से । उग्राहिया — वसूल किया । धार — तलवार की धारा से । खत — रुक्का, ब्याज पर रुपये देने वाले लेने वाले से जो लिखावट करवाता है उसे खत पत्र कहते हैं । जोड़ — साथ मिलाकर, शामिल कर । दूणां — द्विगुणित । दीधा — दिया । लीधा — लिये ।

१. असी — ऐसी । अखियात — प्रसिद्धि । रहसी — रहेगी । गीत — डिंगल के छन्द विशेष । रूपक — काव्य, प्रशस्ति काव्य । सुजस — सुयश । प्रथी — पृथ्वी । पातिसाहा तणा — बादशाहों के । पाधरा — सीधा । दलो — दौलतसिंह । दावौ— वैर, अभियोग । लोह दावै — शस्त्राघात के जरिये, हथियारो का दाव देकर ।

२. नागपुर — नागौर । बीकपुर — विक्रमपुर, बीकानेर । अधपती — अधिपति, राजा । राखिया — रक्खे । घणा — बहुत से । ओळै — ओट में, रक्षा में । पाटवी — पट्टाधिकारी । जसराज रै — जसवंतसिंह के । दळां — सेनाओ । काढ़ियो — निकाला, लिया । वैर — शत्रुता ।

३. केहरी तणौ — राजा केशरीसिंह खण्डेला के स्वामी का । सब्याजो — ब्याज सहित । बाळियौ — लिया । असा — ऐसा । प्रवाड़ा — वीर कार्य, प्रशस्ति । भड़ा—वीरो । आंही — ऐसे अथवा इनसे ही । सटै — बदले मे, एवज मे । महाराज रै — राजा केशरीसिंह के बदले नूरद्दीखाँ को । साभियौ — मार डाला । भाणजो — भानजा, भागनेय । मांहीं — में ।

अमरसर कासली खडेलो अंजसिया, सैद सूं लियण लेखौ सवायो ।
गंगहर अंवगढि नगारां गाजतां, अचड करि सावतो घरां आयो ।।४।।

११४. गीत कानसिंघ बलभद्रोत कछवाहा रौ

कूरम किता पुमाड़ा कान्हा, उतवग आगडिये अनड़ ।
सारै फेरि कीया सत्र पाथर, घड़ा तीन वायीस घढ़ ।।१।।

गूछळ खळ पाड़े रणग्राहट, गाजां भलो कियौ गजगाह ।
झळियौ ऊझळियौ झरहरतो, नौ सोळा भारथ नरनाह ।।२।।

वळभद अचळ छता मोहण छळै, ढुयोये सिर जूटै रण ढांणि ।
जीवतसंभ कछवाहो जांण्यौ, पांड़ अठा सत्र पीड़ाणि ।।३।।

---

११४. गीतसार–यह गीत कछवाहा वीर कानसिंह वलभद्रोत का है। कवि ने गीत मे लिखा है कि कानसिंह कछवाहा ने रणक्षेत्र मे पच्चीस युद्धो मे भाग लेकर वीरता के कितने ही कार्य किये। उसने शत्रुओ पर शस्त्रों से प्रहार कर उन्हे रणभूमि में सुला दिये।

---

४. अमरसर – शेखावतो की प्राचीन राजधानी का नाम, अमरसर स्थान। कासली – राव दौलतसिंह की राजधानी तथा परगने का नाम। अंजसिया – गर्वित हुए, गर्व का अनुभव किया। सैद सू – नुरुद्दीन खां सैयद से। लेखौ – हिसाव। सवायो – सवाया, सवा गुणित। गगहर – गंगाराम के पौत्र। अवगढि – आमेरगढ। गाजता – घोष करते, वजते हुए। अचड करि – श्रेष्ठ कार्य कर, कीर्ति प्राप्त कर, सावतो – सावित, विना घायल हुए।

१. कूरम – कूर्म, कछवाह ने। किता – कतिपय। पुमाड़ा – प्रसिद्धि के कार्य। कान्हा – कानसिंह। उतवग – उत्तमाग, मस्तक। आगड़िये – अग्रणी (?) अनड़ – अनत, निर्वन्ध। सारै – लोहा, शस्त्र। फेरि – फिरा कर घुमाकर, वार कर। सत्र – शत्रु। पाथर – सुला दिए, शयन करा दिये, मार डाले। घड़ा – सेना। तीन वावीस – पच्चीस।

२. गूछळ – कुण्डलाकार वना, घेरा मे डाल कर। खळ – शत्रु। पाडै – मार डाले। रणग्राहट – रण मे संहार कर, मथन कर। गाजा – भाला से, वर्छा से। गजगाह–युद्ध, गजग्राह। झळियौ – पकड़ा। ऊझळियौ – छलकते। झरहरतो – वहता हुआ। नौ सोळा – पच्चीस। भारथ – युद्ध। नरनाह – राजा, नरनाथ।

३. वळभद – वलभद्र। अचळ – अचलदास। छता – क्षिति। मोहण – मोहनसिंह। छळै – युद्ध। ढुयीये – ढहने पर, कटने पर। जूटै – जुटा, भिडा। रणढाणि – रणस्थल। जीवतसभ – युद्ध मे घायल होकर विजय प्राप्त करने वाला। जाण्यौ – जाना गया। त्र – पच्चीस। पीड़ाणि – युद्ध।

११५. गीत देवसिंघ खंगारोत कछवाहा रौ

कसीया पाखरा जी अस भडा झगळां, कीया साह सू केवौ ।
आवै रे आवै वौ आवै, दिन घाड़ायत देवौ ॥१॥

टागर लियै लियै न टोळा, आरण बार अकारी ।
करसा हूंत पुकारै करसी, मुणसा मारण हारी ॥२॥

अभमल हरौ खगार अभनवौ, बिजड़ां रीठ बजाड़ै ।
महता हूंत पुकारै महती, पीव बिछोड़ा पाड़ै ॥३॥

सांभरि अजमेर सहेतो कूटै, अरी धरा किलमाणी ।
धर ढूंढाड़ रात दिन धड़कै, ऊभौ सीह अभांणौ ॥४॥

---

११५. गीतसार—गीतकार ने इस गीत में देवसिंह खंगारोत कछवाहा का वर्णन किया है । गीतकार ने लिखा है कि बादशाह से शत्रुता के कारण वह शाही प्रजा को लूट कर अशान्ति उत्पन्न करता है । वह अश्व और भटो को सन्नाह-सनद्ध किये शाही प्रदेश पर आक्रमण कर दिन दहाडे गांवो को लूट लेता है ।

---

१. कसीयां – कसे हुए । पाखरां – घोड़ों के कवच, प्रखर । अस – अश्व । भड़ां – भटो । झगळा – जिरह बख्तर । केवौ – बैर, बदला । दिन घाडायत – दिन दहाड़े लूटने वाला । देवौ – देवसिंह ।

२. टागर – भैंसे, भैंसो के समूह । टोळा – ऊंटो आदि के समूह । आरण बार – युद्ध वेला मे । अकारी – जबरदस्त, मृत्युकारी । करसा – कृषक । हूत – से । करसी – किसान पत्नी । मुणसा – मनुष्यो को ।

३. अभमल हरौ – अभयसिंह का पौत्र । अभनवौ – अभिनव, दूसरा । बिजड़ां–तलवारो के । रीठ – भयानक प्रहार, युद्ध । बजाडे – प्रहार करें, चलावे । महता–किसानों के प्रमुख को महता पटेल अथवा चौधरी कहते हैं । महती – किसान पत्नी । पीव–पति । बिछोडा – अन्तर, विछोह ।

४. साभरि – सांभर झील । सहेतो – सहित । अरी – बैरी । किलमांणी–मुसलमानों की । धडकै – कांपे, कम्पित होती है । ऊभौ – खड़ा । अभाणी – अभयसिंह सुत, देवसिंह ।

६. गीत मानसिंघ कल्याणोत कछवाहा री

मुणसां गुर निमौ पराक्रम माना, अळगां हूंत आसनों आण ।
कसि घुड तंग नांखिया काळै, आडा रथ जाडा आराण ॥१॥

बाघ रास उपाडि चहूंवळ, कुरंभ अरिदळ मार करै ।
वरहासां कासां चढ़ि वहलां, फड़हड़ नासा तका फरै ॥२॥

हांकण हार पाळ सुत हुवै, अचरज गयण बहे अतरेख ।
लागवा सीस न ढोहे लाकड़, लाकड़ि लोहो छोहो लागेक ॥३॥

पैंडा पाड़ि झाडि दळ पैलां, मांन घाड़ि रजपूत मणि ।
असि कसि घणां छेतरे आयौ, गाढां आडौ आंक गणि ॥४॥

---

११६ गीतसार—यह गीत मानसिंह कल्याणोत शाखा के कछवाहा पर रचा हुआ है । कवि ने मानसिंह के पराक्रम की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि दूर दूर से लोग आकर मानसिंह का आश्रय लेते हैं । मनुष्य-श्रेष्ठ मानसिंह के पराक्रम को धन्य है जिसने तंग खींचकर रणस्थल में शत्रुओं के सामने अपने घोड़ों को झोंक दिये ।

---

१. मुणसागुर — मनुष्यों मे गुरु, मानव-श्रेष्ठ । निमौ — नमो, नमस्कार है । मानां — मानसिंह । अळगां हूंत — दूर दूर से । आसनों — आश्रय, शरण । आण—माते हैं, आसन, स्थान, दुहाई । कसि — कस कर, सजा कर । घुड — घोड़ा । तग — जीन कसने का तस्मा । नांखिया — झोंके, डाले । काळै — धीर । आडा—सामने, टेढा । जाडा — सघन । आराण — युद्ध ।

२. बाघ — वाग, लगाम । रास — घोड़े । चहूंवळ — चारों तरफ । कुरभ—कछवाहा । अरिदळ — शत्रु सेना पर । मार — चोट, प्रहार । वरहासा — घोडे । कासा — खासा, युद्ध के लिए सज्जित । वहलां — उतावल, युद्धोत्सुक । फड़हड — ध्वनि विशेष । नासा — नासिका, नाक ।

३. हांकण हार — चलाने वाला । पाळ सुत — गोपालसिंह तनय । गयण — आकाश । अतरेख — अन्तरिक्ष । लागवां — शत्रुओ । लाकड — (?) । लोहो — लोहा, हथियार । छोहो — उत्साह ।

४. पैंडा — पिण्ड, शरीर । पाड़ि — गिरा कर । झाड़ि — झाड़ कर, पटक कर । पैलां— शत्रुओ, दूसरे पक्ष वाले । घाड़ि — शाबाश । मणि — राजपूतों मे श्रेष्ठ । असि — अश्व । घणा — बहुत । छेतरे — छल, युद्ध । गाढ़ा — दृढता वालो । आडो आंक — अपार, बेहद ।

११७. गीत महाराजा सवाई जयसिंह कछवाहा रौ

हुवा बेध पतिसाहा सू खेध मोटा हुवा, नीम गैढुवा छळ बळ न तीजो ।
तेग हू नाथ आमेर रै ओत्रापडै, बळे कौ आपड़ै तेग बीजो ॥१॥

असुर खेटौ बिकट लागीया अमामो, प्रथी भै जागीया निपट प्राभी ।
छडै जो बिसन री खाग ऊनग दूछर, मंडै कुंण खाग व्रजाग माभी ॥२॥

हामले जवान अवर नर हळहळै, अरवकै धीर मन धरै अेहवौ ।
जसौ महाराज नाराज ग्रहै जरै, कसै कुळराज नाराज केहवौ ॥३॥

धणी किलमाण सा कूरमा सह धणो, प्रचड साझौ अणी गुमर पाळे ।
वीरवर महाजोधार केहरि बीया, झालि भुज भार तरवारि झाले ॥४॥

गाहि साम्हरि-नयर ढाळि फौजा गजा, ताळ सुर ढीलडो ढाळि ताणी ।
बिजायी मान सजितां सुजडी विगत, जगत चक चारि बाणास जाणी ॥५॥

---

११७. गीतसार—यह गीत आमेर के महाराजा सवाई जयसिंह कछवाहा का दिल्ली की मुगल सरकार से विरोध कर साभर स्थान पर लडे गए युद्ध से सम्बन्धित है । गीतकार ने लिखा है कि बादशाह की अप्रसन्नता से परस्पर विरोध उत्पन्न हुआ । छल और बल के अलावा तीसरा कोई तरीका काबू पाने का नही रहा । परन्तु आमेर के भय से ऐसा कोई सबल नही मिला जो तलवार उठाकर सामना करे ।

---

१. बेध – विरोध, युद्ध । खेध – अप्रसन्ता । नीम – छोटे । गैढुवा – गढपतियों । तेग हू – तलवार से । ओत्रापड़ै – प्रताप से, त्रास से, भय से । बळे – फिर, दूसरा । कौ – कौन । आपडै – पकडे, सामना करने के लिए हाथ मे उठाए । तेग–तलवार । बीजो – दूसरो ।

२. असुर – म्लेच्छ, मुसलमान । खेटौ – युद्ध । अमामो – अपार, बेहद । भै–भय । जागीया – उत्पन्न हुआ, छा गया । प्राभी – अत्यधिक । खाग – तलवार । ऊनग– नंगी । दूछर – सिंह, योद्धा । मडै – मंडित, लडने को तैयार । कुण – कौन । व्रजाग – वज्र की आग । माभी – मुखिया ।

३. हामळै – इच्छा कर, हमला । जवान – योद्धा । हळहळै – चलविचल हुए । अबर कै – अब की बार । धीर – धैर्य । अेहवौ – ऐसा, वह । जसौ – जयसिह । नाराज – तलवार । ग्रहै – उठावे । जरै – जब । केहवौ – कौनसा ।

४. धणी – स्वामी । किलमाण – मुसलमान । कूरमा – कछवाहों । साझी–सजाई, नाश की । अणी – सेना । गुमर – गर्व । बीया – दूसरा । झालि – उठाकर । भुज भार – भुजाओ पर बोझ, दायित्व । झाले – लेकर ।

५. गाहि – रौंदकर, कुचल कर, ध्वंश कर । साम्हरि-नयर – साभर नगर । ढ़ाळि – पटक कर, पडाव डाल कर । ताळ – ताल । ढोलडी – दिल्ली । बिजाई – दूसरा ही । सजिता – सजते । सुजड़ी – तलवार । चक चारि – चारो दिशाओं मे । बाणास – तलवार ।

११८. गीत महाराजा सवाई जैंसिंघ कछवाहा रो

जुड़ण काजि ऊठे सैयद दिलीसुर जूजुवा, करी ज्यां असी हाथां कुमाई ।
नरां ज्यां हूंत जैंसिंघ भेळौ नही, सूत बेठै कठै पातिसाई ।।१।।

उरडियौ दिखरण हूं लियण हसनहै अली, खळभळे चाक चढ़िया नवै खड ।
उचडै जकौ जैंसिंघ राजा असो, मंडै किम दिल्ली सैयदा तणी मंड ।।२।।

तखत दावा मुदी हुवौ अवदुल तिण, विढ़ण गज लाल झंडा वणावै ।
अधपती आज बिसनेस रौ ऊथपै, उफ दुराज रस केम आवै ।।३।।

स्याम द्रोहो हुवां विया राजेसुरां, जियाँ द्रहबाट गमियौ जमारौ ।
अभिनमा मान जेहांन यम ऊचरै, थापियी हुवै पतिसाह थांरौ ।।४।।

---

११८. गीतसार–गीतकार ने इस गीत में जयपुर नरेश सवाई जयसिंह की स्वामिभक्ति की प्रशंसा करते हुए कहा है कि दिल्लीश्वर के विरुद्ध सैयदो ने अपनी अलग से शक्ति सचय कर आक्रमण किया । किन्तु जिन लोगो के साथ जयसिंह की सलाह नहीं, उनकी योजना सफल कैसे हो सकती थी ?

---

१. जुड़ण काजि – आक्रमण करने हेतु, लड़ाई करने के लिए । सैयद – अब्दुला और हुसैन अली, सैयद वंधु । दिलीसुर – दिल्लीश्वर । जूजुवा – अलग अलग । असी– ऐसी । हाथां – हाथों से, अपने आप । कुमाई – कमाई, कार्य । हूंत – से । भेळौ – शामिल । सूत वेठै – उपाय वने, युक्ति लगे । कठै – कहाँ ।

२. उरड़ियौ – जोश मे उमड़कर चला, जवरन आक्रमण करने आया । लियण – लेने, अधिकृत करने । खळभळे – हल्ला मच गया, व्याकुलता जन्य हलचल मच गई । चाक – चक्र । उचडै – फेंके, दूर हटावे । असो – ऐसा । मंडै – स्थापित हो, कायम । किम – कैसे । मंड – योजना ।

३. दावा – दावेदार, हक । मुदी – मुखिया, कर्त्ता-धरता । विढण – लडने के लिए । अधपती – अधिपति, राजा । बिसनेस रौ – विष्णुसिंहात्मज, सवाई जयसिंह । ऊथपै – उखाडे, पराभूत करे । दुराज रस – राज्य परिवर्त्तन का आनन्द । केम – कैसे ।

४ स्याम द्रोहो – स्वामिद्रोह । हुवां – होने पर । बिया – दूसरे । राजेसुरां – राजेश्वरों, वडे राजाओ । जियां – जिन्होंने, जिस प्रकार । द्रहबाट गमियौ – नष्ट हुआ, खोया, अपमानित हुए । जमारौ – जीवन । अभिनमा – अभिनव, वंशज । मान – राजा मानसिंह । जेहान – संसार । ऊचरै – उच्चारण करता है, कहता है । थापियौ – स्थापित किया । पतिसाह – बादशाह । थारौ – आपका, तुम्हारा ।

११६. गीत रावत केसरीसिंघ सीसोदिया रौ

मुड़िया अनि केता बरफ-तळि मूवा, उजबक दळ आवता अचूक ।
केसरिसिंघ दिली रा कटकां, रावत मुवौ पाधरै रूक ॥१॥

पुळियां घणां घणा गळि पाळे, रळतळिया पैलां खळ रोद ।
असपति दळा पडंतां आम्ही, साम्ही धार चढयौ सीसोद ॥२॥

उतर भाळि वळिया दळ आलम, पाळि जदिन पति धरम पणौ ।
रावट वट उजवाळि मुवौ रिण, ताळि दोख दस जसा तणौ ॥३॥

---

११६. गीतसार—यह गीत केशरीसिंह सीसोदिया के समर-वर्णन का है। गीत रचयिता ने लिखा है कि उजवेक सैन्यदल के युद्धार्थ आने पर कतिपय योद्धा तो रणक्षेत्र का त्याग कर घरो की ओर मुड कर दौड पड़े और कितने ही बर्फ के नीचे दबकर मर गए। किन्तु दिल्ली की शाही सेना के हरावल का नेतृत्व करता हुआ रावत केशरीसिंह सन्मुख युद्ध मे खड्ग प्रहारो द्वारा रणखेत रहा।

---

१. मुडिया — पीछे लौट गए। अनि — अन्य, दूसरे। केता — कतिपय। बरफ-तळि— बर्फ के तले। मूवा — मर गए। उजबक — यवनो की एक शाखा, उजवेकिस्तान के निवासी। अचूक — न चूकने वाला, प्रहार सिद्ध। कटकां — सेना। पाधरै — सीधे, खुले। रूक — तलवार, खड्ग।

२. पुळिया — भाग चले। घणा — वहुत सा। गळि पाळे — बर्फ मे गल गए। रळतळिया — रौंद कर गिरा दिये। पैला — विपक्षी। खळ — बैरी। रोद — यवन, रौंद कर। असपति — वादशाह के। पडतां — पडते। आम्ही-साम्ही — आमने सामने, एक दूसरे के मुँह की ओर। धार — लोह धारा मे, तलवारों की धारा में।

३. भाळि — देख कर। वळिया — लौट गए। आलम — शाह। पाळि — पालन कर। जदिन — जिस दिन, उस दिन। पतिधरम — स्वामिभक्ति का धर्म। रावट वट — रावत वृत्ति, रावत पदधारियों का मार्ग। उजवाळि — प्रकाशित कर। ताळि — (?) । जसा — जसवंत। तणौ — का।

१२०. गीत कंवर अमांनसिंघ हाडा रौ

फण वाढ़ा डसण सुबाढा़ं फौजां, घण पौरिस विख रोस घणौ ।
काळा नाग सरीखौ कळहणि, तिसड़ौ खाग अमान तणौ ॥१॥

फूकारां बादियां घड फाड़ै, जंत्र न लागै भडां जग ।
भूगा काळ तणी कळ भारथ, खत्री तूंझ हाडा खड़ग ॥२॥

तड़ बादिया तणा मुह तूटै, दारण धकां स कारण दाट ।
खळ रिणताळ चाळ बंध खाये, झाळ बराळ काळ खग झाट ॥३॥

घूमै वकै धिकै खळ घावां, तण भगताउत डसियां तरह ।
दूजा छता चढै विख दोयणां, लीधां हंस उतरै लहर ॥४॥

१२०. गीतसार–उपरांकित गीत मे कवि ने कुमार अमानीसिंह हाडा की तलवार का काले नाग से रूपक रचते हुए वर्णन किया है कि डसने के लिए जिस प्रकार सर्प अपना फन फैलाता है उसी प्रकार अरि सेना का संहार करने के लिए तलवार को कोश से निकाल और विष रूपी क्रोध मे उन्मत्त हो वैरियो पर बढ़ा । जैसा काला नाग क्रोध में झपटता है उसी के अनुरूप अमानसिंह का खड्ग युद्ध में चलता है ।

१. फण – फन । वाढा – वढे हुए, वार करने के लिए । डसण – देश मारने, दाढ़ें । सुवाढा – संहार करने । घण – अधिक, घना । पौरिस – पौरुष, पराक्रम । विख रोस – विष रूपी रोष । घणौ – बहुत । काळा नाग – काला सर्प । सरीखौ – जैसा, सदृश्य । कळहणि – युद्ध । तिसड़ौ – वैसा, उस जैसा । खाग – खांडा, तलवार । अमान तणौ – अमानीसिंह का ।

२. फूकारां – फूत्कारो से । वादियां – वादियो, विग्रहियो । घड़ – घट, सेना । फाड़ै – विदीर्ण करें, चीरे । जंत्र – जत्र, मंत्र, उपाय । भडां – योद्धाओ के । जग– संसार । भूंगा काळ – काल कीट । भिनगा – सर्प । कळ – रीति, भांति । भारथ – युद्ध मे । खत्री – क्षत्रिय । तूंझ – तेरी । हाडा – चहुवानों की एक शाखा का नाम ।

३. तड़ – शाखा, गोत्र । तूटै – टूटे दारण – विकट । धकां – चोट, हमला । दाट – रोक कर । खळ – वैरी । रिणताळ – संग्राम स्थल । चाळवंध – वस्त्राचल पकड़ कर, समूह के समूह । झाळ – क्रोध, ज्वाला । बराळ – भयानक । काळ – मृत्यु, काला सर्प । झाट – प्रहार, चोट ।

४. घूमै – घूमते है । वकै – बकते हैं, अंट सट बोलते हैं । धकै – लड़खडाते हैं । घावा – घावो । भगताउत – भगतराम के पुत्र । डसियां – डसे, डक लगाने की क्रिया का भाव । छता – छत्रसिंह । दोयणा – शत्रुओं के । लीधा – लेने पर, हरण करने पर । हंस – प्राण, जीव । उतरै – उतरे, दूर हो, मिटे । लहर – विष की तरगें ।

१२१. गीत नाथ रा बीनांण रौ महाराज अमरसिंघ हाडा रौ

सिध नाथ बळ उपजियौ सहस बळ, सरै राम बासै सकति ।
उत्तमराम पावणौं आयौ, भूरे दी खागां भुगति ॥१॥

घखिया द्रोयण अराबां धूणी, भड़ां तणै लागी मन भाय ।
भसम किया रिमां सक डड भो, गाळिया सिधि बड़ा गज-गाय ॥२॥

सारि रमाडि बिफुट सरि, हृद फटकारौ दियौ हर ।
अजमेरा जोगी अवकळिया, धूलि चाटता फिरै घर ॥३॥

जर कथा फाटै जोगेसां, साचां पांव माडिया सेस ।
सार मूठि बावै गाजी सुत, अमर नाथ हाडा आदेस ॥४॥

---

१२१. गीतसार—गीत लेखक ने उपर्युक्त गीत में अमरसिंह हाडा को गोरक्षनाथ अंकित कर उत्तमराम गौड के साथ उसके युद्ध का आख्यान किया है । कवि ने लिखा है कि उत्तमराव गौड चढ आया तब उसका स्वागत करने के लिए अमरसिंह ने तलवारो से भोजन करवा कर आतिथ्य-धर्म का पालन किया ।

---

१. सिधनाथ – शिव, गोरक्षनाथ । उपजियौ – उत्पन्न हुआ । सरै – सिर पर । बासै – पीठ पर । सकति – शक्ति, देवी । पावणौ – अतिथि । भूरे – वीर, योद्धा । खागां – तलवारों की । भुगत – भोजन, गोठ ।

२. घखिया – क्रोध में धधकते । द्रोयण – दुश्मन । अराबा – छोटी तोपें । धूणी – सिद्धो के तापने का अग्निकुण्ड, धूम्र । भडा तणै – योद्धाओं के । मन भाय – मन को अच्छी लगी । भसम – भस्म । रिमा – वैरियो को । गाळिया – नष्ट किया । गजगाय – युद्ध, गजग्राह ।

३. सारि – तलवार से । रमाडि – खिला कर, रमा कर । बिफुटे – (?) । हृद – बेहद । फटकारौ – फटकार, प्रहार । हर – शिव । अजमेरा – अजमेर के स्वामी, गौड । जोगी – योगी । अवकळिया – मार डाले, फँसा कर नष्ट कर दिये । धूली – धूलि, रज ।

४. जर कथा – जिरह रूपी कंथा । मांडिया – मंडित किये । सेस – शेषनाग, पताल तक । सार मूठि – तलवार, मुष्टिका मे अभिमन्त्रित अक्षत लेकर । बावै – फेंक कर, चलाकर । गाजी सुत – गजसिंह तनय । अमरनाथ – अमरसिंह रूपी शिव । आदेस – नमस्कार, नाथ पंथियो के अभिवादन का शब्द ।

१२२. गीत सुनार रा बीनांण रौ महाराज जोगीराम हाडा रौ

बिढ़ता जुध हुवौ मोकळा बटका, रूंका मुंह बीहंडतौ रिम ।
चुण चुण सीस जगड़ चौ घरि चित, जोड़ै यम सुदार जिम ।।१।।

कळहणि बार थयौ अति कुटका, घड़चतां खळ पड़ै घर ।
कनक सुजाव तणौ उतबग करि, सोनी जिम सधे सकर ।।२।।

भारथ बरग हुवौ घण भिड़ता, सत्र साझंतां बाहतां सार ।
हर महराण तणौ मस्तक हद, जड़िया गति मेळे जटधार ।।३।।

हाडा तणौ बणायौ हाथां, पूरौ सिख मुख भली परी ।
रुद्र मुण्डमाळ बिचाळै राखै, कमळ जड़ाव बणाव करी ।।४।।

---

१२२ गीतसार–गीतकार ने उपरिलिखित गीत मे महाराज जोगीराम हाडा के पाटन स्थान पर लडे गए युद्ध का वर्णन किया है। वह लिखता है कि युद्ध मे तलवार की धाराओं मे शत्रुओ को काटता हुआ जोगीराम टुकडे-टुकडे होकर गिर पडा। शिव ने स्वर्णकार जैसे स्वर्ण के टुकडो को जोडकर आभूषण बनाता है, उसके मस्तक के खण्डित भागो को जोडकर मुण्डाभूषण तैयार किया ।

---

१. बिढता – लडते हुए। मोकळा – बहुत से, अनेक। बटका – टुकडे। रूंकां – तलवारो के। बीहडतौ – संहार करता। रिम – दुश्मन। चुण चुण – चुन-चुन कर। जगड़ चौ – जोगीराम को। घरि चित – विचार करता। जोड़ै – जोडे, एकत्रित किए। सुंदार – स्वर्णकार। जिम – ज्यो, जैसे।

२ कळहणि – युद्ध। थयौ – हुआ। कुटका – टुकड़े। घडचतां – काटते हुए, सहार करते हुए। धर – पृथ्वी। कनक सुजाव – कनकसिंह तनय। उतबंग – शीश। सोनी – सुनार। सधे – जोड़ा। सकर – शिव, शकर।

३. भारथ – युद्ध मे। बरग – टुकडे टुकडे। घण – बहुत से। भिडतां – टक्कर लेते। सत्र – शत्रु। साझंतां – संहारते। बाहता – चलाते। सार–तलवार। हर महराण – समुद्रसिंह के पौत्र (?)। जडिया गति – आभूषणों की जडाई का धंधा करने वाले की भांति, सुनार की तरह। जटधार – शिव।

४. हाडा तणौ – हाडा का। बणायौ – बनाया, तैयार किया। पूरौ – पूर्ण। सिख मुख – शिखा सहित मुख। रुद्र – शिव। बिचाळै – मध्य में। कमळ – शीश। जड़ाव – जटित। बणाव – शृंगार।

१२३. गीत परतापसिंघ सगतावत सीसोदिया रौ

धमस बाजि अैराकिया अराबां धडहडै, कावळी हूह गैजूह चढिया कडै ।
आवि चौगान पतिसाह बिहुं आथडै, पातला ऊपरै फूलधारा पडै ।।१।।

बेवडा चौवड़ा जूथ परि बाबरां, चौळरग चाढियौ गैमरां चाचरां ।
ओभड़ां झड़ां भांज घड़ां असमरा, नरा रा ऊपरै आभ फाटौ नरां ।।२।।

खिलखिलै खेचरा बीर नारद खिलै, ऊपरा ऊपरी गैढला ऊथळै ।
चाय उर अचळ दादो तको किम चलै, पातिसाही कटक रौंधिया पातलै ।।३।।

राण राजड तणा मारिकां रावतां, मरण बाळै लियो जरद अणमावता ।
अहलक बलू नै अनै अचळावतां, सीलियौ आवगो भार सकतावता ।।४।।

---

१२३. गीतसार–उपर्यंकित गीत मे कवि ने राणा राजसिंह के सामन्त प्रतापसिंह सीसोदिया ने बादशाह औरंगजेब की सेना से युद्ध किया, उसका वर्णन किया है । गीतकार ने कहा है कि घोडो की टापो की ध्वनि और तोपों के घोष के साथ भयानक रूप से योद्धा युद्धार्थ समीप आये और यो दोनों शाहजादे मैदान मे लड़ने लगे । उस समय प्रतापसिंह पर तलवारो की तीक्ष्ण धाराओ के प्रहार पडने लगे ।

---

१. धमसबाजि – ध्वनि होकर । अैराकिया – घोडों की । अराबा – छोटी तोपें । धडहडै – ध्वनित हुई, गर्जने लगी । कावळी – भयंकर, विपरीत । हूह – हल्ला कर, उत्साहित होकर । गैजूह – गज सेना । कडै – समीप लगे । चौगान – मैदान । आथडै– लडने लगे । पातला – प्रतापसिंह । फूलधारा – तलवारो की धाराएँ ।

२. बेवडा चौवडा – दुगुने-चौगुने । जूथ – यूथ, समूह, सेना । बाबरा – बर्बर, अपार । चौळरग – लालवर्ण, लोहू का रग । गैमरां – हाथियों के । चाचरां – मस्तको पर । ओभडां – प्रहारो । झडां – झड़ी, निरन्तर । भाज – नाश कर, मार कर । घडां – सेना । असमरां – तलवारो । नरा रा – नारायणदास अथवा नृसिंह के पुत्र । आभ – आकाश । फाटौ – फट पडा ।

३. खिलखिलै – खिलखिल हँसते हैं । खेचरा – खेचर, नभचारी, अप्सरा आदि । बीर – बावन भैरव । गैढला – गज सेना । ऊथळै – उथल दिये, उलटे फिरा दिए । चाय – चाह । उर – हृदय । अचळ – अचलदास । तको – वह । किम – कैसे । कटक – सेना । रौंधिया – कुचल डाली ।

४. जरद – कवच । अणमावता – अपार । अहलक – व्यर्थ (?) । बलू – बल्लू शक्तावत । अनै – अन्य । सीलियौ – वसूल हुआ, सफलीभूत हुआ । आवगो – पूर्ण, पूरा, आयुष्य । भार – वजन । सकतावता – सीसोदियो की शक्तावत शाखा वाले, यह शाखा राणा प्रतापसिंह के भाई शक्तिसिंह से चली है ।

१२४. गीत जगतसिंघ सगतावत सीसोदिया री

सहसा दो हूंत हेक सांफळियो, त्रिहु लोके हैकार तवे ।
बीता पहर च्यारि खग बहतां, रावत पड़े न खड़े रिवे ॥१॥

उभै हजार हूंत आभडियो, वरमा उड़े सावळां वूर ।
वीता विहूं नेस तायि वीजळ, सूर पडै नह हाले सूर ॥२॥

जुगल अनेक अभनवां दुरजण, अेक दीह घकत आराण ।
झड़ै केवांण टूक तन झडता, भांण चलै न चलै कुळभांण ॥३॥

किलमां हू सगतेस कळोधर, वासुर लगो असमरां वगो ।
आभि लगो भारथ विचि ऊभो, जगि चख खड़ै न पड़ै जगो ॥४॥

पांच पोहरि रुण्डमाळ पूरवै, नर पांचसै किया निरळंग ।
पातल सुतन पोत्यो पंच पोहरां, पहर पांच म खड़ै पतग ॥५॥

---

१२४. गीतसार—उपर्युक्त गीत मे कवि ने रावत जगतसिंह शक्तावत सीसोदिया के युद्ध-पराक्रम का चित्रण करते हुए लिखा है कि प्रतापसिंह दो हजार अरि सेना से अकेला ही जा भिडा । यह सुनकर तीनों लोको मे विस्मय फैल गया । वह वीर चार प्रहर तक अविरल गति से शस्त्र-संघात करता रहा । जब तक वह क्षतविक्षत नही हो गया तब तक भगवान् भास्कर एक स्थान पर स्थिर हुआ रण-क्रीडा देखता रहा ।

---

१. सहसां दो – दो हजार । हूत – से । हेक – एक, अकेला । सांफळियो – युद्ध किया । त्रिहुं – तीनों । हैकार – विस्मयजनित हाहाकार । तवे – कहते हैं, बोलते रहे । बीता – व्यतीत हुए । खग – कृपाण । वाहता – चलाते । रावत– रावत का पद धारण करने वाला प्रतापसिंह । खड़ै – चले । रिवे – रवि ।

२. उभै – दो । आभड़ियो – भिड गया । वरमा – वर्म, कवच । सावळां – बर्छों, भालो । वूर – हड्डियो का बुरादा । नेस – (?) । तायी – तब भी । वीजळ – तलवार । सूर – शूर, योद्धा । नह – नहीं । हाले – आगे चले । सूर – सूर्य ।

३. जुगळ – युगल, समूह । अभनवा – अभिनव, नया हो । दुरजण – दुर्जनशाल अथवा दुर्जनसिंह । दीह – दिन । घकत – धधकते । आराण – संग्राम । झडै – कट कर गिरे, कटे । केवांण – कृपाण । झड़तां – गिरते समय । भाण– भानु, सूर्य । कुळ भाण – कुलरवि, वंश का सूर्य, रावत प्रतापसिंह ।

४ किलमां – मुसलमानो । सगतेस – शक्तिसिंह की । कळोधर – कला को धारण करने वाला, कुल का उद्धारक । वासुर – दिन । भारथ – युद्ध । असमरां – तलवारो से । वगो – लडा । आभि – आकाश के । ऊभो – खड़ा । जगिचख– जगत लोचन, सूर्य । जगो – जगतसिंह ।

५. पौहरि – प्रहर । रुण्डमाळ – रुण्डो की माला । पूरवै – पूर्ण करके । निरळंग– घायल, क्षतांग । पातल – प्रतापसिंह का । पोंत्यों – पहुँचा । म खड़ै – नहीं चला । पतंग – सूर्य ।

१२५. गीत मानसिंघ सगतावत रौ अठतालौ

घरि जवन राजां धूघडा, निसांण बाजे नीकड़ा।
कसि कगळ कै घटि छक्कड़ा, धाय लूबि विघड़ा ॥१॥

बंगाळ खळ करि बेहड़ा, जोधार दूजा जोधड़ा।
मांडिया तौ सिर मांनडा, खरहंड आणि खड़ा ॥२॥

जळबौळ दळ जहगीर रा, फबि फौज गज धज फरहरा।
घण थाट कैंजम घरहरा, खुरसाण पाण खरा ॥३॥

अवसांण देखै आपरा, पीठांण पैठा पाधरा।
रण झालि आगळि राण रा, भाण रा झूझ भारा ॥४॥

आराण आयौ ऊकळै, अति सोर आतसि ऊछळै।
कूरमां कमधा दळ कळै, भाराथ बाथ भळै ॥५॥

---

१२५. गीतसार—इस गीत में कवि ने रावत मानसिंह शक्तावत सीसोदिया ने बादशाह जहांगीर के मेवाड़ पर किए गए आक्रमण के समय महाराणा के पक्ष मे रहकर लडे गए युद्ध का वर्णन किया है। गीतकार ने लिखा है कि यवन सेना और मेवाड नरेश की सेना ने परस्पर दृढ निश्चय कर युद्ध के वाद्य बजवाए। योद्धाओ ने कवच एव बख्तर आदि धारण कर दोनो ओर से युद्ध की तैयारी की।

---

१. जवन – यवन। धूघडा – दृढ निश्चय करके, अटल। नीसांण – नगाड़े। कंगळ – कवच। छक्कड़ा – बख्तर। धाय – बढ कर, योद्धा। लूबि – चारो ओर से घेर कर, झुकते घूमते हैं।

२. बगाळ – मुसलमान। खळ – शत्रु। बेहडा – समूह, एक के ऊपर एक रखने की क्रिया। जोधार – वीर। जोधडा – योद्धा। मांडिया – मडन किया, युद्धास्त्रो की झडी लगाई। मानडा – मानसिंह। खरहड – सेना, अश्व सेना, मुसलमान।

३. जळबौळ – जबरदस्त। दळ – सेना। जहगीर – बादशाह जहांगीर की। फबि – शोभित हुई। धज – ध्वजाएँ। फरहरा – फहराती। घण थाट–विशाल सेना। कैंजम – सेना। खुरसाण – मुसलमान। पाण – बल। खरा – सच्चे, दृढ।

४. अवसांण – अवसर। पीठांण – युद्ध। पैठा – घुसे। पाधरा – सीधे, सामने चढ कर। आगळि – अगाडी। भाण रा – भानु के वशज। झूझभारा – घमासान युद्ध करने वाले।

५. आरांण – युद्ध मे। ऊकळै – क्रोध से गर्म हुआ, कुपित हुए। सोर – बारूद। आतसि – अग्नि, तोपो की ज्वाला। ऊछळै – उछलता है। कूरमां – कछवाहा। कमधा – राठोड़। दळकळै – सेना का दमन करता, फौज को कुचलता। भाराथ– युद्ध। बाथ – भुजपाश।

मानी वहंतो मांगळै, सरदे मरदे सांफळै ।
दियंतो पग दांतूसळै, वाहतो खग वळै ॥६॥

सरि सेल हुवो सोंसरे, उझेल देतो असमरे ।
सोसोद रवदा साथरे, कळि ताम नाम करे ॥७॥

वरे न रहियौ अपछरे, निज सूर मडळ नीसरै ।
सामीस प्रामे समसरे, भरपूर मुकति भरै ॥८॥

१२६. गीत रावळ अमरसिंघ सीसोदिया रौ

असो कीध भाराथ अमरेस रावळ अचळ, असुर दळ ढायी तेगां ऊत्राणी ।
लाल रंग छोडि जरद वहतां नरा, पांच नधि लाल रंग हुवो पांणी ॥१॥

भाठियां बिलोचा पहर केते भड़े, मह तरवारियां झूझ मातौ ।
नवळ दळ छोडि सबळ वहता नरा, रोहर दरियाव विच हुवो रातौ ॥२॥

---

१२६ गीतसार—ऊपर के गीत मे कवि ने रावल अमरसिंह सीसोदिया के पंजाब में लडे गए युद्ध का वर्णन किया है। कवि ने युद्ध की भयानकता और रक्तपात का वर्णन करते हुए लिखा है कि रावल अमरसिंह ने नग्न तलवारो से यवन सेना का सहार कर ऐसा विकट सग्राम किया कि नदियो का पीत वर्णीय जल शोणित के मिल जाने से लाल रंग मे वहने लगा ।

---

६. मानी — रावत मानसिंह । वहतो — चलते । मागळै — हस्ति, गज । सांफळै — युद्ध । दांतूसळै — दन्तूसल, हाथी के दात । वाहतो — चलाता । खग—कृपाण । वळै — वार वार, अविराम गति से ।

७. सरि — बाण, तीर, सिर । सेल — भाला, पर्वत । ऊझेल — प्रहार, तरग, जोश । असमरे — तलवार, युद्ध । रवदां — मुसलमानो । साथरे — धराशायी कर, सुला कर । कळि — ससार, युद्ध ।

८. वरे — वरण । अपछरे — अप्सरा के । सूर मडळ — सूर्यलोक । नीसरे — निकले, पार गए । सामीस — सम्मुख । प्रामे — प्राप्त किये । समसरे — समर । भरपूर — पूर्ण । मुकति — मुक्ति ।

१. असो — ऐसा । कीध — किया । भाराथ — युद्ध । अचळ — अचल, दृढ । असुर दळ — यवन सेना । ढायी — गिरा, पटक । तेगां — कृपाणो से । ऊत्राणी—नगी । जरद — पीला । वहतां — वहते, प्रवाहित होते । पांचनधि — पंचनद, पंजाब मे वहने वाली पांच नदियां । पाणी — पानी, जल ।

२. भाठियां — क्षत्रियों की भाटी शाखा वाले, जैसलमेर के शासक । बिलोचां — बलोच शाखा के मुसलमान । केते — कितने ही । भडे — भिड़े । तरवारिया—तलवारें । झूझ — युद्ध । मातौ — म्हत, विकट, घमासान । नवळ — निर्वल । सवळ—सवल, वलवान् । रोहर — रुधिर । दरियाव — समुद्र । रातौ — रक्तिम, लाल ।

माछळा आछतता खाधा मरद, ऊहाळै जरद लाघै जयी।
उदधि रै कराड़ै दूसरा मालदे, कीरवाड़ै बिकै सलै केयी ॥३॥

१२७. गीत राव छत्रसाल हाडा रौ

अयी समरसर वरसतां अमर नर ऊचरै, आवधा ठेल फीलां अरांणी।
पाळि रुपे अवर तूटि फूटे पड़, पडग गमियौ नही ताम पांणी ॥१॥

लाज रा हौद आलम सुरा लेखिया, सार धारा पडे त्रिवड़ै सीर।
गरे तन पाज रण साज भमियौ गजर, नाथ रा तण गमियौ नही नीर ॥२॥

ताळ बोड़ां तणा असभ सारा तवै, चाचरै झड़े भर बजर चाळौ।
हूत पारौं सुघट घाय ढूके हुवौ, आभ मूकै नही आप वाळौ ॥३॥

कहाणा रहाणा रतन रा कळोधर, थाट भाजण नमौ मरण थारां।
देह राळ हस बाटै सुरा दे गयौ, ले गयौ नीर प्रम हस लारा ॥४॥

---

१२७. गीतसार–यह गीत राव शत्रुशाल हाडा बूंदी नरेश के युद्ध-विषयका है। गीतकार ने राव शत्रुशाल हाडा के रणदाढर्य का वर्णन करते हुए लिखा है कि राव द्वारा रण में शस्त्राघातों की वर्षा करते देख देवता कहने लगे कि शत्रुशाल ने शस्त्रों की चोटें देकर अरियो की गजारोहिणी को पीछे धकेल दिया। अन्य योद्धा तो युद्ध सागर की पाल पर ही रुके रहे अथवा टुकडे होकर काम आये किन्तु राव ने दृढता धारण कर अपने कुल गौरव को तनिक भी नही खोया।

---

३. माछळा – मछलियां, मत्स्य। आछता – आच्छन्न। खाधा – खायें, खा गये। ऊहाळै – पानी में बहने वाला कूडा-कर्कट। जरद – कवच। उदधि – सागर। कराडै – किनारे। कीरवाडै – मल्लाहो के मोहल्ले मे। बिकै – बिकते हैं। सलै – सिलह, जिरह वस्तरादि। केयी – कतिपय, बहुत से।

१. समर सर – युद्ध रूपी सरोवर। बरसता – वर्षा करते। अमर – देवता। ऊचरै– कहने लगे। आवधां – हथियारो से। ठेल – धकेल कर। फीला – हाथियो को। अरांणी – दुश्मनों के, युद्ध मे। पाळि – किनारे, पैंज। अवर – अन्य। तूटि – खण्डित होकर। पडग – बून्दे। गमियौ – खोया, व्यर्थ गंवाया। पाणी – जल।

२. लाज रा – लज्जा के। आलम – ससार। सुरां – देवताओ ने। लेखिया–लिखे, कहा। सारधारां – शस्त्रो की धारा। सीर – पानी की धारा। भमियौ–भ्रमित। गजर – गर्जना, बडप्पन, नाथ रा तण – गोपीनाथ के तनय ने।

३ ताळ – तालाव। बोडा – बिहड। असभ – अपार, असीम। तवै – कहते है, बखानते हैं। चाचरै – मस्तक। बजर – वज्र। चाळौ – युद्ध, चाल। ढूकै – पहुंचे। आभ – आकाश, बादल। मूकै – त्यागे, छोडे। आप वाळौ – आब वाला, कान्ति वाला।

४. रतन रा। राव रत्नसिंह की। कळोधर – कला को धारण करने वाला। थाट– सेना। भांजण – विध्वंस, नाश। थारा – तेरा, तुम्हारा। देह – शरीर। राळ– डालकर, गिराकर। हस – प्राण। बाटै – मार्ग, बाँट कर। नीर – आब, कान्ति। प्रम – परम। लारां – पीछे।

१२८. गीत धवल रा बीनांण रौ महाराज मेघसिंह इन्द्रगढ़ रौ

गिरवर चा राज तणौं रथ गळतां, वळ बळ धाये चळ विचळ ।
धोरी मेघ रोपिया पग धर, वैल्यां रा लागिया वळ ।।१।।

धवळो सदि पति रौ पाटोधर, किरमर ग्रह तांडे कहर ।
धर चौं वोझ धारियौ धुर रां, नर नारांट किया नहर ।।२।।

वळयद हरा हूत तड़ि वीजा, चौड़े गढि खळ उचंडिया ।
हेठ हेठ पग केही हमलां, मुंह आगीलां तणां मडिया ।।३।।

थांभे राज राखियौ रथ थिर, वूंदी घण छावतै विरोध ।
जगि धनि धनि कहियो जूड़ी रा, जूडो पड़वाळा धनि जोध ।।४।।

---

१२८. गीतसार—इस गीत मे कवि ने महाराज मेघसिंह हाडा के युद्धक्रिया-कलापों का धवल (वैल) की क्रियाओं मे आरोपण कर युद्ध का वर्णन किया है। गीत में लिखा है कि वूंदी राज्य के स्वामी का धरा रूपी रथ युद्ध में फँस गया और सभी योद्धा विचलित हो गए, तब मेघसिंह रूपी धोरी ने अपने पैर रोप कर धरा रूपी रथ का भार अपने कंधो पर धारण किया ।

---

१. गिरवर चा — गिरिमालाओ से आवेष्टित प्रान्त के, आडावळा का, वूंदी का। तणौं — का। गळता — गलित होते, फंसते। वळवळ — पुनः पुन.। धाये — हुए। चल-विचळ — विचलित। धोरी — वृषभ, धुर्धर, अगुआ। मेघ — मेघसिंह। रोपिया — रोपे, दृढता पूर्वक स्थिर किए। पग — पैर। वैल्या — सहायको, वैलों।

२. धवळो — धवल, वैल। सदि पति — स्यंदन पति, रथी। पाटोधर — पाटपति, राजा। किरमर — तलवार। तांडे — वैल की गर्जना। कहर — योद्धा, विपत्ति में। वोझ — भार, वजन, दायित्व। धारियौ — धारण किये। धुर रां — धुरो पर। नारांट — राजा। नहर — (?)।

३. वळ — शक्ति, सेना। यंदहरा — इन्द्रशाल के वंशज। हूंत — से। तड़ि — वंश, दल, शाखा। वीजा — दूसरे। उचडिया — ऊपर उठाए, उछाले। हेठ हेठ — (?)। हमलां — हमला। आगीलां — आगे, अगाड़ी। मडिया — मडित हुए, चिह्नित हुए।

४. थांभे — रोक कर, अधिकार से न जाने देकर। राखियौ — रक्खा। थिर — स्थिर। घण — वहुत, अधिक। छावतै — फैलते। जूड़ी रा — जोड़ी के, जुआ यन्त्र। जोध — योद्धा, वीर।

१२६. गीत गज रा बीनांण रो महाराज छत्रसिंघ रो

बाजै जसवास वीर घट बळ बळ, सिर आंकुस प्रम लीयां सिंघाळ ।
खग पोगर खळ रूंख उखाळै, छावो मद आयो छाताळ ॥१॥

घुघर घणण कीरति घर घण, राम हेक गजबाग रत ।
भुजळक दंत सत्र तरा भीचरड़, मेघ तणो हसती मसत ॥२॥

विड़दा लंगर असत पाय बांधा, बीजो यद्रसळ महाबळ ।
अजड़ा मुंहे पिसण ब्रख तोड़ै, कुवर बहतां गयद कळ ॥३॥

दहुवै पटां लगो खग डांणे, गोड़ै खळ करणा गरद ।
लख दळ मिल्या दळा चो लाडो, हाथी हाडो मसत हद ॥४॥

---

१२६. गीतसार—इस गीत में कवि ने महाराज छत्रसिंह हाडा की रणलीला की गज की क्रीड़ा के साथ सारूप्यता दिखाते हुए युद्ध का वर्णन किया है। कवि कहता है कि सुयश रूपी गजघंटों का निनाद हो रहा है। शत्रु रूपी वृक्षों को तलवार रूपी शुण्डदण्डों से उखाड़ कर नष्ट किए जारहे हैं। यों वह गजबाग रूपी परमशक्ति का अंकुश मानने वाला छत्रसिंह गज की भांति मदोन्मस्त हुआ घूम रहा है।

---

१. जसवास – सुयश के। बीर घंट – वीरघण्ट। बळबळ – बारम्बर, अविराम। आंकुस – अंकुश। सिंघाळ – हाथी। पोगर – गज शुण्ड। रूंख – पेड़। उखाळै – उखाड़ता है। छावो – शावक, पुत्र। छाताळ – छत्रसिंह।

२. घुघर – घुंघरू। घणण – ध्वनि विशेष। घण – बहुत। हेक – एक। गजबाग–अंकुश। रत – लवलीन। भुजळक – तलवार। दंत – गज के दांत। सत्र – शत्रु। तरा – तरुओं, विटपो। भीचरड़ – विध्वंश कर। मेघ तणो – मेघसिंह का। हसती – हस्ती, हाथी। मसत – मस्त।

३. बिड़दां – विरुदों का। असत – हस्ति, हाथी। यद्रसल – इन्द्रशाल। अजडां – तलवारों के। पिसण – पिशुन, वैरी। ब्रख – वृक्ष। बहता – मद बहते, मस्ती में चलते। गयंद – हाथी। कळ – भांति।

४. दहुवै – दोनों। पटां – पट्टा नामक शस्त्र। खग – तलवार। डांणे – मस्ती, दानादि देने लगा। गोड़ै – हाथियों को पछाड़ता, नष्ट करता। खळ – वैरी। गरद – गर्द, नष्ट, गारत। मिल्या – मिलने पर, युद्धार्थ सामने आ जाने पर। दळां चो – फौज का। लाडो – दुलहा, सेनाध्यक्ष। हद – वेहद, असीम।

१३०. गीत हंस रा बीनांण रौ राजा गजसिंघ राठौड़ रौ

गजबंधी हंस अभिनमै गांगै, सुज निज हेत खेध करि साथ।
जळ जिम खळ मूंकौ साहिजादो, भीम दूध भखियौ माराथ ॥१॥

सावक सूरजसिंघ समोभ्रम, श्रेम बरजाणै सुप्रमांण।
नीर टाळि जंहगीर सुनन्दन, खीर जही भखियौ खूमांण ॥२॥

मालहर बधि सुछळ महारण, आखै श्रेह मानव सुर श्रीम।
पाणी असुर बिरोळै पीधौ, भारी दूध तणी परि भीम ॥३॥

---

१३०. गीतसार—यह गीत जोधपुर के राजा गजसिंह राठौड़ का है। गीतकार ने राजा गजसिंह की युद्धक्रियाओं को हंस की जलविहार क्रियाओं के साथ सारूप्यता दिखाते हुए युद्ध का वर्णन किया है। कवि का कथन है कि राव गांगा के पौत्र राजा गजसिंह ने क्रोधातुर होकर युद्धस्थल रूपी जलसरोवर में प्रवेश किया और हंस जिस प्रकार जल को छोड़ता हुआ दूध को पीता है, उसी प्रकार उसने शाहजादे खुर्रम रूपी जल का त्याग कर राजा भीमसिंह रूपी दूध का पान किया।

---

१. गजबंधी — राजा गजसिंह। अभिनमै गांगै — अभिनव गांगा। सुज — वह। खेध—क्रोध, विरोध। खळ — शत्रु। मूंकौ — छोड़ा, मारा नहीं। साहिजादो — शाहजादा खुर्रम। भीम — राजा भीम सीसोदिया। भखियौ — भक्षण किया। माराथ—युद्ध में।

२ सावक — शावक, हंस का बच्चा। समोभ्रम — समानता की भ्रांति देने वाला। टाळि—छोड़, बचा कर। जंहगीर सुनन्दन — बादशाह जहांगीर के पुत्र खुर्रम। खीर — दूध, क्षीर। खूमाण — खुमान का वंशज, राजा भीमसिंह को।

३. मालहर — राव मालदेव का वंशज, गजसिंह। सुछळ — युद्ध। आखै — कहते हैं। सुर — देवता। श्रीम — यों, इस प्रकार। पाणी असुर — जल रूपी मुसलमान। बिरोळै — मंथन कर। पीधो — पीलिया। परि — भांति, तरह।

१३१. गीत उजैणी रा जुद्ध रौ अरजन गौड़ रौ

अड़े साहि मुर धरा बिचि खेत ऊजैणी, भिड़ै रासो जसो अमर भागा ।
पड़ै गज ढाल बेहाल भोई पड़ै, बेबहा लाल अजमाल बागा ॥१॥

भाजतां कारिमां सुतन वीठल भिड़े, भिड़ै साहा तणा सेनि भाजे ।
चौळ असि चालवियौ बडा घमचाळ बिच, गजा घमरौळतो चौळ गाजे ॥२॥

ऊछटै लोह बिचि बौह लेतो उरड़ि, दाटतो दळा नू आप दटियौ ।
कटै कग लाल जीणाल पखराळ कटि, कटै अजमाल है लाल कटियौ ॥३॥

बडा दातार जूझार अवरी बरै, इद रवि चंद हू गयौ आगा ।
भीछ वाळे धकै भीछ भागा भिड़ै, भिड़ज वाले धकै गयंद भागा ॥४॥

---

१३१. गीतसार—उपर्युक्त गीत अजमेर प्रान्त के राजगढ ठिकाने के स्वामी विख्यात वीर अर्जुन गौड के उज्जैन के युद्ध विषय का है। यह युद्ध शाहजादा दाराशिकोह और औरंगजेब व मुराद की सेनाओ में हुआ था। गीत मे कवि ने युद्ध मे भागने वालों और लड़कर रणखेत रहने वालो का वर्णन किया है। लिखा है कि दिल्ली के तीनो शाहजादो ने राज्य प्राप्त करने के लिए उज्जैन मे मुकाबिला किया। उस समय युद्ध मे एक दूसरे का सामना करते हुए रायसिंह, जसवंतसिंह और अमरसिंह भाग कर चले गए। किन्तु अर्जुन गौड अपने अश्व लाल बेग पर चढा हुआ रिपुओं से लडता रहा।

---

१. अड़ै – सामने डटे, मुकाबिला मे जमे। मुर – तीनो। खेत – क्षेत्र, रणभूमि। भिड़ै – भिड कर। रासो – रायसिंह। जसो – जसवंतसिंह। अमर – अमरसिंह। बेहाल – बुरी दशा में, अस्त-व्यस्त। भोई – भूमि। बेबहा लाल – लालबेग नामक अर्जुन गौड का घोड़ा। बागा – लडते रहे।

२. भाजतां – भागते समय, नष्ट करते। कारिमा – कायर। वीठल – राजा विट्ठलदास गौड़। भाजे – संहार करे। चौळ – लाल। असि – अश्व, तलवार। घमचाळ – भयानक युद्ध। घमरौळतो – मारता, प्रहार देता। गाजे – भाले।

३. ऊछटै – उछलते, प्रहार होते। बौह – बहुत, प्रहार। उरड़ी – जोश मे उफनता। दाटतो – रोकता, आगे की गति अवरुद्ध करता। कग – कवच। जीणाल – जीनपोश। पखराळ – घोडे की झूल। है – घोड़ा।

४. अवरी बरै – बिना युद्ध मे लड़ी सेना पर विजय पावे, अविवाहित अप्सराओं का वरण करे। आगां – आगे, अगाडी। भींछ – योद्धा। धकै – टक्कर, सामने। भिड़ज – घोडे। गयंद – हाथी।

१३२. गीत हरदैनारायण हाडा री धौलपुर री वेढ़ री

विरचि राव सत्रसाल ओरंग पड़ै बाथियां, जाथियां अनचले वदन जरदै ।
राळियो साथियां लोक त्रय लोक रै, हेम री हाथियां बीच हरदै ।।१।।

बबरहर भोजहर घणौ भर भीचियौ, ऊंचियौ वेहूं कर सार आडै ।
भीचियो मारका भीचि लोपै भिड़ज, हालियौ कुंजरां बीचि हाडै ।।२।।

नाळरा ठाकुरां जेम आयौ नही, सजि रह्यौ साल रा पगां साथै ।
काळ रा जसौ हूतो जसौ कळोधर, मुवौ धर भाल रा विड़द माथै ।।३।।

---

१३२. गीतसार—यह गीत हृदयनारायण हाडा पर रचित है । हृदयनारायण शाहजादो के उत्तराधिकार के युद्ध मे शाहजादे दाराशिकोह की ओर से धौलपुर के रणक्षेत्र मे विद्रोही शाहजादे औरंगजेब और मुराद को सम्मिलित सेना से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था । कवि ने लिखा है कि राव शत्रुशाल और शाहजादा औरंगजेब दोनो क्रुद्ध होकर लड़ने लगे । उस समय हृदयनारायण ने अपने साथी योद्धाओ को उत्साहित कर विपक्षी गजसेना पर आक्रमण किया ।

---

१ विरचि – रचकर, प्रारम्भ कर । बाथियां – बाहुयुद्ध, परस्पर लड़ने लगे । जाथियां– (?) । अनचले – अविचल । जरदै – कवच । राळियो – डाला, गिराया । त्रय लोक – तीनों लोक । हेम री – घोड़ो, हेमसिंह का ने । हरदै – हृदयनारायण ।

२ बबरहर – बादशाह बाबर का वंशज, शाहजादा औरंगजेब । भोजहर – राव भोज का पौत्र शत्रुशाल अथवा हृदयनारायण । घणौ – अत्यधिक, बहुत । भीचियौ – दबाया । ऊंचियौ – उठाया, झेला । सार – तलवार । आडै – तिरछे, टेढे प्रहारो से । मारका – योद्धाओं, सहारकों । भीचि – दबाकर, योद्धा । लोपै – उलघे, पार निकले । भीड़ज – घोड़े । हालियौ – चला । कुंजरां – हाथियो ।

३. रह्यौ – रहा । साल रा – शत्रुशाल के । पगा – पैरो, पास मे । काळ रा – यमराज के सैनिक । जसौ – जैसा । कळोधर – कला को धारण करने वाला । मुवौ – मरा । धर भाल रा – पृथ्वी के धारक कर्त्ता, राजा । विड़द – विरुद । माथै – पर ।

१३३. गीत दौलतसिंघ हरदावत हाडा रौ

असी करी अखियात बुधराव छळि अखाड़ै, बदै कवि साच जुग बीसां बीसै ।
फूलधारां सामहां बदन फूटरा, दोवडा चोवड़ा घाव दीसै ॥१॥

झाट नाराजिया बहतां झेलतो, जोरवर बुधा री बेळ जोपै ।
सभजीवत हुवौ साजि खळ सैफळे, अवळ दौळां कमळ लोह ओपै ॥२॥

चाढ दीवाण री फाड़ि घड़ चोवड़ा, हीक धरि दोयणां धकै हणिया ।
बोह लोहां तणा बाजतां बराबरि, बदन चहुवाण रै घाव बणिया ॥३॥

दादि हिंदवांण राव रांण दीधी दुझल, आवियो फतै कर आप ऊजां ।
परख सूरां तणी सेवा रा पाटवी, दुनी सिर उबारी भोज दूजा ॥४॥

---

१३३. गीतसार—इस गीत में बूंदी के महाराव बुधसिंह हाडा की सहायतार्थ दौलतसिंह हाडा ने युद्ध किया उसका वर्णन हुआ है। गीतकार ने लिखा है कि दौलतसिंह हाडा ने महाराव बुधसिंह के हितार्थ शत्रुपक्ष से ऐसा भयानक संग्राम किया जिसकी सर्वत्र प्रशसा की गई। उस वीर ने तलवारों की तीक्ष्ण धाराओं मे लुंज पुंज होकर प्रसिद्धि प्राप्त की। इस प्रकार उसने 'जीवितसभ' का विरुद पाया ।

---

१. असी – ऐसी। अखियात – आख्याति, प्रसिद्धि। बुधराव – महाराव बुधसिंह। छळि – युद्ध, लिए। अखाड़ै – रणभूमि, मैदान। बदै – सराहते है, कहते हैं। बीसां बीसै – बीसों बिस्वा, पूर्ण सत्य। फूलधारा – खड्ग प्रहारो। सामहां – सम्मुख। फूटरा – सुन्दर। दोवडा-चोवडा – दूने चौगुने। दीसै – दीखे।

२. झाट – प्रहार। नाराजियां – कृपाणों के। बहतां – होते, चलते। झेलतो – सहन करता, अपने ऊपर लेता। बेळ – मदद। जोपै – जूटे, जूटकर। सभ-जीवित – घायल होकर जीवित रहे उस योद्धा को 'जीवितसभ' कहते हैं। साजि – मार कर। सैफळे – युद्ध मे। अवळ दौळा – आस पास। कमळ–मस्तक। लोह – शस्त्र के घाव। ओपै – शोभित होते है।

३. चाढ़ – सहायता की। फाडि – चीरकर, फाडकर। घड – सेना। हीक – चोट, प्रहार। दोयणां – वैरियो। हणिया – मार डाले।

४. दादि – सराहना। दीधी – दी। दुझल – वीर, दुर्धर्ष। ऊजां – पराक्रमी, साहसी। सेवा रा – शिवसिंह का। पाटवी – टीकाई, सिंहासनाधिकारी।

१३४. गीत भींवसिंघ हाडा अर गजसिंघ कछवाहा रो

विकट बाजि आराण खग बाजि वेळां विखम, लस्यां कुळ आपणों घणीं लाजै ।
धणी कूरम गजो नह भाजै धजावंध, भीम किम बळा रो नाथ भाजै ॥१॥

बीजळा आगि गेणागि लागे बधे, चालियो खां कळीच असो चाळो ।
टेक वंध धणी नरवर तणो नां टळै, कळह रो कोट किम टळै काळो ॥२॥

काजि चकथाण सेंदाण वाळै हुकम, असो जगचख्खि रचायो अचूका ।
काम रो अना रो हुवो टूकां कळह, राम रो टळै जी केम रूका ॥३॥

भारथा देखि साथी घणां भाजिया, समर रो हुवो गजगाह साथो ।
आगै भीमड़े हाथी घणां उछाळीया, हबरकै भीव नखि गुड़े हाथी ॥४॥

---

१३४. गीतसार–ऊपर के गीत मे बादशाह फर्रुखशियर के शासन काल मे दक्षिण प्रान्त में निजाम के विरुद्ध युद्ध मे राव भीमसिंह और राजा गजसिंह ने लडाई की उसका वर्णन किया गया है । गीत मे लिखा है कि शस्त्रो के निरन्तर प्रहारों से उत्पन्न युद्ध की विकट स्थिति को देखकर कई योद्धा किनारा काट गये । किन्तु मरण भय से रणभूमि से पलायन करने से कुल गौरव लाछित होता है, यह जानने वाला कछवाहों का स्वामी गजसिंह और कोटा का स्वामी भीमसिंह रणविमुख नहीं हुआ ।

---

१. आरांण – युद्ध । वेळां विखम – विषम वेला । लस्यां – भागने पर । आपणों– अपना । घणीं – घना, बहुत । धणी – स्वामी । गजो – गजसिंह । धजाबंध– ध्वज धारण करने वाला, बड़ा राजा । भीम – भीमसिंह । बळा रो नाथ – आडावला पहाड़ का स्वामी. आडावला की श्रेणियां बून्दी और कोटा मे फैली हुई होने से इन राज्यो के राजाओ को 'बळानाथ', बळापति आदि नामो से पुकारते थे ।

२. बीजळां – तलवारो को । गैणागि–आकाश । बधै–बढ़कर । खां कळचि–किलच खांन, मुसलमान योद्धा का नाम । असो – ऐसा । चाळो – विग्रह, युद्ध । टेकबंध– टेक रखने वाला, प्रणधारी । ना टळै – अलग न हुवे, किनारा नही काटता । कळह रो कोट – महान् वीर ।

३. चकथाण – मुसलमान । सैदाण – सैयद । जग चख्खि – सूर्य, दिन दहाड़े । रचायो– रचा, किया । टूका – टुकड़े-टुकड़े । केम – कैसे । रूकां–तलवारों के प्रहारों के सामने से ।

४. भारथां – युद्धो । समर रो – युद्ध का । गजगाह – गजसिंह, युद्ध । आगै – पूर्वकाल मे । भीमड़ै – भीम पाण्डव ने । उछाळीया – उछाले, इधर उधर फेंके थे । हबरकै – अबकी बार मे, इस बार मे । भीव – भीमसिंह । नखि – पास में । गुड़ै – लुढके ।

पाडि खळ सबळ दळ लियां रण पौढियौ, मंसचरां मनोरथ लिय मेळा।
भीम गजसाहि निरबाहि जुग जुग भेळपण, भीम गजसाहि गा मुगति भेळा ॥५॥

१३५. गीत साहिजादां री वेढ़ रौ

चाळा बांधिया बडाळा भडां त्रमाळां घुरतां चौडै,
गैघटाळा काळी घडां मेळियां गरीठ।
अभंगां ओरंगवाळां दिली वाळा बेध आंटै,
रोदाळा लकाळा बागो किरम्माळां रीठ ॥१॥

धानखां बीछुटि बाण धूजै आसमांण धरा,
बीजळां नीहाव धावा बापरे विखम।
हिंदवां दूभळां सैदां मुगल्ला मीरजां हेक,
आलमां आजमां धको मांचियौ ऊधम ॥२॥

---

१३५. गीतसार—इस गीत में गीतकार ने बादशाह औरंगजेब के शाहजादे आलमशाह और अजीमुश्शान के सिंहासन प्राप्ति के लिए लडे गए युद्ध का वर्णन किया है। कवि ने लिखा है कि दिल्ली के राजसिंहासन को प्राप्त करने के लिए बादशाह औरंगजेब के दोनों शाहजादों ने नक्कारों पर डको की चोट देकर श्यामल मेघ-घटा के समान गजारोहिणी को युद्ध के लिए सजाई और फिर वे उभय पक्षीय महावीरों की सेना को लेकर सिंह तुल्य यवन वीर कृपाणों से युद्ध क्रीड़ा करने के लिए जुट गए।

---

५ पाडि़ – गिरा कर। खळ – वैरी। सबळ – बलवान। पौढियौ – सोया, शयन किया। मंसचरां – मांस खाने वाले गृद्ध, चिल्ह, भूत, प्रेत, शृगाल आदि। गजसाहि—गजसिंह। निरबाहि – निभाकर। जुग – दोनों। भेळपण – एक साथ रहने का भाव, सम्मिलितता। मुगति – मुक्ति। भेळा – एक साथ, साथ साथ, शामिल होकर।

१. चाळा बांधियां – वस्त्रों की छोर बांधकर। बडाळा भडा – बडे योद्धा, महान् वीर। त्रमाळा – तांबा के पेंदे के नक्कारे। घुरतां – ध्वनि करते, घोष करते। चौडै – खुल्लमखुला, मैदान में। गै घटाळां – गजारोहिणी, गज सेना। काळी घड़ां – श्याम घटाएँ। मेळिया – मिलाए, भिडाते। गरीठ – भयंकर। अभगां – दुर्दमनीय वीर। ओरंगवाळा – बादशाह औरंगजेब के। वेध – युद्ध, विरोध। आंटै – लिए, विरोध। रोदाळां – मुसलमान। लकाळा – सिंह। बागो – लडने लगे, बजाने लगे। किरम्माळां – तलवारों के। रीठ – युद्ध, शस्त्र-प्रहार।

२. धानखां – धनुषों। बीछुटि – छूटकर, चलने पर। धूजै – प्रकम्पन करते है। बीजळां – तलवारों के। नीहाव – प्रहार। बापरे – बरती जाती। बिखम – विषम। दूभळां – वीरों। सैदा – सैयदों। मीरजां – मिर्जा पद वाले। धको – हमला। मांचियौ – मचा, हुआ। ऊधम – युद्ध।

चौवड़ां आहुड़े सेन गयंद ह्वै घड़ा चूर,
दौवडां संघाण भडां विछुटै दुवाह।
वाकड़ा पाघडां वाळा नैहटां सांकुडा आवै,
नीकडां रूकड़ा रौदां वाजियौ नीहाव ॥३॥

ग्रवाळा पडतां घायी अघायी वहंतां तेग,
सूरमा वरेवा आयी अच्छरा समाथ।
कुमायी औरंगजेव पातिसाही लेवा काजि,
भायी भायी जूटा वेहूं दांयी ज्यू भाराथ ॥४॥

पायी वड़े फतै खेत लोहड़ै भिसति पायी,
किलमां घपायी घड़ां वेहड़ां केवांण।
आजमां उमाही ऊभां आलमां न घरे आयी,
पछै आयी पातिसाही कुमायी प्रमांण ॥५॥

---

३. चौवडा – चारों तरफ से, खुले रूप में। आहुडै – भिड़ती हैं। गयंदां – हाथियों की। घड़ा – घटा, सेना। चूर – चूर्ण, नष्ट। संघाण – संधान। दुवाह – दोनो हाथों से शस्त्रो के वार करने वाले। वाकड़ा पाघड़ा वाळा – सिर पर टेढी पगडी बांधने वाले, राठोड़ वीर। नैहटां – कठिनता से। सांकुड़ा – समीप। नीकडा – (?)। रूकड़ा – कृपाणों। रौदां – यवनों।

४. घाई – चोट, प्रहार। अघायी – अतृप्त। वहतां – बहते, चलते, प्रहार करते। तेग – शमशीर। वरेवा – वर के रूप मे योद्धा का वरण करने के लिए। अच्छरा– अप्सरा। समाथ – समर्थ, शक्तिशाली। लेवां – लेने। काजि – लिए, कार्य। जूटा – जूटे, भिड़ गए। दांयी – बराबरी के, बराबर दावा रखने वाले। भारथ – युद्ध।

५. पायी – प्राप्त की। वड़े – बड़े शाहजादे ने। खेत – रणक्षेत्र। लोहड़ै – शस्त्रो के सामने, छोटेने। भिसति – भिश्ति, स्वर्ग। किलमां – मुसलमान। घपायी – तृप्त की। वेहड़ा – दोनों। केवांण – तलवार। उमाही – उत्साहित, गर्व से। ऊभा – खडा। पछै – तदुपरान्त। कुमायी – सुकर्मो का सचय. कमाई, उपार्जन।

१३६. गीत राव रामसिंघ हाडा कोटा रो

असपति आहुडै दोय तखत उपरि, करग गहै केवांण।
राजि सरसो आजि रामा, आगरै अवसाण ॥१॥

पलटिया दूसरा छत्रपति, भिड़ि खतग भड़ झीक।
वरण अबरी बार विळकुळ, मरण दम मछरीक ॥२॥

जैसिंघ राजा तसा मटिया, नामदार नरनाह।
पातिसाहां बाजि पाधर, बळाबंध पतसाह ॥३॥

मधाउत उजीण मंडिया, सेतपुर सत्रसाल।
चाल खाये नहिं चौरग, चहुआणे चाल ॥४॥

भाजि जाणै नहिं भोळा, विढण खग वरियाम।
हाथिया चढ़ सदा हाडा, कळह आवै काम ॥५॥

---

१३६. गीतसार—यह गीत राजस्थान के कोटा राज्य के स्वामी राव भीमसिंह हाडा पर रचित है। भीमसिंह बादशाह औरगजेब के शाहजादे आलम और अजीमुश्शान के मध्य लडे गए युद्ध मे वीरगति को प्राप्त हुआ था। औरंगजेब के दोनो शाहजादे राज्य-सिंहासन पर अधिकार करने के लिए तलवारें लेकर रणभूमि में भिड़ गए। कवि कहता है—"हे राव रामसिंह, तू जैसे अवसर की प्रतीक्षा में रहता था वैसा अवसर आज आगरे की रणभूमि में मिल गया है।"

---

१. असपति – बादशाह, अश्वपति। आहुडै – भिड गए। तखत – तख्त। करग – कर, हाथ। गहै – ग्रहण किए। केवांण – तलवार। राजि – आपके। सरसो – सदृश्य, समान। आजि – आज, युद्ध। रामां – हे राव रामसिंह। अवसांण – अवसर, युद्ध।

२. छत्रपति – राजा। भिडि – भिड़कर। खतग – पराक्रमी, घायल। झीक–शस्त्रो का प्रहार। वरण – वरने के लिए। अबरी – बिना वरण की हुई, कुमारी। विळकुळ – जोश मे आकुलित। मछरीक – चहुवान, राव रामसिंह।

३. जैसिंघ – जयपुर नरेश जयसिंह कछवाहा। तसा – तैसे, जैसे। नामदार – प्रसिद्धि प्राप्त। बाजि – लड। पाधर – सीधा मुकाबला कर। बळावध – आडावला-गिरि से आवेष्ठित हाडौती भूभाग का स्वामी। पतसाह – राजा, शासक।

४. मधाउत – कोटा राज्य के संस्थापक राव माधवसिंह का वशधर। उजीण–उज्जैन। मंडिया – लड़े। सेतपुर – धौलपुर। चौरंग – सेना।

५. भाजि – पलायन करना, भागना। जांणै – जानते। भोळा – सरल चित्त मे। खग–शमशीर। वरियाम – श्रेष्ठवीर। कळह – युद्ध। आवै काम – मारे जाते हैं, मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

१३७ गीत राव रामसिंघ हाडा कोटा रौ

बिसो पालटे औरगां छात वेहू साहिजादां वेध,
खेध लागा खार खाधा जूटा खुरासाण।
आडा - खडां केहरी सुजाव चाढ आजम ची,
जाडा थडा वीच हाडे झोकिया जूवाण ॥१॥

आजमां ठेलतो खेत पेलतो आलमां ताई,
छोह मे झेलतो लोह सामहां छड़ाळ।
हरौळां भांजतो दळा गोळ रां चाढतो हीक,
लेगयो चदोळा छाती चड़ाये लकाळ ॥२॥

घोळै दीह चोळ गोळा दहु दळां मातौ घोम,
कध कोम धूजि गोम धारियां केवांण।
रौदां घड़ा देतौ रीठ आवधा गरीठ रामो,
चौड़ा वीचि मोडो नीठ पाड़ियौ चहुवांण ॥३॥

---

१३७ गीतसार–कवि ने इस गीत मे औरंगजेब के शाहजादे आजम और शाह आलम के राज्य-प्राप्ति हेतु लडे गए जाजव स्थान के युद्ध में राव रामसिंह हाडा के शौर्य-प्रदर्शन कर रण मे खेत रहने का वर्णन किया है। गीत मे लिखा है कि दोनो शाहजादे सिंहासन प्राप्त करने के लिए परस्पर कोपान्वित होकर युद्ध मे जूझ पड़े। शाहजादे आजम के पक्ष मे केशरीसिंह तनय ने विशाल सेना पर अश्व सेना से आक्रमण कर दिया।

---

१. औरंगा – औरंगजेब। छात – छत्र। वेध – युद्ध। खेध – विरोध, शत्रुता। खार खाधा – क्रोध मे उन्मत्त। खुरासाण – मुसलमान। आडा खंडा – खड्गो के तिरछे प्रहार। चाढ – सहायता। ची – की। जाडा थडां – सघन सेना। झोंकिया – आगे बढाए। जूवाण – घोड़े, कवचधारी योद्धा।

२. ठेलतो – धकेलता हुआ। खेत – समरस्थली। पेलतो – प्रभावहीन करता, दबाता। ताई–तक। छोह – उत्साह। झेलतो – सहन करता। सामहां – सामने से। छडाळ–भाले। हरौळां – सेना की अग्रिम पंक्ति। भाजतो – विध्वंस करता। गोळ रां–सेना के मध्य भाग की पंक्ति। हीक – प्रहार, भय। चंदोला – चंदावल, सेना के पृष्ठ भाग का रक्षक दल।

३ घोळै दीह – दिन दहाड़े। चोळ – लाल। मातौ घोम – प्रचण्ड धूम्र, विकराल आग। कध कोम – कूर्म के कंधे। धूजि – कंपित हो। गोम – धरा, भूतल। केवाण – कृपाण। रौदां – यवनो की। घड़ा – सेना। रीठ – भयानक प्रहार। आवधा – आयुधों के। गरीठ – प्रबल वीर। नीठ – कठिनता से।

साबळां हूला हू अणी कैबरां सू मदगरा,
बीजळा ऊजळा धारां चौळ गोळां ब्रन ।
ऊभे राम पातसाही हाथि आयी नही,
आलम चे राम कामि आयां आयी दूसरे रतन्न ।।४।।

१३८. गीत उजीण रा संग्राम रौ हिन्दू जोधारां रौ

मरता पतिसाह राह दोय मिळिया, जुडबा कारण जूवा जुवा ।
कामणगारी दिल्ली कारणै, हिंदू मुवा स अमर हुवा ।।१।।

अरजन मुकद रतन सारिसा, झालो दलौ भीम खग झोड ।
राजा सिवौ रूप सारिसा, राव सतौ रामौ राठौड ।।२।।

तुरकां लेखौ किसू तेवडां, सदी हजारी मिळिया सोह ।
महाराजा गिरवर मेवाड़ौ, सरगि पुहतौ सिलै सोह ।।३।।

---

१३८ गीतसार—प्रोक्त गीत में गीतकार ने संवत् १७१५ विक्रमाब्द के उज्जैन तथा धौलपुर के युद्धो के शाही पक्षीय योद्धाओ का वर्णन किया है। यह युद्ध बादशाह शाहजहाँ की सेना और राज्याभिलाषी शाहजादे औरंगजेब व मुराद की सम्मिलित सेना मे लडा गया था। गीत मे लिखा है कि बादशाह की मृत्यु का समाचार पाकर हिन्दू और मुसलमान दोनो जातियो के योद्धा अलग-अलग दो पक्षो मे बँटकर लडने के लिए उद्यत हुए। दिल्ली रूपी मुग्धा के लिए लडे गए उस युद्ध मे जो हिंदू वीर मारे गए वे संसार में सदा के लिए अमर हो गए ।

---

४ साबळां – भालो के। हूलां – प्रहार विशेष। अणी – नोक। कैबरां – धनुषो। मदगरा – मुग्दरो, मदमस्तो, गर्जो। बीजळां – तलवारो की। ब्रन – वर्ण। ऊभे – खडे, सलामत। कामि आया – मारे जाने पर। रतन्न – राव रतनसिंह।

१. राह दोय – दोनो मार्गानुयायी, हिन्दू और मुसलमान। जुडबा – लडने के लिए। जूवा जुवा – अलग अलग। कामणगारी – मुग्ध नयिका, वशीभूत करने वाली। मुवास– मारे गए वे।

२. अरजन – राजगढ का शासक अर्जुन गौड। मुकद – कोटा का महाराव मुकन्दसिंह। रतन – रतलाम का राजा रत्नसिंह। सारिसा – जैसे, समान। दलौ – गगधार का दयालदास झाला। भीम – भीमसिंह गौड। खग झोड – तलवारें चला कर। सिवौ – राजा शिवराम गौड। रूप – राजा रूपसिंह राठौड किशनगढ का। सतौ– महाराव शत्रुशाल हाडा बूदी का। रामौ – भिणाय का राव रामसिंह राठौड।

३. लेखौ – हिसाब। तेवडां – लगावे, प्रारंभ करें। सदी – एक सदी मन्सब वाले। सोह – सभी। गिरवर – महाराज गिरवरसिंह सीसोदिया। पुहत्तौ – पहुँचा, गया। सिलै – सिलह। सोह – सब, सहित।

१३६. गीत करणसिंघ चवहाण री पठाणां सूं वेढ री

भख अवर न भावै घणा भरोसै, द्रोमझि आवै नहो दळै ।
करणा तूझ कटारी कटका, गटकां हिली पठाण गिळै ॥१॥

हाथा ले चहुवाण हिलाई, तातै जीमण रुधिर तणै ।
जमदढ़ तूझ तणी जाळोरा, हठ लागी मिरजाण हणै ॥२॥

राते भख असुरा चै राती, दूजा भख न आवै दाय ।
स्याम सुजावत ताहरी सुजड़ी, खेधै लगी पठाणां खाय ॥३॥

---

१३६. गीतसार–उपरांकित गीत योद्धा कर्णसिंह चहुवाण के पठानों से किये गए युद्ध पर रचित है । कवि कहता है कि हे कर्णसिंह, तेरी कटारी को युद्ध में अन्य जातीय योद्धाओं का भक्ष्य अच्छा नहीं लगता है । वह तो पठान जाति के यवन योद्धाओं को ग्रास बनाने में अभ्यस्त है ।

---

१. भख – भक्षण । अवर – अन्य । भावै – भाता है, अच्छा लगता है, रुचिकर लगता है । द्रोमझि – युद्ध मे । दळै – दलन करता, मारता । करणां – हे कर्णसिंह । कटकां – सेनाओं । गटकां – घूंटे, रस, गटकने की क्रिया का भाव । हिली – रस लुब्ध हुई । गिळै – निगलती है, खा जाती है ।

२. हिलाई – रसलुब्ध की हुई । तातै – ताजा । जीमण – भोजन । रुधिर – लोहू । जमदढ़ – कटारी । जाळोरा – जालौर स्थान अथवा प्रान्त वाले चहुवान । हठ लागी – हठ ठान कर । मिरजाण – मिर्जा उपटंक धारी यवनों को । हणै – संहारती है, मारती है ।

३. राते – लाल, रक्त । असुरा – मुसलमानो । चै – के । राती – अनुरक्त । दाय – पसंद । सुजावत – शुजा का पुत्र । ताहरी – तुम्हारी । सुजडी – कटारी । खेधै – विरोध ठान कर, हठ पकड़ कर । खाय – खाती है, मारती है ।

१४०. गीत करणसिंघ राठौड़ बीकानेरी रौ

तरण खैंचि रहियौ सदन खडो तिण तमासै, अरण हू ऊचरै बात अेती ।
करण वाळै मरण कोड सकर करै, करण आवै वरण अछर केती ॥१॥

सूर यम कहै रथ खेंचि रे सारथी, पेखि अवसर असै अचिज पावै ।
अपछरां रतन रै कारणै रहसिया, अपछरा रतन रै सीस आवै ॥२॥

पाड़ि हय गय भड़ां खेत कमधज पडै, अेक चक्र खड़ै बे रथ ऊताळा ।
वरे देवागणां सुरां लोकां वसै, मेर माथे किना सभु माळा ॥३॥

---

१४०. गीतसार—यह गीत कर्णसिंह राठौड़ बीकानेर पर कहा हुआ है । गीत रचयिता ने कर्णसिंह की प्रशसा करवाते हुए लिखा है कि—कर्णसिंह के रण कुतूहल का अवलोकन करने के लिए सूर्य ने आकाश मे अपने रथ को स्थिर कर अपने सारथी अरुण से कहा—वह देख, कर्णसिंह की रण-मृत्यु के लिए एक ओर तो महादेव हर्ष मना रहे हैं और दूसरी ओर पति रूप मे प्राप्त करने के लिए अप्सराओ का समूह आकाश से रणस्थल पर उतर रहा है) ।

---

१. तरण – सूर्य । सदन – स्यदन, रथ । तिण – उस । अरण हूं – अरुण से । अेती – इतनी । करण वाळै – कर्णसिंह के । कोड – हर्ष । करण – कर्णसिंह को, करने के लिए । वरण – वरने को । अछर – अप्सराएँ । केती—कितनी ही ।

२. सूर – सूर्य । पेखि – देख । असै – ऐसे । अचिज – आश्चर्य । रहसिया – (?) । सीस – शीश, सिर ।

३. हय – अश्व । गय – गज । भडां – योद्धाओ को । खेत – रणक्षेत्र । कमधज– राठौड़ । अेकचक्र – सूर्य । खड़ै – चलता, गतिमान होता । ऊताळा – शीघ्रता से । वरे – व्याह कर । देवागणा – अप्सराएँ । सुरां लोकां – देवलोक । मेर माथे – सुमेरुगिरि पर । किनां – किंवा, अथवा । सभुमाळा – शिव की माला मे ।

१४१. गीत अखैराज नैं उदैभाण राठौड़ री भेलो

आया दखिणाद लाख दळ आवै, भागि न जांणै वडा भड ।
अखवी नह छांडै ऊदा नू, ऊदो नह छाडै अनड ॥१॥

स्याम तणा भारथ सेवा सूं, रजपूतां कहिया रजपूत ।
कमधां तणी मेटि कुळ काई, दो भाई लड़िया जमदूत ॥२॥

कम्माहरा धम धमा कांम रा, आदेवा सिरै अदम ।
भूडी वार रौपिया भायां, कूंडाणै ऊंडा कदम ॥३॥

घोड़े राव वाढि खग घावा, आटो नून राखियो उधार ।
थोडां हूंत पैठि गज थाटां, मारण - हार राखियो मार ॥४॥

---

१४१. गीतसार—उपर्यंकित गीत मे राठौडों की जोधा-शाखा के वीर अक्षयराज और उदयभानु के दक्षिण प्रान्त में कुडाणा स्थान के युद्ध का वर्णन किया गया है। गीत मे वर्णन है कि दक्षिण प्रान्त की एक लाख सेना शस्त्र सज्जित होकर आई। किन्तु महान् वीर मृत्यु भय से मैदान त्याग पलायन करना कब जानते हैं ? अक्षयराज ने तो उदयभानु का साथ नहीं छोड़ा और उदयभानु ने दुर्ग को शत्रुओं के भय से नहीं त्यागा ।

---

१. भागि – भागना। न जांणै – नही जानते। वडा भड़ – महान् वीर। अखवी – अक्षयराज। ऊदा नू – उदयभानु को। अनड़ – किला, पहाड, योद्धा ।

२. स्याम तणा – श्यामसिंह तनय। भारथ – युद्ध। सेवा सूं – राजा शिवा मरहठा से। तणी – की। कुळ कांई – कुल की अप्रतिष्ठा, कुल का अयश ।

३. कम्माहरा – कर्मसेन के पौत्र अथवा वंशज। धमधमा – (?) । आदेवा – आदि से ही। अदम – अदमनीय, स्वतन्त्र वीर। भूडी वार – विकट समय, विपत्ति काल। रौपिया – रोपे, दृढ़ता से स्थिर किए। भायां – भाइयो ने। कूडाणा – कुडाणे दुर्ग पर। ऊडा – गहरा। कदम – पैर ।

४. वाढ़ि – काट कर। खग – तलवार। नून – नमक। उधार – उद्धार, उधारा। हूत – से। पैठि – प्रवेश कर। गज थाटां – गजसेना ।

१४२. गीत दलकरण करणौत राठौड़ रौ

घणां हैमरां घूमरां थाट घासाहरा, जाहरां थाहरां नरां जीपै।
पाखरां फरै धरां लिया बाहा प्रलब, दलकरण ऊधरां करा दीपै ॥१॥

हेड़वण थाट अवियाट आसाहरौ, भड अनड़ बहादुर जगत भाळौ।
बाघळो सींह अणवीह रण बावळौ, आवळौ मछर जसकरण वाळौ ॥२॥

विहद हद जास परगास सोभा वडिम, आस विसवास घू तणै आभै।
आण रहमाण केवाण ऊछाजियै, समथ कुसळि भाण अवसाण साभै ॥३॥

—कूभकरण सादू ईसरौत रौ कह्यौ

---

१४२. गीतसार—प्रोक्त गीत राठौड दलकर्ण की युद्ध-वीरता पर प्रसिद्ध कवि कुभकरण सांदू चारण का रचा हुआ है। कवि ने गीत मे लिखा है कि असख्य सैन्य दल को सजा कर वीर दलकर्ण राठौड बड़े-बडे दुर्गों पर धावे मार कर जीत लेता है। वह आजानुबाहु वीर अश्वसेना को सजा तथा अपने उदग्र करो को ऊपर उठा अरिराज्यो मे निर्भयता पूर्वक विचरण करता है।

---

१. घणां – बहुत से। हैंमरां – अश्वो। घूमरा – समूह, घूमर लेता हुआ। थाट – समूह। घासाहरां – सेनाओं के। जाहरा – प्रकट, प्रसिद्धि में। थाहरा – किलों। जीपै – जीतता है। पाखरा – घोडो की लोहे की झूलें। बाहा प्रलब – आजानु बाहु। ऊधरां – उदग्र, ऊपर उठाए हुए। करा – हाथो को।

२ हेडवण – सहारने वाला खोजने वाला। अवियाट – तलवार। आसाहरौ– आशकर्ण का पौत्र। भड – योद्धा। अनड – स्वतत्र, अविनीत। भाळौ – देखता, तलाश करता। बाघळो सीह – भूखा सिंह। अणवीह – निडर। बावळौ – टेढा, विकट, दृढ़। मछर – मात्सर्य, जोम। जसकरण वाळौ – यशकर्ण का पुत्र।

३. विहद – वेहद, असीम। परगास – प्रकट। वडिम – वडी। घू – ध्रुव। आभै – इच्छा, वाछित। केवाण – तलवार। ऊछाजियै – ऊपर उठाए हुए, प्रहार करने की स्थिति मे लिए हुए। समथ – समर्थ, मस्तक पर। अवसाण – अवसर, युद्ध। साभै – साधता, सहार करता।

१४३. गीत अनल पंख रा बीनांण रौ राव बुधसिंघ हाडा रौ

गजां पाडि ढेहर दिया साहां छळि खत्री गुर, रूक बुध आछटे दईव राया ।
कजळ वन तकै जाता चुगण कारणै, अनळ पंख धोळपुर चालि आया ॥१॥

वयडां घडा आडा-खडा वाढ़तै, गाढ़मल आजमा धकै गाहे ।
मझी समर वीर नारद अछर माल्हिया, माल्हिया वयडचर समर माहे ॥२॥

गौम दसि नजर धरि गयण हूं गणणिया, किलकता देख जुत्थ वीर काळा ।
गाहि रूकां धकै गजां देत गरा, गजां-चुग गजा रा लिया गाळा ॥३॥

असी अखियात कीधी रतन अभिनवै, जुगां जातां नही वात जासी ।
धड़चि खागां हसति अनळ पंख धपाया, अनळ पंख धौलपुर सदा आसी ॥४॥

---

१४३. गीतसार—इस गीत में राव राजा बुधसिंह हाडा बूंदी के रण-शौर्य्य का वर्णन किया है । गीत मे वर्णित युद्ध धौलपुर के समीपस्थ जाजव नामक स्थान पर लडा गया था । गीत लेखक ने वर्णन किया है कि क्षत्रिय श्रेष्ठ बुधसिंह ने शाहजादो के उत्तराधिकार के युद्ध में तलवारों के वार कर गजराजो के ढेर लगा दिए । आज तक गजो का भक्षण करने अनिल पक्षी कदलीवन मे आते थे, किन्तु अब वे वहां न जाकर अपना आहार लेने के लिए धौलपुर के रणस्थल मे आने लगे हैं ।

---

१. ढेहर – ढेर, पुञ्ज । छळि – युद्ध । खत्रीगुर – क्षत्रियगुरु, क्षत्रिय-श्रेष्ठ । रूक – कृपाण । आछटे – प्रहार दे कर । दईव राया – राजा । कजळ वन – कदली वन । चुगण – चुगा करने, आहार लेने । अनळ पंख – अनिल पक्षी जो हाथियो की अस्थियो को ही खाता है ।

२. वयडां घडां – हाथियों की सेना । आडा – तिरछे । खडां – तलवारो से । वाढतै– काटते । गाढमल – दृढ वीर । गाहे – कुचले । मझी – मध्य मे । वीर – बावन वीर । अछर – अप्सराएँ । माल्हिया – मस्त चाल से चले । वीरकाळा – काले गोरे भैरव । गाहि – दमन कर । गजा चुग – अनिल पक्षी । गाळा – ग्रास, भोजन ।

४. अखियात – आख्याति । अभिनवै – अभिनव । जासी – जाएगी । धडचि – सहार कर । खागां – कृपाणो से । हसति – हस्ति । धपाया – तृप्त किये, भोजन करा कर सतुष्ट किये । आसी – आयेंगे ।

१४८. गीत राजाधिराज बखतसिंघ नागौर री

घड वोवडि घटा सेन घण घोरव, झड़ खग पाखर सिलह झडी ।
कमंध बीज खड़हड़ी कूरमां, पछटि अहाड़ां सीसि पड़ी ॥१॥

भालां छळक भळक छक भुजळक, धारां कळ कळ तड़त धुर ।
कड़की जैपुर सीस करूरी, पूरी भडकी साहिपुर ॥२॥

लोहां बखत तडग लागाणौ, घड़ झाके ढूंढाड़ घणी ।
मारू खीज भरत रा माथै, तूटो बीज अकास तणी ॥३॥

हय कंप नरा तुरा गज हळवळ, तूटि अंगारा सार-तड़ ।
आप धराज बचाणो ओलै, भुळसाणों मेवाड़ भड़ ॥४॥

---

१४४. गीतसार—ऊपर के गीत मे कवि ने नागौर के राजाधिराज बख्तसिंह राठौड़ के गंगवाना स्थान पर लडे गए युद्ध का वर्णन किया है। यह युद्ध सवाई जयसिंह जयपुर नरेश से हुआ था। जयपुर के पक्ष में बाईस राजाओ की एक लाख सेना थी और बख्तसिंह के पास अपनी पांच हजार गजाश्व सेना थी। गीत मे लिखा है कि घनघोर घटा के समान सेना ने उमड़ कर तलवारो के प्रहार किए। उन प्रहारो से अश्वों के कवच और योद्धाओं की सिलह छिन्न-भिन्न हो गिर गई। राठौडों द्वारा गर्जित वह काल-विद्युत कछवाहों से टकराती हुई सीसोदियों पर जाकर गिरी।

---

१. घड़ – घटा, सेना। वोवड़ि – उमड़ कर। घण घोरव – घनघोर। झड़ – अनवरत वार। पाखर – गजाश्वों की झूलें। सिलह – रक्षा कवच। बीज – विद्युत। खड़खडी – खड खड़ की ध्वनि करती। कूरमा – कछवाहो। पछटि – पछाट खाकर, उछलकर। अहाडां – सीसोदियो।

२. छळक – प्रहार विशेष। भळक – चमक। भुजळक – तलवार। तड़त – तड़िता, बिजली। कडकी – गर्जना की। करूरी – भयानक। भड़की। विकराल हो कर पडी।

३. लोहां – शस्त्रो। बखत – बख्तसिंह। तडंग – (?)। मारू – राठौड़। खीज – नाराज होकर। भरत रा – राजा भारतसिंह का पुत्र, राजा उम्मेदसिंह। तूटी – टूटी, पडी। तणी – की।

४. हयकंप – भय से कंपित, हाहाकार। हळवळ – आन्दोलित, विचलित। सार तड़ – लोह रूपी तडिता। धराज – राजाधिराज। ओलै – ओट में, आड़ में। भुळसाणों – आग की लपटो से झुलसने का भाव।

१४५. गीत राव दुरजणसाल हाडा कोटा रौ

अंवक वाजि विसराळ गैणाग भ्रगि आतसां, खाग दावायतां आव खूटी ।
लाय वूंदी धरा लियंतां लगाई, आगि जैपुर नगर जाय ऊठी ॥१॥

दूदा मधसाहि आकाय धनि दूदरज, जुडतां अरावां भांहि जागी ।
पाय वूंदी फतै सभरी प्रजाळी, लाय कूरम धरा मांहि लागी ॥२॥

भीम तण सीम रजपूत बट महाभड़, धूत कोटा धणी ऊघड़ी धाड़ि ।
जूझ वूंदी समर पतग तोपा झड़ै, धडहड़े झाळ विकराळ ढूंढ़ाडि ॥३॥

उथापै दलो ऊमेद थापे यळा, सवाड़ा पवाड़ा भाग साथै ।
आगि वूंदो धरा लियतां ऊपड़ी, मुराड़ा झड़ै आमेर माथै ॥४॥

---

१४५ गीतसार—यह गीत राव दुर्जनशाल हाडा कोटा का है। वून्दी के रावराजा वुधसिंह को अपदस्थ कर जयपुर नरेश सवाई जयसिंह ने करवाड के महाराज दलेलसिंह को वून्दी पर बिठा दिया था । वुधसिंह के पुत्र रावराजा उम्मेदसिंह को पुनः वून्दी का राज्य दिलवाने के लिए कोटा के राव दुर्जनशाल ने मरहठो तथा उदयपुर के महाराणा आदि की सैनिक सहायता प्राप्त कर वून्दी पर युद्ध लड़ा। उसी का इस गीत मे वर्णन हुआ है। गीत मे वून्दी के सिंहासन-प्राप्ति के लिए उत्पन्न विग्रहाग्नि को वून्दी से झडकर जयपुर तक मे धधक उठने का भी सकेत किया है।

---

१ अंवक — नक्कारे। विसराळ — भयावने, युद्धकारी। गैणाग — आकाश। भ्रगि — प्रज्वलित हो। आतसा — अग्नि। दावायता — दावेदारो। आव — आयु। खूटी — समाप्त हुई। लाय — अग्नि। लियतां — लेते समय, हस्तगत करते। ऊठी— धधकी, जल उठी।

२. दूदा — राव दूदा। मधसाहि — राव माधवसिंह। आकाय — पराक्रम। दूदरज — राव दुर्जनशाल। अरावां — तोपें। भांहि —अग्नि। सभरी — चहुवान, वून्दी और कोटा के शासको के पूर्वजों का सांभर पर अधिकार रहने के कारण कोटा-वून्दी वालों को सभरी कहे गए हैं। प्रजाळी — जलाई। कूरमधरा — ढूंढाड़ राज्य।

३. भीमतण — भीमसिंह तनय, दुर्जनशाल। सीम — सीमा, हद। रजपूत बट — राजपूती मार्ग, राजपूती के बल की। महा भड — महान् भट। धूत — वीर। ऊघड़ी — खुली। धाडि — हमला। जूझ — युद्ध। पतग — अग्निकण। धडहडै — धड़कती है। झाळ — ज्वाला, तोपें। विकराळ — भयानक।

४. उथापै — उत्थापन। दलो — दलेलसिंह को। ऊमेद — रावराजा उम्मेदसिंह को। थापै — स्थापित करे। यळा — पृथ्वी, राज्य। सवाडा — सवाया। पवाडा — विरुद, प्रशस्ति, आख्यान। मुराड़ा — अग्नि के स्फुलिंग, गोले। झड़ै — झडते है। माथै — सिर पर, ऊपर।

१४६. गीत महाराज सनमानसिंघ हाडा रा जोधारां रौ

बाथे ऊंचाणां सुमेर पाथे तेरसा अचूक बाण,
राणवाला राड़ि बेळां वेरसा रमाज।
रिमदा ऊवेड़ जाड़ा सेरसा गजा रा गोड,
सामतां समान राखै येरसा समाज ॥१॥

तेडिया बाराह लोह छेड़िया भमग तिसा,
खेड़ियां अजागि जांणै राम सखा छंद।
हेडिया पिनाकी वाच गणां रा समूह हलै,
नेड़ियां सुभट्टां राखै भगतेस नंद ॥२॥

तेगाळां बीजाळा करा सिभाळा जीवता सकौ,
अड़ाळा हठाळा जुटाळा भीम दाव।
साचाळा वाचाळा बोल जंगाळा पगाळा सांचा,
भीछाळा अेहाळा हालै हाडा रै सुभाव ॥३॥

---

१४६. गीतसार—उपर्युक्त गीत महाराज सनमानसिंह हाडा के योद्धाओं की प्रशंसा में कहा हुआ है। गीत-लेखक ने लिखा है कि सनमानसिंह अपने यहाँ ऐसे योद्धाओं को रखता है जो भुजपाश में सुमेरु पर्वत को उठाने में सशक्त है। श्रीराम के बाण के समान अचूक निशानेबाज हैं। छेड़-छाड़ करने पर कालियनाग की तरह के क्रोधीले है और शत्रुओं पर धावा बोलने में राम की सेना के योद्धाओं के ही मानो प्रतिरूप है। वे शत्रु रूपी गजराजों का उन्मूलन करने में सिंह जैसे प्रचण्ड बली है।

---

१. बाथे—भुजपाश में। ऊंचाणां—ऊपर उठा लेने वाले। पाथे—सागर, अर्जुन। तेरसा—तैरने वाले, प्रवीण। अचूक बाण—अमोघ निशाने बाज। राडि बेळां—युद्ध समय में। वेरसा — (?)। रिमंदा — वैरियों। ऊवेड — उखाडने वाले। जाडा — दाढे, घने। सेर सा — सिंह सदृश्य। गोड — लुढका देने वाले, मारने वाले। येरसा — ऐसे।

२. तेडिया — बुलाने पर, ललकारने पर। भमंग तिसा — सर्प जैसे। खेडियाँ — प्रयाण करने पर। राम सखा — वानर। छद — विग्रह, युद्ध। हेडिया — हाकने पर, उत्साहित करने पर। पिनाकी — शिव के। वाच — वचन, बोल। हलै — चलते है। नेड़ियां — समीप, निकट।

३. तेगाळा — तलवार धारी। बीजाळा — विद्युत जैसी। करां — हाथों, अथवा। सिभाळा जीवता — जीवितस्यम, युद्ध में घायल होकर जीवित रहने वाले। सकौ — सब कोई। अडाळा — अडने वाले। हठाळा — हठीले। जुटाळा — जुटने वाले। साचाळा — सत्यवक्ता। वाचाळा — वचनों के। जगाळा — जघाओं, कच्छ के दृढ़। पगाळा — पैरों के अविचल। भीछाळा योद्धा। अेहाळा — ऐसे, इस प्रकार के। हाळै — चलते हैं।

अगगरा वैरूपी ऊमंगरा सिंध अैहा,
रंग रा मजीठ रंग दान रा करन।
स्वाम रा उपासी बिया स्वाम री न मांनै संक,
रवताळा असा बिया छता रै सरन ॥४॥

तौळवी पहाड़ तेज अक्करा वहनी ताप,
अरि धरा लेण काज राखणा उपाव।
आठौं जाम ईस काम सारणा धारणा असा,
रावते जुहारे राजै बळाबंध राव ॥५॥

१४७. गीत लालसिंघ सौलंखी रौ

दिली साह दरगाह दो राह नर देखतां, खीज सांकळ जड़ै सीह खूटौ।
वजर तूटौ किनां नाग छूटौ वधण, जाणि जे नबावां लाल जूटौ ॥१॥

---

१४७. गीतसार—उपर्युक्त गीत में लालसिंह सोलंकी ने दिल्ली के शाही दरबार में नवाब पर आक्रमण किया उसका वर्णन किया है। गीत-लेखक ने लिखा है कि दिल्ली के बादशाही दरबार में हिन्दू और मुसलमान वीरो की उपस्थिति मे लालसिंह नवाब पर इस प्रकार टूट कर पड़ा, मानो सांकल मे बांधा हुआ सिंह क्रुद्ध हो जंजीर तोड़ कर अपनी शिकार पर झपटा हो अथवा आकाश से वज्रपात ही हुआ हो या सर्पराज बंधनमुक्त हुआ हो।

---

४. अंगगरा — शरीर के। वैरूपी — विशाल। ऊमग रा — उमग के, दान की लहरों के। सिंध — समुद्र। अैहा — ऐसे। मजीठ — मजिष्ठा, रक्तवर्ण। करन — राजा कर्ण। उपासी — उपासक। बिया — दूसरो के। संक — शंका, भय। रवताळा — रावत पदवाले, योद्धा। असा — ऐसे। सरन — शरण मे, सेवा में।

५, तौळवी — तोल के। अक्करा — सूर्य के, प्रचण्ड। बहनी —वह्नि, अग्नि। अरिधरा— शत्रुओं कीभूमि, वैरियों के राज्य। लेण — लेने या जीतने में। उपाव — उपाय, युक्ति। ईस — स्वामी। सारणा — सिद्ध करने, पूर्ण करने। राजै — सुशोभित होता है। बळावध राव — अर्बुदाचल की श्रेणियों से घिरे हुए राज्य का स्वामी।

१. दरगाह — दरबार। दो राह — दोनों धर्मो को मानने वालो के। खीज — नाराज, क्रुद्ध। सांकळ — जंजीर। जड़ै — बधा हुआ। खूटौ — खुला, तोड़कर झपटा। वजर — वज्र। किना — अथवा। नाग — सर्प, हाथी। वधण — बंधन से। जूटौ— भिड़ा।

केहरी मरण जोहरी चो कटेडै, बिछूटिया लगर लंघाणियौ बाघ।
खाग थारी गयो साहिजादा खड़ै, खांन - जादा गयौ बाहतो खाग ॥२॥
बाह दरबार पचारतो बेलियां, लोह सादूळ हर बही लूटै।
पांव छूटै परा विपति ग्रालम - पनां, तखत करमाळै चुगलाल तूटै ॥३॥
हीचि ग्रंबखास बिचि बाढ़ि पचहजारियां, कीचमचि रुधर सुरताण जळ काढ़ि।
चाडि जस प्रथी वैकुंठ धारा चढै, चाळका घणौ ग्रजवाळ जळ चाढ़ि ॥४॥

१४८. गीत गंगाराम नागा रा जुद्ध रौ

डाकी रहतो ग्रतागो घणौ भांगो पीया चोळ डाणां,
ऊठियौ उनागो खाग झालीया ग्रघाट।
भागो नही सांकड़ै ग्ररचा रै देण लागो भोट,
नागो रामानदी बागो चापडै नीराट ॥१॥

---

१४८. गीतसार—यह गीत गंगाराम नागा सतनामी साधु की युद्धवीरता का बोधक है। कवि ने योद्धा गंगाराम का वर्णन करते हुए लिखा है कि वह वीर सदा विवस्त्र रहता था। अत्यधिक भांग के सेवन से उसके नेत्रो मे रक्तिमा तथा मन मे मस्ती छाई रहती थी। किंतु युद्धावसर ग्रा उपस्थित होने पर उसने नग्न तलवार पकड़ कर शत्रुग्रो पर प्रहारो की झड़ी लगा दी। यो वह रामानद सम्प्रदाय का ग्रनुयायी वीर युद्ध भूमि मे शत्रुग्रो से लड़ने लगा।

---

२. चो – को। कटेडै – कटहडे। विछूटिया – छूटे। लगर – जजीर, बंधन। लंघाणियो – भूखा। बाघ – व्याघ्र सिंह। खाग – तलवार। थारी – तेरी। खड़ै – भाग कर चला। बाहतो – चलाता, प्रहार करता।

३. पचारतो – प्रेरित करता, उत्साहित करता। बेलियां – साथियो, सहायकों। लोह– तलवार। ग्रालमपना – ग्रालमपनाह। करमाळै – तलवार। चुगलाल – मुसलमान।

४. हीचि–प्रहार करके, मारकर। ग्रबखास – ग्रामखास। बाढि – काट कर, मार कर। कीच मचि – कीचड फैला कर। रुधर – लोहू। काढि – निकाल। चाडि – चढ़ाकर। जस – यश। प्रथी – पृथ्वी। चाळका – चालुक्य क्षत्रिय, सोलकी। घणो – ग्रत्यधिक। ग्रजवाळ – उज्ज्वल कर। जळ चाढ़ि – कान्तिमान कर, सम्मानित कर।

१. डाकी – वीर। ग्रतागो – वस्त्र रहित, बिना यज्ञोपवीत। घणो – बहुत। भागो – भांग। चोळ – लाल। डाणा – मस्ती। उनागो – नग्न। झालीयां – लिए हुए। ग्रघाट – दुर्घट, विकट। सांकडै – निकटता से, सकीर्ण घेरे मे। ग्ररघां रै – वैरियों के। भोट – मस्तकों पर। बागो – लडने लगा। चापड़ै – युद्ध में। नीराट – बिल्कुल, भयंकर रूप से।

स्यांम रौ गांम रौ धाम रौ देहुरौ सजै,
हांम रौ भरोसौ हूतौ जिसी धरी हांम।
मांम रौ बीटियौ संत अमामां दळां सूं माझी,
राम रौ कांम रौ भींच लड़ै गगाराम ॥२॥

सीह छूटौ सांकुळा बीछुटौ गाळा लेणै सही,
भीड़िया कपट्टां वट्टां भाजि गौ भरम्म।
बाहे साध खाग झट्टां विकट्टां सू लोथबत्थां,
केविया कितां चा रुडै दड़ा ज्यू करम्म ॥३॥

धणी रौ उजाळे लूण खेलै झाट फूल धारां,
चढ़ावै चिरजी नाम जतै सूर चद।
पीपा धनां नामदे सुदामां ज्यू मुकति पायी,
नमौ नमौ गगारांम दूजा रामांनद ॥४॥

---

२. हांम – इच्छा। हूतौ – था। जिसी –जैसी। मांम – गर्व। बीटियौ – घिरा हुआ, भरा हुआ। अमामां – अपार, असख्य। भींच – योद्धा।

३. छूटौ – खुला, बधनमुक्त हुआ। सांकुळां – शृङ्खला से। बीछुटौ – झपटा। गाळा लैंण – भोजन प्राप्त करने, माम अथवा शिकार प्राप्त करने। भीड़िया – साथियो, कस कर मिले हुए। वट्टा – मार्ग। भरम्म – भ्रम। वाहे – चलावे। खाग भट्टा – तलवार के प्रहार। केविया – वैरियो। रुडै – लुढकते है। दडा – मोटी गेंद। करम्म – शीश।

४. धणी – स्वामी। उजाळे – उज्ज्वल करे। लूंण – नमक। झाट – प्रहार, चोट। फूलधारां – कृपाणों के प्रहार। चिरंजी – चिरंजीवी, अमर। सूर चंद – सूर्य और चन्द्रमा। पीपा – भक्त पीपा। मुकति – मुक्ति। दूजा – द्वितीय।

१४९. गीत गोरधनसिंघ हाडा मोहणोत रौ

बळण लिया नह गोरधन काज लाकड़ बिया,
दुजड़ लागी रही केतीक देह।
भडां ज्या छडाळां माहि घट भाजियो,
छड़ा ज्यां दागियौ भडा अणछेह ॥१॥

लूथ - बाथां हुवा साधणी लडायौ,
मोहे खग उड़ायी बूथ मांसां।
बीर ले गांसिया मोहे तन बधाये,
गात ले लगायौ तिया गांसा ॥२॥

बडाळा भाजता गाजतां त्रमाळां,
भडाळा जगत कहियौ धनौ भाग।
खडाळा खेत लागां हुवौ खडाळां,
दंडाळा सेल लागां हुवौ दाग ॥३॥

---

१४९. गीतसार–यह गीत महाराज मोहनसिंह हाडा के वीर वंशधर गोवर्द्धनसिंह पर कहा हुआ है। कवि ने गोवर्द्धनसिंह हाडा के समरांगण में अस्त्र-शस्त्रों के प्रहारों से टुकड़े-टुकडे होकर मारे जाने का वर्णन करते हुए लिखा है कि गोवर्द्धनसिंह का शरीर तलवारो से छिन्न-भिन्न होकर बिखर गया। उस वीर ने अपने शरीर को दग्ध करने के लिए ईंधन नही मागा। अपितु जिन भालो से शरीर क्षतविक्षत हुआ था उन्ही भालो के बांस के डडो में अपने शरीर को जला कर भस्मीभूत हो गया।

---

१. बळण – जलने के लिए। नह – नही। काज – लिए। लाकड़ – लकडियाँ, ईंधन। बिया – दूसरा। दुजड – तलवार। लागी रही – लग कर समाप्त हो गई। केतीक – कितनी ही। देही – देह, शरीर। छडाळां – भालों। घट– शरीर। भांजियो – भजित किया, नष्ट किया। छडा – भालो के डडे जो बांस के थे। दागियौ –जलाया गया।

२. लूथ बाथां – गुत्थमगुत्थ, बाहु युद्ध। साधणी – धनुष। खग – तलवार। बूथ-मांस, मांस की बूथें, मास के टुकडे। गांसियां – बाणो की नोकें। गात – गात्र, शरीर। तियां – उनके।

३. भाजतां – भगते, सहार करते। गाजता – गर्जना करते। त्रमाळां – नगाड़े। भडाळां – वीरो ने। धनौ भाग – धन्य भाग्य। खडाळां – तलवारों। खेत – रणक्षेत्र। खडाळां – खण्ड-खण्ड, टुकडे-टुकडे। दंडाळां – डडों। सेल – भालों के। दाग – दाह।

मयण रा राव चहुवांण रौ इसौ म्रत,
सुणीजे अनोखो दाग संसार।
धड़हड़ै सोर सुरमुख सीलिगी धीयागां,
लाकड़े लोह लागां हुवी लार ॥४॥

१५०. गीत छत्रसिंघ मेहाउत हाडा रौ

काळा गरळ लागतां केवी, कड़के भलो उरस हूं काळ।
छाती के मेघतणी बिचि छड़ियो, तैं भालो हाडा छाताळ ॥१॥
सिध अवसांण बिरद धरि सांचो, पौंचाळा कीधो परमांण।
पड राठौड़ तणे रोपाणो, अतळी-बळ हाडो चहुवांण ॥२॥
यळ सिर समर राखि अखियातां, बैरी आता आय वगै।
यद्रभांण तणौ रत रगियो, रावत घाटी सेल रंगै ॥३॥
जोरा सुतन मारतै जैसो, जपियो जस जुवौ-जूवौ।
जेसळ बिरद खाटता जाडो, हाडो आडै आंक हूवौ ॥४॥

---

१५०. गीतसार—यह गीत हाडा क्षत्रिय शाखा के छत्रसिंह मेहा के वंशज का है। गीत में लिखा है कि छत्रसिंह का भाला शत्रुओं पर कालिय नाग के विष अथवा आकाश की बिजली की भाँति लग कर आर-पार निकल जाता है। उस वीर ने इन्द्रभानु राठौड़ के वक्षस्थल में भाला रोप कर वीरत्व की सीमा स्थिर करदी।

---

४. मयण रा—मोहनसिंह के पुत्र का, गोवर्द्धनसिंह का। इसौ—ऐसा। म्रत—मृत्यु। धड़हड़ै—धड़क कर। सोर—बारूद। सुरमुख—अग्नि। सीळिगी—सुलग कर, जलकर। धीयागां—आकाश। लोह—शस्त्र, तलवार। लागा—लगने पर। लार—पीछे-पीछे, पीछे चली।

१. काळा—कालिय नाग। गरळ—विष। केवी—वैरी। कड़के—कड़कने की ध्वनि। अरस हू—आकाश से। काळ—मृत्यु, बिजली। छड़ियो—भाला का डंडा, फेंका। छात्राळ—छत्रसिंह।

२. सिध अवसाण—अवसान सिद्ध, अवसर सिद्ध। बिरद—विरुद। पौंचाळा—भुजबली, पराक्रमी। कीधो—किया। पंड—पिण्ड, शरीर। तणै—के। रोपाणौ—रोपा, घुसाया। अतळी बळ—अत्यधिक बलवान।

३. यळ—पृथ्वी। सिर—पर। समर—युद्ध। अखियाता—प्रसिद्धि, अक्षय वार्ता। रत—रक्त। घाटी—शरीर, कण्ठ। सेल—भाला।

४. जोरा सुतन—जोरावरसिंह-तनय, इन्द्रभानु। जपियो—जपा, उच्चारण किया, कहा। जस—यश। जुवौजूवौ—अलग अलग। जेसळ—जयसिंह (?)। खाटतां—अर्जित करते। जाडो—मोटा, बड़ा। आडै आंक—सीमा, अत्यधिक, अपार।

१५१. गीत राव रामसिंघ हाडा नै राजा राजसिंघ राठौड़ रौ भेळो

समर भेळ पतिसाह दळ मेळ दहुवां सगा, झेल पूरण करण सार जाडै।
हजारां गजां सिर राजधर हांकिया, हाकिया हजारां सीस हाडै ॥१॥

सगा सेला खगां ऊझेलां साबळां, अरस गज भूचका धकां आया।
खागहारी बिन्है रजवाट रा खटाऊ, थाट रा धणी मुंह मेज थाया ॥२॥

मांन सुत अनै किसनेस सुत मारका, सार का कोट अरगेज सारां।
थापिया अेक छत्र अेक ऊथापिया, धापिया सनमधी फूल-धारां ॥३॥

बिढ़ण मछरीक अछरां घर बसाया, कमध जगि जीवतां-संभ कहियो।
राव रा हाथ रौ घाव महाराज रै, राव महाराज रै हाथ रहियो ॥४॥

---

१५१. गीतसार—यह गीत कोटा के महाराव रामसिंह और किशनगढ़ के महाराजा राजसिंह के युद्ध से सम्बन्धित है। यह युद्ध शाहजादा आजमशाह और अजीमुश्शान के परस्पर मे हुआ था। दोनो गीत नायक दोनों शाहजादो के एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध में सम्मिलित हुए थे। गीत में उल्लेख आया है कि दोनों सम्बन्धी दोनो शाहजादो के पक्ष मे एक दूसरे के विरुद्ध शाहजादो का पक्ष सबल करते हुए तलवारों और भालो से जूझते हुए दोनो ही घावों से क्षत विक्षत हो गये और अन्त मे राजसिंह के प्रहार से भीमसिंह मारा गया।

---

१. भेळ — शामिल, समय। दळमेळ — सेनाओं को मिला. मुकाबिला कर। सगा—सम्बन्धी, रिश्तेदार। सार — शस्त्र। जाडै — घने। गजां सिर — गज सेना पर। राजधर—राजसिंह ने। हांकिया — चलाए, बढाए। हाडै — महाराव रामसिंह हाडा ने।

२ सेलां — भाला शस्त्र। खगां — कृपाणें। उझेलां — अपार, पूर्ण जोश से। साबळां — भाला विशेष। अरस गज — आकाशस्थित दिशाओ के हाथी। भूचका — भयचकित, पृथ्वी मे कम्पन। धकां — धक्के, हिलन, कम्पन। बिन्है — दोनों। रजवाट — क्षत्रियत्व। खटाऊ — प्राप्त कर्त्ता। थाट — सेना। धणी — स्वामी, राजा। मुहमेज — आमने-सामने, मुकाबिले। थाया — हुए।

३. अनै — अन्य, और। मारका — महाभट। सार का कोट — लोहे के दुर्ग सदृश्य, रण दृढ़। अरगेज — तलवार, अरि समूह, अरिगज। सारां — लोहा। थापिया — स्थापित किया। ऊथापिया — उखाड दिया। धापिया — तृप्त हुए। फूळ धारां—शस्त्र धारा, तलवारो की धारों से।

४. बिढ़ण — युद्ध, मर कर। मछरीक — चौहानो की हाडा शाखा के वीर रामसिंह ने। अछरां — अप्सराओं का। कमध — राठौड़, राजसिंह के प्रति। जगि — ससार मे। जीवतां संभ — घायल होकर बच जाने वाला योद्धा। हाथ रहियो — प्रहार से काम आया, मारा गया।

१५२. गीत ठाकर उदैसिंघ करमसोत रौ अेमदाबाद झगड़ा रौ

अड़ै भुजा ब्रहमंड जरदां कड़ा ऊबड़ै, गड़गड़ै त्रंमागळ झड़ै गुरजां।
ऊदला तणी बागां जठी ऊपड़ै, भांज गढ़ खड़हड़ै पड़ै भुरजां ॥१॥

नाथ रौ वांधियो चाळ भुज नीपजे, जुड़ण जमजाळ लंकाळ जूटै।
जोध किरमाळ कर ढाल ओरै जठी, तठी पड़गाळ भुरजाळ तूटै ॥२॥

गजां रत पोट पड़ चोट त्रंमागळां, वचण अर ओट लै बीसां बीसै।
धसै मन मोट जा सिर ग्रहै धजवड़ां, दीवालां कोट सैलोट दीसै ॥३॥

मतंग पिछटण खळां विहंग छिलते मछर, प्रथीपत अभंग भुज सैण पूजो।
सुरंग भालो कियां जोध नवसाहसो, दुरग बंका लिअै कमो दूजो ॥४॥

—सादू कुंभकरण ईसरोत रौ कह्यौ

---

१५२ गीतसार—यह गीत खीवसर के सरदार उदयसिंह राठौड़ द्वारा अहमदाबाद के युद्ध मे शामिल होकर लड़ने का है। गीत रचयिता कुंभकर्ण सांदू चारण ने लिखा है कि युद्ध के नगाड़ों के घोष और गुर्जों के प्रहार प्रारम्भ होते ही उदयसिंह की भुजाएँ आकाश को छूने लगी, तथा कवचों की कड़ियाँ जोश से फूलने के कारण चटकने लगी। इस प्रकार उत्साहित उदयसिंह के अश्व ने जिस ओर कदम बढ़ाया उस ओर की बुर्जें धड़ाधडा की ध्वनि कर भूमिसात् होने लगी।

---

१. अड़ै – छुए, स्पर्श करे। जरदां कड़ा—कवचो की कड़ियाँ। ऊबड़ै – खुले, टूटे। गड़ गड़ै – गडगड़ाहट ध्वनि करे। त्रंमागळ – नगाडे। गुरजां – गुर्जे, गदा। ऊदला तणी – उदयसिंह की। बागां – घोड़े की लगाम। जठी ऊपड़ै – जिस ओर उठे। भांज– ध्वस्त हो। खडहड़ै – गिरते समय की ध्वनि। भुरजां – बुर्जे।

२. नाथ रौ – हरनाथसिंह का पुत्र। चाळ – वस्त्रांचल। जुड़ण – भिड़ने के लिए। जमजाळ – योद्धा, वीर। लंकाळ – सिंह। जूटै – भिड़ते हैं। किरमाळ – तलवार। ओरै – चलावे, डाले। जठी – जिधर। तठी – उधर ही। पड़गाळ– दरारें पड कर। भुरजाळ – किले। तूटै – ध्वंस हो पड़ते है।

३. पोट – समूह। अर – वैरी। ओट लै – आश्रय पकड़े, आड़ मे छिपें। बीसां-बीसै – निश्चय ही, बीसोंबिस्वा। मन मोट – उदारचित, विकट वीर। धजवड़ां – तलवारें। दीवाला – कोट की दीवारें, नगर प्रकोष्ठ। सैलोट – भूमिसात। दीसै – दिखाई पड़े।

४ मतंग – हाथी। पिछटण – पछाड़ने। खळां – वैरियों। विहंग – पक्षी, हाथियों को मारने वाला कल्पित पक्षी, मनल पक्षी। छिलते – हिलोरें लेते, छलछलाते। मछर– मत्सर। अभंग – अपराजित वीर। सुरग – रक्तवर्णीय, लाल। नवसाहसो – नवसहस्रो गाँवों के शासक मारवाड़ के राजा का योद्धा। दुरंग – दुर्ग, किले। बंका लिअै – विकटों को जीत लेता है। कमो दूजो – द्वितीय कर्मसिंह।

१५३. गीत ठाकर उदयसिंघ खींवसर रा धणी रो

बधै अभा री बेल दळ ठेळ सरबिलंद रा, अढंगा खेल खेले अताळो ।
गयद रा चाचरा बीच कीधो गरक, ऊदलै सेल गजबेल वाळो ॥१॥

बार अध्रियावणी वीर किलकै बकै, घीठ कठठै घड़ दीठ घोळै ।
सार सांचा तणो निजड़ हरनाथ सुत, रोपियो पटाभ्रर सीस रोळै ॥२॥

सकै कायर धकै चढ़ै जुध सूरमां, श्रोण बभकै चंड सारू ।
ऊडणां नाग कळ सबळ भड़ बाजियो, मेंगळां सीस छडियाल मारू ॥३॥

किलम सरबिलंद इम हुकम मावत करै, पैल गजराज अरिथाट पाळो ।
ईस सुत जिसो सांमो निजर आवियो, भीमहर रोपियो सीस भालो ॥४॥

जेणारा पाण जोधाण-पत जांणियो, बिहद बाखाणियो खाग बाहां ।
अेण विध जैत पाई समर ऊदलै, रेण बातां रही दहूं राहां ॥५॥

—सांदू विजैदान रो कह्यो

---

१५३. गीतसार—यह गीत नागोर परगने के ठिकाने खींवसर के ठाकुर उदयसिंह राठौड द्वारा सर बिलद खां के विरुद्ध शौर्य प्रदर्शन करने का सूचक है। गीत में वर्णन हुआ है कि महाराजा अभयसिंह के पक्ष में सर बिलंद खा की सेना को विचलित करता हुआ अपूर्व त्वरा से रण-खेल खेलता है। उदयसिंह ने उस रण-क्रीड़ा मे अपने भाले को प्रतिपक्षी सेना के गज पर चला कर उसे वहीं ढ़ेर कर दिया ।

---

१. बधै – बढ कर। अभा री बेल – महाराजा अभयसिंह की सहायता मे, अभयसिंह की सैन्य पंक्ति से। दळ – सेना। ठेल – धकेल कर। अढंगा – विकट, बेढगे। अताळो– उतावला, भयकर। गयंद – गजेन्द्र, हाथी। चाचरा – मस्तक, ललाट। कीधो – किया। गरक – गर्क। गजबेल वाळो – गजवेल नामक लोहे से बना हुआ।

२. वार – समय। अध्रियावणी – भयानक। किलकै – किलकारी करते हैं। बकै–बोलते, बकते हैं। धीठ – वीर। कठठै – जोश में चलते हैं। घड –सेना। सार साचा तणो – खरे लोहे का, गजबेल का। निजड़ – भाला। पटाभ्रर – हाथी के। रोळै–युद्ध में, घुमा कर।

३. संकै – शंका करे। श्रोण – श्रोणित। बभकै – बहता है। चड – चण्डिका, प्रचण्ड। सारू – लिए। ऊडणा – उड़ने वाले। नाग – सर्प। कळ – भाँति। बाजियो – बजा, चला, कहलाया। मैंगळां – हाथियों के। छड़ियाळ – भाला।

४. किलम – मुसलमान। इम – यो। मावत – महावत। पैल – धकेल कर। अरिथाट – शत्रु सेना। पाळो – पदाति, पैदल। ईससुत – कार्त्तिकेय, वीरभद्र। जिसो – जैसा। सामो – सन्मुख। भीमहर – भीमसिंह के पौत्र ने।

५. जेणा रा – जिनका। पांण – बल, हाथ। खाग बाहां – खड्ग प्रहारको ने, खड्ग प्रहारो को। अेणविध – इस विधि से। जैत – विजय। पाई – प्राप्त की। समर – युद्ध में। रेण – भूमि, भूलोक। दहूं राहां – यवनो और हिन्दुओं में।

१५४. गीत ठाकर हरनाथसिंघ करमसोत खींवसर रौ

अजण छळां हरनाथ दिली दळां उचाड़ण, आप कळह सांभर उकाटै ।
ओरवै तुरी कुभाथळा ऊपरै, कमध बीजूजळा थळां काटै ॥१॥

भीम रौ सूरमो भीम अणियां भंमर, पेखतां समर कुण अवर पडछै ।
... ...धीम किरमर कमौ असुर घडछै ॥२॥

ऊघड़ै संघ जरदां कड़ां ऊबड़ै, चड़बड़ै जोगणी हड़बड़ै वीर ।
चापड़ै गजा सिर पमंग पीळौ चढ़ै, मयण हर लड़ै हौदां झड़ै मीर ॥३॥

पांच सोवायतां गिळै ऊभो सुपह, विरोळै धौंकळै करै बाहां ।
विडग आदेसियौ दळै वहळायतां, सार आदेसियौ पातसाहां ॥४॥

---

१५४. गीतसार–उपर्युक्त गीत खींवसर ठिकाने के ठाकुर हरनाथसिंह कर्मसिंहोत राठौड़ की युद्ध-प्रशंसा पर रचित है। गीत में कवि ने हरनाथसिंह की वीरता का वर्णन करने के प्रयोजन से लिखा है कि महाराजा अजितसिंह की सहायतार्थ हरनाथसिंह ने सांभर स्थान पर स्थित दिल्ली की शाही सेना पर आगे बढकर प्रहार किया और उसे वहां से भाग जाने के लिए बाध्य कर दिया। उस वीर ने शाही सेना के गजो पर अपने अश्व को धकेल कर तलवारो से उन्हें काट गिराए ।

---

१. अजण – महाराजा अजितसिंह जोधपुर । छळां – युद्ध । उचाड़ण – भगाने के लिए, पृथक करने हेतु । कळह – युद्ध । सांभर – साभर लेक । उकाटै – प्रहार देकर, आगे बढकर । ओरवै – झोंका, धकेला । तुरी – घोड़ा । कुमाथळां – हाथियो के कुंभस्थलो पर । बीजूजळां – तलवारें । काटै – काटकर, मारकर ।

२. भीम रौ – भीमसिंह का । सूरमो – शूरमा । भीम – भयानक, पाण्डव भीम ज्यों । अणियां भमर – सेना की अग्रिम पंक्ति का प्रधान योद्धा । पेखतां – देखते । कुण – कौन । धीम – धूम्र, प्रज्वलित अग्नि । किरमर – तलवार । कमौ – कर्मसिंहोत, कर्मसिंह का वंशज । घड़छै – नाश करे, टुकड़े करे ।

३. ऊघड़ै – खुले, छिन्न हुए । संध – अस्थियों के सधिस्थल । जरदां – कवचो । कड़ां – कड़ियां । ऊबड़ै – खुले, टूटे । चड़बड़ै – क्रोध करे, बक बक-ध्वनि करे । जोगणी – योगिनी, युद्ध की देवी । वीर – बावन वीर । चापड़ै – दाबे, दलित करे । पमग – अश्व । पीळौ – पीत वर्णीय । मयणहर – महेशदास का वंशज । झड़ै – गिरे । मीर – अमीर, शाही योद्धा ।

४. सोवायता – राज्यपालो को, सूबेदारों को । गिळै – ग्रास बनाकर, नाश कर । ऊभो – खड़ा । सुपह – योद्धा । विरोळै – नाश कर । धोकळै – युद्ध मे । करे बाहां – प्रहार करके । विडंग – घोड़ा । आदेसियौ – नमस्कार किया । वहळायतां – युद्ध में उतावले वीर, रणोत्सुक । सार – तलवार, लोहा ।

१५५. गीत महाराजा बहादरसिंघ किसनगढ़ रौ

डंडै खांन रौ मैवास दिली आगरो साह रौ डंडै,
आन रौ की गिणां बेहू राह रौ अनेक।
आंटीपणौं सोबादार सतारानाथ नू आखै,
हिंदुवा मे मांटीपणौ राजान रौ हेक ॥१॥
छंडै पांव पाछा जंगां पेस दे छूटिया छत्री,
आछा आछा देस नेस लूटिया अनूप।
कहै सेनापती मैं पहादरेस कीधा केई,
भूलोक अनम्मी हेक बहादरेस भूप ॥२॥
तोपां रा अग्राजां मांहे सजिया न कोट कितां,
महाबीर साजां मांहे भंजिया अमाव।
मारहठौ कहै मैं गांजिया लोक पाजां माहे,
राजां मांहे अगंजी रजियौ मारूराव ॥३॥
सतारानाथ नू प्रेम समाचार लिखै सोबो,
जदां पाछौ, कागदां मे मोकळै जबाब।
मान रा पौतरा हूंत उखेलो मांडजो मतो,
बीजा राई तणा नखै उरी लीजो बाब ॥४॥

१५५- गीतसार—ऊपरांकित गीत किशनगढ़ के महाराजा बहादुरसिंह के पराक्रम और निर्भयता का द्योतक है। गीतकार ने मरहठों के अजमेर स्थित राज्यपाल के मुख से बहादुरसिंह की वीरता और निर्भीकता की श्लाघा वर्णित की है। लिखा है कि जिसने खान के दुर्गम आश्रयस्थलो तथा दिल्ली आगरा तक के शाही शासित प्रान्तो तक से दण्ड ले लिया है, फिर अन्य राज्यो के शासको की तो उसके सामने गणना ही क्या? अजमेर का मरहठा राज्यपाल सतारा के स्वामी को उसकी जवांमर्दी की सूचना देते हुए लिखता कि हिन्दू योद्धाओ में तो शूरमापन एक राजसिंह-तनय बहादुरसिंह ही मे अवशेष रहा है।

---

१. डंडै – दण्ड लिया। मैवास – किले, दुर्गम आश्रयस्थल। आंन री – अन्य का। कीं गणां – क्या गिनती करें, क्या मानें। आंटीपणौ – शक्तिशाली, शत्रुता। आखै– कहता है। मांटीपणौं – बहादुरी, मर्दमी। राजान रौ – राजसिंह का पुत्र में। हेक – एक।

२. पाछा – पीछे की ओर। जंगा – युद्धो में। पेस दे – पेशकशी, मरहठों का कर विशेष। नेस – घर, नगर, जातियों के, योद्धाओं को। पहारदेस – सौंपे, अधीन। अनम्मी – अनम्र, स्वतंत्र।

३. भांजिया – गजित किए, पराजित किए। अगजी – स्वतत्र। रजियौ–शोभितरहा।

४. सोबो – सूबेदार। जदां पछै – जब से फिर। मोकळै – भेजता है। उखेलो – युद्ध। मांडजो – रचना, करना। राई तणा – राजाओं से। उरी – इस ओर, इधर। बाब – कर विशेष।

१५६. गीत ठाकर जालिमसिंघ मेड़तिया कुचामण रो

प्रथम रांम करसे तिको न कांम हांसै पछै, इती मतां मांह ले ठसक आंणो ।
जीवतां मो थका कहै यूं जालमो, जोधपुर पलटती मतां जांणो ॥१॥

दिली सिंघ दिखण उतराध च्यारूं दिसां, अेक होय खाग ग्रहे साथ ऊठे ।
जुड़ै नह मडोवरां कदै मो जीवते, पलटसी मंडोवर मुआं पूठे ॥२॥

केहरी सुतन लिख मेलियो कागळां, इसी हुवै धाख तो वेग आवो ।
चाकरां भारियां बिना नव-चौकिये, चढ़ण री मतां मन मांह चावो ॥३॥

उरड़ियो जसाहरो जोधपुर ऊपरां, रुघाहरो वरडियो देवरायो ।
स्याम रै काम संग्राम नवसाहसो, इसी विध वाजनै कांम आयो ॥४॥

आड़ गोळां पड़ै रीठ तरवारियां, लड़न्ते हाथ इण भात लाया ।
पांचमें महीने कांम आया पछै, आपरै ठिकांणे सको आया ॥५॥

---

१५६. गीतसार—इस गीत मे गोडावाटी के कुचामन संस्थान के ठाकुर जालिमसिंह मेडतिया के दाढ्यं और निर्भीकता का वर्णन हुआ है। गीतकार ने जालिमसिंह के मुख से राजाधिराज वख्तसिंह को उत्तर दिलवाते हुए कहा कि कार्यारम्भ करते समय कार्य के सही पहलू पर विचार करना चाहिए जिससे फिर उसकी असफलता पर जगत हँसाई न हो। जोधपुर पर अधिकार करने के लिए इतना गर्व मत करो क्योंकि मेरे जीवित रहते आपका जोधपुर पर अधिकार नही हो सकेगा।

---

१. रांम — आरम्भ। तिको — वह, जिससे। हांसै — हँसी हो। इती — इतनी। ठसक — गर्व, जवांमर्दी। आंणो — लाओ। मो — मेरे। पलटती — उलटती, दूसरों का अधिकार होता। मतां जाणो — मत समझो।

२. सिंघ — सिंध प्रदेश। उतराध — उत्तर दिशा। खाग ग्रहे — तलवार उठा कर, चढ आवे। जुडै — भिड़े, लड़े। कदै — कभी। मुआं — मरने पर। पूठे — बाद में, पीछे।

३. मेलियो — भेजा। कागळां — कागजों, पत्रों। धाख — जोम, गर्व, इच्छा। नवचौकिये — जोधपुर दुर्ग स्थित वह स्थान जहां राजा लोग विराजते है। चावो — कांक्षा करो, चाह करो।

४. उरड़ियो — जोश मे आकर बढा। जसाहरो — महाराजा जसवंतसिंह का पौत्र, राजाधिराज वख्तसिंह। विरडियो — क्रोध कर के विरुद्ध में लड़ने के लिए तैयार हुआ। स्यांम रै — स्वामी के।

५. रीठ — प्रचण्ड प्रहार, शस्त्रों की बौछार। ठिकाणे — जागीरदारों की राजधानी का स्थान। सको — सब कोई।

१५७. गीत जालमसिंघ मेड़तिया कुचामरण रा धणी रो

घर चाढ़ि मांझी मिळै थाट मोटे घड़े, पिंडवा सताबी तुरां पाखर पड़े।
होय वीरां किलक जोगणी हड़हड़ै, जालमो किणी सिर आजि ससतर जड़े ॥१॥

आंवळा भीछ कड़छै प्रगट ऊससै, जाक चकरी फिरै नाक ठड़हड जिसै।
आग धकि लोयणांरूप वणियो असै, केहरी तणो किण सीस आवध कसै ॥२॥

निडर जाझा कसै कदै उर नांणियो, तौलि खग रिमां सिर मूछ कर तांणियो।
आंगळे साज करि हजारी आंणियो, जालमा देखि रंग जाराही जांणियो ॥३॥

रोड़ बजि हैवरां आगि धकि रारियां, धजर भाला खेवण त्रभागो धारियां।
भौमि गूगळी गयण चढै रज भारियां, तूटिसी घणा सिर आजि तरवारियां ॥४॥

---

१५७. गीतसार—यह गीत ठाकुर जालिमसिंह मेड़तिया शाखा के राठौड़ कुचामन ठिकाने के स्वामी का है। गीतकार ने लिखा है—राज्याधिकार की प्राप्ति के लिए राज्य के प्रमुख सामन्तों ने घोड़ों को सज्जित कर शस्त्र धाराओं द्वारा परस्पर भेंट की। उनकी युद्धस्थल की उस भेंट को देख कर बावन वीरों ने हर्ष से किलकारियां की तथा योगनियो ने अट्टहास किया। वे पूछती हैं कि आज जालिमसिंह ने किस शत्रु पर शस्त्र सम्हाले हैं।

---

१. मांझी – प्रमुख। मिळै – मिले, भेंट की, भिड़े। थाट – सेना। घड़े –समूह, एक ही खांप के लोगों का समूह। पिंडवा –शरीरो पर, सईसों ने। सताबी – त्वरा से। तुरां – घोड़ो पर। पाखर – कवच, प्रखर। वीरां –बावन वीरो। किलक – हर्ष ध्वनि, किलकारी। हड़हड़ै – हडहड नाद, अट्टहास। किणी सिर – किस पर।

२. आवळा – बांकुरे, वीर। भीछ – योद्धा। कड़छै – प्रहार हेतु लपके। ऊससै – जोश से उफनते। फिरै – घूमते। धकि – प्रज्वलित। लोयणां – नेत्रो। असै – ऐसे। केहरी तणो – केशरी तनय। आवध – आयुध, हथियार। कसै – बांधता है।

३. जाझा – घने, गहरे। कदै – कभी भी। नांणियो – नही आया। तौलि – तोल कर, उठाकर। रिमां – वैरियों। कर – हाथ। तांणियो – खेंची, बट दिया, मरोडी। आंणियो – आया। जाराही – जब ही। जांणियो – समझा।

४. रोड़बजि – ध्वनि होकर। हैवरां – घोड़े के। धजर – तलवार। खेवण – चमकाता। त्रभागो –तीन धाराओं वाला सेल। धारियां–लिए हुए। गूघळी-गूगल वर्णीय, धुंधली। गयण – आकाश। रज – धूलि। आजि – आज, युद्ध में। तरवारियां – तलवारो से, खड्गों के प्रहारो से।

खयंग ऊजड़ वहै चकारो तत खिरै, होय भाला खेवण नगारो घरहरै ।
असौ आयो निडर चाचरै ऊधरै, आज अहवात अरि नारिया ऊतरै ॥५॥
घेरि चांपट प्रगट फेरि रावत घणै, वाहि वीजूजळां वाहि पिसणा वणै ।
सरम रा वीटिया सुजस स्त्रवणां सुणै, पातळा सीह ज्यूं झोक मांटीप पणै ॥६॥

१५८. गीत क्रसाण रा बीनांण रौ लालसिंघ राठौड़ रौ

पोहौ कीरत वीज खेत रजपूती, दाह सत्रां उर खाद दियौ ।
हळ भाळौ करतां वडहाळी, करसण आरंभ गजब कियौ ॥१॥
कांकळ कदळ वाहणी काढ़ै, महपत सबळ घणां मळ माण ।
सत्रहर डगळ किया सह सूधा, दळ चांवर फेरै दैवांण ॥२॥

---

१५८. गीतसार—उपर्युक्त गीत बड़ली के जागीरदार ठाकुर लालसिंह राठौड़ का है। लालसिंह ने मरहठों की सेना से घमासान युद्ध कर वीरत्व का प्रदर्शन किया था। इस गीत में लालसिंह को कृषक बना कर खेती की क्रियाओं का युद्ध की क्रियाओं में आरोपण कर वर्णन किया है। गीत में लिखा है कि क्षात्रधर्म रूपी खेत में शत्रुओं के भयजन्य दाह का खाद डाला और तदनन्तर भाला रूपी हल चला कर कीर्ति रूपी बीज बोया। इस प्रकार कृषकरूपी महान् योद्धा ने अनोखी रीति से खेती का कार्यारंभ किया।

---

५. खयग – घोड़े। ऊजड़ – बिना मार्ग। वहै – चलते हैं। घर हरै – नाद करे। असौ – ऐसे। चाचरै – मस्तक। ऊधरै – ऊर्ध्व, ऊपर उठाये हुए। अहवात – अहिवात, सुहाग, सौभाग्य चिन्ह। अरि – वैरियों की। ऊतरै – उतरेगा, छिन्न जायगा।

६. घेरि – घेरे में लेकर, चला कर, हांक कर। चांपट – घोड़ा, चपेट, चोट। बाहि – चला कर। वीजूजळां – तलवारें। ढाहि – गिरा कर, ढहा कर। पिसणां – पिशुनों, शत्रुओं। सरम रा – लज्जा के। वीटिया – आवेष्टित। स्रवणां – कानों से। पातळा – पतला, भूखा। झोक – धन्य। माटीप पणै – मर्दपन।

१. पोहौ – वीर, राजा। कीरत – कीर्ति, रजपूती – क्षत्रियत्व। सत्रां – शत्रुओं। उर – हृदय। हळ – हल यंत्र। भालो – सेल। वडहाळी – बड़ा किसान, महान् हल चालक। करसण – कृषि कार्य।

२. कांकळ-युद्ध। कदळ – संहार कर, कदमूल। वाहणी – वाह जोतने की क्रिया का भाव। काढै – निकाले। महपत – राजा, लालसिंह। सबळ – समर्थ। घणा – बहुत अधिक। सत्रहर – शत्रुता रखने वाले। डगळ – मिट्टी के ढेले। सूधा – सीधा, साफ। दळ – फाड़, नोंक। चावर – जोती हुई भूमि को समतल करने के लिए उस पर घुमाया जाने वाला पाटा। फेरै – फिराकर। दैवाण – वीर, राजा, ठाकुर।

अरि चारो जड़ हूत ऊपाड़ै, साकुर धौरि हांक सर।
ल्हास करै फौजा बड लंगर, क्रोध निनाणी हमल कर ॥३॥

लगर बंध दूलावत लाला, सुपह दाता परसी करसार।
सर डूचण दुसहां नवसहसा, बड करसा झोका बड़वार ॥४॥

पाहड़ हरा अवर कुण पूगै, जग थारा हासळ रैं जोड़।
रस आई जांणी रजवाडां, रजवट री खेती राठौड़ ॥५॥

१५९. गीत लुहार रा बीनांण रौ लालसिंघ राठौड़ रौ

आरण रच समहर सोर अगारो, तोपा धमण धमै यकताय।
लोह दोयण कारीगर लालो, ताव झपट सं लिऔ तपाय ॥१॥

---

१५९ गीतसार—इस गीत मे अजमेर-मेरवाडा के बडली ठिकाने के स्वामी राठौड़ वीर लालसिंह और मरहठो के मध्य हुए युद्ध का वर्णन किया गया है। कवि ने शत्रुओं को लोहा और लालसिंह को लुहार बना कर रूपक रचा है। गीतकार ने लिखा है कि लालसिंह रूपी लुहार ने युद्ध रूपी आरण मे बारूद रूपी अगारे डाले और तत्पश्चात् तोपों रूपी धमनी से उन्हें प्रज्वलित कर शस्त्र प्रहार रूपी ताप से तपा कर शत्रु रूपी लोहे को सीधा कर दिया।

---

३. अरि-चारो – शत्रु रूपी घास। हूत – से। ऊपाड़ै – उखाडकर फेंके। साकुर – घोडे। धोरी – हल चलाने वाला, हाली। हाक – चला कर। ल्हास – कृषि के कार्य में सहायता करने वालो को खेत पर खिलाया जाने वाला भोजन। निनांणी – निराई। हमल कर – हमलाकर, सहयोग देकर।

४. सर – मस्तक। डूचण – बाजरे आदि के सिट्टे तोडने की क्रिया, डूचने की क्रिया का भाव, तोडना। दुसहा – वैरी। करसा – किसान। झोका – वाह वाह, धन्य धन्य।

५. पाहडहारा – पहाडसिंह के पौत्र। अवर – दूसरे। कुण पूगै – कौन बराबरी में पहुंचे। रजवाड़ा – रियासतो वालो में। रजवट री – राजपूती की, क्षत्रियत्व की।

१. आरण – लोहार की भट्टी। समहर – युद्ध। सोर – बारूद। धमण – धमनी यंत्र। धमै – धमने की क्रिया का भाव। यकताय – एक समान, एक समान ताप। दोयण – वैरी। कारीगर – लुहार। ताव – ताप, क्रोध। झपट – प्रहार, लपटें।

साजत समहर डाव सडासी, चख धिखतां थहिया रंग चौळ ।
अहरण अकस लाल तिण ऊपर, घण त्रिजड़ां बाहे घमरौळ ॥२॥

भारी सत्र कवाड़ां भांजै, अणियां भेड़े भांत असी ।
हेसल हूत वडां अर हीसूं, कूट लालियै किया कसी ॥३॥

कर मेहणत कांटां वळ काढ़े, अयपच पतळा किया यसा ।
सादत छांट पिछंट्या सत्रू, जांणै जत्री तार जिसा ॥४॥

आसत सगत ऊघरा आचां, जस जालम अखमाल जिसौ ।
लोह द्रोयण ताछै लोह लंगर, ओ लालौ लोहार यसौ ॥५॥

---

२. संडासी – सडासी यंत्र । चख – चक्षु, नेत्र । धिखतां – क्रोध मे जलते । थहिया – किए हुए । चौळ – लाल, रक्तिम । अहरण – लुहार का यंत्र जिस पर गर्म लोहे को रखकर घड़ा जाता है । अकस – विरोध कर । घन – घन नामक लुहार का लोहा घडने का औजार, बडा हथोडा । त्रिजडां – तलवारें । बाहे – चला कर । घमरोल – घमासान युद्ध ।

३. सत्र – शत्रु । कवाड़ां – कुल्हाड़ो से, शस्त्रो से । भाजै – नाश करता है । अणियां– नोकें, सेनाओं को । भेडे – भिडावे, मिलावे । असी – ऐसी । अर – वैरी । हीसूं – (?) । कूट – पीट कर । लालियै – लालसिंह ने । कसी – सोधे, गर्व हीन, कृषि का एक औजार ।

४. कांटां – लोहे की छडे, कांटे । वळकाढ़ै – वाकपन निकाले । अयपच – लोहा । यसां – ऐसा । सादत – (?) । पिछंट्यां – पछाटें दी । जत्रीतार – यंत्र उपकरण से निकला हुआ तार ।

५. आसत – बल । आचा – हाथो से । अखमाल – अक्षयसिंह । ताछै – नाश-करें । यसौ – ऐसा ।

१६०. गीत साह तेजा सहसमलौत रौ

सूर पतसाह नै मालदे सँफळी, ठाकुरे वड वडे छाडिया ठाळ ।
गिरद जूझारियौ तेथ किण गादियै, प्रतपियौ तेजलौ गढ़े रखपाळ ॥१॥

समरे केम परधान सहसा सुतन, बिरद पतसाह सू हुवौ बाथे ।
जोधपुर महाभारथ कियौ जोरवर, हेम जो मार जस लियौ हाथे ॥२॥

भारमल हरै मेछांण दळ भाजिया, राव रै काम अखियात राखी ।
कोट नव अचळ राठौड़ साको कियौ, सोम नै सूर ससार साखी ॥३॥

हारिया असुर इम हिंदुवै जस हुवौ, वाणीये इसौ कर दाख वारौ ।
थापियौ मालदे तौनू तेजा थिरा, थयौ खड मुर खडे नाम थारौ ॥४॥

---

१६०. गीतसार–यह गीत शाह तेजा सहसमल के पुत्र का है। गीत मे राव मालदेव और शेरशाह सूरि के मध्य हुए युद्ध मे तेजा ने राव मालदेव का पक्ष ग्रहण कर स० १६०३ मे जोधपुर का किला हस्तगत किया, उसका वर्णन है। गीतकार ने लिखा है कि राव मालदेव और बादशाह शेरशाह के मध्य युद्ध हुआ, तब बड़े- बडे सामन्त योद्धा किनारा काट गए। किन्तु गादिया गोत्रोत्पन्न तेजाशाह दुर्ग रक्षार्थ गिरि की भाँति अविचल बना शत्रुपक्ष से जूझता रहा ।

---

१. सूर पतसाह – बादशाह शेरशाह सूरि। मालदे – राव मालदेव जोधपुर। सँफळी– सग्राम। वडवडे – बडे बडे। छाडिया – छोड़ गए। ठाळ – चुने हुए, निठल्ले, वेकार। गिरद – पर्वत। जूझारियौ – युद्ध किया। तेथ – वहाँ। गादियै – वैश्यो की प्रशाखा अथवा गोत्र। प्रतपियौ – राज्य किया। रखपाळ – रक्षक ।

२. समरे – युद्ध। बाथे – बाहुयुद्ध, सामने युद्ध करने भिडा। जसलियौ – यश प्राप्त किया ।

३. भारमलहरै – भारमल्ल के पौत्र। मेछांण – मुसलमान। दळ – समूह। भाजिया– नष्ट किए। अखियात – आख्याति, प्रसिद्धि। कोट नव – नवकोट, मारवाड के प्रसिद्ध नवो दुर्ग। साको – युद्ध विशेष। सोम – चद्र। सूर – सूर्य। साखी – साक्षी ।

४. असुर – मुसलमान। इम – यो। वाणीये – वनिये, तेजाशाह ने। इसौ–ऐसा। थापियौ – स्थापित किया। थिरा – स्थिर। थयौ – हुआ। मुरखडे – तीनो खण्डो मे, तीनों लोको मे। थारौ – तेरा, तुम्हारा ।

१६१. गीत राव भोज हाडा रो

बेगम मरण वडा भड़ वणठ्या, वोहो राजियां बदलियो भेस।
हिंदूकार तणी हद हाडा, करता किया तैंज सिर केस ॥१॥

अकबर हुकम कियो उमरावां, चक्रवत किणी न दाख्यो चोज।
बळा घणी न मांनो विसटाळो, भद्र न हुवो सवाई भोज ॥२॥

माथो मूछ मुंडाय मसंदां, पोहो पतिसाह मिल्या ले पेस।
कळंक अकेक सवै कुळ लागो, निकळंक अरजन हरो नरेस ॥३॥

पिता सूर वंधु दुरजनसल, अचरज कसूं अदीतो।
राखो टेक आगरे भोजा, वूंदी राव वदीतो ॥४॥

---

१६१. गीतसार–उपर्युक्त गीत बूंदी के शासक राव भोज हाडा का है। गीत में बादशाह अकबर की बेगम के निधन पर राव भोज के मुण्डन न करवाने का वर्णन है। गीतकार ने वर्णन किया है कि बादशाह अकबर के आदेश पर अन्य सभी भारतीय नरेशों ने उसकी बेगम की मृत्यु पर दाढी और सिर के केश मुण्डवा कर शोक प्रकट किया। किन्तु राव भोज ने केश न कटवा कर हिन्दुत्व के गौरव की रक्षा की।

---

१. बडा भड – बडे योद्धा। वणठ्या – (?)। वोहो – बहुत से। राजिया – राजवंशियो ने। हिन्दूकार – हिन्दुत्व। तणी – की। हद – सीमा, अपार। करता – कर्त्तार ने। तैंज – तेरे ही। केस – केश, बाल।

२. चक्रवत – चक्रवर्त्ती, बडे राजा। किणी – किसी ने। चोज – गर्व, साहस। बळाघणी – आडावळा के स्वामी, बूंदी नरेश। विसटाळो – राजदूत की सलाह, मध्यस्थ का परामर्श। भद्र – मृत्यु उपरान्त दाढी मूंछों के केश कटवा कर शोक प्रकट करने को भद्र होना कहा जाता है।

३ माथो – मस्तक। मूंछ – मूंछें। मुंडाय – कटवा कर, मुण्डन करवा कर। मसंदां–मुत्सदियों। पोहो – राजा। मिल्या – भेंट की, हाजिर हुए। पेस – नजराना। अकेक – एक एक। कुळ – वंशों के, कुलो के। निकळंक – कलंक रहित, निर्दोष। अरजन हरो – राव अर्जुन का पौत्र, राव भोज।

४. सूर – सुर्जन। अचरज – आश्चर्य। कसू – क्या, कैसा, कौनसा। अदीतो – नहीं देने पर। टेक – आन, मर्यादा। आगरे – आगरा स्थान पर। वदीतो–कहलाते।

१६२. गीत राव भोज हाडा रौ

भलौ भोज रहियौ अदग आप सारां भुजा, जरू ये बात ससार जांणी ।
मरण बेगम तणै हुवा हिंदू मुगल, पाठाण आगरे हेक पांणी ।।१।।

पड़े चक राह पतिसाह खीजै पोहम, खुरम हुकम हुवौ खळक खार ।
मूछ मोड़ अन चौहर पूर मछर, सूरउत राखिया ······ सार ।।२।।

घाट पालट करै नाट रावत घणा, मेळि ऊभा गहै क मेळा ।
ऊजळी सनस सैसार सोहो ऊपरै, चालियौ भोज खत्रीवाट चेळा ।।३।।

मुई वेगम समैं सैहस जग मूंडिया, दूर की मूछ पतिसाह दूवै ।
राखिया भोज यम ठाकुरे राखज्यो, हिदुवां ध्रम अहकार हूवै ।।४।।

---

१६२. गीतसार–उपर्युक्त गीत बूंदी के शासक राव भोज हाडा पर रचित है । गीतकार ने भोज का प्रशसन करते हुए लिखा है कि बादशाह अकबर की सेवा में रहकर भी राव भोज ने अपने अश्वो के शाही दाग नही लगने दिए तथा बादशाह की बेगम की मृत्यु पर हिन्दू, मुगल और पठानादि सभी उच्चाधिकारी आगरा में मृत्यु संस्कार के लिए सम्मिलित हुए किन्तु राव भोज ने 'भद्र' होने की क्रिया मे भाग नही लिया और अपनी दाढी-मूछे नहीं मुडवाई ।

---

१. अदग – वेदाग । जरू – दृढ, पक्की । मरण – मृत्यु पर । बेगम तणै – हुरम की, बेगम की । हुवा – हुए । हेक पांणी – एक पानी, एक साथ सभी शामिल होकर एक से होगए, मृत्यु के बाद जलाशय पर जाकर मृतात्मा को जाज्जलि आदि देने की क्रिया ।

२. खीजै – नाराज होकर । पोहम – पृथ्वी । खुरम – शाहजादा खुर्रम । खळक – ससार । मूछ मोड – मूछे तान कर । अन – अन्य । चौहर – चहरे, अनुयायी । मछर – मात्सर्य । सूरउत – सुर्जन का पुत्र ।

३. घाट पालट – आकृति परिवर्त्तन । नाट – इन्कार, छोटे । घणा – बहुत । मेळि – मिलाकर । ऊभा – खडे रह । गहै – पकडे । सनस – सनद, साक्षी । खत्रीवाट– क्षत्रियों का मार्ग । चेळा – परम्परा के नियम, मार्ग ।

४ मुई – मर गई । समैं – समय । मूंडिया – मुण्डन किया । दूवै – आज्ञा से । यम – इस प्रकार, ज्यो । ध्रम – धर्म । अहकार – घमण्ड, गर्व ।

१६३. गीत लाला हाडा री

मेवाड़ो महल जागळू जपै, देखि सखि रस वीखरियौ ।
खेतल लाल विन्हे खड खड़तां, वीजो ही सांवण डंबरियौ ॥१॥

आहाडा साभळे त्रिया आखै, तन रस मूझ तूझ टळियौ ।
हमीरौत सरस हुवत हठ, विरखा-रत दूजो वळियौ ॥२॥

सव सिणगार हार सिसवदनी, तव सारगडं तन तायो ।
सीसोदां हाडां सव रंगणे, यो वळेज पावस आयो ॥३॥

वस्यो लिलाट राह विग्रहतै, संकर मयक न राखि सकेह ।
सरणाई खेता सीसोदा, लाल केणी नह कीयौ लेह ॥४॥

---

१६३. गीतसार–ऊपर का गीत हाडा वीर लाला और सीसोदिया वीर खेता पर रचित है । गीतकार ने दोनो योद्धाओ की पत्नियों के परस्पर सम्वाद कराते हुए कहा है कि हे सखी ! दोनो का ही यौवन-सुख नष्ट हो गया । क्षेत्रसिंह और लालसिंह के विग्रह से असमय मे ही श्रावण मास-सी हरियाली छा उठी ।

---

१ मेवाडी महल – मेवाड की राणी । जागळू – जांगल प्रदेश की । जपै – कहती है । वीखरियौ – तीतर-वितर हो गया । खेतल – खेता, क्षेत्रसिंह । विन्हे – दोनो । खड़खड़तां – आपस मे अनबन होने पर । वीजो – दूसरा । सावण – श्रावण मास । डवरियौ – जल पूर्ण, सजल, हराभरा हो उठा ।

२. आहाडा – आहड़ स्थान विशेष के कारण सीसोदियों को आहाडा कहा जाता है । सांभळे – सुने । आखै – कहती है । तनरस – शरीर का आनन्द, यौवनानद । टळियौ – टल गया । हमीरोत – हम्मीर का पुत्र अथवा वंशज । विरखारत – वर्षा ऋतु । वळियौ – लौट आया, चला गया ।

३. सिणगार – शृंगार । सिसवदनी – शशिमुखी । सारंगड़े – कामदेव । तायो – तपाया । वळेज – पुन. । पावस – वर्षाकाल ।

४. वस्यो – निवासी बना हुआ । लिलाट – ललाट, भाल । राह – राहू । विग्रहतै – लडाई से, वैर विरोध से । संकर – शिव । मयक – चद्रमा को । सरणाई – शरणागत । केणी – किसी ने भी ।

१६४. गीत बीदाजी करणौत रौ गेहो भीखण कहै

बीजो निग्रह जुध जितूं कोप करि नाखै, बीदा असि अरि घडां बिचाळ ।
इळ पुड तैण आकपे आहंस, पनग कंध रुखै पायाळ ॥१॥

सत्र सिर विदुर नांखते साकुर, सात्रव घट भांजते असध ।
धूजै तेण जूअवळा धरती, फिण पायाळ संहारै कध ॥२॥

वाधै तूझ पवंग लूणावत, घड अरि भाजतो घण घाय ।
धमस तैण हैकप थअे धरती, निमध कंध थरहरै निहाय ॥३॥

रिड़मल हरा राळते रेवत, सात्रव घड़ा बिदुर स जगीस ।
पवगां तणै धरा चळ पावां, सरप पयाळ थरहरै सीस ॥४॥

---

१६४. गीतसार—उपरांकित गीत मे कवि ने बीदा राठौड द्वारा शत्रुओ पर कुपित होकर आक्रमण करने का वर्णन करते हुए लिखा है कि जब वह शत्रुओं पर कोप धारण कर अश्व-सेना का आक्रमण करता है, तो उस सेना के चरण-चापो से पृथ्वी आकम्पित हो उठती हैं; तथा शेषनाग से रक्षित पाताल लोक तक आन्दोलित हो उठते हैं ।

---

१ निग्रह – दमन रोक । नाखै – डालता है, आक्रमण करता है । असि – अश्व, तलवार । अरिघडा – रिपु सेना । विचाळ – बीच मे । इळ पुड – पृथ्वी तल । तैण – उससे । आकपै – कम्पित होते हैं । आहस – साहस । पनग – सर्प, शेषनाग । रुखै – दिशा, तरफ । पायाळ – पाताल लोक ।

२. विदुर – बीदा । साकुर – घोडे । घट – शरीर, सेना । भाजते – नष्ट करते, भंजन करते । असध – सधियो से विछिन्न । धूजै – कापती है । जूअवळां – कदमों से । फिण – सर्प (?) । वाधै – बढते है । पवग – घोड़े । लूणावत । लूणकर्ण के वशज । घड़ – शरीर, सेना ।

३. धमस – पदचापो की ध्वनि । हैकप – भयकपित । थअे – हुए । निमध – ? ।

४. राळते – बढ़ाते, भिडाते । रेवत – घोडे । पवगा – घोडो के । चळ–विचलित, चलने से । पावा – पैरो के । सरप – सांप ।

१६५. गीत नींवा करणोत राठौड़ री

साझे जिण मीर आणिया साकुर, जण जण मुख जस जूआजुवौ ।
विच वेहू देसां वीदावत, हीये सीवळा साल हुवौ ॥१॥

अनड हूओ आसलां तणै उर, प्रगड़ो लग खांडो पतसाहि ।
रिड़मल हरै आंणिया रेवंत, मांझी मीर रहचि रिण मांहि ॥२॥

अडग हूओ नींवौ अणसकत, घणै छाडीया नेस घणा ।
घर कावली करे धूआरव, तुरी लीया पतसाह तणा ॥३॥

---

१६५. गीतसार—उपरांकित गीत निम्बा राठौड पर रचा हुआ है । गीतकार ने गीतनायक द्वारा काबुल देश के अमीर को मार कर उसके घोड़े ले आने पर जन जन के मुख से निम्बा की वीरता की प्रशंसा होने का वर्णन किया है । शाही अश्वों को छीन लाने वाले उस निम्बा का भय सिवल शाखा के राठौड़ो के लिए शल्य बन कर शालने लगा ।

---

१. साझे – संहार किये, मारे । आणिया – लाये, लें आया । साकुर – घोड़े । जूआजूवौ – अलग अलग । वेहूं – दोनों । वीदावत – वीदा का पुत्र । सींवळां – राठौड़ो को सिघल शाखा के राजपूत । साल – शल्य ।

२ अनड – अनम्र, निर्भीक, वीर । प्रगड़ो – (?) । खांडो – तलवार । रिड़मल हरै – जोधपुर के राव रणमल का वंशज । रेवंत – घोड़े । मांझी – मुखिया । मीर – अमीर, यवन उमराव । रहचि – मार कर ।

३ अडग – अटल, अडिग । अणसकत – अशंकित, निर्भीक । नेस – घर, देश । घणा– अधिक । घर कावली – काबुल देश । धूआंरव – गांवों अथवा शाही सैनिक स्थानो को जलाकर, धूआधोर मचाकर । तुरी – घोड़े । पतसाह तणा – बादशाह के ।

१६६. गीत दुरगादास आसकरणोत राठौड़ रौ

कवर विरड़ियौ मुरड अमराव फिरिया सकौ, अेरसी वार बिखमी बणी आण ।
पाट चीतौड़ रौ हुवौ ऊथळपथळ, दुरग नू सिमरियौ तई दीवांण ।।१।।

अमरसी रीत अवरग तणो आदरी, चित्रगढ तणी आदू तजी चाल ।
सांमद्रोहां हूआ राणवाळा सुपह, राण पाराथियौ बियौ रिडमाल ।।२।।

राण सालम थका पाटवौ राण रौ, रांण हुय तखत बैठौ लियौ राज ।
राव रावत भड़ां पूठ दी राण नूं, आसवत आव ऊपर करण आज ।।३।।

---

१६६ गीतसार—उपरोक्त गीत मे राठौड दुर्गादास द्वारा मेवाड के महाराणा जयसिंह की सहायता करने का वर्णन है । कवि लिखता है कि महाराजकुमार अमरसिंह ने शाहजादे औरंगजेब का पथानुसरण कर अपने पिता के विरोध मे विद्रोह किया तब महाराणा ने सहायतार्थ दुर्गादास का आवाहन किया । दुर्गादास ने पिता-पुत्र में समझौता करवा कर गृहकलह को मिटाया ।

---

१. कवर — महाराज कुमार अमरसिंह । विरडियौ — विद्रोही बना । मुरड़ — पलट कर । फिरिया — विरोधी हो गए । सकौ — सब कोई । अेरसी — ऐसी । वार बिखमी — विषम वेला मे । बणी आण — आ बनी, उपस्थित हुई । पाट — सिंहासन । दुरग नू — दुर्गादास को । सिमरियौ — स्मरण किया । तई — तब, उसके लिए । दीवांण — महाराणा जयसिंह ने ।

२. अमरसी — अमरसिंह ने । अवरग तणी — औरंगजेब की-सी । आदरी — अंगीकार की, ग्रहण की । चित्रगढ — चित्तौड । आदू — अनादि, परम्परागत । चाल — व्यवहार, रीति । सुपह — योद्धा । पाराथियौ — प्रार्थना की । बियौ — द्वितीय ।

३ सालम थकां — वर्त्तमान रहते हुए । पाटवौ — राजसिंहासन का अधिकारी । हुय — बन कर । तखत — तख्त । भडां — सुभटो, योद्धाओ ने । पूठ — किनारा किया, मुड़ कर चले गए । आसवत — आशकरण तनय, दुर्गादास । ऊपर-करण — सहायता करने ।

१६७. गीत दुरगादास आसकरणोत राठौड़ री

नमो तूझ आतम सकति दुरग अनडां नड़ण, रिमा दे झाट त्रमाट रोड़ै।
होड करता जिकै लडण हाथू कियो, जिकै हाजर खड़ा हाथ जोड़ै ॥१॥

करांमति देखि छति नींबदे कळोधर, खळा भुज वळोवळ जितू खांडे।
चाळवत्रे जिकै लड़ता चापड़ै, मांगवा बाजरी चाळ मांडे ॥२॥

कहै आदेस आदेस आलम कलम, देखि पराकम मछर दूणां।
पागड़ा काछि लड़ता जिकै पाधरै, लगाया पागड़े बिया लूणा ॥३॥

दिखावण देख ऊपेख राखण दुनी, जळ चाढ़ण पखां छळां जागै।
निजर हेठौ जिकै किणी नै नाणता, वोहिज खिजमत करै निजर आगै ॥४॥

जाय अगजीत रै भींच जैसाह नूं, उदैपुर थापियो वडे आथाण।
अमर नूं आच ग्रहि तखत सू उठाड़े, आच-बाधै पगे लगायो आंण ॥५॥

---

१६७. गीतसार—इस गीत मे कवि ने वीर श्रेष्ठ दुर्गादास राठौड के साहस और पराक्रम का वर्णन करते हुए लिखा है—हे दुर्गादास ! तेरा साहस वन्दनीय है जो योद्धा तेरी बराबरी करने की शेखी बघारते थे, उन उत्पथ-गामियों को दलित कर तुमने सीधे बना दिए। तेरे से सामना करने वाले हाथो को ऐसे झटके दिए कि वे ही हाथ विनीतता प्रकट करने लगे।

---

१. आतम सकति – आत्म शक्ति। दुरग – दुर्गादास। अनडां नडण – वश मे न आने वालो को वश मे लेने वाला। रिमां – दुश्मनों को। झाट – प्रहार। त्रमाट रोडै – दुदुंभि या नगाडे बजवाकर। होड – होड बराबरी का दावा। जिकै – वे।

२. करांमति – करामात, चमत्कृति। छति – क्षिति। नींबदे – दुर्गादास के पितामह का नाम। कळोधर – कला को धारण करने वाला। खला – वैरियो। वळोवळ – पुन पुन। चाळ-वधे – कमर कसे। चापडै – युद्ध के मैदान में। बाजरी–राजस्थान मे बहुतायत से उत्पन्न होने वाला बाजरा नामक अन्न। चाळ – झोली, आंचल।

३. आलम कलम – बादशाह। पराकम – पराक्रम। मछर – मात्सर्य। दूणा – द्विगुना। काछि – घोडे। पाधरै – सीधे, सरल। लगाया पागड़े – सेवक बनाये। बिया – दूसरा। लूणां – लूणकरण।

४. ऊपेख – विशेष कथा, विशेषता। दुनी – संसार में। जळ चाढण – सम्मानित करने। पखां – मातृ-पितृ पक्षों को। छळां – युद्धो, लिए। हेठो – नीची नजर कर। किणी – किसी को। नांणता – देखते थे, नही आते थे। वोहिज – वही। खिजमत – सेवा।

५ अगजीत – महाराजा अजितसिंह राठौड। भींच – योद्धा, वीर। जैसाह नूं – महाराणा जयसिंह को। थापियो – स्थापित किया। आथांण – स्थान, किला। आच ग्रहि – हाथ पकड कर। आच बाधै – हाथ बांध कर। पगे लगायो – चरणो मे उपस्थित किया, चरण स्पर्श करवाए। आंण – लाकर।

पूठ दुरगै बडा घातिया प्रवाड़ा, कवेसुर बात जुग च्यार कहसी।
रांण चीतौड़ रौ राज पायौ रिधू, बडा राठौड रौ आंक बहसी ॥६॥

१६८. गीत दुरगादास आसकरणौत राठौड़ रौ

कहे यम दोय राह धिन तूझ दुरगा कमध, कमण पोहचै तूझ करणे।
साहिजादां तणै रहे जगत सरणे, साहिजादा रहै तूझ सरणे ॥१॥

तवै हिंदू तुरक नमो आसातणा, तौ बिना कवण असमांन तोलै।
असपती सुतन चै रहे ओलै अवर, असपती सुतन रहै तूझ ओलै ॥२॥

पुणै सुर असुर दुरगेस अधको पहुचि, बडां अनड़ां सिरै आक वाळै।
पूत अवरग तणै लार सारा पळै, पूत अवरग तणा तूंहीज पाळै ॥३॥

तड़ उभै बदै नीबाहरा निरभैतण, सबळ खळ घातिया भलां सासै।
दुनीपति तणै वासे बहै सही दुनी, बहै दुनियाण पति तूझ वासै ॥४॥

---

१६८. गीतसार–इस गीत मे वीरवर दुर्गादास के पौरुष की प्रशसा करते हुए गीत-लेखक ने कहा है कि हिन्दू और यवन दोनो धर्मों वाले दुर्गादास के कृतित्व की सराहना करते है। ससार मे ऐसा कौन है जो उसके कार्यो की बराबरी कर सके। आज तक सभी कोई शाहजादो की शरण में अभय पाते रहे है किन्तु आज से शाहजादे दुर्गादास की शरण मे निर्भय रहते हैं।

---

६. पूठ – अपने पीछे। घातिया – किये। प्रवाड़ा – प्रशस्ति के कार्य, प्रशंसा के काम। कवेसुर – कवि श्रेष्ठ। जुग च्यार – चारो युगो तक। कहसी – कहेंगे। रिधू – स्थिर। आंक – कीर्त्ति के अक्षर। बहसी – चलते रहेंगे।

१. दोय राह – हिन्दू मुसलमान दोनो धर्मो को मानने वाले। धिन – धन्य। कमंध – राठोड़। कमण – कौन। पोहचै – पहुंचे। करणे – कर्त्तव्य-कर्मको। तणै – के। सरणै – शरण मे।

२. तवै – कहते हैं। आसा-तणा – आशकरण के पुत्र। कवण – कौन। असपति – बादशाह। चै – के। ओलै – ओट में, रक्षा में। अवर – अपर, अन्य।

३ पुणै – कहता है। सुर असुर – देव-दानव, हिन्दू-मुसलमान। पहु चि – सामर्थ्य, गति, पहुंच। अनडां – निर्बन्धों। लारा – पीछे। पळै – पलते है। पूत – पुत्र। अवरंग तणा – औरगजेब के।

४. तड उभै – दोनो शाखा वाले, हिन्दू और यवन। बदै – प्रशंसन करते है, कहते हैं। निर्भैतण – निर्भयता का। सबळ – शक्तिशाली। घातिया – मार दिए, संहार किए। सासै – सशय, साहस। वासे – पीछे। वहै – चलते है। सही – सभी, समस्त। दुनियाण पति – बादशाह।

किता जुग हुवा नह यसी कीधी किणी, बदै सारो जगत वाह जी वाह ।
साह सुत खोसि अनमी रयौ साह सू, साहिजादा दिया मनायौ साह ॥५॥

१६९. गीत बल्लू राठौड़ री जुद्ध री

अति आगम बलू सुरग चै ओछब धारिया नेह दूणा चित धाख ।
आखिज फुरै दाहिणी अबळा, अछर फुरै ताय डावी आख ॥१॥

वेहू उदमाद अदोह बराबर, खीमाहरा विचै रिण खेत ।
फुरिया कुवळ सुवळ अति फुरिया, नारी रभ सरीखा नेत ॥२॥

चढि रथ अेक गोख चढिया चाहत, लड़ता कमधज बीज लख ।
चख जींमणो फुरै चद - वदनी, चदावदनी वाम चख ॥३॥

दोयण दुजड़ पछाडि दळावत, धण तज अपछर थयौ धणी ।
होता मेळ बिछोहो होतां, आगम कहिया नैण अणी ॥४॥

---

१६९ गीतसार–ऊपर का गीत बल्लू राठौड के रण-प्रसग का है । कवि ने लिखा है कि बल्लू ने जब युद्धार्थ तैयारी कर प्रस्थान किया तब शत्रु-नारियो की दाहिनी आंखें अमगल का संकेत देने लगी और अप्सराओ की बाँयी आंख फुर कर प्रिय मिलन की शुभ सूचना देने लगी ।

---

५. यसी – ऐसी । कीधी – की । किणी – किसी ने । बदै – कहते है । खोसि – छीनकर । अनमी – स्वतत्र, अनम्र । रयौ – रहा ।

१. सुरग चै – स्वर्ग के । ओछब – उत्सव । नेह – स्नेह । चित – चित्त । धाख – इच्छा । अबला – अबला, स्त्री । अछर – अप्सरा । डावी – बाँयी ।

२ वेहू – दोनो । उदमाद – उमग, उपद्रव । अदोह – चिंता, सोच । खीमाहरा – खेमकरण के पौत्र । फुरिया – स्फुरित हुए । कुवल – बुरे पक्ष मे, प्रतिकूल । सुवळ– अनुकूल । रभ – अप्सरा । सरीखा – समान । नेत – नेत्र ।

३. गोख – गवाक्ष, झरोखा । लख – जानकर । चख – चक्षु, आंख । जीमणो – दाहिना । वाम – बाँयी ।

४. दोयण – शत्रु । दुजड – तलवार से । पछाडि – मार कर, प्रहार देकर । दळावत – दलपतसिंह के पुत्र । धण – धन्या, पत्नि । थयौ – हुआ । धणी – स्वामी । मेळ – मिलन । बिछोहो – वियोग । आगम – पहिले से ही । नैण अणी – नेत्रों की पलको के कोण ने, नेत्र – किनारे ने ।

१७०. गीत सांणोर कंवर चैनसिंघ दूदावत रौ

अई रोस चैना गजा मोस भाजण अडै, वीर धर उजाळण बधती वेस ।
तो जिही निराताळा भिडज तोरवै, अखाडै ओरवै तिकां आदेस ।।१।।

सिंघ जालिम तणा भडा अणबीह सभि, बैरिया पाडतो ऊभाड़तो बाढ ।
उभै छत्रधारियां तणी घड़ ऊपरै, गडीरै धज बिलद तूही अवगाढ ।।२।।

वीच भाला गयो गजा ढाला विहर, कळै जोधाण चा सार काजा ।
फौज नागाण बीकाण वाळी फुरळ, रूकबळ धिकाया उभै राजा ।।३।।

बार तोछां मछा तेम घड़ बाढिया, तुरछ गज हैमरा नरां तूटा ।
पांण तज गजण बखतेस पाछा वगां, खळकिया मांण घमसाण खूटा ।।४।।

पाट दूदाण उजवाळ पिड़ि ऊपडै, पिता जोडै छता बिरद पाया ।
जुडे जुध अपछरां नेहडा जोडवा, आव बळ छेहडा छोड आया ।।५।।

---

१७०. गीतसार–उपरांकित गीत कुमार चैनसिंह राठौड़ की युद्ध-वीरता का है। कवि ने चैनसिंह के रोषान्वित रूप का वर्णन करते हुए लिखा है कि वह जालिमसिंह-तनय चैनसिंह अपने वीर साथियों को सजाकर शत्रुओं की सेना पर चला। बीकानेर और नागौर की दोनों सेनाओं के गजयूथों का संहार करता व महाराजा गजसिंह और राजाधिराज बख्तसिंह तक को पीछे धकेलता हुआ युद्ध में अडिगतापूर्वक पैर रोप कर खडा रहा।

---

१. रोस – रोष, क्रोध। चैना – चैनसिंह। गजा-मोस – हाथियों को मार। अडै– सामने डटे। उजाळण – उज्ज्वल करने। बधती वेस – वृद्धि को प्राप्त होती आयु। तो जिही – तुम जैसे। निराताळा – अचानक। भिड़ज – घोडे। अखाडै– युद्धस्थल में। ओरवै – प्रवेश करावे, झोंके। तिकां – उनको। आदेश – नमन हैं।

२ भड – योद्धाओं। अणबीह – निडर। पाडतो – भूमि पर पटकता। ऊभाडतो – मारता, प्रहार देता। बाढ – तलवार की धारा से। उभै – दोनों नागौर और बीकानेर की। घड-सेना। गडीरै – गर्जना करता है। धज – वीर। अवगाढ – दृढता।

३ भाला – सेलों के। विहर – चीर कर, पार कर। कळै – युद्ध। सार – सिद्ध करने, सफल बनाने। काजा – कार्यों को। नागाण – नागौर। बीकांण – बीकानेर। वाळी – वाली, की। फुरळ – अस्त व्यस्तकर, बिखेर कर। रूक बळ – तलवारों के बल से। धिकाया – पीछे धकेले।

४. बार – जल। तोछां – तुच्छ, थोडा। मछा – मछलियां। घड – सेना, शरीर। बाढिया – काटे हुए। तुरछ – ढाले। हैमरां – घोडे। तूटा – टूटे हुए। खळकिया – बह गए, छोड चले। खूटा – समाप्त हुआ।

५. दूदाण – मेडतियों, दूदावतों के। पिडी – युद्ध। छता – मौजूदगी में। नेहडा – स्नेह, प्रेम। आव बळ – आयुबल। छेहडा – आंचल, गठबंधन, अन्त।

१७१. गीत गोयंददास भायल रौ सिवाणा री वेढ़ रौ

गोयद यूं कहै तरवार भुजा ग्रहि, अरि दळ मोड़ा आया ।
कोट तणी भुज लाज कला रै, भाखर मूझ भळाया ।।१।।

साझण अड़प कलियांण सिवाणै, भायल भाखर भेळां ।
हूं घण दीहो वाट हेरतो, वैरियां ताई वेळां ।।२।।

वसियां दे गिरवर चै वासा, विढ़वा कज वेढ़ावै ।
मवडैचो जीरवै पग मांडै, जगाहरो नह जावै ।।३।।

पुखते राजा तणो प्रधांने, मछर तजै न मिळियो ।
ऊभे गोयद न भिळियो अनड, भायल पड़िया भिळियो ।।४।।

---

१७१. गीतसार—उपर्युक्त गीत गोविन्ददास भायल की युद्ध-वीरता का है । गीतकार ने सिवाना-दुर्ग पर गोविन्ददास द्वारा लडे गए युद्ध का वर्णन करते हुए लिखा है—गोविन्ददास तलवार उठाकर कहता है कि दुर्ग पर अधिकार करने के लिए शत्रु बहुत देर करके आए । किले के स्वामी राव कल्ला ने इसकी रक्षा का दायित्व मुझे सौंपा है । इस प्रकार उसने शत्रु से जैसा कहा था ठीक वैसा ही किया । जब वह वीर, रण मे मारा गया तब कही जाकर किले पर वैरियों का कब्जा हुआ ।

---

१. गोयंद – गोविन्ददास । भुजा ग्रहि – हस्तगत कर, हाथ मे उठा कर । अरिदळ – अरि समूह । मोडा – देरी से, विलम्ब करके । कोटे तणी – दुर्ग की । लाज – लज्जा । कला रै – राव कल्ला के । भाखर – पहाड । मूझ – मुझे । भळाया – सौंपा, सुपुर्द किया ।

२. साझण – मारने के लिए । अडप – हठ, साहस । कलियाण – राव कल्ला, राव कल्याणसिह । भायल – राजपूतो की जाति विशेष । भेळां – शामिल, साथ । हू – मैं । घणदीहो – बहुत दिनों से । वाट हेरतो – प्रतीक्षा करता था, मार्ग देखता था । ताई – लिए । वेळां – समय ।

३. चै – के । वासा – निवास, पीठ । विढवा – लडने । कज – लिए । मवडेचो–प्रांत विशेष का नाम । जीरवै– सहन करें । जगाहरो – जगतसिंह का वशज । नह – नही ।

४. पुखते – दृढ, पुराने । तणो – को । प्रधाने – प्रधांने, मुख्य । मछर–मात्सर्य । मिळियो – मिला । ऊभे – साबत खड़े रहते । भिळियो – जीता गया । अनड – किला, पहाड । पड़ियां – धराशायी होने के बाद ।

१७२ गीत मैंगळ रा बीनांण रौ रूपसिंघ राठौड़ रौ

हळवळ दळ प्रघळ हैमरां हूकळ, सत्रहर न थियै मनै सुख ।
मद आयौ अरहर तड मोडण, रूपसिंघ गजराज रुख ॥१॥

किसना तणौ बिचै नवकोटां, वांमी-वहण भरण जस वीख ।
द्रोयणां व्रखां भाजेवा डारण, सिंघळी बार तणा सारीख ॥२॥

दातूसळां सावळां डमर, लगर लाज खळहळे लार ।
सालुळ व्रख लख खळां सघारै, पटहथ जेहा बिरद पगार ॥३॥

अन पह सीस न मानै आंकस, राय राजा खोटावै रांण ।
जमराण भाजे जळता जुध, तल-डांणै लागो तुडतांण ॥४॥

—ऊका बोगसा रौ कह्यौ

---

१७२. गीतसार—उपर्युक्त गीत रूपसिंह राठोड का है । गीतकार ने गीतनायक को हाथी के रूप मे चित्रित कर गीत का सर्जन किया है । वह कहता है कि अपरिमित योद्धाओ को साथ लिए गज तुल्य रूपसिंह भाले रूपी दन्तशल्यो से अरि रूपी वृक्षो का उन्मूलन करता चलता है । वह अन्य किसी भी राजा अथवा योद्धा के भयरूपी अंकुश से डरता नही है ।

---

१. हळवळ – हलचल । दळ – सेना । प्रघळ – अधिक । हैमरा – घोडे । हूकळ– हिनहिनाहट । सत्रहर – शत्रु । न थियै – नहीं होता । मद – मस्ती । अरहर– वैरी । तड़ – समूह । रुख –भाँति ।

२. तणौ – तनय, का । वांमी – बांए । वहण – चलने वाला । वीख–चाल, कदम । द्रोयणां – दुश्मन रूपी । व्रखां – वृक्षो को । भाजेवा –.नष्ट करने । डारण – चीर । सिंघळी – हाथी । सारीख – सदृश ।

३. दातूसळां – दन्तशूलो । सावळा – भाले । लगर लाज – लज्जा रूपी पदभूषण, लज्जा रूपी शृङ्खला । खळहळे – ध्वनि विशेष करते । लार – पीछे, साथ । सालुळ – चलता हुआ । सघारै – विनष्ट करे । पटहथ – हाथी ।

४. अन पह – अन्य राजा । आंकस – अंकुश । तळडांणै – मस्ती मे । तुडताण – सेना को नष्ट करने, कुल गौरव मे वृद्धि करने वाला, मूछो पर वल देने वाला ।

१७३. गीत खेवट रा बीनांण रौ जादूराम वणसूर रौ

कहर वखत घोरार दरियाव चढ़ियो कढ़ां, दिये कूण कान फरियाद दाद्दू ।
लाज कुळ लियां खेवट वणे हलाड़ै, जठै खटवरण नाव जाद्दू ।।१।।

प्रथी दध ग्रथग जुग अंत वरतै पौहर, धरम जजमान डग खाय धोका ।
करै अतत मदत खेवै भले करणे, नंद चैना तणो वरण नोका ।।२।।

लहर सामंद डूबै घणां लोभ सूं, पारावार अंत विना पारे ।
वाह ग्रह वंस अवरी तणो बूडतां, तिकण पुळ मांह वणसूर तारे ।।३।।

मुदै नक्र चक्र कै राज रा मुतद्दी, देख जोधांण नै डूब देवै ।
चीत कर घणी समझास कर चारणा, खेवट्ट भैरहर नाव खेवै ।।४।।

—गंगाराम बोगसा रौ कह्यौ

---

१७३ गीतसार–ऊपर का गीत चारण वर्णोत्पन्न जादूराम वणसूर का है । कवि गंगाराम बोगसा ने गीत नायक को केवट बनाकर रूपक का विधान किया है । वह कहता है कि शासक रूपी सागर गंभीर गर्जन कर अपनी मर्यादा का उल्लंघन करने को उद्यत है । ऐसे घोर विपत्तिकाल मे फरियादी की पुकार कौन सुने ? किन्तु ऐसे समय में भी चारण वर्ण की लड़खड़ाती नैया को जादूराम रूपी मल्लाह साहसपूर्वक पार लगा रहा है ।

---

१. कहर – विपत्ति । घोरार – घोर रूप मे, भयानक । कडा – किनारा, विनाश पर । कूण – कौन । दाद्दू – दाद-पुकार । खेवट – केवट, पार उतारने वाला । हलाड़ै – चलाता है । खटवरण – षट् दर्शन, ब्राह्मण, चारण, जोगी, जगम, सन्यासी और जतियो की षट् दर्शनो मे गणना होती है ।

२. दध – उदधि, समुद्र । ग्रथग – अथाह । जजमान – यजमान । डग – डिगमगा कर । अतत – अत्यन्त । नंद – पुत्र । चैना तणो – चैना का ।

३. सामंद – समुद्र । पारावार – समुद्र । वांह – भुजा । अवरी – चारणो की देवी आवड । तिकण – उस । पुळ – क्षण, समय ।

४. नक्र – मगर, मत्स्य । चीत कर – ध्यान मे लाकर । घणी – बहुत । समझास कर – समझा कर । खेवट्ट – केवट । भैरहर – भैरवदान का पौत्र । खेवै – पार उतारे ।

१७४. गीत गोवरधन गिर रा बीनांण रौ गोरधन कूंपावत रौ

आयौ इंद्र जेम मुराद उजेणी, फौजां घण बाहर फिरियाह।
गढपतिया परबत गोवरधन, आडौ दिओस ऊबरियाह ॥१॥

मूंसळ-धार दंतूसळ मैंगळ, धड़ धड दड़ड़ वहे रतधार।
बडा पहाड़ गोवरधन वासे, सारा ऊवरिया सरदार ॥२॥

खाळ नाळ रुहिराळ खळहळे, जाझा बाण वरसतां झाळ।
ओळै कमध तणै ऊवरिया, गढ़पत ग्वाळ बाळ गोपाळ ॥३॥

अवडौ भार सहै सिर ऊपर, बरसै खगधारां बौछाड़।
ब्रज जिम राख लाख दळ वासै, पडियौ चद तणौ बड पहाड़ ॥४॥

---

१७४. गीतसार–उपर्युक्त गीत ठाकुर गोवर्धनदास कूंपावत राठौड का है। गीत लेखक ने शाहजादे मुराद को इन्द्र, उज्जैन के रणक्षेत्र में उपस्थित युद्धाभिलाषी राजाओं को ब्रज के गोप और गोवर्धनदास को गोवर्द्धनगिरि के रूप में वर्णित कर गीत की रचना की है। कवि कहता है कि उज्जैन की समरस्थली में इन्द्र सदृश मुराद सेना रूपी मेघमाला को लेकर उमड आया। उस प्रलयकाल मे गोवर्द्धन रूपी गोवर्द्धनदास की ओट मे अन्य योद्धा रूपी गोप अपनी जीवन-रक्षा कर सके।

---

१. घण – मेघ, घन। बाहर – चारो ओर। परवत – पर्वत। आडौ – ओट स्वरूप। ऊबरियाह – जीवित बच रहे।

२. दंतसूळ – दतशल्य। मैंगळ – हाथी। दडड़ – तरल पदार्थ के ऊपर से गिरने की ध्वनि का भाव। वहे – बहती है। रतधार – रक्तधारा। वांसै – पीछे, ओट मे। सारा – समस्त।

३. खाळ नाळ – नाला। रुहिराळ – रुधिर। खळहळे – त्वरा से बहे। जाझा – सघन। झाळ – ज्वाला, तोपो की अग्नि। ओळै – ओट मे। कमंध – राठौड़, गोवर्द्धनदास। ग्वाळ – ग्वाले। बाळ – बालक।

४. अवडौ – विकट। भार – दायित्व, वजन। खगधारां – खड्ग धारा। बोछाड– बौछार। चंद तणौ – चन्द्रसिंह का पुत्र। बड पहाड़ – बडागिरि, गोवर्द्धन पहाड़।

१७५. गीत मेघ रा वीनांण री राजा गजसिंघ राठौड़ री

वादळ दळ मेळ खडग सज वीजळ, कमधज कांठळ फौज कर ।
घण गाजै कमधज विरद घण, आफळ मरै कंठीर अर ॥१॥

मेघाडंमर साज उत मस्तक, मयद रिमां चो गमवां मूळ ।
जळहर गरज करै जोधपुरी, सत्र आफळै मरै सादूळ ॥२॥

तोरण सुभट घटा थट कटका, तिजड समवड़ दामणी तप ।
सूर सुजाव घरहरै सुरपत, वनपत अर खंगरै वप ॥३॥

मारू सुपह पखै खंड मडण, काळा अन पह मीड़ करै ।
गरजै इंद अभिनमो गांगी, मंयद पिसण किण खीभ मरै ॥४॥

---

१७५. गीतसार—ऊपर के गीत में राजा गजसिंह राठौड की रण-क्रीड़ा का मेघ की क्रिया के साथ रूपकात्मक चित्रण किया गया है। कवि का कथन है कि जब इन्द्र रूपी गजसिंह बादल रूपी सेना तथा विद्युत रूपी तलवारें सम्हाल श्यामघटा तुल्य सेना का गर्जन करता है, तब उसके भय से शार्दूल रूपी शत्रु अपना सिर पछांट कर स्वयं ही मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं।

---

१. वादळ दळ – मेघ रूपी सेना। खडग – तलवार। सज – सज्जित कर। वीजळ – विद्युत। काठळ – घनघोर घटा। घण – मेघ, अधिक। विरद – विरुद। आफळ – व्यर्थ परिश्रम से थककर, भिडकर। कंठीर – सिंह। अर – अरि, वैरी।

२. मेघाडंमर – छत्र विशेष। मयद रिमां – सिंह रूपी शत्रुओं। चो – को। गमवां – नाश करने। मूळ – जड, वंश। जळहर – जलधर, वादल। सत्र – शत्रु।

३. घटाथट – घटा समूह, घटा रूपी सेना। कटकां – सेनाओं। तिजड – तलवार। समवड़ – समान। दांमणी – दामिनी। तप – आतप।

४. मारू सुपह – मारवाड़ प्रदेश का राजा। काळा – वीर। पह – राजा, योद्धा। मीड़ – बराबरी। अभिनमो – अभिनव। गांगी – राव गांगा। पिसण – पिशुन, शत्रु। खीभ – रुष्ट होकर, नाराज होकर।

१७६. गीत ठाकर गंभीरसिंघ सोळंकी रो

सूरापण रो छाकियो देखै तमासो ऊगतो सूर,
धरातळे पौड़ां सेस गाजियो धमांम।
पालवी हजांरां मिळै साजियो धानंकां प्रळै,
सोळंखी ऊजळी खागां बाजियो सग्राम ॥१॥

छकै प्याला चडी भरै नारगां अछकै छकै,
बारगां बरेबा भुकै गैणागा बेवाण।
सामदा फूटियो चहू तरफ्फा रूठियो सत्रां,
ऊखड़ै गभीरो तेगा जूटियो आराण ॥२॥

कायरा उचाटा फाटां आळखा ताकियै केता,
प्रळैकाळ भाटा बजै जव्राटा पाराथ।
धाडायतां थाटा भार ओघाटा भालियौ धीठा,
भुजाटां खगाटा बागो गभीरो भाराथ ॥३॥

---

१७६. गीतसार—इस गीत में गीतकार ने सोलकी खांप के योद्धा गभीरसिंह और लुटेरो के पारस्परिक झगड़े का वर्णन किया गया है। गीत में वीर गभीरसिंह के पराक्रम प्रदर्शन का वर्णन करते हुए लिखा है कि हजारो डाकुओ ने धनुष-बाणो के प्रहारो से प्रलय का सा दृश्य उपस्थित कर दिया। किन्तु वीर गभीरसिंह निर्भीकता पूर्वक उन पर तलवारों के आघात करता रहा। युद्ध की भयानकता को देखकर सूर्य अचम्भित हो आकाश मे स्थिर होगया।

---

१. सूरापण रो – वीरता को, शूरापन का। छाकियौ – छका हुआ। ऊगतो – उदित होते। सूर – सूर्य। धरातळे – धरातल मे, पाताल मे। पौड़ां – पदाघातो। सेस – शेषनाग। धमाम – धमधम की ध्वनि। पालवी – पहाड़ों पर भीलादि वन जातियो की अकेली ढानियां, ढानियो के आवासी भील। धानंका – धनुषो का। प्रळै – प्रलय। खागां – तलवारो से। बाजियौ – लडा।

२. छकै – तृप्त हो। चडी – चण्डिका। नारगा – रक्त से (?)। अछकै – अतृप्त। बारगा – अप्सराओ ने। बरेबा – वर रूप मे प्राप्त करने के लिए। गैणागां– आकाश में। वेवाण – विमान। सामदां – समुद्र। रूठियो – रुष्ट हुआ। ऊखड़ै – क्रुद्ध होकर, बेकाबू हो। जूटियो – भिडने का भाव। आराण – युद्ध।

३. उचाटा – चितातुर। आळखा – छिपने का स्थान। केता – कतिपय। भाटां – प्रहार। जव्राटा – वज्र तुल्य। धाड़ायतां – लुटेरो। ओघाटां – विकट स्थानों, भयंकर रूप से। धीठा – दुष्टो ने, ढीठों ने। भुजाटा – भुजाओ से। खगाटां – तलवारो के। बागो – भिडा। भाराथ – युद्ध।

ऊचीश्रवा हंस रथां खंचायो संपेख आभ,
काळी डाक पाठ भैरूं वंचायो श्रोघार।
जटी-धू नंचायो रुण्डमाळ रै कारणे जोगी,
जनेवां रचायो जंग गंभीरै जोधार ॥४॥

तेण वेळां बागां लै उछाळकै पटक्कै तुरी,
सरां पंज छूटे चाप जाळकी सजाय।
बोल माथै पाछो फरे श्राळको न ताके वैरी,
वाजणो तैं रूकां नराताळ की वजाय ॥५॥

मिळै असूराण वीर भाग रो समंदां मथै,
खेलै होळी फाग री अथाग री खतग।
भड़ै पडा खाग रो विहंडां खंडा वगै जूझ,
पीठांण गंभीरो पड़ै आग री पतंग ॥६॥

खोटवै सांकळां सिध बाज रै किलफ्फां खुलै,
भीम तैण गजां भूले गाजरे भंभीर।

---

४. ऊचीश्रवा – उच्चैश्रवा। हंस – सूर्य। संपेख – देखकर। आभ – आकाश में। काळी – कालिका ने। डाक – एक वाद्य विशेष। भैरू – भैरव, शिव के गण। जटी-धू – शिव। नचायो – नृत्य करवाया। जनेवां – तलवारों का। जंग – युद्ध। गंभीरै – गंभीरसिंह ने।

५. तेण वेळां – उस समय में। वागां – लगामें, रासें। तुरी – घोड़ा। सरां – वाणों। चाप – धनुष। माथै – पर। आळको – बचने की क्रिया का भाव। रूकां – तलवारों से। नराताळ – अनवरत, अविराम। बजाय – चला कर, प्रहार कर।

६. मिळै – मिलकर। असुराण – दैत्य। समदां – समुद्र। मथै – मथने की क्रिया का भाव, बिलोड़े। होळी – होलिका। अथाग – बेहद, अथाह। खतंग – क्षतांग. वीर। भड़ै – गिरे, धराशायी हुवे। पंडां – शरीर। खाग – तलवार। बिहंडां खंडां – खण्ड-विहंड, टुकड़े टुकड़े। जूझ – युद्ध। पीठाण – युद्ध में। गंभीरो – गम्भीरसिंह। आग री – अग्नि का। पतंग – स्फुलिंग, पतंगा।

७ खोटवै – खुले। सांकळां – जंजीरों से। सिंध – सिंह, हाथी (?)। बाज – बाज – पक्षी। किलफ्फां – पट्टिये, कलिकें, बंधन। तैण – उनको। गाजरै–गर्जना से। भंभीर – भयानक, भयजनक।

घारू-जळां कोड़ें ओड़ें हलारां मांझियां धाडे,
गंगेव ज्यूं पाड़ें सरां जाळपे गभीर ॥७॥

पेलै पार बरे बींद झराये बेवाणां परी,
सोक सरां वायकुंडा पुराये सादीह।
फरां फाड़ें सत्रां तोडें चुराये भालडां फूटे,
अेके-राड़ें फतै जांगी घुराये अबीह ॥८॥

घरा धारी लोक भाही पधारी सुरगां धाम,
नजां सात पैढी तारी आहुड़ें निघात।
सांम लूण धारी करी ऊजळी सोलंखी सत्रां,
माता काम बार्ता प्रथी ऊबारी आख्यात ॥९॥

घारूजळां – तलवारों। कोड़ें – दोनों भुजाओं की। ओड़ें – ओट ले, ढाल। हलारां – आक्रामकों के। मांझिया। मुखियों को। धाड़ें – लुटेरों, दहाड़ कर। गंगेव – भीष्म पितामह। सरांजाळ – बाण समूह।

८. पेलै पार – उस ओर, इस ओर से उस ओर। बरे – वरण करे। बींद – दुल्हा। बेवाणां – विमानों में। परी – अप्सराएँ। सोकसरां – तीरों के चलने की ध्वनि। वायकुडां – वायुचक्र। पुराये – बजवाए। सादीह – खुशी के वाद्य। फरां – बगल का भाग। फाड़ें – चीरकर। भालडां – बाण, बाणों की नोकें। अेकेराड़ें – एक ही युद्ध में। फतै जांगी – विजय के नगाड़े। घुराये – घोष करवाये। अबीह – निर्भय, अभय।

९. सुरगांधाम – स्वर्गलोक। नजां – निज की, स्वय की। पैढी – पीढ़िया। तारी – उद्धार किया। आहुड़ें – युद्ध, युद्ध मे टक्कर लेकर। निघात – भयंकर प्रहार। सांम – स्वामी। लूण – नमक। ऊजळी – उज्ज्वल, कीर्तिमान्। सत्रां – शत्रुओं। मातां कांम – युद्ध मे काम आते। ऊबारी – कायम रक्खी, बचाई। आख्यात – आख्याति, प्रसिद्धि, अक्षय वार्त्ता।

१७७. गीत महाराव रामसिंघ हाडा रा भाला रौ

किनां संभू रौ उभाळौ रोस काळ रौ पियालौ किनां,
पैलां रत्र आलौ रहे जलालौ पाराथ।
पांण आंमेण रौ यू विलालौ सालौ पातसाहां,
भालौ रांमेण रौ खळां उथालौ भाराथ ॥१॥

सत्राटां देवाळौ दाह ओज में उजाळौ सूर,
लडंतां काळ रौ चाळौ पैला अंत लाग।
पंखाळौ भुयग काळौ धणी रौ बजाळौ फतै,
राव वाळौ दीसै इसौ छड़ाळौ व्रजाग ॥२॥

करा हूं उतोले जठै समदां पारथी कांपै,
अगा दीह घौळै बीजा नरेसां अजीत।
डीलां गजा कढ़ै पार अरिदां चाचरां डोळै,
रोळै चहूंवांण रौ त्रभागो असी रीत ॥३॥

---

१७७. गीतसार—महाकवि सूर्यमल मिश्रण ने इस गीत मे अपने आश्रयदाता बूंदी नरेश महाराव रामसिंह हाडा के भाले के प्रभाव को शिव के नेत्र, क्रुद्धकाल के प्याले, उड़ने वाले सर्प आदि के समतुल्य मान कर वर्णन किया है।

---

१. किनां – अथवा, किंवा। संभूरौ – शिव को। उभाळौ – रजाला, नेत्र, ज्वाला। रोस – क्रोध। काळ रौ – यमराज को। पियालौ – प्याला। पैलां – विपक्षियो। रत्र – रक्त। आलौ रहे – भीगा रहता है। जलालौ – जबरदस्त, प्रकाशमान। पाराथ – अर्जुन। पांण – वार, पैनापन। आंमेण रौ – (?)। विलालौ – शौकीन। सालौ – चुभने वाला, शल्यता मे। भालौ – भाला। रांमेण रौ – रामसिंह का। खळां – शत्रुओ। उथाळौ – उन्मूलनकारी। भाराथ – युद्ध मे।

२. सत्राटां – शत्रुओ को। देवाळौ – देने वाला। ओज – पराक्रम, बल। उजाळौ – उज्ज्वल। चाळौ – छेडछाड। अंत लाग – लगने पर, विपक्षियो का अन्त करने वाला। पंखाळौ भुयंग – पखधारी सर्प। धणी रौ – स्वामी की। बजाळौ – बजाने वाला, करने वाला। राव वाळौ। महाराव के हाथो मे रहने वाला। छडाळौ – भालो। व्रजाग – वज्राग्नि।

३. उतोले – उठाए। पारथी – परे के, उस ओर के। दीह घौळै – दिन दहाड़े। बीजा – दूसरे, अन्य। डीलां—शरीरो के। कढै – निकले। अरिंदा – वैरियो के। चाचरा – मस्तक। रोळै—युद्ध मे। त्रभागो – तीन धारा भाला। असी रीत – ऐसी रीति से।

अवनी लडतां आचां बाहा रा बखांण आखै,
सीमाडा बिभाडे गज ढाहा रा सदीव ।
देखतां राव रौ भालौ दाहां रा प्रबद दोड़ै,
जावै पातसाहा रा आकासा ओडै जीव ।।४।।

—महाकवि सूर्यमल्ल मीसण रौ कह्यौ

१७८. गीत नगराज खीची रौ

पति खीचिया कहै बाकडौ नगपति, असपति गजपति नोहो अनढ ।
गढ टूटतां मरणौ है गढपति, गढपति किसा अर किसा गढ ।।१।।

पडता थांन पिसण पाडंतां, मंडिया पाव नोहो माहि रहै ।
कोटां धणी कहैं नग किसड़ा, कोट किसा नगसाहि कहै ।।२।।

घाट बराट पुणै बाघावत, सुरति चढ लोयणा सुरग ।
दीजै सिर पहली देसोता, दीजै तिण पाछै दुरग ।।३।।

---

१७८. गीतसार—उपर्युक्त गीत मे गीतकार ने नगराज खीची के मुख से दुर्गों पर शत्रुओ के आक्रमण करने पर दुर्ग रक्षक योद्धाओ को कर्त्तव्य का बोध करवाते हुए कहलवाया है कि शत्रुओ द्वारा गढ को पराजित करने के लिए उद्यत पाकर जो योद्धा उसकी रक्षा करते हुए जीवनोत्सर्ग नही करते, वे कैसे योद्धा है !

---

४. अवनी – भूमि । आचा – हाथो के । बाहां रा – भुजाओ के, प्रहारो के । बखाण–बखान, वर्णन । आखै – कहते हैं । सीमाड़ा – सीमा के समीप वाले, सीमावर्ती । बिभाडे – नाश करे । गज ढाहा रा – समूह के समूह को ढहाने वाले । सदीव – सदैव । आकासां – आसमान में । ओडै – उड कर, आड मे ।

१. पति – स्वामी । बाकडो – बाँकुरा वीर । नगपति – नगराज । असपति – अश्वपति, बादशाह । नोही – नही । अनढ – राजा, दुर्ग । अर – और ।

२ थान – स्थान । पिसण – शत्रु । मडिया पांव – पैर जमाए । माहि – भीतर, मे । कोटां धणी – दुर्गपति, राजा । नग – रत्न, पुत्र । कोट – किला । नग-साहि – नगशाह, नगराज ।

३. घाट – आकृति, शरीर । बराट – विराट । पुणै – कहता है । बाघावत–बाघा का पुत्र, बाघा का वशज । लोयणां – लोचनो, नेत्रो । सुरग – लाल रग । देसोता – देशपति । तिण – उन । पाछै – पीछे, बाद में । दुरग – दुर्ग, किले ।

१७६. गीत नगराज बाघावत खीची रो

मारे सोहो साख वैर लिया माथै, दुजड़ां माथै नगो दहे।
माथा ऊपरि सदा माल्हतौ, माथा सूधे मुवौ महे ॥१॥

कुळ पैंतीस तणा सिर केवा, बाघतणा सिर वीरवर।
सिर साटै खातौ सिरनांमी, सामी सिर तूटिया सर ॥२॥

कमळ वस छतीसा कापै, आप कमळ रहियौ अमळ।
भोमि कमळ बदलै भोगतौ, किम देतौ बदलै कमळ ॥३॥

---

१७६. गीतसार-पूर्वोक्त गीत चौहानो की खीची शाखा के वीर नगराज बाघावत पर रचा हुआ है। गीतकार ने गीत मे नगराज की सराहना करते हुए लिखा है कि वह अपने सिर के बदले भूमि का उपभोग करता था। तब फिर भूमि पर शत्रुओ का आक्रमण होने पर उसकी एवज में अपना सिर कैसे नहीं सौंपता।

---

१. साख – शाखाओ के। माथै – मस्तक पर। दुजड़ां – तलवारें। नगो–नगराज। माल्हतौ – मस्त गति से चलता। माथा – मस्तक। सूधे – सहित, तक। मुवौ – मरा।

२. कुळ पैंतीस – पैंतीस राजवंश। तणा – का। सिर – ऊपर, मस्तक। केवा – बदला। बाघ तणा – बाघा के पुत्र। साटै – बदले, एवज मे। खातौ – भोगता। सामी – स्वामी। तूटिया – टूटने पर।

३ कमळ – मस्तक। कापै – काटे, टुकडे किए। अमळ – अधिकार, निष्कलंक। भोमि – पृथ्वी। भोगतौ – उपभोग करता। किम – कैसे, क्या। बदलै – एवज में, परिवर्तन मे।

१८०. गीत राजा गोपालदास जोगीदासौत गौड़ रौ

खुरम घड़ा आई वरण कड़ा कंकण खगे, जरद अबर अखित सार जाडो ।
जान हाडा गवड दह्या चाळक जुड़ै, लाडिलौ हुवौ तिण बार लाडो ॥१॥

साह फौजा चढ़ै जड़ै टोडर सिल्है, आवधा अन्है आखा पड़ै ईंद ।
पाखती बस चत्र वराती मिळै पोहौ, बैरियां तणै बीचि सोहियौ बींद ॥२॥

सिलह केसरि पहर सेहरो टोप सिरि, बहै लोहा अखत निहस बाजा ।
घणै उछाह वड़ जोड़ि सुरताण घड़, रण मरण परणियौ गौड़ राजा ॥३॥

---

१८०. गीतसार—गीतकार ने उपर्युक्त गीत मे राजा गोपालदास गौड के शाहजादे खुर्रम के पक्ष मे युद्ध कर वीरगति प्राप्त करने का वर्णन किया है । वह लिखता है कि शाहजादा खुर्रम की सेना कवचादि युद्ध-सज्जा से सज्जित होकर युद्ध-स्थल मे आई । उस सेना मे हाडा, गौड, दहिया और चालुक्य योद्धा तो मानो बाराती थे और राजा गोपालदास उनमे दुलहा था ।

---

१. खुर्रम – शाहजादा खुर्रम, बादशाह शाहजहाँ । घडा – सेना । वरण – विवाह करने । कड़ा – लगर । ककण – कगन, पदाभूषण विशेष । खगे – तलवार । जरद – कवच । अखित – अक्षत । जान – बाराती । गवड़ – गौड़ क्षत्रिय । दह्या – दहिया क्षत्रिय । चालक – चालुक्य क्षत्रिय, सोलंकी क्षत्रिय । लाडिलो – लाडिला, प्रिय । तिण बार – उस समय । लाडो – दुलहा ।

२. जडै – बाँधकर, जड कर । टोडर – पैर का भूषण । सिल्है – सिलह, कवच । आवधा – आयुधो । आखा – अक्षत । पाखती – पार्श्व मे, निकट । चत्र – चार । वराती– वरयात्री । पोहो – योद्धा । सोहियो – शोभित हुआ ।

३ केसरि – केशर के रग में रंगे वस्त्र । पहर – पहिन कर । सेहरो – सिर का मौर । टोप – लोहे का टोप, शिरस्त्राण । सिरि – सिर पर । अखत – अक्षत । निहस– ध्वनि कर । घणे – घना, बहुत । उछाह – उत्साह, उत्सव । घड़ – सेना । परणियो – विवाह किया । गौड़ – क्षत्रिय की गौड़ शाखा का राजा गोपालदास ।

१८१. गीत सगता गौड़ रौ बूंदी री बेढ़ रौ

भागा केई पकड़ि कितां भिरड़िया, धरि सूरापण परां धंख ।
सत्र दळ गजां ऊपरे सगतौ, पड़ियौ जांणे जटा-पंख ॥१॥

खेसाणा बाधा केई खाधा, बाजूकरी प्रारंभ वरण ।
अजमेरौ गज खळां आवियौ, काठीर उरसी करण ॥२॥

काछवियौ पंख रूप कोपियौ, घांघेड़े रज धंख घई ।
खळां गजां रिण-ताळ खेलियौ, दळथम वाळौ काळ दई ॥३॥

---

१८१ गीतसार—उपरांकित गीत शक्तिसिंह गौड़ पर रचित है । गीत लेखक ने, शक्तिसिंह द्वारा बूंदी के पक्ष मे जो युद्ध लड़ा गया, उसका वर्णन किया है । वह लिखता है कि कितने ही शत्रु तो शक्तिसिंह के भय से रणभूमि से भाग कर चले चले और जो डटे रहे उनको पकड़ कर मार दिए । इस प्रकार वह वीर गजतुल्य शत्रुओ पर क्रोध धारण कर अनिल पक्षी की भांति उनको खा गया ।

---

१. भागा — मैदान त्याग कर भाग गए । केई — कितने ही । कितां — कतिपय को । भिरड़िया — मसल कर मार डाले । धरि — धारण कर । सूरापण — वीरता । सत्र दळ — रिपु समूह । गजां — हाथियों । सगतो — शक्तिसिंह । पड़ियौ—झपट पड़ा, आक्रमण किया । जटा-पख — अनिल पक्षी ।

२. खेसाणा — खिसक गए, चलते बने । बाधा — पकड़े गए । खाधा — आहार बना लिए, मार दिए । बाजूकरी — सिंह । अजमेरौ — अजमेर पर गौड़ो का शासन रहने के कारण अजमेर वाला कहा है । खळां — वैरियो । काठीर — सिंह । उरसी — आकाश ।

३. काछवियौ — कच्छप । पख — पक्षी, अनिल । कोपियौ — कुपित हुआ । घांघेड़े — संहार किए, मार डाले । धंख — प्रबलेच्छा, क्रुद्ध होकर । रिणताळ — रणस्थल, रण वेला । खेलियौ — क्रीड़ा की, लड़ा । दळथभ वाळौ — सेना के लिए स्तम्भ स्वरूप, दलथंभ का पुत्र । काळ — मृत्यु । दई — देव, भांति ।

१८२. गीत राजा नरसिंघदास गौड़ रौ

ऊपाड़ै खग हाथळां आवध, दळां पछाड़ै गजां दुबाह।
ऊभौ नरसिंघ धीग अखाड़ै, राजा बबाड़ै रिमराह ॥१॥

फौजां गजां तणा उर फाटै, चाटै नळां गुंजार बीचाय।
ओसंख घखि नैडा नह आवै, बीजा व्यकम तणी बघवाय ॥२॥

अनरध तणौ घणौ आटाळौ, मछरि लंकाळौ लोह मिळै।
भिड़ै तिकै घरणी होय भेळा, भीम तणां हाथियां भिळै ॥३॥

तौ से कुण नरसिंघ सतोड़ै, जोड़ै कुण जम हूत जुबाब।
बहसि बहसि ले आवै बीडा, नीडा ढूकै नही नबाब ॥४॥

---

१८२. गीतसार—उपरोक्त गीत राजा नृसिंहदास गौड पर कहा हुआ है। गीतकार ने गीतनायक की युद्ध-क्रीडा का सिंह की क्रीडा के साथ रूपकात्मक चित्रण किया है। वह वर्णन करता है कि सिंहतुल्य राजा नृसिंहदास अपने खड्ग रूपी पञ्जो से रिपु रूपी गजो को समरस्थली मे विनष्ट करता हुआ गर्व से वीर-नाद करता है।

---

१. ऊपाड़ै – नाश करे, उठा कर। खग-हाथळा – तलवार रूपी पञ्जे से। आवध – आयुध। दळां – दलो, सेनाओ। पछाड़ै – पछाडता है, पटकता है। दुबाह – दोनो हाथों से प्रहार करने वाला। ऊभौ – खड़ा। धीग – वीर। अखाड़ै – रणस्थल मे। बबाड़ै – ललकारता है। रिमराह – शत्रुओ।

२. फाटै – विदीर्ण होते हैं। चाटै – खुले, चौड़े,। नळां – नलियाँ नालो मे। गुंजार – गर्जना, शक्ति के साथ। ओसख – आशका, भय, पराजित। घंखि – इच्छा। नैड़ा – निकट। नह आवै – नहीं आते हैं। बीजा – दूसरे। तणी – की। वघवाय – व्याघ्र-वायु, सिंह के शरीर की गध।

३. अनरध तणौ – अनिरुद्धसिंह का पुत्र। आटाळौ – आटीला, ऐंठ रखने वाला। मछरि – मत्सरता रखने वाला। लंकाळौ – सिंह। भिड़ै – मुकाबिला करते है। तिकै – वे। भेळा – शामिल। भिळै – मिल जाते हैं।

४. संतोड़ै – विरोध करे। जोड़ै – बराबरी करे, विवाद करें। हूंत – से। बहसि बहसि– जोश में भर कर, आगे बढ़कर ललकार कर। नीडा – निकट। ढूकै – पहुँचते है, आते है।

१८३. गीत राजा उत्तमराम गौड़ रौ

बिलगै यम हंस तटाका बुगला, कवियण जस यण भांति कहै।
मोती चुगण लहै महाराजा, हंस तठै ही आंणि रहै ॥१॥

डर डार वे सेत पख डोहै, तै सफरी पावै सोप तुरत।
अळगि भोमि हूत खडि आवै, सारंग पावै सीप सुत ॥२॥

इळ छीलरे बिमळ खग ओपै, भेद करै जळचरि भखै।
लाभै सोप मुकतफळ लाभै, निज मराळ रसआळ नखै ॥३॥

अेह विधि क्रीडत गोड़ परस रा, दीजै गवड सेतकण दान।
आजि तणै व्रतिमान स उत्तिम, मान सरोवर वाळा मान ॥४॥

---

१८३. गीतसार—उपरांकित गीत क्षत्रियों की गौड शाखा के वीर उत्तमराम गौड पर रचित है। गीत रचयिता ने राजा उत्तमराम की उदारता का बखान करते हुए मोतियों के दान की याचना की है। वह कहता है कि तालावों की पालो पर बैठे रहने वाले बकों को मछलियों का आहार मिलता है। पर हंस जो मुक्ताओं का ही चुगा करते हैं, वे जहा मोती प्राप्त होते हैं, वहीं जाकर ठहरते हैं। कवि ने सामान्य कवियों को बगले और महाकवियों को हंस इंगित कर गीत का सर्जन किया है।

---

१. तटाका — तालाबो। बुगला — बक पक्षी। कवियण — कविजन। जस — यश। यण भांति — इस प्रकार। कहै — कहते है, करते हैं। चुगण — चुगने, चुनने। लहै — लेते हैं। तठै ही — वहीं पर, उसी स्थान पर। आणि — आकर। रहै — रहते हैं।

२. सेत पंखी — श्वेत पक्षी, बगला। डोहै — मंथन करता है। तै — वे, वह। सफरी— मछली। तुरत — तुरन्त, तत्काल। अळगि — अलग, दूर। हूत — से। खड़ि— चलकर। आवै — आते हैं। सारग — हंस, मयूर। सीप-सुत — मौक्तिक।

३. इळ — पृथ्वी। छीलरे — छिछले सरोवर, तालाव। बिमळ खग — बक। ओपै — शोभित होते हैं। भेद — छल। जळचरि — मछलियां, जलजीव। मुकत-फळ — मोती। मराळ — हंस। रसआळ — रसालय, समुद्र। नखै — पास।

४. क्रीड़त — क्रीडा करते। परस रा — परशुराम सुत। गवड — गौड़। सेतकण — मोती। आजि तणै — आज के। उत्तिम — उत्तमराम।

१८४. गीत उदैभाण हरभाण गौड़ रौ

गढ़ां तणा रछपाळ तोड़ण गढ़ां गाढ़ रा, गढ़ करै बांधीयो गळै गहणो ।
उदै हरिभाण लोहाग गढ़ ऊपरै, कामि आवण तणौ किसू कहणो ।।१।।
कटै केई पोळि कै पोळि बाहर कटै, थाट कै थटै गढ़ बोच थटियौ ।
बे कटै भाण केवाण आबाहथां, कागुरै कांगुरै घणै कटियौ ।।२।।
पड़ै केई किवाड़ा केई नीसरी बाहर पड़ै, सूर जमहर करै पड़ै साथां ।
पडै रिण वेहरी मुकद वाळा सपोह, मोरछां मोरछां पड़ै माथा ।।३।।
पड़ै बुरजा धजा ऊपरै पाथरां, सूर जमहर करै पड़ै सारां ।
पड़ै परनाळ रतखाळ चीखळ पड़ै, बीढि पड़ै गौड़ गढ़ पड़ै बारां ।।४।।
कियौ रणथभ हमीर जेहो कळह, जेम चीतौड जैमल पतौ जांणि ।
किया कलियाण समियाण जेहा किया, भिड़ किया लोहगढ उदै हरिभाणि ।।५।।

---

१८४. गीतसार-गीतकार ने ऊपर के गीत मे गीतनायक उदयभानु और हरिभानु गोड़ो द्वारा दक्षिण के लोहागढ दुर्ग की रक्षार्थ लडे गए युद्ध का वर्णन किया है । वह लिखता है कि उदयभानु और हरिभानु दोनो वीर स्वपक्षीय गढों के रक्षक और विपक्षियो के गढो को ढाह देने वाले हैं । उन्होने अपने द्वारा रक्षित लोहागढ को कठाभूषण की भांति अपने कठो पर बांध रक्खा । फिर उस पर विरोधियो के आक्रमण करने पर वे उसकी रक्षा करते हुए काम आगए तो यह विस्मय ही क्या है !

---

१. रछपाळ – रक्षक, दुर्गपाल । तोडण – तोडने वाले । गाढ रा – दृढता । गळै – कंठो पर । उदै – उदयभानु । लोहाणगढ़ – लोहागढ़ । कामि आवण – काम आने, मारे जाने । किसू – कौनसा, कैसा ।

२. पोळि – पोल, गढ का मुख्य बहिर्द्वार । थाट – समूह, सेना । थटै – हटना, पराजित करें । थटियौ – डटा रहा, सुसज्जित । वे – दोनो । भाण – उदयभानु और हरिभानु । केवाण – तलवार । आवाहथा – प्रहार करते हुए । कांगुरै कांगुरै – कगुरे कगुरे पर, बुर्ज-बुर्ज पर ।

३. किवाड़ां – कपाटो पर । नीसरी – निकल कर । जमहर – युद्ध, जौहर । बेहरी– दोनो भानु, पार निकल कर । मुकंदवाळा – मुकदसिंह वाले । सपोह – योद्धा । मोरछां मोरछां – मोरचा, दुर्ग या युद्ध में रक्षा के स्थान । माथा – मस्तक ।

४. बुरजा – बुर्जे । धजा – योद्धाओ, घोडो, झडों । पाथरां – सोये हुए, पत्थरों । सारां – तलवारों के प्रहारों से । परनाळ – परनाले । रतखाळ – रुधिर के नाले । चीखळ – कीचड, दलदल । बीढि – युद्ध कर । बारां – बाहर, समय ।

५. रणथभ – रणथंभोर दुर्ग पर । हमीर – रणथभोर का शासक प्रसिद्ध वीर हम्मीर चहुवान । जेहो – जैसा । कळह – युद्ध । जेम – जिस प्रकार, ज्यों । जैमल पतो – राव जयमाल राठौड और रावत पत्ता चूडावत । कलियाण – राव कल्याणसिंह रायमलोत राठौड़ । समियाण – सिवाना दुर्ग पर । भिड – भिडकर, सामना कर ।

१८५. गीत रावळ वैरीसाल नाथावत सांमोद रौ

थयां हाथ में त्रभागो कूंत ताखा क्रोध थडी को सो,
हेम अद्रां चोमासैं उमंडी को सो हूळ ।
खीजियैं पाराथ री भभक्को बाण खंडी को सो,
सेल वैरीसाल वाळौ चडी को सो सूळ ।।१।।

कुंभां सीस चंच गोम - विहंगी कराळ को सो,
कै ठाठ को तराळ लाय झाळ को कै ठैळ ।
लेण सिंधा फाळ को प्रजाळ को कै लंका पूंछ,
सवाई अजा रौ धको काळ को कै सैळ ।।२।।

धूत वीरां वोध दत अंत धांमणी को,
जळै नीर पाट नदी सांमणी को जूप ।
भळाका पळाका लेतो टीको रभा भामणी को,
रुघा दूजा वाळौ दांमणी को रूप ।।३।।

---

१८५ गीतसार—इस गीत मे गीतकार ने जयपुर राज्य के सामोद ठिकाने के रावल वैरीशालसिंह नाथावत कछवाहा के भाले को क्रुद्ध तक्षक, वर्षाकाल मे हिमगिरि से उमड़ती गगा का प्रवाह, क्रुद्ध अर्जुन के बाण का आतप अथवा महाकालिका के हाथ मे रहने वाले त्रिशूल के समान अचूक प्रभावकारी चित्रित किया है ।

---

१. थयां – लिए हुए । त्रभागो कूंत – तीन धारा वाला भाला । ताखा – तक्षक । थडी – सर्प, नाग । हेम अद्रां – हिमगिरि । चोमासैं – चातुर्मास, वर्षाकाल । उमंडी–उमड़ती, गगा । हूळ – अत्यधिक तेजगति, प्रहार विशेष । खीजियैं – नाराज हुए । पाराथ री – महावीर अर्जुन को । भभक्को – भभक, ज्वाल, लपट । खंडी को सो–खाण्डव वन का-सा । चडी – दुर्गा । सूळ – त्रिशूल ।

२. कुंभा सीस – हाथियो के मस्तको । चंच – चोंच । गोम-विहगी – आकाश पक्षी, अनिल पक्षी । कराळ – भयानक । तराळ – भयंकर । लाय – अग्नि । झाळ–ज्वाला, क्रोध । सिंधां – समुद्रों मे । फाळ को – छलांग लेने वाले, हनुमान । प्रजाळ को – जलाने वाले को । कै – अथवा । अजा री – अजित को । धको–टक्कर । काळ को – यमराज का ।

३. धूत – वीर । दंत – दांत । अत – यम, अन्तिम । सामणी – श्रावणी, श्रावण मास की । जूप – जोश, वेग, शोभा । भळाका पळका – चमकता दमकता । टीको – तिलक, टीका । रुघा दूजा – दूसरे ही रघुनाथ का । दामणी–बिजली ।

क्रांती काळी निसा जांणे भूत रा अंगारा की सी,
तूटिया उळकापात तारा की सी ताक।
किनां डीक झोळी झाळ समुद्रां अभा रा की सी,
सत्रा लगे हिय मे दुबारा की सी छाक ॥४॥
छछाळ बसेगा श्रृग डड काळ छूटा जेहौ,
सत्रा बौळ जूटा सिंघ खूटा जेहौ सेत।
ज्वाळ भूटा जगा जोर सोर लोर तूटा जेहौ,
नाथाणी रौ नेजौ रुद्र खूटा जेहौ नेत ॥५॥
—महादान मेहड़ू रौ कह्यौ

१८६. गीत राजा बळूतसिंघ रतलाम रा भाला रौ

बडां बडी रौ त्रसूळ किना पती त्रलोक रौ बाण,
लगावे सोक रौ हिये दलेसां लडाळ।
प्राण खळां थोक रौ लेवाळ लकाळ रौ पजौ,
छोक रौ काळ रौ किनां बळूतेस रौ छडाळ ॥१॥

---

१८६. गीतसार—इस गीत मे गीत-रचयिता ने रतलाम के राजा बलवतसिह राठौड के भाले की प्रशंसा की है। कवि कहता है वह आदिशक्ति का त्रिशूल है या विष्णु के धनुष का तीर है या शत्रुओ के प्राणो का हरण करने मे समर्थ सिंह के हाथ का पञ्जा है। अथवा साक्षात् यमराज का पुत्र है या राजा बलवतसिह के हाथ मे का भाला है।

---

४. क्रांति – कान्ति, प्रकाश। काळीनिसा – अमावस्या की रात्रि। उळकापात – उल्कापात। तारा की सी – नक्षत्र सदृश। ताक – घात। डीक – लकीर। झोळी झाळ – झोका, समुद्र की ज्वाला। अभारा – जल-प्रवाह की, दुर्भर, परिपूर्ण। हिया में – हृदय में। दुवारा – दो बार पलट कर निकाली गई मदिरा। छाक – खुराक, मस्ती।

५. छछाळ – हाथी, चचल, घोडे। डडकाळ – कालका दडक। जेहौ – जैसा। सत्रां बौळ – शत्रुओं को नाश करने। जुटा – भिडे। सिंघ – सिंधुर। ज्वाळ भूटा – ज्वालामुखी। जगा – युद्धो। जोर सोर – पूरे बल के साथ। लोर – बारूद के। नाथाणी – नाथावत का। नेजो – भाला। रुद्र – शिव। खूटा – खुला, उघड़ा। नेत – नेत्र।

१. बडा बडी रौ – आदि शक्ति को। त्रसूळ – त्रिशूल। किनां – अथवा। पती त्रलोक रौ – विष्णु का। बाण – चक्र, तीर। सोक – शोक। हिये – हृदय मे। खळा – दुष्टो के। थोक – समूह। लेवाळ – लेने, हरने वाला। लंकाळ– सिंह। पजो – पञ्जा, हाथल। छोकरो – पुत्र, बालक। काळ रौ – यमराज को। बळूतेस – बलवतसिंह। छड़ाळ – भाला, बल्लम।

अध्रियामणां घाट रो गुलालो रहै श्रोण आलो,
उरां सालो केका फतै खाट रो अधूत।
रोखंगी जलालो सत्रां थाट री वखेर राळे,
प्रथीनाथ वाळो भालो जज्झाट रो पूत ॥२॥

खिजायौ त्रिनेण प्रळै काळ रो रिमां घू खगे,
पाखियौ नागेंद्र फतै पाव री प्रभाव।
लेवाळ अत रो गजा घाव रौ सुमार लागै,
सेल मारू राव रो क्रतान्त रो सुजाव ॥३॥

प्रवतेसनंद लागै भोक रै लड़ाळ पांणां,
भडक्के तड़ाळ रूपी वागता भाराथ।
आद ब्रह्म घावे को जोगिंद्र वचै काळ आगै,
ना वचै छड़ाळ आगै सत्रू प्रथीनाथ ॥४॥

---

२. अध्रियामणां – भयानक। घाट – बनावट, आकृति। गुलालो – गुलाबी या गुलाल के रंग में भीगा, रक्तिम। श्रोण – रुधिर, श्रोणित। आलो – गीला, आर्द्र। उरां – हृदयों। सालो – शल्यता, चुभता, खटकता। खाट – प्राप्त करता। अधूत – निर्भय, निडर। रोखंगी – रोषीला। जलालो – जबरदस्त। सत्रां – शत्रुओं के। थाट – सेना, समूह। वखेर राळे – तितर-बितर कर डाले। जज्झाट रो पूत – महाकाल का पुत्र।

३. खिजायौ – कुपित। त्रिनेण – शिव, त्रिलोचन। रिमां घू – शत्रुओं के सिरो। पांखियौ – पंख आया हुआ। नागेंद्र – शेषनाग, नागराज। फतै – फतह। क्रतान्त रो सुजाव – यमराज का पुत्र।

४. प्रवतेसनद – पर्वतसिंह पुत्र, बलवन्तसिंह। भोक – टक्कर। पांणा – हाथों। तड़ाळ – विद्युत। वागतां – चलाते। भाराथ – युद्ध में। जोगिंद्र – शिव। आगै – सामने। ना वचै – जीवित नहीं रह सकता।

परिशिष्ट १

ऐतिहासिक टिप्पणियाँ

पृ. १, गीत १ महाराव शेखा कछवाहा—कछवाहो की शेखावत शाखा के आदि पुरुष महाराव शेखा आमेर के अधिपति राजा उदयकर्ण के पौत्र राव मोकल के ज्येष्ठ पुत्र थे। इन्होने राज्याधिकार प्राप्त कर मौजाबाद एवं बरवाडा के स्थान पर अमरसर नामक नगर का निर्माण कर वहां अपनी राजधानी स्थापित की। आमेर के शासक राजा चन्द्रसेन का विरोध कर अपने आपको आमेर से स्वतन्त्र किया और चरखी, दादरी के जाट्ट क्षत्रियो तथा हासी हिसार के कायमखानियो को युद्ध मे परास्त कर राज्य वृद्धि की। तदन्तर मारवाड के गौडावाटी प्रदेश के गौड राजपूतो से अनवरत ग्यारह लडाइया लडी। गौडों से इनका अन्तिम युद्ध सवत् १५४३ वैशाख शुक्ला १५ को हुआ। इसी युद्ध में बड़े राजकुमार दुर्गादास सहित वीरगति को प्राप्त हुए। शेखावाटी के मनोहरपुर-शाहपुरा, खण्डेला, सीकर, खेतडी, दांता, नवलगढ, बिसाऊ आदि बडे बडे ठिकाने इन्ही के वशजो के थे। सवत् १४९० रविवार, आश्विन शुक्ला १० इनकी जन्म तिथि मानी जाती है।

—शिखर वशोत्पत्ति पृ ३–१२, रायसल जससरोज, खण्डेला का इतिहास, पृ० १९–२३।

पृ २, गीत २ राव सूरजमल हाडा—राव सूरजमल हाडा बून्दी के शासक राव नारायणदास का पुत्र था। राव नारायणदास के निधन के पश्चात् सवत् १५८४ मे वह बून्दी के सिंहासन पर बैठा। तब बून्दी का राजनैतिक सम्बन्ध मेवाड़ से था। महाराणा सग्रामसिंह प्रथम ने अपनी महारानी कर्मेती की प्रार्थना पर राव सूरजमल को महाराना के पुत्र विक्रमादित्य और उदयसिंह का सरक्षक नियुक्त किया था। महाराना सग्रामसिंह के बाद उसका युवराज रतनसिंह मेवाड का शासक बना। रतनसिंह अपने भाई विक्रमादित्य और उदयसिंह की शक्ति क्षीण करने के लिए राव सूरजमल से ईर्ष्या करने लगा। महाराना ने राव सूरजमल को वाराह की आखेट के बहाने आमन्त्रित किया। और एक दिन अवसर देख कर सूरजमल पर तलवार से आक्रमण कर दिया। राव सूरजमल घायल होने पर भी महाराना के योद्धा पूर्णमल चौहान और महाराना रतनसिंह दोनो को कटारी से मार कर स्वयं काम आया। यह घटना सं० १५८८ मे हुई। नाणता स्थान पर सूरजमल पर एक स्मारक बना हुआ है। गीत मे महाराना रतनसिंह को मार कर मारे जाने का वर्णन हुआ है।

—गहलोत द्वि. भा पृ. ५३–५४

पृ. ३, गीत ३ पंचायण करमसोत—पचायण जोधपुर के राव जोधा के पुत्र करमसी का उत्तराधिकारी था। इसकी जागीर मे तब नागौर जिले के आसोप और खीवसर ठिकाने थे। जोधपुर के राव मालदेव के पक्ष मे रह कर पचायन ने अनेक युद्धो मे भाग लिया। उसकी अपने समय के प्रसिद्ध सामतो मे गणना थी। सवत् १६०० मे मेड़ता के राव वीरमदेव के प्रोत्साहन पर जब दिल्ली के बादशाह शेरशाह नें मारवाड़ पर आक्रमण किया तब वह राव

मालदेव की सेना में था। राव मालदेव शेरशाह के मुकाबिले मे रण त्याग कर निकल भागा, किन्तु राव के सामन्त जैता, कूपा और पंचायन ने शाही सेना का सामना किया और गिररी नामक स्थान पर लडते हुए वीर गति को प्राप्त हुए। पंचायन के वशजो के अधिकार में मारवाड के खीवसर, पाचोडी आदि ठिकाने थे। गीत में गिररी समेल स्थान के युद्ध में पंचायन के खेत रहने का वर्णन हुआ है।

—रेउ प्र० भा० पृ० १०३, १३१,
राठौड़ जागीरदारो की वंशावली

पृ ४, गीत ४ राव कोलण—राव कोलण बूंदी के संस्थापक राव बाघा के पुत्र राव देवसिंह का पुत्र था। केलण केदारनाथ महादेव का भक्त था।

—वाकीदास पृ० १४३

पृ ४ गीत ५ वीरमदे राठौड—राव वीरमदेव ईडर का शासक था। इसके पिता का नाम राव नारायणदास था। बादशाह अकबर का समकालीन और मनसबदार था। राव वीरमदेव ने डूंगरपुर, अहमद नगर और माडू के युद्धों मे वहाँ के तत्कालीन शासको पर विजय प्राप्त की। सवत् १६५३ मे विष प्रयोग से भीलोडा नामक स्थान पर उसका देहान्त हुआ। वीरम के बाद उसका अनुज राव कल्याणमल ईडर का अधिकारी हुआ।

—वीर विनोद भा. दि पृ० ९९५, ९९६। सल्तनतकालीन भारत
पृ. १६८, १७२, १८६ रेउ द्वि. भा. पृ० ६९१

पृ. ५ गीत ६ भोजराज खंगारोत—भोजराज आमेर के राजा पृथ्वीराज कछवाहा के पुत्र जगमाल के पौत्र मनोहरदास का ज्येष्ठ पुत्र था। बादशाह अकबर ने जगमाल के ज्येष्ठ पौत्र राव नारायणदास को फुलेरा के समीपस्थ नराणा की जागीर प्रदान कर अपना मनसबदार बनाया था। राव नारायणदास का पुत्र राव बाघसिंह ने भी शाही सेवा मे रह कर मन्सब प्राप्त किया। और अपने पुत्र भोजराज को अपने जीवन काल मे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर नराणा की जागीर पर प्रतिष्ठित किया। राव भोजराज ने बादशाह शाहजहां और औरंगजेब के शासनकाल मे मिर्जा राजा जयसिंह की सेना में रह कर कंधार, काबुल और राजा शिवा सोसोदिया के विरुद्ध युद्धो में भाग लेकर यश अर्जित किया। शाहजहां के उत्तराधिकार के युद्धो मे वह बनारस के पास बहादुरपुर के युद्ध में शाहजादा शुजा के विरुद्ध लडा था। गीत मे कलिचखाँ नामक किसी विद्रोही शाही पदाधिकारी को दडित करने का वर्णन हुआ है। राव भोजराज के खानदान वालो के ढूढाड में डिग्गी, जोबनेर, खण्डेल, बिचोन, दूदू आदि कई बड़े ठिकाने थे।

—मआसिरुल उमरा भा० १, पृ० १५२,
नैणसी भा० १, पृ० ३०५, राव भोजराज मनोहरदासोत री निसाणी

कछवाहों की वशावली — पृ० ६, गीत ७ राणा प्रतापसिंघ – भारतीय वीरो के परमादर्श महाराना प्रतापसिंह का जन्म जेष्ठ सुदि ३ रविवार स० १५९७ मे हुआ था। ये महाराना उदयसिंह के पुत्र और उनके उत्तराधिकारी थे। उदयसिंह के निधन के बाद स० १६२८ में ३२ वर्ष की आयु मे मेवाड के सिंहासन पर बैठे। उस समय मेवाड़ के चित्तौड, माडल, भीलवाडा आदि जिलो पर शाही अधिकार हो चुका था। प्रतापसिंह ने आजीवन दिल्ली सल्तनत से सघर्ष कर उत्तरोत्तर मेवाड़ को पुनः स्वतन्त्र किया। सं० १६३३ मे खमनोर के पास हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध मे ये शाही सेना से लड़े थे। जीवन-पर्यन्त सघर्ष रत रहते हुए भी प्रतापसिंह ने कभी शाही पराधीनता स्वीकार करने की कामना नही की। स० १६५३ मार्गशीर्ष शुक्ला को चावड ग्राम मे इनका देहान्त हो गया।

—गहलोत भा० १ पृ० २३४

पृ० ७, गीत ८, राणा प्रतापसिंघ–महाराना प्रतापसिंह मेवाड। पहिले गीत सख्या ७ पृ० ६ के टिप्पण के अन्तर्गत देखो।

पृ० ८ गीत ९ जगमाल सीसोदिया– जगमाल महाराना उदयसिंह का पुत्र और महाराना प्रतापसिंह का छोटा भाई था। उदयसिंह अपने बाद जगमाल को मेवाड़ का शासक बनाना चाहता था। किन्तु उदयसिंह के निधन पर मेवाड के सामन्तो ने प्रतापसिंह को कुम्भलगढ मे मेवाड की गद्दी पर बैठा दिया। जगमाल इससे रुष्ट होकर शाही दरबार मे चला गया। अकबर ने जगमाल को जहाजपुर का परगना और सिरोही का आधा राज्य देकर सम्मानित किया। आधे भूभाग पर राव सुरतान देवडा का अधिकार रहा। जगमाल और सुरतान के सिरोही के विभाजन को लेकर पारस्परिक अनबन हो गई। तब जगमाल ने शाही सैनिको की मदद प्राप्त कर सिरोही पर अधिकार कर लिया। राव सुरतान ने एक दिन दत्ताणी नामक स्थान पर नैश आक्रमण किया, जिसमे जगमाल, राव रायसिंह (भिनाय वालो का पूर्वज) और कोलीसिंह देवड़ा आदि २८४ शाही योद्धा मारे गए। यह युद्ध सं० १६४० विक्रमी मे लडा गया था। गीत मे जगमाल के (दत्ताणी स्थान पर) वीरगति प्राप्त करने का उल्लेख हुआ है।

—नैणसी भा० १ पृ० २२-२३

—गहलोत प्र० भा० पृ० २३४

पृ० ९, गीत १० पूरणमल भाणावत– महाराना उदयसिंह के पौत्र और शक्तिसिंह के पुत्र भाण का लडका पूर्णमल। पूर्णमल को मेवाड से भीडर की जागीर और महाराज का उपटंक प्राप्त हुआ था। यह महाराना के पक्ष मे मेवाड़ की सुरक्षा के सैनिक अभियानो में भाग लेता रहा। अब्दुलाखां के साथ की राणपुर की लडाई मे महाराज पूर्णमल लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।

— नैणसी भा० १ पृ० २६ ओझा पृ० १२२१

पृ० १० गीत ११ जोधा सिसोदिया— महाराना उदयसिंह के छोटे पुत्र शक्तिसिंह का वंशज जोधा शक्तावत सिसोदिया। वह मेवाड़ के जीहरण थाने पर नियुक्त किया गया था। देवलिया प्रतापगढ के रावत भवानीदास ने मदसोर के फौजदार सैयद माखन खांन को साथ लेकर जीहरण पर आक्रमण किया। जोधा ने मैदान मे आक्रान्ता सेना का सामना किया और रावत भवानीदास व माखनखान सैयद को मार कर खेत रहा।

नैणसी भा० १ पृ० २७।

पृ. १०, गीत १२ सुरताण मानावत— ठाकुर सुरतान मानावत राजा सूरसिंह राठोड़ के प्रधानामात्य गोयददास भाटी का अनुज और लवेरा का निवासी था। संवत् १६६८ वि. मे उसने राजा सूरसिंह के कर्मचारी केशवदास मुत्ता को मार डाला। इस पर नाराज होकर गोयंददास ने सुरतान को जोधपुर रियासत से निर्वासित कर दिया। तब वह राणा सगर की सेवा मे नागोर चला गया। राणा सगर ने उसे नागोर का भावडा ठिकाना दिया। भावडा मे स० १६६८ वि० में राव नृसिंहदास जोधा (लाडनूं वालो के पूर्वज) और सूरदास, सुदरदास आदि को मार कर मारा गया।

बांकीदास पृ० ११८–११९।

पृ० ११, गीत १३ राव महेशदास राठोड़— राव महेशदास जोधपुर के राजा उदयसिंह के पुत्र दलपत का बेटा और जालोर का स्वामी था। महेसदास ने मेड़ता पर दक्षिणियों से युद्ध किया। मेड़ता के युद्ध के बाद सं० १६८५ मे दक्षिण मे मोहबत खां की सेवा मे चला गया। मोहबत खा के मरने पर शाही सेवा स्वीकार की। बादशाह शाहजहां ने राव महेशदास को जालोर का प्रान्त दिया था। दक्षिण मे दौलताबाद के युद्ध मे उसने वीरता प्रदर्शित कर ख्याति प्राप्त की। राव महेशदास का पुत्र राजा रतनसिंह हुआ, जिसकी संतति परम्परा मे मध्य भारत के रतलाम, सीतामऊ आदि राज्य थे। रतनसिंह स० १७१५ मे उज्जैन में शाहजादों के युद्ध में मारा गया।

महेशदास का मनसब तीन हजारी जात, अढ़ाई हजार सवार का था। बांकीदास पृ ८४, विन्हैरासो पृ १०४, वीर विनोद द्वि. भा. पृ ३६६।

पृ० १२, गीत १४ गोपालदास चांपावत— जोधपुर के राव जोधा के तृतीय बन्धु और राव रणमल के पुत्र चापा के तृतीय वंशधर राव माडण का पुत्र गोपालदास। उसकी जागीर मे मारवाड के बिलाडा परगने का रणसी गांव था। गोपालदास का जन्म सं० १५९० में हुआ और सं० १६४० मे रणसी का पट्टाधिकारी हुआ। गोपालदास ने मोटे राजा उदयसिंह और राजा सूरसिंह की सेना मे रहकर कतिपय युद्धों मे भाग लिया था। अन्त मे स० १६६३ मे अपने द्वितीय पुत्र राघवदास सहित मालवे के मांडू स्थान पर लाला कोली को मार कर मारा गया। इनकी सतति में मारवाड के पोकरण, आऊवा, हरियाडाणा, रणसी, दासपा, दाकरा, बडी खाटू, हरसोलाव, रोहट, भैंसदाड़ा आदि कितने ही ठिकाने थे।

दासपा का इतिहास पृ० ३२–३९।

पृ० १३, गीत १५ राजा गोपालदास गोड— वह जोगराज गोड का ज्येष्ठ पुत्र था। बूंदी के राव रतनसिंह ने उसे लाखेरी का ठिकाना देकर अपना जागीरदार बनाया था।

गोपालदास लाखेरी से बादशाह जहांगीर की सेवा मे चला गया । जहांगीर और शाहजादा खुर्रम के पारस्परिक अनबन के समय गोपालदास ने शाहजादा खुर्रम का पक्ष ग्रहण कर प्रसिद्ध दुर्ग रणथम्भोर पर वहां के किलेदार बाकीवेग और बीजल कछवाहा को मारकर दुर्ग पर अधिकार किया। तदनन्तर थटा दुर्ग पर खानजहां से युद्ध करता हुआ अपने जेष्ठ-पुत्र बलिराम सहित धराशायी हुआ।

बिन्हैरासो (गोड़ो की वंशावली) पृ० २११, गौड़ गोपालदास री वारता।

पृ० १४, गीत १६ बलू चांपावत— राठौड बलू चांपावत पाली के स्वामी गोपालदास माडणोत चांपावत का पांचवां पुत्र था। इनका जन्म सं० १६४८ जेष्ठ सुदि ३ को हुआ था। वह नागोर के राव अमरसिंह राठोड के सामन्तो मे था। अमरसिंह से मनोमालिन्य होने पर बादशाह शाहजहां की सेवा मे जा रहा। जब सं० १७०१ मे राव अमरसिंह आगरा के किले मे बख्शी सलावत खान को मारकर मारे गए, तब बल्लू ने भाउसिंह कूंपावत आदि अपने सजातीय योद्धाओ सहित अमरसिंह की लाश प्राप्त करने तथा अमरसिंह के प्रतिशोध के युद्ध मे आगरा मे अर्जुन गौड को मारने के प्रयत्न मे मारा गया।

दासपां का इतिहास पृ० २१४, रेउ भा. २ पृ० ६५४।

पृ. १४, गीत १७ राव दूदा हाडा— बूदी के स्वामी राव सुर्जन हाडा का जेष्ठ पुत्र था। वह बडा वीर और भीमकाय योद्धा था। बादशाह अकबर से वह सम्मानित हुआ था। दूदा को उसके भाई भोज ने जलधारी ब्राह्मण के द्वारा स० १६४२ ई० मे कपट से विष दिलवा कर मरवा डाला। दूदा की मृत्यु के बाद भोज बूंदी का शासक हुआ।

बांकीदास पृ० १४५, राव रतन री वेलि छ० २४ से ३१।

पृ० १६, गीत १८ आईदान गाडण— चारणो की गाडण शाखा के परशुराम गाडण का पुत्र आईदान गाडण। वह बीकानेर के महाराजा अनूपसिंह का सभासद और कृपापात्र कवि था। स० १७२६ मे महाराजा अनूपसिंह महारावल अक्षयसिंह की राजकुमारी का पाणिग्रहण करने जैसलमेर गए, तब वह भी साथ मे गया। उस समय आईदान को भी पर्याप्त धन दिया गया था। आईदान उच्च कोटि का कवि था। उसकी गीतादि स्फुट रचनाओ के अतिरिक्त 'शिवपुराण रहस्य' डिंगल की उत्कृष्ट कृति प्राप्त है।

दयालदास भा. १ पृ० २०६।

पृ० १७, गीत १६ आसकरण राठोड— राठोड आशकर्ण जोधपुर के राव चन्द्रसेन मालदेवोत का पुत्र था। वह चन्द्रसेन की मृत्यु के बाद सं० १६४७ मे पट्टाधिकारी हुआ। गीत मे आशकर्ण और कर्ण चौहान के युद्ध का वर्णन है। आशकर्ण ने कर्ण को युद्ध में मार कर कीर्त्ति प्राप्त की। आशकर्ण को सारण ग्राम मे सं० १६३६ में उसके भाई उग्रसेन ने कटारी से घायल किया था। उसके प्रतिशोध मे आशकर्ण के सेवक शेखा सांकरोत ने उसी कटारी से उग्रसेन को मार डाला। तदनन्तर आशकर्ण भी उसी प्रहार से मारा गया।

बांकीदास पृ० २२।

पृ० १८, गीत २० विठलदास गोड़—राजा गोपालदास गोड का द्वितीय पुत्र राजा विट्ठलदास गोड़। वह बादशाह शाहजहां का अत्यन्त विश्वस्त और कृपापात्र सेनानायक था। एक समय उसके वतन में मालपुरा परगना था। शाहजहां ने उसे रणथम्भोर की फौजदारी और प्रान्त प्रदान किया था। उसने बुन्देलखण्ड के राजा जूझारसिंह बुन्देला, खांनजहा लोदी, परेन्दा दुर्ग, शाहाजी भोसला के विरुद्ध युद्ध और बदख्शा आदि के सैनिक अभियानों में बडी वीरता एव साहस का परिचय दिया था। तब उसका मन्सब जात सवार का था। वह सन् १६५१ मे मृत्यु को प्राप्त हुआ।

मु० द० भा० १ पृ० २३८-४१, गोपालदास गोड़ री वारता, गोडो की वशावली, पृ० २१६-२१७।

पृ १८, गीत २१ अरजण गोड़— मालपुरा के राजा विट्ठलदास गोड़ का द्वितीय पुत्र अर्जुन गोड़। वह बादशाह शाहजहां का अति विश्वासी सेनानायक था। आगरा के दरबार मे सं० १७०१ मे सलावतखांन को मारने के बाद अर्जुन गोड ने ही राव अमरसिंह नागौर को किले मे घेर कर मारा। उसने सारोठ, बौरावड, मानपुर, लालपुर, मद्दू आदि स्थानों पर अनेक लडाइयां लड़ीं। एक समय वह क्रमश: दिल्ली और आगरा का फौजदार भी रहा। उसके वतन मे अजमेर मेरवाड़ा का राजगढ ठिकाना था। अर्जुन सं० १७१५ मे धर्मतपुरा में शाहजादो के उत्तराधिकार के युद्ध में मारा गया। वह दो हजारी जात, पन्द्रह सौ सवार का मन्सबदार था।

गौड़ों की वंशावली, पृ० २१७-२१८, मा. उ० भा. १

पृ० २०, गीत २२ राजा अनिरुद्धसिंघ गोड़— वह राजा विट्ठलदास गोड़ का जेष्ठ पुत्र था। और मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा के सेनापतित्व मे भेजी गई शाहजादा शुजा के विरुद्ध की सेना में नियत किया गया था। बनारस के पास बहादुरपुर मे गगा के किनारे के युद्ध मे उसने वीरता दिखाई थी। अनिरुद्धसिंह ने खांनजहाँ के विद्रोह, घधेडे के युद्ध और मेवाड की महाराना राजसिंह के विरुद्ध लड़ी गई लडाइयों मे भी भाग लिया था। उसके वतन मे मालपुरा और रनथम्भोर के प्रान्त थे। उसका सं० १७१६ मे देहान्त हुआ। तब उसका मन्सब तीन हजारी जात, तीन हजार सवार का था।

गौड़ो की वंशावली, (विन्हैरासो परिशिष्ट) पृ २१६-२१७, मा० उ० प्र० भा० पृ० ६३-६४।

पृ० २१, गीत २३ राजा अनिरुद्धसिंह गोड़— राजा गोपालदास गोड़ के द्वितीय पुत्र राजा विट्ठलदास गोड़ का जेष्ठ पुत्र राजा अनिरुद्धसिंह गोड़।

पहिले पृ० २०, गीत २२ की टिप्पणी के अन्तर्गत देखो।

पृ० २१, गीत २४ राजा अनिरुद्धसिंघ गोड़— राजा अनिरुद्धसिंह गोड़ के परिचय के लिए पृ २०, गीत २२ का टिप्पण देखो।

पृ. २२ गीत २५ दूदा नगराजोत—रामपुरा का शासक राव दूदा। वह सीसोदियो की चद्रावत शाखा के राव चादा के पुत्र राजकुमार नगराज का पुत्र था। नगराज अपने पिता के जीवनकाल मे ही मर गया, तब दूदा अपने दादा का उत्तराधिकारी हुआ। वह बादशाह शाहजहाँ के प्रमुख हिन्दू उमरावो में से था। शाहजहाँ ने दौलताबाद विजय के लिए जब मोहबतखां को सेना देकर भेजा, तब वह भी उस सेना मे नियुक्त हुआ और उसी युद्ध में वीरतापूर्वक लड कर काम आया। तब उसका मन्सब दो हजारी जात पन्द्रह सौ सवार का था। उसका चाचा गिरधरदास भी इसी युद्ध मे मारा गया था। राव अचलदास दूदा का चतुर्थ पूर्वज था।

मु० द० भा० १, पृ० २१४, नैणसी भा० ३, पृ० २४८-२४९।

पृ० २३, गीत २६ दूदा नगराजोत, सीसोदिया की चद्रावत शाखा का राव दूदा। वह रामपुरा का शासक था। पहिले पृ २३, गीत २५ की टिप्पणी देखो।

पृ. २४, गीत २७ राव सत्रसाल—राव शत्रुशाल हाडा बून्दी के स्वामी राव राय रतनसिंह के पुत्र राजकुमार गोपीनाथ का ज्येष्ठ पुत्र था। वह अपने पिता महराव राय रतनसिंह की मृत्यु के पश्चात् स० १६८८ मे बूदी की गद्दी पर आसीन हुआ। वह बादशाह शाहजहाँ का मन्सबदार और प्रभावशाली सेनानायक था। स० १७१५ मे धौलपुर के युद्ध मे शाहजादे दाराशिकोह के रण-त्याग करने के बाद भी युद्ध में डटा रहा और अन्त में अपनी बूदी की निजी सेना सहित लडता हुआ खेत रहा। उसी युद्ध में उसका पुत्र भगवन्तसिंह भी मारा गया था। उस समय उसका मन्सब चार हजारी जात, चार हजार सवार का था।

गहलोत, द्वि भा पृ. ११७, बिन्हैरासौ, पृ० १२९

पृ. २५, २६, २७, २८ गीत २७, २८, २९, ३० और ३१ राव सत्रसाल हाडा—राव शत्रुशाल बूदी का शासक और शाही मन्सबदार था। उसका परिचय पहिले पृ. २४, गीत २७ की टिप्पणी के अन्तर्गत देखो।

पृ० ३०, गीत ३२ महाराजा जसवंतसिह—महाराजा जसवंतसिह जोधपुर के राठौड शासक राजा गजसिह का द्वितीय राजकुमार था। बादशाह शाहजहाँ ने राजा गजसिह की इच्छा से उनके बडे पुत्र अमरसिंह को राव का खिताब और नागौर का राज्य प्रदान कर जोधपुर के अधिकार से वचित कर दिया था। गजसिंह के देहावसान पर स० १६९५ मे जसवतसिंह जोधपुर की गद्दी पर बैठा। बादशाह शाहजहाँ की इन पर महती कृपा थी। उससे वह अनवरत खिल्लतें एव मन्सब प्राप्त करते हुए उसके शासनकाल मे सात हजारी जात, छह हजार सवार के मन्सबदार बन गया था। स० १७१५ के शाहजादों के उत्तराधिकारी के उज्जैन के युद्ध मे वह शाहजादा दाराशिकोह की ओर से युद्ध मे सम्मिलित हुआ और युद्ध मे शाही पक्ष की पराजय देख कर मारवाड़ को चला गया। तदोपरान्त मिर्जा राजा जयसिह कछवाहा के समझाने पर दाराशिकोह का पक्ष त्याग कर औरगजेब की सेवा मे चला गया। औरगजेब की ओर से जसवन्तसिह को गुजरात का राज्यपाल नियुक्त किया गया। शाही सेवा में रह कर इन्होने अनेक युद्धो मे भाग लिया। अन्त मे स० १७३५ में

५२ वर्ष की आयु में जमरुद में इनका शरीरान्त हो गया।

रेउ, प्र. भा. पृ. २१०-२४१

पृ ३१, गीत ३३ राजा रामसिंघ—मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा आमेर का जेष्ठ राजकुमार रामसिंह कछवाहा। वह जब बादशाह शाहजहाँ के पास उपस्थित हुआ तब बादशाह ने एक हजारी मन्सबदार के पद पर नियुक्त किया। सं० १७१५ मे धोलपुर के युद्ध में रामसिंह दाराशिकोह के पक्ष में लड़ा। दाराशिकोह के पराजित होने पर औरगजेब के शामिल हो गया। उसी वर्ष शाहजादा शुजा का दमन करने के लिए भेजी गई सेना के साथ भेजा गया। मिर्जा राजा जयसिंह के आतंक एव प्रयत्न से राजा शिवा सीसोदिया शाही दरबार में आने पर अपमानित अनुभव कर रोपान्वित हुआ तब औरगजेब ने रामसिंह की निगरानी मे उसे नजरकैद कर दिया। रामसिंह ने अपने पिता के द्वारा शिवा को दिए गए आश्वासनो का पालन करते हुए उसे आगरा के कारावास से निकल भागने का अवसर दिया। शिवा को निकालने के अपराध मे औरगजेब ने रामसिंह को मन्सब से अपदस्थ कर उसके दरबार मे आने तक पर प्रतिबन्ध लगा दिया। मिर्जा राजा जयसिंह की मृत्यु पर औरगजेब ने उसको पुन: चार हजारी जात, चार हजार सवार का मन्सब देकर सम्मानित किया।

मा उ. भा. १ पृ ३४२-३४४, वीर विनोद द्वि भा. पृ ३६६।

पृ ३२, गीत ३४ सिवा सिसोदिया—छत्रपति राजा शिवा सिसोदिया मेवाड के सिसोदिया वश के राजा लाखा के पुत्र सज्जा (सज्जन) की सन्तति परम्परा मे पूना के राजा शाह का छोटा पुत्र था। वह बड़ा महत्वाकाक्षी कुशल राजनेता एवं योद्धा था। उसने बीजापुर के शासक आदिलखां के सरदार अफजलखाँ को छलाघात से मार कर अपना योद्धाजीवन प्रारम्भ किया। बादशाह औरगजेब ने उसको दबा कर प्रभावहीन करने के लिए महाराज जसवतसिंह राठौड, शायस्ता खाँ और मिर्जा राजा जयसिंह को क्रमशः दक्षिण मे नियुक्त किए। मिर्जा राजा जयसिंह ने उसे परास्त कर शाही अधीनता स्वीकार करने के लिए सहमत कर आगरा भिजवाया। बादशाह ने उसके व्यवहार से असन्तुष्ट होकर नजर कैद कर दिया। तब मिर्जा राजा के सकेत तथा सहमति से उनके पुत्र रामसिंह ने शिवा को आगरा से निकल भागने का अवसर दिया। तदुपरान्त वह जीवन-पर्यन्त औरगजेब का विरोधी बन कर शाही प्रान्तों मे अराजकता फैलाता रहा। सन् १६८० ई० मे उसकी मृत्यु हो गई। कोल्हापुर की रियासत उसकी सन्तति-परम्परा मे थी।

मा० उ० भा० १, पृ० ४१३-४१८

पृ० ३३, गीत ३५ जगतसिंह सीसोदिया—प्रतापसिंह का पुत्र जगतसिंह सीसोदिया। गीत मे जगतसिंह को रावत और उज्जैन मे औरगजेब के समय मे वीरगति प्राप्त करने का वर्णन है। मेवाड़ के रावत पदवी वाले ठिकाने सलूम्बर, बेगू, कानौड़, बाठरड़ा, देवगढ और आमेट आदि मे जगतसिंह नाम के किसी व्यक्ति का नामोल्लेख नही मिलता। वह किस ठिकाने का स्वामी था कोई आधार नही मिलता। उज्जैन मे उसके लडने के सकेत से यह अनुमान किया जा सकता है कि वह स० १७१५ वि० में शाहजादों के उत्तराधिकार के युद्ध में लड़ा हो।

पृ. ३४, गीत ३६ राणा जगतसिंघ—महाराना कर्णसिंह का उत्तराधिकारी महाराना जगतसिंह मेवाड । वह स० १६८४ विक्रमी में मेवाड की राजगद्दी पर बैठा । बादशाह शाहजहा प्रतापगढ के शासक महारावत हरीसिंह और प्रतापसिंह तथा डूंगरपुर, बासवाडा के राजाओ से इसका बराबर विरोध बना रहा । उसने देवलिया के महारावत जसवतसिंह को उदयपुर बुलवा कर धोखे से मरवा डाला था । वह बडा उदार और प्रशसा-प्रेमी शासक था । गीत मे इसकी दानशीलता एव कीर्त्ति का वर्णन है । स० १७०६ मे इसका देहावसान हुआ ।

वांकीदास पृ. ६७

पृ. ३५, गीत ३७ पेमसिंघ राठौड़—पेमसिंह राठौड किस ठिकाने का स्वामी था, ख्यातों में कोई स्पष्ट उल्लेख नही मिलता । गीत मे भाण के पौत्र उदा (उदयभान) के साथ लडने का वर्णन है ।

पृ. ३६, गीत ३८ राणा जगतसिंघ—मेवाड के महाराना कर्णसिंह का युवराज और उत्तराधिकारी महाराना जगतसिंह । पहिले पृ. ३४, गीत ३६ की टिप्पणी देखो ।

पृ. ३७, गीत ३६, गोपीनाथ—राव गोपीनाथ राठौड़ । वह राव शक्तिसिंह का पौत्र और प्रतापसिंह का पुत्र था । राठौड़ो के ठिकानो मे शक्तिसिंह के वशज अजमेर मेरवाड़ा के खरवा ठिकाने वाले हैं । संवत् १७१५ वि० के शाहजादो के उज्जैन के युद्ध मे वह सम्मिलित था और वीरतापूर्वक लड़ता हुआ खेत रहा था । वह राजा रतनसिंह की सेना में था ।

वांकीदास पृ. ३१ । रेउ प्र० भा० पृ १८० टिप्पण १

पृ. ३८, गीत ४० बलराम राठौड—कर्ण का पुत्र बलिराम राठौड का परिचय इतिहासो अथवा ख्यातो मे कही उपलब्ध नही हुआ । गीत मे वह किसके विरुद्ध किसकी फौज से लडा, यह भी स्पष्ट नही । वह युद्ध मे मारा गया था ।

पृ ३६, गीत ४१ राव अमरसिंघ राठौड़ नागोर—राव अमरसिंह जोधपुर के राजा गजसिंह का ज्येष्ठ पुत्र था । वि. सं १६७० मे उसका जन्म हुआ । वह बडा वीर और स्वतन्त्र प्रकृति का पुरुष था । राजा गजसिंह ने उसे राज्याधिकार से वचित कर शाहजहां से नागोर का राज्य एवं राव का सम्मान दिलवाया । वह जूझारसिंह बूंदेला, राजा वासू आदि को दडित करने के लिए प्रेषित सेना में नियत हुआ । शाही सेवा मे रह कर उसने अच्छी प्रतिष्ठा उपार्जित की । सन् १६४४ मे बीकानेर और नागोर के सीमा-सम्बन्धी प्रसिद्ध विवाद मे बख्शी सलावत खां ने बीकानेर का पक्ष लिया जिस पर अमरसिंह और उसके मध्य मनोमालिन्य उत्पन्न हो गया । सं० १७०१ मे आगरा में दाराशिकोह की हवेली के दरबार मे सलावत खां के कटु वचन पर प्रबल विरोध हो जाने से इसने सलावत खां को कटार का प्रहार कर मार डाला । शाहजादा दाराशिकोह के उत्साहित करने पर खलीलुल्ला खां और अर्जुन गौड़ आदि छह योद्धाओ ने मिल कर इस पर आक्रमण कर मार डाला । इसका पुत्र रायसिंह था ।

रेउ द्वि. भ . पृ. ६४६, ६५४

पृ. ४०, गीत ४२ महाराणा जगतसिंघ सीसोदिया—मेवाड के महाराना अमरसिंह का पौत्र और कर्णसिंह का पुत्र महाराना जगतसिंह। पहिले पृ० ३६, गीत ३८ की टिप्पणी देखो।

पृ ४१, गीत ४३ सादूल पंवार—अजमेर मेरवाडा के श्रीनगर ठिकाने का स्वामी शार्दूल पवार। वह पचायण का पौत्र और राव मालदेव पंवार का पुत्र था। शार्दूल ने स० १६६३ वि० मे मोटा राजा उदयसिंह जोधपुर के छोटे पुत्र भोपतसिंह जैतारण के स्वामी को युद्ध मे मार कर विजय प्राप्त की। गीत मे मेडता स्थान पर शार्दूल द्वारा राठोड को पराजित करने का वर्णन है। शार्दूल बादशाह जहांगीर का प्रीतिपात्र योद्धा था, शाहजादा खुर्रम के विद्रोह के समय वह राजा भीमसिंह सीसोदिया टोडा के कहने पर शाही मन्सब छोड़ कर शाहजादे के पक्ष में शामिल हो गया था।

वांकीदास पृ० १३७-१३८, ओझा प्र. भा. जिल्द ४ पृ० ३६२ पाद टिप्पण (२)। पवार वंस दर्पण पृ० १६।

पृ ४२, गीत ४४ राव सत्रूसाल हाडा—राव शत्रुशाल हाडा बूंदी का स्वामी और शाही मन्सबदार। पहिले पृ० २४, गीत २७ की टिप्पणी देखो।

पृ ४३, गीत ४५ पदमसिंघ राठोड बीकानेर—बीकानेर के राजा कर्णसिंह का छोटा पुत्र पदमसिंह राठौड। पदमसिंह ने शाही सेवा मे रह कर अनेक युद्धों में भाग लिया था। बादशाह औरंगजेब की इस पर अनन्य कृपा रही। इसके छोटे भाई मोहनसिंह को एक हरिण को पकडने के प्रसग को लेकर दौलताबाद के कोतवाल मुहम्मदशाह मीर तोजक से झगडा हो गया। कोतवाल ने मोहनसिंह को मार डाला। पदमसिंह ने मोहनसिंह के मारे जाने की सूचना पाकर कोतवाल पर आक्रमण कर उसे मार अपने भाई का वैर लिया। वह असाधारण वीर था गीत में कोतवाल को मारने के प्रसंग को आधारस्वरूप चुन कर उसकी तलवार की प्रशसा की गई है। वह सं० १७३९ में दक्षिण में सांवतराय जादूराय के युद्ध मे मारा गया।

दयालदास पृ० २२१, २२३

पृ ४४, गीत ४६ दुरगादास राठोड़—राठोड दुर्गादास राठौड़ों की करणोत शाखा का वीर था। उसके पिता का नाम आसकरण था। उसका जन्म वि० १६९५ द्वितीय श्रावण सुदि १४ को हुआ था। उसने स० १७१५ मे २० वर्ष की आयु मे महाराजा जसवंतसिंह के साथ उज्जैन के युद्ध मे भाग लिया। तदनन्तर वह महाराजा की सेवा मे रह कर युद्धो में भाग लेता रहा। वि० स० १७३५ मे महाराजा जसवतसिंह का परलोक-वास होने पर औरगजेब के कैतव-पाश से उनकी रानियो और राजकुमार अजीतसिंह को निकाल कर मारवाड मे लाने वाले राठोड़ वीरो मे वह अग्रणी था। मारवाड को औरगजेब की दाढो से निकलवाने के ४० वर्षो के दीर्घकालीन युद्धों का दुर्गादास ने सफल सचालन किया था। शिशु महाराजा अजीतसिंह की विपत्ति काल में रक्षा करने तथा राठोड़ को संघबद्ध कर मुगल शासन से आजीवन संघर्ष जारी रखना उसी के सामर्थ्य का परिणाम था। औरगजेब ने उसे उच्च मन्सब प्रदान कर पाटण (गुजरात) का फौजदार नियुक्त किया था। वि० सं० १७६३ में औरगजेब की मृत्यु के बाद महाराजा अजीतसिंह को जोधपुर की गद्दी पर बैठा कर ही

उसने सुख का श्वास लिया। किन्तु बादशाह शाह आलम बहादुरशाह ने जब जोधपुर को पुनः खालसे कर लिया तब पुन' दुर्गादास को सक्रिय होना पडा। महाराजा अजितसिंह के वयस्क होने पर दुर्गादास और उनके मध्य मतैक्य नही रहा। तब वह जोधपुर का उद्धारक अपने वतन का त्याग कर महाराना अमरसिंह द्वितीय और महाराना संग्रामसिंह द्वितीय के पास मेवाड़ मे चला गया। महाराना ने उसे उसके योग्य जागीर प्रदान कर सम्मानित किया और मालवा मे रामपुरा का हाकिम नियुक्त किया। स० १७७५ मार्गशीर्ष शुक्ला ११ को ८० वर्ष, तीन माह और अट्ठाईस दिन की सघर्षशील आयु समाप्त कर वह परलोक सिधार गया। उसके वंशजो के अधिकार मे मारवाड़ मे समदडी, बाघावास, कोरणो, कीटनोद और जयपुर मे नटवाड़ो आदि ठिकाने थे। रेउ भा० १, पृ० २३७–२२०

वाकीदास पृ० ५५–५६, राठौडो की ख्यात

पृ. ४१, गीत ४७ वीरमदेव गौड़—अचलदास गौड का पुत्र वीरमदेव गौड। बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल में गौड़ो के राजगढ, श्योपुर, बडोदा, रणथभौर, मालपुरा, केकडी, अराई सरवाड, परवतसर और मारोठ परगनो की जागीरें थी। मारोठ मे घाटवा, भूथर, चितावा आदि गौडों के प्रमुख ठिकाने थे। वीरमदेव भाखरोत शाखा का गौड था। भाखरोतो के अधिकार के मारोठ परगने मे ग्राम थे। सम्भवतः वह घाटवा के गौडो का मुखिया था। शाहजहाँ के अपदस्थ होने पर औरगजेब ने मारोठ परगना गौडो से जब्त कर स० १७१६ मे रघुनाथसिंह राठौड को दे दिया था। रघुनाथसिंह ने लाडखानी शेखावतों और राजावत कछवाहो की सहायता से गौडों का दमन कर स० १७१९ में मारोठ पर अधिकार किया। वीरमदेव के सम्भवतः सं० १७१७ से १७१९ के मध्य लडे गए किसी युद्ध का गीत मे वर्णन हुआ है।

गोपालदास गौड की वारता, ठिकाना कुचामन की ख्यात

पृ. ४६, गीत ४८ रावत मेघ सीसोदिया—गोयददास का पुत्र रावत मेघसिंह (प्रथम)। वह मेवाड मे वेगूं ठिकाने का स्वामी था। रावत मेघसिंह ने महाराणा अमरसिंह के समय मे ऊटाला दुर्ग स्थित शाही सेनापति महावत खा पर रात्रि मे आक्रमण कर सैनिक सामग्री लूट ली थी। फिर खुर्रम के साथ की मेवाड की लडाइयो में लडा। जहाँगीर ने महाराणा का पक्ष निर्बल करने के लिए महाराणा के चाचा सगर को चित्तौड का राणा बना कर मेवाड के सामतो को शाही पक्ष मे करने के लिए नारायणदास को वेगूं का पट्टा दिया। महाराणा और बादशाह के सन्धि हो जाने पर महाराणा ने रावत मेघसिंह को नारायणदास को वेगूं से निकालने के लिए भेजा। वह नारायणदास को समझाने मे सफल हुआ। किन्तु महाराना ने वेगू का ठिकाना उसको न देकर बल्लू चौहान को दे दिया। तब वह महाराणा से नाराज होकर शाही सेवा मे चला गया। बादशाह जहाँगीर ने उसको मालपुरा का परगना तथा ८० जात २०० सवार का मन्सब प्रदान किया। तब मालपुरा पर अधिकार करने के अवसर पर उसकी पवार क्षत्रियो से लडाई हुई जिसका गीत मे वर्णन है। तदनुपरान्त वह शाही मन्सब त्याग कर महाराणा के पास आ गया। स० १६८५ वि० मे उसका प्राणांत हो गया।

ओझा २ जिल्द पृ. १२०२, १२०३

पृ. ४७, गीत ४६ महाराजा अजीतसिंघ राठौड –महाराजा जसवंतसिंह का उत्तराधिकारी महाराजा अजितसिंह राठौड। इनका महाराजा जसवंतसिंह के देहांत के दो मास बाद वि० स० १७३५ मे लहौर मे जन्म हुआ। औरंगजेब ने महाराजा जसवन्तसिंह के विरोध का प्रतिशोध लेने के लिए अजितसिंह को कृत्रिम घोषित कर मारवाड़ का राज्य हड़पना चाहा। तब महाराजा के स्वामिभक्त सामन्त दुर्गादास अभयकरण करणोत, सोनंग, अजबसिंह चापावत, इन्द्रसिंह जोधा, मोहकमसिंह मेडतिया आदि ने शाही सेवा त्याग कर अजितसिंह की रक्षार्थ विद्रोह किया। स० १७६३ मे औरंगजेब की मृत्यु के बाद महाराजा अजितसिंह का मारवाड़ पर अधिकार हुआ। तदनन्तर बहादुरशाह ने पुनः जोधपुर को खालसा कर लिया। बहादुरशाह की मृत्यु के बाद महाराजा सवाई जयसिंह आमेर और महाराना अमरसिंह द्वितीय उदयपुर आदि की सहायता से साभर स्थान पर हुसैन कुलीखाँ सैयद को मार कर जोधपुर पर अधिकार किया। फर्रुखशियर ने बादशाह बनने पर फिर जोधपुर पर आक्रमण के लिए सेना भेजी। तब अजितसिंह ने अब्दुल्ला खां सैयद आदि से मेल-मिलाप बढा कर फर्रुखशियर को पदच्युत कर मरवा डाला। अजितसिंह ने सैयदों को प्रभावित कर मुहम्मदशाह को बादशाह बनवा कर हिन्दुओ पर लगने वाला जजिया टैक्स बद करवाया। वि० स० १७८० मे उसके ज्येष्ठ महाराज कुमार अभयसिंह के कहने पर उन्हें छोटे पुत्र बखतसिंह ने जोधपुर के किले पर मार डाला। महाराजा अजितसिंह राजस्थानी भाषा के प्रौढ विद्वान् थे। उनकी कृतियो मे गजउद्धार, देवीचरित, भवानीसहस्रनाम, श्रीकृष्णचरित, रतन-रतनावती री वारता आदि बड़ी उत्कृष्ट कृतियाँ हैं। अजितविलास, राजरूपक।

पृ. ४८, गीत ५० राजाधिराज बख्तसिंघ नागौर—बादशाह औरंगजेब के आजीवन विरोधी महाराजा जसवंतसिंह का पौत्र और महाराजा अजितसिंह का छोटा पुत्र राजाधिराज बख्तसिंह। वह नागौर का स्वतत्र शासक था। वह बडा पराक्रमी, न्यायप्रिय, राजनीतिज्ञ और युद्धेच्छु राजा था। उसने अहमदाबाद के युद्ध मे महाराजा अभयसिंह के साथ सर बिलन्द खां से युद्ध किया। स० १७६८ वि० के अजमेर में समीपस्थ गगवाणा स्थान पर जयपुर नरेश सवाई जयसिंह के नेतृत्व में सम्मिलित महाराजा बहादुरसिंह किशनगढ, राजा उम्मेदसिंह शाहपुरा, राजा सूरजमल भरतपुर, राजा गोपालपाल करौली राजा इन्द्रसिंह शिवपुरी, राव शिवसिंह सीकर, राव रामपुरा, शार्दूलसिंह शेखावत झुझनूं और महाराजा जोरावरसिंह बीकानेर आदि २२ राजाओ की एक लाख की सेना से युद्ध किया। इस युद्ध मे जयपुर की सेना को एक बार रणस्थल त्यागना पड़ा। फिर राजा उम्मेदसिंह शाहपुरा के सामने चढने पर वह पांच हजार योद्धाओ मे से अवशेष ६० योद्धाओ को लेकर क्षत-विक्षत अवस्था में नागौर पहुचा।

अपने अग्रज महाराजा अभयसिंह के देहांत के बाद उनके पुत्र महाराजा रामसिंह से जोधपुर का राज्य छीन कर मारवाड़ का शासक बन गया। वह राजस्थान पर मरहठो के आक्रमणों को रोकने के लिए रियासतो का एक सैनिक संघ बनाना चाहता था। इसी योजना को क्रियान्वित करने के लिए सींधोली स्थान पर गया हुआ था। वहीं अचानक अस्वस्थ होकर सं० १८०६ मे कालकवलित हो गया।

रेउ भा० १ पृ. ३६७–३७०, मारवाड की ख्यात, मारवाड के उमरावो की वारता।

पृ ४१, गीत ५१ राजाधिराज बखतसिंघ नागौर—नागौर का स्वतंत्र शासक राजाधिराज बख्तसिंह नागौर। गीत मे स० १७९८ के गगवाणा के प्रसिद्ध युद्ध का वर्णन है। पहिले पृ० ४८, गीत ५० की टिप्पणी देखो।

पृ. ५३, गीत ५२ सालमसिंघ देवळ—सालमसिंह देवल के वंश, वृत्तान्त, स्थान आदि का कोई इतिवृत्त ख्यातो से उपलब्ध नही होता। गीत मे भी उसके पिता आदि के लिए संकेत नहीं है। सभवत: वह सिरोही के निकटस्थ जालौर प्रात के देवल क्षत्रियो के मालवाडा, लोहियाणा आदि किसी ठिकाने का स्वामी था।

पृ ५४, गीत ५३ स दे सेखावत—शेखावाटी प्रदेश के सस्थापक राव शेखा के वंशज राजा रायसल दरबारी के तृतीय पुत्र भोजराज का वशज शार्दूलसिंह शेखावत। उसके पिता का नाम जगरामसिंह था। वह बडा प्रतापी और दूरदर्शी शासक था। उसने सीकर के राव शिवसिंह शेखावत, रामगढ के गुमानीसिंह और खूड के रूपसिंह आदि सरक्तीय वीरो की सहायता प्राप्त कर झुझुनूं, नरहड, सुल्ताना आदि नवाबी ठिकानों पर विजय प्राप्त कर अपने अधिकार मे किए। स० १७८७ मे झुंझुनूं को विजय कर अपनी राजधानी वहाँ स्थापित की। वारवा के अपने चचरे भाई सुखसिंह को छद्मता से मार डालने पर कायमखानियो के प्रति उनका वैर सदा के लिए स्थायी बन गया। उस वैर का शोधन करने के लिए कायमखानी शक्ति को ही समाप्त कर दिया। महाराजा सवाई जयसिंह के साथ रह कर शार्दूलसिंह ने गगवाणा के युद्ध और बीकानेर के राजद्रोही ठाकुरो के दमन में सक्रिय भाग लिया था। फतहपुर पर से नवाबी शासन खत्म करने के सैनिक अभियानों में वह राव शिवसिंह सीकर का पूर्ण सहयोगी रहा। इनके उत्तराधिकारियो के अधिकार में खेतडी, बिसाऊ, नवलगढ, मडावा, चौकडी आदि छोटे-बड़े सैकड़ों ठिकाने थे। शार्दूलसिंह का छोटा भाई सल्हदीसिंह भी अपने समय का महान् वीर था।

खेतडी का इतिहास पृ. ३५–४२, शाहपुरा रेकार्डस्

पृ ५५, गीत ५४ राव सिवसिंघ शेखावत—शेखावाटी के सीकर राज्य के सस्थापक राव शिवसिंह शेखावत। वह राव दौलतसिंह के पुत्र थे। शि सिंह ने शेखावत शक्ति का सहयोग प्राप्त कर स० १७७८ वि० मे फतहपुर के नबाव को परास्त कर फतहपुर पर अधिकार किया। स० १७७९ मे गगवाना के युद्ध में जयपुर के ध्वज के नीचे रह कर राजाधिराज बख्तसिंह से युद्ध किया। महाराजा सवाई जयसिंह, राव शिवसिंह और राजा सूरजमल भरतपुर के परस्पर अनन्य प्रीति रही। जयसिंह की मृत्यु के वाद बगरू के प्रसिद्ध युद्ध मे शिवसिंह महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह की ओर से मल्हार राव होलकर की सेना से लडते हुए घायल हुए। उस युद्ध मे उनकी तलवार की तीन घातक चोटें लगी, जिससे कुछ दिनों बाद जयपुर मे उनका देहान्त हो गया।

रायसल जस सरोज

पृ. ५७ गीत ५५ तेजसिंघ शेखावत—उदयसिंह का पुत्र तेजसिंह शेखावत नारायणपुर (अलवर) स्थान का स्वामी था। गीत मे उसके शाही सेना के सैयदों से लड़ने का वर्णन है। सभवत वह मेवात के किसी हाकिम से लड़ा था।

पृ. ५८, गीत ५६ महाराजा बहादरसिंघ—महाराजा बहादुरसिंह राठौड किशनगढ। वह महाराजा राजसिंह का द्वितीय पुत्र था। अपने बड़े भाई महाराजा सावतसिंह 'नागरीदास' की अनुपस्थिति मे किशनगढ की गद्दी पर बैठ गया। तदनन्तर दोनो भाइयो के राज्य प्राप्ति के लिए युद्ध हुआ। किन्तु उसमे सावतसिंह को सफलता नहीं मिली। बहादुरसिंह बडा योद्धा, विद्वान् और योग्य शासक था। उसने जोधपुर के महाराजा रामसिंह और उनके चाचा राजाधिराज बख्तसिंह के आपसी युद्धो मे बख्तसिंह का साथ दिया। महाराजा विजयसिंह जोधपुर से भी इनकी घनिष्ठ मित्रता रही। महादजी सिंधिया, राजा उम्मेदसिंह शाहपुरा, महाराव उम्मेदसिंह हाडा बूंदी और उदयपुर से भी इनका राजनैतिक सम्बन्ध बना रहा। वह राजस्थानी डिंगल भाषा का श्रेष्ठ कवि, गद्य लेखक और सगीत शास्त्र का उद्भट ज्ञाता था। इनकी रचनाओ मे गेय गीत, रावत मोहकमसिंघ हरीसिंघोत री वात आदि रचनाएँ प्राप्त है। वि० सं० १८३६ मे इसका देवलोकवास हुआ।

बांकीदास पृ०-८२, मारवाड रा उमरावां री वारता, शाहपुरा रेकार्ड

पृ ६०, गीत ५७ रावराजा ऊमेदसिंघ हाडा बूंदी—बूंदी के महाराव राजा बुधसिंह का पुत्र महाराव राजा उम्मेदसिंह बूंदी। महाराजा सवाई जयसिंह ने महाराव राजा बुधसिंह से बूंदी का राज्य छीन कर करवाड के दलेलसिंह को वहाँ का शासक बना दिया। स० १८०० वि० मे सवाई जयसिंह के स्वर्गवास के बाद महाराव राजा उम्मेदसिंह ने अपने सजातीय कोटा के महाराव दुर्जनशाल, शाहपुरा के राजा उम्मेदसिंह तथा गुजरात के राज्यपाल फखरुद्दीन की सैनिक सहायता प्राप्त कर बूंदी पर आक्रमण किया और महाराव-राजा दलेलसिंह को पराजित कर बूंदी से खदेड दिया। महाराव दुर्जनशाल ने इस सहायता से लाभ उठा कर बूंदी का कुछ भू भाग दबा लिया। तदनन्तर महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह ने बूंदी पर आक्रमण कर डबलाना स्थान पर हाडों को हरा कर बूंदी पर कब्जा कर लिया। तब उम्मेदसिंह ने मल्हार राव होल्कर कोटा के दुर्जनशाल, शाहपुरा के उम्मेदसिंह और महाराना उदयपुर की सहायता प्राप्त कर बनास नदी के पास राज महल स्थान पर जयपुर के साथ युद्ध कर पुनः बूंदी प्राप्त की। वह बडा वीर और कुशल शासक था। उम्मेदसिंह ने मरहठों के विरुद्ध महाराजा अभयसिंह राठौड की सहायता की। इससे नाराज होकर कोटा के महाराव दुर्जनशाल, महादजी सिंधिया आदि ने सन् १८६२ पर आक्रमण कर दिया। गीत मे इस घटना का वर्णन है।

गहलोत द्वि० भा. पृ० ८३-८६, १२७

पृ ६१, गीत ५८ उदैभांण राठौड—अजमेर मेरवाडा के भिणाय का राजा उदयभाण। वह जोधपुर के राव चन्द्रसेन का चौथा वंशधर और राजा श्यामसिंह का पुत्र था। दक्षिण मे कुहाणा के युद्ध मे उसने राजा शिवा सीसोदिया से युद्ध कर वीरगति प्राप्त की। इसी युद्ध मे उदयभान का सब मे छोटा भाई अक्षयराज मारा गया। उदयभान के वशजो के भिनाय के अतिरिक्त देवलिया, बघेरा आदि ठिकाने थे।

बलद्विलास, बांकीदास

पृ ६२, गीत ५६ महेसदास कूंपावत—जोधपुर के राव जोधा के भाई अक्षयराज के पौत्र कूंपा के बारहवें वंशधर कुंवर दलपत का उत्तराधिकारी महेशदास कूंपावत राठौड। वह मारवाड़ के आसोप ठिकाने का सरदार था। जोधपुर के महाराजा विजय के शासनकाल में उसने सं० १८३७ मे सिंध के ऊमरकोट प्रदेश के बीजड टालपुरिया से ठाकुर सवाईसिंह पोकरण, ठाकुर शिवदानसिंह जोधा लाडनूं आदि सहित घमासान युद्ध किया। महादा सिंधिया के जयपुर पर आक्रमण करने पर स० १८४४ मे महेशदास जयपुर के पक्ष में रह कर तुंगा स्थान पर मरहठो से लडा। इस युद्ध मे मरहठो की पराजय हुई। इस पराजय का बदला लेने के लिए महादाजी ने सं० १८४७ वि० मे मेडता पर आक्रमण किया। मरहठों के पास ८० तोपें और सुशिक्षित विशाल सेना थी, जिसका सचालन प्रसिद्ध जनरल डिबोयन कर रहा था। राठौडों के पास केवल तलवार और घोडो की शक्ति थी। किन्तु सकल्पव्रती राठोडो के समक्ष मरहठे न ठहर सके। महेशदास ने इस युद्ध में शौर्य प्रदर्शन कर प्राणोत्सर्ग किया। राठौड सेना के अनेक योद्धाओ के साथ कन्हीराम चादारूण, नरहरिदास ईडवा, फकीरदास आलनियावास, जालिमसिंह जोधा पाटोदी और जालिमसिंह शेखावत बलाड़ा का स्वामी भी मारा गया था।

जोधा जस प्रकास पृ० १६–१६, आसोप का इतिहास, पृ० १०६–११६, रेउ द्वि० भा० पृ० ६७४।

पृ० ६३ मोहकमसिंघ रूपावत—जोधपुर के राव रणमल्ल के ग्यारहवें पुत्र रूपा (रूपसी) के वशज रूपावत कहलाते हैं। मारवाड मे रूपावतो का पाली ठिकाना प्रमुख था। समवतः मोहकमसिंह पाली का ठाकुर था। गीत मे उसकी स्थापत्यकला-प्रियता और दानवीरता का वर्णन है।

रेउ प्र० भा० पृ० ८०

पृ. ६४, गीत ६१ जोरावरसिंघ खींवसर—जोधपुर नरेश राव जोधा के पुत्र करमसी के वशज उदयसिंह का पुत्र जोरावरसिंह। वह जोधपुर राज्य के नागोर भू-भाग के खीवसर ठिकाने का ठाकुर था। वह महाराजा विजयसिंह जोधपुर से रुष्ट होकर मरहठों से मिल गया था। उसको दबाने के लिए जोधपुर से सेना भेजी किन्तु उसने उस सेना को नष्ट कर दिया। तब विजयसिंह ने बीकानेर के महाराजा जोरावरसिंह को मध्यस्थ बना कर उसको प्रसन्न किया। गीत मे उसकी वीरता का वर्णन है।

ओझा भा० ५ पृ० ३४६

पृ ६५, गीत ६२ चांदसिंघ—चांदसिंह किस ठिकाने का स्वामी तथा किस खांप का राठौड था, राठौडों की ख्यातो में उल्लेख नही मिलता। गीत मे उसे महाराजा अभयसिंह का योद्धा और राजाधिराज बख्तसिंह नागोर की सेना से लडना दिखाया है। उसे द्वितीय हरीसिंह बतलाया गया है, जो उसके पिता या किसी पूर्वज का नाम है।

पृ ६६, गीत ६३ नगा—नगराज के कुल एव गोत्र तथा स्थान आदि के लिए कोई सूचना नही मिली। गीत मे मेवाड़ के महाराना के लिए किसी युद्ध मे वीरता दिखा कर मारे जाने का वर्णन है।

पृ. ६७, गीत ६४, प्रथीराज राठौड़—पृथ्वीराज राठौड़ के ठिकाने एवं शाखा का कोई वृत्तान्त नही मिला। गीत मे पृथ्वीराज को शूरसिंह का पौत्र और हरराज का पुत्र वर्णित किया है। उसने मुसलमानो का आक्रमण होने पर रायसिंह (रासै) खीची की रक्षा करते हुए वीर-गति प्राप्त की। रायसिंह पैंजा का पुत्र और धारू का पौत्र था।

पृ. ६८, गीत ६५ घासीराम हाडा—बूंदी के शासक राव शत्रुशाल के छोटे भाई महाराज मोहकमसिंह के वंशज कल्याणसिंह का पुत्र महाराज घासीराम हाडा। उसके अधिकार मे कोटडियाद परगने का आतरदाह ठिकाना था। वह बडा निर्भीक, साहसी और राजभक्त सरदार था।

पृ. ६६, गीत ६६ घासीराम हाडा—बूंदी के कोटडियाद परगने के आतरदाह का स्वामी घासीराम कल्याणसिंहोत हाडा। पहिले पृ. ६८, गीत ६५ की टिप्पणी देखो।

पृ. ७०, गीत ६७ वैरीसालोत हाडा रो—बूंदी के राजकुमार गोपीनाथ का तृतीय पुत्र वैरीशाल था। वैरीशाल को पैतृक अधिकार मे २१ ग्रामों की जागीर का बलवन ठिकाना मिला था। वैरीशाल से हाडो की वैरीशालोत शाखा प्रचलित हुई। गीत मे वैरीशालोत शाखा के योद्धाओं की वीरता का वर्णन है। उन्होने कोटा के पक्ष मे रह कर संभवतया रावराजा भीमसिंह उनियारा से युद्ध लड़ा था।

पृ ७१, गीत ६८ राव भीमसिंघ हाडा—कोटा के राव रामसिंह का पुत्र महाराव भीमसिंह हाडा। वह बड़ा वीर और प्रतापी शासक था। उसने गागरोन, बारां, मागरोल, मनोहरथाना, शेरगढ और महू परगनों को विजय कर कोटा राज्य की वृद्धि की। बूंदी पर भी कुछ काल तक इसका अधिकार रहा। सन् १७१६ ई० मे दक्षिण के सूबेदार निजामुलमुल्क के स्वतत्र हो जाने पर मुहम्मदशाह ने उसको दबाने के लिए दिलावर खां और राजा गजसिंह कछवाहा के साथ इनको भी दक्षिण पर भेजा। बुरहानपुर के पास कुरवाई के मैदान में उभय पक्षो मे युद्ध हुआ, जिसमे महाराव भीमसिंह, राजा गजसिंह और दिलावर खां तोपो के गोलो से घायल होकर मारे गए। बादशाह फर्रुखशियर के शासनकाल मे भीमसिंह पच हजारी मन्सबदार था। गीत मे निजामशाही के युद्ध मे मारे जाने का वर्णन है। वह वि० सं० १७६४ से १७७७ तक कोटा का शासक रहा।

गहलोत द्वि. भा पृ ५५–५६

पृ ७३, गीत ६६ भींवसिंह हाडा—भारतसिंह हाडा का पुत्र भीमसिंह हाडा। उसके ठिकाने का परिचय प्राप्त नहीं है। वह किसके विरुद्ध लडता हुआ काम आया, जानकारी नहीं मिलती। गीत मे भीमसिंह को द्वितीय चद (चन्द्रसिंह) अकित किया है।

पृ ७४, गीत ७० भींवसिंह हरदावत—भीमसिंघ हरदावत हाडा। बूंदी के शासक राव भोज के द्वितीय पुत्र हृदयनारायण के वशज हरदावत हाडा कहलाते हैं। कोटा राज्य में हरदावतो के करवाड, गैंता, पूसोद और पीपलदा नामक चार ठिकाने थे। यह ठिकाने कोटडियाद भूभाग के कारण कोटडिया कहलाते हैं। गीतनायक भींमसिंहोत इनमे से किस ठिकाने का स्वामी था, कोई आधार प्राप्त नही है। संभवतया पृ. ७३, गीत ६६

का भीमसिंह और इस गीत का नायक भीमसिंह दोनों एक ही है। वह किस युद्ध में मारा गया, इतिहास मौन है। गहलोत द्वि. भा. पृ. ३७, १५०–१५१

पृ. ७५ गीत ७१ दुरजणसाल हाडा—कोटा के महाराव भीमसिंह का तृतीय पुत्र महाराव दुर्जनशाल हाडा। अपने भाई महाराव अर्जुनसिंह के निधनोपरात वह वि० सं० १७८० मे कोटा का अधिकारी बना। महाराव दुर्जनशाल ने आतरिक लड़ाइयो के अतिरिक्त सं० १७६५ मे वाजीराव पेशवा, महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह जयपुर, राजा बलभद्र खीची गुगोर आदि से अनवरत युद्ध लड़े। गीत में दुर्जनशाल और ईश्वरीसिंह जयपुर के मध्य हुए युद्ध का वर्णन है। वह युद्ध वि० स० १८०१ में कोटा के पास कोटडी नामक स्थान पर हुआ था। महाराव का स० १८१३ विक्रमाब्द मे स्वर्गवास हुआ।

गहलोत द्वि. भा. पृ. ६०–६३

पृ० ७६, गीत ७२ राव दुरजणसाल हाडा—कोटा के महाराव अर्जुनसिंह का उत्तराधिकारी महाराव दुर्जनशाल। गीत मे महाराव दुर्जनशाल और कछवाहा नरेश महाराजा सवाई जयसिंह के आपसी विरोध का वर्णन है। सभवतया दुर्जनशाल के गद्दी पर बैठने पर उसके भाई श्यामसिंह के कोटा पर अधिकार करने के प्रयत्नों मे सवाई जयसिंह ने जो मदद की थी उसी ओर गीत मे सकेत है। पहिले पृ. ७५, गीत ७१ की टिप्पणी देखो।

गहलोत द्वि. भा. पृ. ६०

पृ. ७७, गीत ७३ गोरधन कल्याणोत—कछवाहो की कल्यानोत शाखा का गोरधनसिंह। वह आमेर के राजा पृथ्वीराज के दसवें पुत्र कल्याणमल के वशज कानसिंह का पुत्र था। गोरधनसिंह के अधिकार में जयपुर से सात कोस दूर कालवाड़ नाम का ठिकाना था। गीत मे उसके द्वारा दान के महत्व का वर्णन बतलाया गया है। वांकीदास पृ. १२३, कछवाहो का इतिहास पृ ६३।

पृ. ७८, गीत ७४ सगता गौड—अजमेर मेरवाडा में राजगढ के गौड़ों के पूर्वज शाही मन्सबदार अर्जुन गौड़ का पौत्र सगतसिंह (शक्तिसिंह) गौड़। अर्जुन के राजा राजसिंह, हनुवतसिंह, भीमसिंह, रामसिंह और आत्माराम पाच पुत्र थे। सगतसिंह आत्माराम का पुत्र था। तब उसके वतन मे शिवपुर की जागीर थी। गीत में वर्णित युद्ध उसने किसके साथ लड़ा यह आधार नही मिला। विन्है रासो, परिशिष्ट पृ. २१८–२१९।

टॉड भा० ३ पृ० १४९२

पृ० ७९, गीत ७५ हाडा कछवाहां रो पाचोलास रो जुद्ध—यह युद्ध बूंदी और जयपुर की सेनाओ मे पाचोलास स्थान पर लडा गया था। महाराजा सवाई जयसिंह उस समय मालवा की ओर गए हुए थे। पीछे से कछवाहो और हाडो के बूंदी की शासनिक व्यवस्था को लेकर विरोध उत्पन्न हो गया तब बुधसिंह अपनी निजी सेना को लेकर युद्ध से अलग हट कर चले गए। महाराजा अभयसिंह हाडा और जयपुर पक्ष के मानसिहोत राजावत फोजूराम ईसरदा, फतहसिंह बरवाडा, घासीराम आदि पाच प्रसिद्ध योद्धा मारे गए। उधर बूंदी के पक्ष मे महाराज अभयसिंह आदि काम आए। जयपुर पक्ष की विजय हुई। कछवाहो की ख्यात, कछवाहो का इतिहास पृ० २९।

पृ ८१, गीत ७६ महाराज छतरसिंघ—महाराज छत्रसिंह हाडा। वह बूंदी के राजकुमार गोपीनाथ के द्वितीय पुत्र इन्द्रशाल का वंशज था। इन्द्रशाल बादशाह शाहजहाँ के यहाँ आठ सौ जात, चार सौ सवार का मन्सवदार था। वह इन्द्रगढ़ ठिकाने का स्वामी था। छत्रसिंह महाराज मेघसिंह का पुत्र और उत्तराधिकारी था।

गहलोत द्वि. भा. पृ. ६८

पृ. ८२, गीत ७७, पृ. ८३, गीत ७८, पृ. ८४, गीत ७९, पृ ८५, गीत ८०, पृ ८६, गीत ८१ महाराज छतरसिंह हाडा—वह हाडौती क्षेत्र के इन्द्रगढ ठिकाने का स्वामी था। महाराज उसकी पदवी थी। उसके पिता का नाम मेघसिंह और दादा का नाम सरदारसिंह था। पहिले पृ ८१, गीत ७६ की टिप्पणी देखो।

पृ ८७, गीत ८२ महाराज देवसिंह हाडा—वह महाराज मेघसिंह का पौत्र और महाराज छत्रसिंह इन्द्रगढ का उत्तराधिकारी था। उसने कोटा पर मरहठो के आक्रमण करने पर कोटा के पक्ष में युद्ध मे भाग लिया था। बूंदी पर महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह का अधिकार हो जाने पर महारावराजा उम्मेदसिंह उस विपत्तिकाल मे सहायता की कामना से उसके पास इन्द्रगढ गया किन्तु उसने उम्मेदसिंह की सहायता नही की। जब उम्मेदसिंह का पुनः बूंदी पर अधिकार हो गया तब उसने देवी के दर्शनो के बहाने इन्द्रगढ की ओर यात्रा की और अचानक इन्द्रगढ पर धावा बोल कर उसको सपरिवार मार डाला। इससे उम्मेदसिंह की बड़ी अपकीर्त्ति हुई।

बांकीदास पृ० १४७

पृ. ८८, गीत ८३ महाराज सरदारसिंघ हाडा—हाडौती क्षेत्र के इन्द्रगढ ठिकाने का स्वामी महाराज सरदारसिंह हाडा। वह राजकुमार गोपीनाथ के द्वितीय पुत्र इन्द्रशाल का वंशज था। उसका उत्तराधिकारी महाराज मेघसिंह हाडा हुआ।

पृ. ८९, गीत ८४, पृ. ९०, गीत ८५, पृ ९१, गीत ८६, पृ. ९२, गीत ८७, पृ ९४, गीत ८८, पृ. ९५, गीत ८९, पृ. ९६, गीत ९०, पृ ९७, गीत ९१ महाराज भगतराम हाडा—वह हाडौती के इन्द्रगढ ठिकाने का स्वामी था। महाराज उसका उपटक था। भगतराम महाराज छत्रसिंह का पुत्र था। उसने कछवाहों के साथ के हाडाओ के युद्ध मे वीरता प्रदर्शित कर यश प्राप्त किया।

पृ. ९८, गीत ९२ कुंवर सनमानसिंघ हाडा—वह इन्द्रगढ के महाराज छत्रसिंह हाडा का पुत्र और उत्तराधिकारी था। स० १८३९ वि० मे जयपुर के कोटड़ियाद पर आक्रमण के समय सनमानसिंह ने अपने सजातीय वीरो के साथ युद्ध मे भाग लिया था।

पृ ९९, गीत ९३, पृ.१००, गीत ९४, पृ १०२, गीत ९५ महाराज सुनमानसिंह हाडा—हाडौती के कोटढियाद भूभाग के इन्द्रगढ ठिकाने का स्वामी महाराज सनमानसिंह हाडा। वह महाराजा छत्रसिंह का पुत्र था। उसने सं० १८३९ मे जोरावरसिंह खातोली, समरथसिंह करवाड, नाथसिंह गैंता, भारतसिंह पीपल्दा और भारतसिंह बलवन के साथ जयपुर के विरुद्ध युद्ध मे भाग लिया।

कोटा द्वि० भा० पृ० ४८०

पृ. १०३, गीत ९३ महाराजा विजयसिंह राठौड़—महाराजा बख्तसिंह जोधपुर का उत्तराधिकारी महाराजा विजयसिंह राठोड़। वह वि० स० १८०९ मे गद्दी पर बैठा। उसके राज्यच्युत बबेरे भाई महाराजा रामसिंह ने जय अप्पा सिंधिया की सहायता प्राप्त कर मारवाड पर चढाई की। स० १८११ मे मेडता स्थान पर घनघोर युद्ध हुआ। विजयसिंह हार गया और उसने नागौर दुर्ग की शरण ली। मरहठो ने पीछा कर नागौर को घेर लिया तब विजयसिंह ने अपने दो वीर राजपूतों द्वारा छलाघात से जय अप्पा को मरवा डाला। क्रुद्ध मरहठों ने प्रतिशोध के लिए आक्रमण कर सलूम्बर के रावत जैतसिंह संखवास के चोहान ठाकुर और कई सरदारो को मार डाला। तदनन्तर विजयसिंह की मरहठो, अपने जागीरदारो, सिंध के टालपुरियो और रामसिंह आदि के बीच कई बार लड़ाइयां हुईं। स० १८५० मे उसकी मृत्यु हो गई।

पृ. १०५, गीत ९७ तिलोकसिंघ राजावत कछवाहा—आमेर के राजा पृथ्वीराज कछवाहा के छोटे पुत्र सुरतान का पुत्र तिलोकदास कछवाहा। वह एक समय शाही मन्सबदार रहा था फिर मन्सब त्याग कर आ गया। बादशाह अकबर ने रुस्तम तुर्किस्तानी के पुत्र दस्तमखाँ को रणथम्भोर जागीर मे देकर अजमेर प्रान्त का अध्यक्ष नियुक्त किया। उन दिनों अचलदास ने पजाब मे लूटपाट की। शाही आज्ञा प्राप्त होने पर दस्तम खाँ ने अचलदास के ठिकाने दूनी (?) पर हमला किया। तिलोकसिंह अपने सहयोगी वीर अचलदास बलभद्रोत (अचरोल वालो का पूर्वज) तथा राजा भारमल के भ्रातृ पुत्र मोहनसिंह और शूरसिंह सहित दस्तमखाँन को मार कर मारा गया। दस्तमखाँन तब तीन हजारी जात का मन्सबदार था। यह घटना सन् १५८० ई० की है। नैणसी भा० १ पृ ३०४, ३०७, मुगल दरबार भा० ३ पृ० ४०७, माला सादू कृत अचल तिलोकसी रा झूलना छद।

पृ. १०६, गीत ९८ राजा मानसिंह कछवाहा—आमेर के राजा भगवन्तदास का पुत्र राजा मानसिंह कछवाहा प्रथम। वह बादशाह अकबर के नव रत्नों तथा प्रमुख सेनापतियो मे था। शाही सेवा मे रह कर उसने अकबर और जहाँगीर के शासनकाल मे हल्दी घाटी, काबुल मे रुसानियों, यूसुफजइयो, बिहार, उडीसा, नीलगिरी, बगाल आदि अनेक युद्धों में लड़ा और विजय प्राप्त की। बादशाह अकबर ने उसे पजाब, काबुल, उड़ीसा और बगाल की सूबेदारियो पर नियुक्त किया था। वह अद्वितीय वीर, दानी और रणदक्ष राजनीतिज्ञ था। वह सर्वप्रथम स० १६१९ मे शाही दरबार मे गया और जीवन भर उत्तरोत्तर उन्नति प्राप्त करता रहा। बादशाह जहाँगीर के शासनकाल के ९वें वर्ष मे उसका देहान्त हो गया।

मुगल दरबार भा. १ पृ. २९१—३००। कछवाहों की ख्यात, दुरसा आढा कृत राजा मानसिंघ रा झूलणा।

पृ १०७, गीत ९९ राजा सूरसिंघ भगवन्तदासोत—आमेर के कछवाहा राजा भगवन्तदास का पुत्र राजा शूरसिंह कछवाहा। वह बादशाह अकबर का मन्सबदार था। उसने बादशाह हुमायू के पौत्र और कामरान के पुत्र सुल्तान सादत को स्यालकोट के युद्ध में परास्त कर मार डाला था।

नैणसी भा० १ पृ. ३००

पृ. १०८, गीत १०० राजा नरायणदास खगारोत कछवाहा—आमेर के शासक राजा पृथ्वीराज के छोटे पुत्र जगमाल के उत्तराधिकारी खगार कछवाहा का पुत्र राजा नारायणदास कछवाहा। वह बादशाह अकबर का सेनानायक और मन्सबदार था। अकबर ने उसे फुलेरा के पास का प्रान्त प्रदान किया था। उसने वहाँ अपने नाम पर नराणा कस्बा आबाद किया। वह दादू सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक महात्मा दादूदयाल का शिष्य था। दादूदयाल ने इसी के आग्रह से नाराणा में अपना निवास बनाया था।

नैणसी भा० १ पृ. ३०४,
मुगल दरबार भा० १ पृ० १५२–१५३

पृ १०९, गीत १०१, पृ. ११०, गीत १०२ मिरजा राजा जैसिंह कछवाहा—वह राजा महासिंह आमेर का पुत्र था। अपने पिता की मृत्यु पर स० १६७१ में आमेर की गद्दी पर आसीन हुआ। शाही दरबार मे प्रवेश करने पर उसे एक हजारी जात पाच सौ सवार का मनसब मिला। तदनन्तर सुल्तान पर्वेज के साथ दक्षिण की चढाई पर नियत हुआ। जब दक्षिण का अध्यक्ष खानजहाँ लोदी विद्रोह कर मालवा में चला गया तब जयसिंह अपने देश मे लौट आया। फिर शाहजहाँ के दरबार मे उपस्थित होने पर कासिम खाँ किजवीनी के साथ महावन के विद्रोहियो को दबाने के लिए भेजा गया। काबुल पर चढाई करने के कारण बलख के हाकिम नजर मुहम्मद खाँ को दबाने के लिए भेजा गया। तदुपरान्त खानजहाँ लोदी, परेदा दुर्ग, निजामुलमुल्क के विरुद्ध के युद्ध, मऊ दुर्ग के युद्ध आदि में वीरता प्रकट कर सम्मान पाया। वह दक्षिण का प्रान्तपाल बनाया गया। शाहजादा औरंगजेब के साथ बलख, कंधार, कामां पहाड़ी आदि के विद्रोहो को शांत करने के लिए नियुक्त हुआ। स० १७१५ मे बादशाह शाहजहाँ की अस्वस्थता के समय शाहजादो के विद्रोह करने पर पूर्व प्रदेशो के राज्यपाल शाहजादा शुजा को समझा कर शांत करने के लिए विदा किया। जयसिंह ने बनारस के पास बहादुरपुर के युद्ध में उसे पराजित कर खदेड दिया। औरगजेब के बादशाह बनने पर दाराशिकोह का पीछा करने पर तैनात हुआ। तदनन्तर दक्षिण मे राजा शिवा सीसोदिया का दमन करने भेजा गया। जयसिंह ने शिवा के रक्षास्थल दुर्गो पर अधिकार कर उसे शाही सेवा मे जाने के लिए बाधित किया। उसने अनेक युद्धो मे भाग लिया था। वि० स० १७२३ मे बुरहानपुर में उसका देहावसान हो गया। तब उसका मनसब सात हजारी जात सात हजार सवार सेह अस्पः का था।

मुगल दरबार भा. १ पृ. १५४–१६३, डूगरसी बागड़ी कृत मिर्जा राजा जैसिंघ री दवावैत।

पृ. १११, गीत १०३ कर्मसेन कल्याणोत कछवाहा—कछवाहो की कल्याणोत शाखा का कर्मसेन। वह केलण का वशधर था। उसके एक भाई का नाम जयचन्द्र था। वह किस स्थान का था एवं किसके विरुद्ध लड़ कर काम आया, समुचित जानकारी प्राप्त नहीं हुई।

पृ. ११२, गीत १०४ कंवर जैसिंघ नरूका कछवाहा—आमेर के राजा उदयकरण (स० १४२३ से १४४५ वि०) के छोटे पुत्र बरसिंह के पौत्र नरूसिंह सन्तति

नरूका कछवाहा कहलाते हैं। नरसिंह के वंशज चन्द्रभान ने बादशाह शाहजहाँ की सेवा मे रह कर सं० १६५२ में बलख, बदख्शां और कधार के युद्धों में शौर्य प्रदर्शन किया। इससे प्रसन्न होकर बादशाह ने चार हजारी का मन्सब प्रदान कर सम्मानित किया। उसका पुत्र फतहसिंह हुआ। उसने सं० १७१५ वि० मे शाहजादा शुजा के विरुद्ध भेजी गई शाही सेना मे नियुक्ति पाकर वीरता दिखाई। फतहसिंह का पुत्र संग्रामसिंह हुआ। सग्रामसिंह ने महाराजा सवाई जयसिंह की सेवा में रह कर सांभर के हुसैन अली अब्दुला खां सैयद को पराजित करने मे विशेष वीरता प्रकट की। संग्रामसिंह का पुत्र गीतनायक जयसिंह नरूका हुआ। जयसिंह ने गजसिंह कछवाहा को मारने के कारण किशनसिंह गौड़ को मार कर वैर लिया और वह स्वय भी इसी लडाई मे मारा गया।—लावा रासा की भूमिका २८–३३

पृ ११३, गीत १०५ जैचंद कल्याणोत कछवाहा—आमेर के कछवाहा राजवंश की कल्याणोत शाखा का जयचन्द कछवाहा। वह पचायन का पुत्र और केल्हण का वंशज था। वह पन्द्रह वर्ष की आयु में शत्रुओं का सामना करते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ।

पृ ११४, गीत १०६ जैसिंघ नरूका कछवाहा—वह कछवाहों की नरूका शाखा के संग्रामसिंह का पुत्र था। सग्रामसिंह के वशजो के अधिकार में जयपुर राज्य मे लदाना और लावा के ठिकाने थे। वह सभवतया महाराजा सवाई जयसिंह की सैयद बन्धुओ के साथ की सांभर की लडाई मे मारा गया था।

पृ. ११५, गीत १०७ सुजाणसिंघ जगन्नाथोत कछवाहा—राजा भरमल के पुत्र राजा जगन्नाथ के सब से छोटे पुत्र गोपालदास का पुत्र सुजानसिंह। राजा जगन्नाथ को बादशाह अकबर ने रणथम्भौर और टोडा प्रान्त दिया था। उसने शाही सेवा मे रह कर मुगल-मेवाड़ संघर्ष मे शाही पक्ष में भाग लिया था। तब उसका पाच हजारी तीन हजार सवार का मन्सब था। गोपालसिंह की जागीर में टोडा प्रात था। उसका पुत्र और गीत का नायक सुजानसिंह सम्भवत: सं० १७१५ वि० के औरगजेब मुराद के विरुद्ध लडे गए उज्जैन युद्ध में मारा गया। —मुगल दरबार भा. १ पृ. १४९–१५१, नैणसी भा. १ पृ. ३००–३०१।

पृ ११६, गीत १०८ साहब खाँ भाखरोत कछवाहा—आमेर के स्वामी राजा कुतलदेव के पुत्र भडसी से कछवाहों की भाखरोत शाखा का प्रचलन हुआ। गीतनायक साहब खाँ इसी शाखा के वैण (वैणीदास) का पुत्र था। शाहजादा सलीम के परामर्श से ओरछा के राजा वीरसिंह (वरसिंह देव) ने अबुलफजल को मार डाला था। इस अपराध पर नाराज होकर बादशाह अकबर ने वीरसिंह को दंडित करने के लिए दो बार उस पर सेनाएँ भेजी। अकवर की मृत्यु पर जहाँगीर ने उसको उच्च सैनिक पद देकर सम्मानित किया। तदनन्तर उसकी दक्षिण मे नियुक्ति हुई, इसी काल मे साहब खां ने दक्षिण मे महूगढ स्थान पर वीरसिंह की सेना से लडाई की थी। वह तब कहाँ का पट्टाधिकारी था कोई आधार नही मिला।

पृ. ११७ गीत १०९ राजसिंघ भाखरोत कछवाहा—आमेर के राजा कुतल के पुत्र भडसी से कछवाहो की भाखरोत शाखा का प्रादुर्भाव हुआ। गीतनायक इस शाखा के साहबखान का पुत्र था। पहिले पृ. ११६ गीत १०८ की टिप्पणी देखो।

पृ. ११८, गीत ११० नारायणदास दौलतखांन कछवाहा—आमेर के कछवाहो मे नारायणदास नामक भिन्न-भिन्न कई पुरुषो के नाम मिलते हैं। यह नारायणदास किस शाखा का था, स्पष्ट नही होता। नारायणदास और उसके उपपति पुत्र दौलतखांन ने किस से युद्ध किया था, यह स्पष्ट नही होता। उसके पट्टे मे तब जयपुर का चाटसू नाम का ठिकाना था।

पृ. ११९, गीत १११ राजा जैसिंघ कछवाहा—आमेर का शासक और शाही मन्सबदार मिर्जा राजा जयसिंह आमेर। पहिले पृ० १०९, गीत १०१ की टिप्पणी देखो।

पृ. १२०, गीत ११२ गजसिंघ नाथावत कछवाहा—आमेर के राजा पृथ्वीराज के छोटे पुत्र गोपालदास और उसके पुत्र नाथा से कछवाहो की नाथावत शाखा प्रसिद्ध हुई। गीतनायक के गजसिंह नाथा के पुत्र विहारीदास का पुत्र था। गजसिंह बादशाह शाहजहाँ के सेनानायक अनिरुद्धसिंह गौड़ से लड कर काम आया। गजसिंह के वैर में कु० जयसिंह नरूका ने किशनसिंह गौड़ को मार कर बदला लिया था।

नैणसी भा. १ पृ ३१०

पृ १२१, गीत ११३ दौलतसिंघ सेखावत—कासली (सीकर) का राव दौलतसिंह जसवंतसिंहोत शेखावत कछवाहा। वि० सं० १७७४ में शाही सूबेदार अब्दुला खाँ ने खण्डेला पर आक्रमण किया। वहाँ का राजा केशरीसिंह दिल्ली की सेना से युद्ध करता हुआ हरिपुरा के युद्ध मे काम आया। उसका प्रतिशोध लेते हुए दौलतसिंह ने अब्दुला खा के रिश्तेदार नूरदीखांन तथा उसके भानजे को मार कर प्रतिशोध लिया। दौलतसिंह प्रसिद्ध राजा रायसल दरबारी के तृतीय पुत्र राव त्रिमल का वशज था।

खण्डेला को इतिहास पृ. ८५–९३, रायसल जस सरोज

पृ. १२२ गीत ११४ कानसिंघ बलभद्रोत कछवाहा—राजा पृथ्वीराज के पांचवें पुत्र बलभद्र से कछवाहों की बलभद्रोत शाखा का उद्भव हुआ। बलभद्र के अचलदास और उसके मोहनदास हुआ। कानसिंह मोहनदास की सन्तति मे था। बलभद्रोतो का जयपुर में अचरोल ठिकाना था। गीत के वर्णनानुसार कानसिंह ने अपने जीवन मे पच्चीस लड़ाइयो मे भाग लेकर यशोपार्जन किया था।

नैणसी भा. १ पृ. ३०७

पृ. १२३, गीत ११५ देवसिंघ खंगारोत—कछवाहों की खंगारोत शाखा का देवसिंह खगारोत। वह अभयसिंह का पुत्र था। बादशाह फर्रुखशियर के समय मे उसने शाही थाने सांभर और अजमेर पर धावे मार कर शाही प्रान्तों में अराजकता फैलाई थी। जयपुर राज्य में खंगारोतों के डिग्गी, दूदू, जोबनेर, खण्डेल, बिचौन आदि कतिपय ठिकाने और साढ़े बाईस ताजीमे थीं।—ठिकाना खण्डेल का रेकार्ड।

पृ १२४, गीत ११६ मानसिंघ कल्याणोत—कछवाहो की कल्याणोत शाखा का मानसिंह कछवाहा। वह गोपालदास का पुत्र था। कल्याणोतों का प्रमुख ठिकाना जयपुर मे कालवाड़ था।

पृ. १२५, गीत ११७, पृ १२६ गीत ११८ महाराजा सवाई जैसिंघ कछवाहा—वह

आमेर के महाराजा विष्णुसिंह का पुत्र और मिर्जा राजा जयसिंह का पौत्र था। पिता की मृत्यु पर सन् १६९९ मे आमेर की गद्दी पर बैठा। तदनन्तर बादशाह औरंगजेब के दरबार मे उपस्थित होने पर खुलना के दुर्ग पर अधिकार करने को भेजा गया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद वह मुहम्मद आजम का पक्ष त्याग कर बहादुरशाह के शामिल हो गया। किन्तु बादशाह ने आमेर पर जप्ती बैठा कर सैयद हुसन खाँ बारह को वहाँ का फौजदार नियुक्त कर दिया। तदनन्तर जयसिंह ने जोधपुर के महाराजा अजितसिंह और महाराना मेवाड की सैनिक सहायता प्राप्त कर साँभर क्षेत्र मे शाही सेना को हरा कर आमेर पर अधिकार किया। सवाई जयसिंह फर्रुखशियर के पक्ष का समर्थक था और अजितसिंह सैयद बन्धुओ के। जयसिंह ने चूडामनि जाट, गगवाना का युद्ध, बूंदी का युद्ध आदि मे विजय प्राप्त की। सन् १७३२ ई. मे वह मालवा का सूबेदार बना। वह बड़ा योद्धा, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ, ज्योतिष, गणित और स्थापत्य कला का विदग्ध पण्डित था। जयपुर नगर उसी के यश का कीर्त्ति स्तम्भ है। वि० स० १८०० मे उसका स्वर्गवास हो गया।

मुगल दरबार भा. १ पृ. १६४-१६७, कछवाहो का इतिहास पृ. ३०

पृ १२७, गीत ११९ रावत केशरीसिंह सीसोदिया—महाराना उदयसिंह के छोटे पुत्र शक्तिसिंह के वंशधर रावत गोविन्ददास के छोटे पुत्र अचलदास का पौत्र रावत केशरीसिंह शक्तावत। शक्तावतो के राजस्थान में वेगू, भीडर, बानसी और सांवर बड़े ठिकाने थे। रावत केशरीसिंह बानसी का स्वामी था। उसने उजवेको के साथ युद्ध लडा था। महाराना राजसिंह के साथ की औरंगजेब की लडाइयों में रावत केशरीसिंह महाराना की ओर से लड़ा।

नैणसी भा. १ पृ. २६–२७
ओझा दूसरी जिल्द पृ. १२२७

पृ. १२८, गीत १२० अमांनसिंघ हाडा—वह इन्द्रगढ के महाराज भगतराम का पुत्र और छत्रसिंह का पौत्र था। अमरसिंह ने स० १८१८ वि० मे भटवाड़ा के रणांगण में जयपुर की सेना से युद्ध कर प्रसिद्धि पाई थी।

पृ. १२९, गीत १२१ महाराज अमरसिंह हाडा। महाराज अमरसिंह का परिचय नहीं मिला।

पृ १३०, गीत १२२ महाराज जोगीराम हाडा—कोटडियाद के इन्द्रगढ का शासक महाराज जोगीराम हाडा। जोगीराम ने कोटा के महाराव रामसिंह के साथ कचोदीखेड के रणक्षेत्र मे युद्ध किया। वह बूंदी की सेना का सचालन करते हुए वीरता के साथ घावो से आहत होकर रण भूमि मे गिर पडा था।

कोट० प्र० भा० पृ० २५५–२५६

पृ १३१ गीत १२३ परतापसिंघ सगतावत सीसोदिया—बानसी के रावत अचलदास शक्तावत का पौत्र और रावत नरहरिदास का तृतीय पुत्र पत्ता (प्रतापसिंह) शक्तावत सीसोदिया। वह बादशाह औरंगजेब की महाराना राजसिंह के विरुद्ध की मेवाड़ की चढाइयों

में महाराना की ओर से लड़ा और अपने कुल को कीर्तिमान कर स्वर्गलोक गया।

नैणसी भा. १ पृ. २७ ओझा दूसरी जिल्द पृ. १२२७

पृ. १३२, गीत १२४ जगतसिंघ सगतावत सीसोदिया—वह बानसी के रावत नरहरिदास के तृतीय वशज दुर्जनसिंह का पौत्र और प्रतापसिंह का पुत्र था। जगतसिंह शत्रुओ की दो हजार सेना के आक्रमण का सामना करते हुए पाच सौ शत्रुओ का संहार कर अपने साथियो सहित काम आया। दुर्जनसिंह को रावत का खिताब और सेमारी का ठिकाना महाराना जगतसिंह (दूसरे) ने दिया था।

ओझा दूसरी जिल्द पृ १२६६

पृ १ ३, गीत १२५ मानसिंघ सगतावत—महाराना उदयसिंह के कनिष्ठ पुत्र शक्तिसिंह के पुत्र भाण का पुत्र था। वह राजा भीमसिंह सीसोदिया टोडा के शासक का चाकर था। बादशाह जहाँगीर के विरुद्ध शाहजादा खुर्रम के विद्रोह करने पर खुर्रम की ओर से सं० १६८१ वि० मे पटना हाजीपुर के युद्ध में पराक्रम दिखा कर स्वर्ग सिधार गया।

प्रा. रा. गीत भ . १ पृ. ५२ का पाद टिप्पण

पृ. १३४, गीत रावल अमरसिंह सीसोदिया—गीतनायक रावल अमरसिंह सीसोदिया नही था। प्रतिलिपिकार की भूल से शीर्षक में सीसोदिया लिखा रह गया। वह क्षत्रियो के भाटी कुल का योद्धा एव जैसलमेर के रावल मालदेव का उत्तराधिकारी था। उसने पंजाब में मुसलमानों के साथ के युद्ध में वीरता दिखाई थी।

पृ. १३५, गीत १२७ राव छत्रसाल हाडा—बूंदी का स्वामी और शाही मन्सबदार महारावराजा शत्रुशाल हाडा। पहिले देखो पृ. २४ गीत २७ की टिप्पणी।

पृ. १३६ गीत १२८ महाराज मेघसिंह इन्द्रगढ—हाडोती क्षेत्र के इन्द्रगढ का स्वामी महाराज मेघसिंह हाडा। मेघसिंह ने बूंदी के पक्ष मे किससे युद्ध लड़ा था, कोई ऐतिहासिक आधार सामग्री उपलब्ध नही हुई।

पृ १३७, गीत १२९ महाराज छत्रसिंह हाडा—इन्द्रगढ के महाराज मेघसिंह का पुत्र महाराज छत्रसिंह हाडा। पहिले पृ. ८१ गीत ७६ की टिप्पणी देखो।

पृ १३८ गीत १३० राजा गजसिंघ राठौड़—जोधपुर के राजा सूरसिंह का पुत्र राजा गजसिंह राठौड़। राजा गजसिंह ने शाही सेवा स्वीकार कर मालवा विजय खांन जहा लोदी का दमन, हैदराबाद के निजामुलमुल्क का दमन आदि युद्धो में भाग लिया। बादशाह जहाँगीर और शाहजादे खुर्रम के मध्य के विद्रोह में यह शाही पक्ष में बना रहा। स० १६८१ में टौंस नदी के किनारे हाजीपुर के भयानक युद्ध में गजसिंह ने जहाँगीर की पराजित सेना का साथ देकर पराजय को विजय में बदल दिया था। खुर्रम के सहायक राजा भीमसिंह सीसोदिया टोडा महाराज गोकुलदास सक्तावत सावर और सक्तावत मानसिंह आदि बड़े योद्धा काम आए थे। इस विजय से राजा गजसिंह की बड़ी प्रसिद्धि हुई। उसके पुत्र राव अमरसिंह और महाराजा जसवन्तसिंह थे।

मुगल दरबार भा. १ पृ. १०८-१११, रेउ भा. १ पृ. १९९-२०८

पृ: १३६, गीत १३१ उजैणी रा-जुद्ध री अरजन गोड़ री—राजा बिट्ठलदास गौड का द्वितीय पुत्र अर्जुन गौड । वह बादशाह शाहजहाँ का विश्वस्त सेनानायक और दरबारी योद्धा था । उसने आगरा के दरबार मे राव अमरसिंह राठौड को मारा था । बदनौर, परबतसर आदि भूभाग उसकी जागीर मे थे । स० १७१५ वि में उज्जैन मे वह लडता हुआ वीरगति प्राप्त हुआ । यह युद्ध औरंगजेब, मुराद और शाही सेना के बीच लडा गया था । उस समय वह दो हजारी जात पन्द्रह सौ सवार का मनसबदार था ।

मा ख्यात, बिन्हैरासो पृ. ६६-६७

पृ. १४०, गीत १३२ हरदैनारायण हाडा रौ—बूंदी के राव रतनसिंह का पुत्र हृदयनारायण हाडा । वह कोटा का शासक था । हृदयनारायण को महावत खाँ और पर्वेज के साथ शाहजादे खुर्रम को दण्ड देने के लिए भेजी गई सेना के साथ भेजा गया था । जब टोस नदी के पास दोनो पक्षो मे युद्ध हुआ तब हृदयनारायण रणभूमि छोड भाग गया । इससे अप्रसन्न होकर बादशाह जहाँगीर ने उससे कोटा का राज्य छीन लिया । यह घटना स० १६८१ की है । तदनन्तर धौलपुर के युद्ध मे स० १७१५ वि० मे वह शाहजादा दाराशिकोह की ओर से लडता हुआ धराशायी हुआ ।

कोटा प्र. भा. पृ. ६४–६५

पृ १४१ गीत १३३ दौलतसिंह हरदावत हाडा रौ—वह राव रतनसिंह के पुत्र हृदयनारायण के वंशधर शिवसिंह हाडा का पुत्र था । उसने महारावराजा बुधसिंह बूंदी के पक्ष में कुशस्थल के युद्ध में भाग लिया और उसमे घायल होकर बच गया ।

पृ. १४२, गीत १३४ भींवसिंघ हाडा अर गजसिंह कछवाहा रौ—कोटा का महाराव रामसिंह हाडा और नरवर का राजा गजसिंह कछवाहा । स० १७२० मे दक्षिण मे निजामुलमुल्क के विरुद्ध सैयद बन्धुओ ने इनको दक्षिण मे भेजा था । पन्धार के पास निजामुलमुल्क और महाराव भीमसिंह तथा राजा गजसिंह की सेना मे घमासान युद्ध हुआ । इस युद्ध मे शाही सेनानायक भीमसिंह और दिलावर अली खा अपनी सेना सहित मारे गए । राजा गजसिंह फिर भी युद्ध मे दृढतापूर्वक लडता रहा और अन्त मे उसी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ ।

कोटा प्र भा. पृ २६६–२६८

पृ १४३, गीत १३५ शाहजादां री वेढ रौ—बादशाह औरगजेब की मृत्यु के बाद उसके शाहजादे आलम और अजीमुश्शान के मध्य राज्य प्राप्ति के लिए धौलपुर के पास जाजव के रणक्षेत्र मे युद्ध हुआ । उपर्युक्त युद्ध मे जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह, कोटा के महाराव रामसिंह और राजा दलपत बुंदेला दतिया आदि शाहजादा आलमशाह के तरफदार थे और महारावराजा बुद्धसिंह बून्दी बहादुरशाह की ओर था । आजम की इस युद्ध मे पराजय हुई । महाराव रामसिंह, राजा दलपत, शाहजादा आजम और उसका पुत्र वेदाँरबख्त युद्ध मे मारे गए । यह युद्ध वि. स. १७६४ मे हुआ था ।

गहलोत द्वि भा. पृ. ७८

पृ. १४५, गीत १३६, पृ. १४६, गीत १३७ राव रामसिंह हाडा कोटा—कोटा का महाराव रामसिंह हाडा । वह महाराव किशोरसिंह का पुत्र और उत्तराधिकारी था । उसने

अरनी का दुर्ग, बीजापुर, बसन्तगड, पनाला आदि दक्षिण के दुर्गों में युद्धों में भाग लिया था। तदनन्तर दक्षिण में राजाराम मरहठा के दमन, जिंजी के घेरे आदि युद्धों में अच्छी वीरता दिखाई थी। औरंगजेब की मृत्यु के बाद जाजव के युद्ध में महाराव रामसिंह ने आजम का पक्ष ग्रहण किया और रणक्षेत्र में १७६४ वि० में वीरतापूर्वक लड़ता हुआ खेत रहा। इसका कोटा पर सन् १६९६ से १७०७ तक शासन रहा।

कोटा प्र. भा. पृ. २२१-२३०

पृ १४७, गीत १३८ उजीण रा संग्राम रो हिन्दू जोधारां रो—बादशाह शाहजहां के जीवन के अन्तिम काल में स० १७१५ में शाहजादा दाराशिकोह और शाहजादे औरंगजेब मुराद के मध्य उज्जैन और धौलपुर के पास जो दो भयानक युद्ध हुए उनमें शाही पक्ष के योद्धाओं का इस गीत में वर्णन है। शाही पक्ष में उज्जैन में अर्जुन गौड़, राव मुकुन्दसिंह हाडा कोटा, राजा रतनसिंह रतलाम, दयालदास झाला गंगराड़, और धौलपुर के युद्ध में भीमसिंह गौड, राजा शिवराम गौड़, राव शत्रुशाल हाडा, राजा रामसिंह भिनाय और महाराज सिरवरसिंह सीसोदिया आदि बड़े योद्धा मारे गए थे। विशेष परिचय के लिए विन्हैरासो देखें।

पृ. १४८, गीत १३९ करणसिंघ चौहान रो—श्यामसिंह सोनगरा चहुवान का पुत्र कर्णसिंह चहुवान। कर्णसिंह ने पठानों के साथ कब और कहां युद्ध किया था कोई आधार-स्रोत नहीं मिला।

पृ १४९, गीत १४० करणसिंघ राठौड़ बीकानेर रो—बीकानेर का कर्णसिंह राठौड़। बीकानेर के राजवंश के इतिहास में राव सूरसिंह के उत्तराधिकारी राव कर्णसिंह का वृत्तान्त मिलता है जो बादशाह शाहजहां और औरंगजेब का समसामयिक था। किन्तु राव कर्णसिंह को बादशाह औरंगजेब की आज्ञा से उसके ज्येष्ठ राजकुमार अनूपसिंह ने राज्यच्युत कर सन् १६६७ ई में बीकानेर पर अधिकार कर लिया था। अन्त में सन् १६७७ ई. में औरंगाबाद में उसका देहान्त हो गया। किन्तु गीतनायक कर्णसिंह के युद्ध में मारे जाने का गीत में वर्णन है। इसलिए कहा नहीं जा सकता कि यह कर्णसिंह वहीं था अथवा कोई उससे भिन्न।

मुगल दरबार भा. १ पृ ८५-८९

पृ. १५०, गीत १४१ अखैराज नै उदैभाण राठौड़—अजमेर मेरवाड़ा के भिनाय, बंधेरा आदि ठिकाने वालों के पूर्वज राजा उदयभान और उसका कनिष्ठ भाई अक्षयराज राठौड़। पहिले पृ ६१, गीत ५८ की टिप्पणी देखो।

पृ १५१, गीत १४२ दलकरण राठोड—जोधपुर के राव रिड़मल के पुत्रों में से करण के वंशज ठाकुर आसकरण के पुत्र जसकरण का पुत्र दलकरण करणोत राठोड़। करणोतों के राजस्थान में समदड़ी बाघावास, कीटनोद, नटवाडा आदि ठिकाने थे।

बांकीदास पृ. ५५-५७

पृ १५२, गीत १४३ राव बुधसिंघ हाडा—बून्दी का महाराव बुद्धसिंह हाडा। गीत में बुद्धसिंह द्वारा धौलपुर के समीपस्थ जाजव स्थान के युद्ध में वीरता प्रकट करने का

वर्णन है। राव बुद्धसिंह बूंदी के राव अनिरुद्धसिंह के पुत्र थे। वह वि. स० १७५२ से १७७९ तक जीवित रहा। उसने जाजव के युद्ध मे बहादुरशाह का पक्ष लिया था। युद्ध मे आजम और उसके पक्षधर राव रामसिंह कोटा, राजा दलपत बूदेला आदि मारे गए। बुद्धसिंह की वीरता से प्रसन्न होकर बहादुरशाह ने उसे उच्च मनसब और महारावराजा की पदवी प्रदान की।

गहलोत द्वि भा पृ. ७७–७८

पृ. १५३, गीत १४४ राजाधिराज बखतसिंघ नागौर—महाराजा अभयसिंह जोधपुर का कनिष्ठ भ्राता और नागौर का शासक राजाधिराज वख्तसिंह नागौर।

पहिले पृ. ५८ गीत ५० की टिप्पणी देखो

पृ १५४, गीत १४५ राव दुरजणसाल हाडा कोटा—कोटा के महाराव अर्जुन... छोटा भाई और उत्तराधिकारी महाराव दुर्जनशाल। महाराव दुर्जनशाल राजगद्दी पर बैठा उस समय राजस्थान मे महाराजा सवाई जयसिंह का अत्यधिक प्रभाव था। सवाई जयसिंह की मृत्यु के वाद दुर्जनशाल ने महारावराजा बुद्धसिंह को सहायता देकर पुन बूदी पर प्रतिष्ठित किया था। गीत मे बूदी के पक्ष मे आमेर से लडने का वर्णन है। दुर्जनशाल का कोटा पर स १७८० से १८१३ वि तक शासन रहा।

कोटा प्र. भा पृ ३३७–३४७

पृ १५५, गीत १४६ महाराजा सन्मानसिंह हाडा—कोटा के इन्द्रगढ ठिकाने का स्वामी महाराज सन्मानसिंह हाडा। स. १८३९ मे जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह ने कोटा के कोटडियाद ठिकानो पर चढाई की तब कोटा के दीवान राजराणा जालिमसिंह के निर्देश पर जयपुर की सेना के मुकाविले के लिए एक बडी सेना भेजी गई थी। उसमे अपने अन्य खतौली, करवाड, पीपलदा, वलवन के सरदारों के साथ महाराज सन्मानसिंह की भी नियुक्ति हुई थी। इस बार कोटा पक्ष की विजय हुई।

कोटा द्वि भा पृ. ४८०

पृ १५६, गीत १४७ लालसिंह सोळखी—मेवाड प्रान्त के देसूरी भाग के जागीरदार वीरमदेव के तृतीय पुत्र शार्दूल का पुत्र लालसिंह सोलकी। वीरमदेव के वशजो के मेवाड मे रूपनगर और झीलवाडा के दो ठिकाने थे। गीतनायक लालसिंह का गीत मे केशरीसिंह के पक्ष मे शाही दरवार मे नवाब को मार कर मारे जाने का वर्णन है। यह घटना सम्भवतया शाहजहा के शासनकाल की हो सकती है।

पृ १५७, गीत १४८ गगाराम नाग रौ—रामानदी सम्प्रदाय के गगाराम नागा की युद्ध-वीरता का गीत मे वर्णन है। उसके स्थान आदि का परिचय नही मिला।

पृ १५९, गीत १४९ गोरधनसिंघ हाडा मोहणोत—कोटा राज्य के सस्थापक राव माधवसिंह के द्वितीय पुत्र महाराज मोहनसिंह का उत्तराधिकारी महाराज गोरधनसिंह। मोहनसिंह स. १७१५ के उज्जैन के युद्ध मे अपने भाई महाराव मुकदसिंह, कन्हीराम और

जूझारसिंह सहित मारा गया था। मोहनसिंह की जागीर मे कोटा का पलायथा ठिकाना था। पलायथा के स्वामियो का 'आप' खिताब था। गोरधनसिंह रण क्षेत्र मे खण्ड खण्ड होकर वीरगति को प्राप्त हुआ।

गहलोत द्वि भा. पृ. १५२

पृ. १६०, गीत १५० छत्रसिंघ मेहाउत हाडा—कोटा के इन्द्रगढ ठिकाने का स्वामी महाराज छत्रसिंह मेघसिंहोत हाडा। उसने जोरावरसिंह राठोड के पुत्र जैसा (जसवन्तसिंह) को भाला द्वारा मारा था। पहिले पृ. ८१ गीत ७६ की टिप्पणी देखो।

पृ. १६१, गीत १५१ राव रामसिंघ हाडा नै राजा राजसिंह राठौड—कोटा के महाराव रामसिंह हाडा और किशनगढ़ के महाराजा राजसिंह राठोड। बादशाह औरगजेब की मृत्यु पर उसके शाहजादे आजम और मुअज्जम के मध्य सं. १७६४ वि. मे धौलपुर के निकटस्थ जाजव के मैदान मे घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध मे रामसिंह आजम की ओर से और राजसिंह मुअज्जम की ओर से प्रविष्ट हुए थे। दोनो पक्षों मे कुछ समय भयानक सग्राम होने के बाद रामसिंह और राजसिंह का सामना हुआ। रामसिंह राजसिंह के प्रहार से मारा गया और राजसिंह उसका प्रहार सहन कर जीवित बच रहा।

मुगलदरवार भा १ पृ ३७०

पृ. १६२, गीत १५२, पृ १६३, गीत १५३ ठाकर उदैसिंह खींवसर—नागोर प्रान्त के कर्मसिंहोत राठोडो के खीवसर ठिकाने का ठाकुर उदयसिंह। वह स १८८७ मे गुजरात के विद्रोही सूबेदार सर बुलन्द खाँ और महाराजा अभयसिंह जोधपुर के मध्य लडे गए युद्ध मे महाराजा अभयसिंह की सेना मे था। वह ठाकुर हरनाथसिंह का पुत्र था।

रेउ प्र.भा.पृ. ३६६, सूरज प्रकास तृ भा पृ १२६, राठोड़ों के ठिकानों की वशावली

पृ. १६४, गीत १५४ हरनाथसिंघ करमसोत खींवसर—कर्मसिंहोत शाखा के राठोडों के ठिकाने खींवसर का ठाकुर हरनाथसिंह। हरनाथसिंह ने महाराजा अजितसिंह के पक्ष में राठोडो के दिल्ली के युद्ध एव सैयद बन्धुओ के साथ के साभर के युद्ध मे भाग लेकर वीरता का परिचय दिया था। वह ठाकुर भीमसिंह का पुत्र था।

राठोड़ो के ठिकानो की वशावली

पृ १६५, गीत १५५ महाराजा बहादरसिंह किशनगढ़—राठोडों के किशनगढ़ राज्य का अधिपति महाराजा बहादुरसिंह राठोड। वह बडा वीर राजनीतिज्ञ तथा विद्वान् था। उसने किशनगढ राज्य की शासन-व्यवस्था को जमाने मे बड़ी दक्षता का परिचय दिया था। पहिले पृ ५८, गीत ५६ की टिप्पणी देखो।

पृ. १६६, गीत १५६, पृ. १६७ गीत १५७ जालमसिंघ मेड़तिया कुचामण रा धणी—गौड़ावाटी के कुचामन ठिकाने का सस्थापक ठाकुर जालिमसिंह मेड़तिया। गौड़ावाटी रघुनाथसिंह मेड़तिया को बादशाह औरगजेब ने स. १७१५ मे प्रदान की थी। औरगजेब के राज्य प्राप्ति के युद्धों मे रघुनाथसिंह ने औरगजेब तथा महाराजा जसवतसिंह ने दाराशिकोह का साथ दिया था। रघुनाथसिंह प्रसिद्ध वीर राव जयमल मेडतिया के पौत्र सांवलदास का

पुत्र था और जालिमसिंह रघुनाथसिंह का पौत्र। जालिमसिंह ने गुजरात और महाराजा अभयसिंह के अन्य युद्धो में वीरतापूर्वक भाग लेकर यश कमाया था। महाराजा रामसिंह और राजाधिराज बख्तसिंह के पारस्परिक युद्धो मे वह रामसिंह के पक्ष वालो का प्रमुख था। वह जब तक जीवित रहा राजाधिराज बख्तसिंह जोधपुर पर अधिकार नहीं कर सका। अन्त मे स. १८०८ विक्रमी मे लोढावास के युद्ध क्षेत्र मे जालिमसिंह वीरगति को प्राप्त हुआ, तब फिर जोधपुर पर बख्तसिंह का अधिकार हुआ।

बांकीदास पृ ६६, मारवाड रा उमरावा री वात

पृ. १६८, गीत १५८, पृ १६६ गीत १५६, लालसिंह राठौड़—वह अजमेर मेरवाड़ा के राठौडो के ठिकाने बड़ली का ठाकुर था। लालसिंह के पिता का नाम दूलहसिंह था। लालसिंह ने मरहठो के बडली पर आक्रमण करने पर उनका साहस पूर्वक सामना कर प्रसिद्धि प्राप्त की।

शाहपुरा राज्य की ख्यात

पृ. १७१, गीत १६० साह तेजा सहसमलोत—भारमल का पौत्र तथा सहसमल का पुत्र शाह तेजमल। वह जोधपुर के राव मालदेव का प्रधानामात्य था। स० १६०० वि० में बादशाह शेरशाह ने मालदेव को पराजित कर जोधपुर पर अधिकार कर लिया था। फिर सं० १६०३ में मालदेव ने पठानो को जोधपुर से निकाल कर पुनः अधिकार किया। इस प्रयत्न मे तेजमल उसका अनवरत सहायक बना रहा। वह जाति का ओसवाल वैश्य था।

रेउ प्र. भा पृ १३२, मारवाड री ख्यात

पृ १७२ गीत १६१, पृ १७३ गीत १६२ राव भोज हाडा—कोटा बूदी के नरेशों का पूर्वज राव भोज हाडा। वह बादशाह अकबर का मनसबदार था। अकबर की माता के निधन पर अन्य शाही हिन्दू मनसबदारो ने अपनी दाढी-मूछो का मुण्डन करवा कर शोक प्रकट किया था। किन्तु भोज ने ऐसा नही किया। जिससे अकबर उससे नाराज हो गया। वह स० १६४२ वि० मे बूदी की गद्दी पर बैठा था।

मुगल दरबार भा. १ पृ. २७३, ठिकाना इन्द्रगढ का प्रा. सग्रह

पृ. १७४ गीत १६३ लाला हाडा—हाडा शाखा का लाला हाडा। गीत मे लाला और खेता सीसोदिया के युद्ध का वर्णन है। किन्तु प्राप्त इतिहास ग्रथो एव ख्यात ग्रथो में इसका कही कोई उल्लेख उपलब्ध नहीं हुआ है।

पृ. १७५, गीत १६४ बीदाजी करणोत—वह जोधपुर के राव रणमल्ल के सातवे पुत्र करण का वशधर था। उसका पिता लूणकरण और प्रपौत्र प्रसिद्ध वीर दुर्गादास राठौड़ था।

रेउ प्र. भा पृ ८०, वाकीदास पृ० ५५

पृ. १७६, गीत १६५ नींवा करणोत राठौड—वह पृ १७५ गीत १६४ की टिप्पणी के बीदा करणोत राठौड का पुत्र था। नींवा का पुत्र ठाकुर आशकरण और उसका पौत्र ठाकुर दुर्गादास राठौड था। आशकर्ण की जागीर मे सालवा ठिकाना था। नींवा ने काकुल मे शाही अ र को मार कर उसका घोडा छीन लिया था। सभवत वह जोधपुर के राजाओ की

सेवा मे उनके साथ काबुल मे रहा हो। वांकीदास पृ० ५५

पृ० १७७, गीत १६६, पृ० १७८, गीत १६७, पृ० १७६, गीत १६८ दुरगादास आसकरणोत राठोड—वह महाराजा जसवंतसिंह के विश्वस्त सामत आशकर्ण का पुत्र और उनके पुत्र महाराजा अजितसिंह का सरक्षक था। पृ० ४४ गीत ४६ की टिप्पणी देखो।

पृ० १८० गीत १६६ वल्लू राठोड़—राठोड़ खेमकरण का वंशज और दलपतसिंह का पुत्र वल्लू का परिचय प्राप्त नहीं हुआ।

पृ. १८१, गीत १७० कवर चैनसिंह दूदावत—राठोडो की दूदावत शाखा का चैनसिंह। वह कुचामन के ठाकुर जालिमसिंह का पुत्र था। स० १८०८ वि० के महाराजा रामसिंह जोधपुर और उनके चाचा राजाधिराज वख्तसिंह नागोर के युद्धो में वह रामसिंह के पक्ष में लड़ता रहा। अन्त मे लोढ़ावास के युद्ध मे तोपों के गोले से एक पैर टूट जाने के बाद भी लडता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। उसके वंश वालो के अधिकार में डीडवाने परगने का सुजरासन ठिकाना था।

मारवाड रा उमरावा री वात, ठाकुर नारायणसिंह सुजरासन का पत्र दि० २१-६-७६

पृ १८२, गीत १७१ गोयंददास भायल—क्षत्रियो की भायल शाखा का वीर गोयंददास, वह सिवाना के अधिपति राठोड कल्याणसिंह रायमलोत का सामन्त था। राव कल्याण के सिवाणा दुर्ग त्याग कर पर्वतों मे शरण लेने पर उसने दुर्ग की रक्षा की और बादशाह अकबर के सेनानायक मोटा राजा उदयसिंह से स० १६४४ मे वीरता पूर्वक लड़ता हुआ मारा गया। उसके पितामह का नाम जगतसिंह था।

रेउ प्र० भा० पृ० १७५

पृ. १८३, गीत १७२ रूपसिंह राठोड़—किमनसिंह के पुत्र रूपसिंह राठोड का वश परिचय, ठिकाना एव युद्धादि की जानकारी का आधार स्रोत नही मिला।

पृ. १८४, गीत १७३ जादूराम वणसूर—पाडलाऊ के भैरुदान वणसूर चारण का पौत्र और चैनराम का पुत्र जादूराम चारण। वह महाराजा तख्तसिंह जोधपुर के शासनकाल मे मोजूद था।

पृ १८५, गीत १७४ गोरधन कूंपावत—कूंपावत राठोड़ों के चण्डावल ठिकाने का ठाकुर गोवर्धनदास राठोड। उसके पिता का नाम चांदसिंह था। उसने महाराजा गजसिंह और महाराजा जसवन्तसिंह की सेवा मे रह कर अनेको युद्धो मे भाग लिया था। अन्त मे स० १७१५ वि० मे उज्जैन मे वह मुराद की सेना से लड़ता हुआ खेत रहा।

पृ. १८६, गीत १७५ राजा गजसिंह राठोड़—जोधपुर का महाराजा गजसिंह राठोड़। पहिले पृ० १३८ गीत १३० की टिप्पणी देखो।

पृ. १८७, गीत १७६ गंभीरसिंह सोळंकी—गम्भीरसिंह सोलकी वागड क्षेत्र के बांसवाड़ा के किस ठिकाने का ठाकुर था कोई आधार नहीं मिला। उसने भीलो एव मीणो के दस्यु दल का नाश कर वीरगति प्राप्त की थी। वह बांसवाड़ा के रावल भवानीसिंह का सामन्त तथा समसामयिक था।

पृ. १६०, गीत १७७ महाराव रामसिंघ हाडा—बूंदी के अधिपति महाराव रामसिंह हाडा। प्रसिद्ध चारण महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण उनके आश्रित कवि थे। वि० स० १८७८ से १९४६ तक उनका बूंदी पर शासन रहा।

गहलोत द्वि० भा० ९६–९७

पृ १६१, गीत १७८ पृ १६२, गीत १७९ नगराज वाघावत खीची—चहुवानो की खीची शाखा का नगराज बाघसिंह का पुत्र था। वह दुर्ग की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ। उसके वतन एव जीवन वृत्त पर कोई जानकारी नही मिली। सम्भवतः वह मालवा प्रान्त के राघवगढ, खिलचीपुर, गडा आदि खीचीवाडा के किसी राज्य से सम्बन्धित रहा हो।

पृ १६३, गीत १८० गोपालदास जोगीदासोत गौड—लाखेरी के शासक जोगीदास गौड़ का पुत्र राजा गोपालदास गौड़। पहिले पृ० १३ गीत १५ की टिप्पणी देखो।

पृ. १६४, गीत १८१ सगता गौड—शक्तिसिंह गौड का परिचय प्राप्त नही हुआ। वह बूंदी की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ था।

पृ. १६५, गीत १८२ राजा नरसिंघदास गौड—वह राजा अनिरुद्धसिंह गौड का उत्तराधिकारी और ज्येष्ठ पुत्र था। नृसिंहदास ने बादशाह औरंगजेब की सेना में रह कर दाराशिकोह के साथ बगाल, कामरू और शाहजादा शुजा के विरुद्ध के युद्धो मे भाग लेकर वीरता दिखाई थी।

विन्हैरासो पृ. २१७, नरसिंघदास गौड री दवावैत

पृ १६७ गीत १८४ उदैभाण हरभाण गौड—राजा गोपालदास गौड के भाई सुन्दरदास गौड के पुत्र उदयभान और हरिभान गौड। इन्होने १७१५ वि० के धौलपुर के युद्ध मे शाहजादा दाराशिकोह की ओर से युद्ध मे भाग लिया था। तब उदयभान का चार सदी दो सौ सवार का मनसब था।

मा. प. विगत

पृ. १६८, गीत १८५ रावल वैरीसाल नाथावत सांमोद—जयपुर राज्य के ठिकाने सांमोद का रावल वैरीशालसिंह नाथावत। वह रावल अजितसिंह का पुत्र था। वैरीशाल महाराजा सवाई जयसिंह तृतीय के शासनकाल में जयपुर का प्रधान मत्री रहा। अग्रेजो की जयपुर के साथ की प्रथम सधि पर उसने हस्ताक्षर किए थे। सांमोद के नाथावत नाथा के द्वितीय पुत्र विहारीदास के वशधर हैं।

गहलोत तृतीय भा० पृ० २०१

पृ १६९, गीत १८६ राजा वलूतसिंघ रतलाम—वह रतलाम के राजा पहाडसिंह का पुत्र और उत्तराधिकारी था। बलवतसिंह स्वय विद्वान् और विद्वानो का आश्रयदाता था। उसने भैरिया के सोरठे नाम से नीति के सुदर दोहे लिखे हैं।

गीत-छन्दानुक्रमणिका

(स)

(ह)



सहायक ग्रन्थ-सूची

अजित विलास--राजस्थानी शोध-संस्थान चौपासनी-संग्रह
आसोप का इतिहास—पं० रामकर्ण आसोपा
कछवाहों का इतिहास—डा० वीरसिंह तवर
कछवाहों की ख्यात—राजस्थानी शोध-संस्थान चौपासनी-संग्रह
कोटा राज्य का इतिहास भाग १, २—डॉ० मथुरालाल शर्मा
खण्डेला का इतिहास—प० सूर्यनारायण शर्मा
खेतड़ी का इतिहास—पं० झाबरमल्ल शर्मा
गौड़ गोपालदास री वारता—कु० देवीसिंह मंडावा का संग्रह
गौड़ो की वंशावली (बिन्हैरासो के अन्तर्गत)—सं० सौभाग्यसिंह शेखावत
टॉड राजस्थान हिन्दी संस्करण—पं० बलदेवप्रसाद द्वारा अनुवादित
ठिकाना कुचामन की ख्यात—राजस्थानी शोध संस्थान चोपासनी संग्रह
ठिकाना खण्डेल का रेकार्ड्स्—डा० कल्याणसिंह खण्डेल का संग्रह
दयालदास री ख्यात भाग १—डॉ० दशरथ शर्मा
धासपां का इतिहास—बदरी शर्मा, सेणा सदन, जोधपुर
नैणसी री ख्यात भाग १, २, ३—सं० बदरीप्रसाद साकरिया
पवार-वंश-दर्पण—सं० डॉ० दशरथ शर्मा
प्राचीन राजस्थानी गीत भाग १—सं० गिरिधारीलाल शर्मा
बलद्विलास सूर्यमल्ल मिश्रण कृत—सौभाग्यसिंह का संग्रह
बिन्हैरासो महेशदास राव-कृत—सं० सौभाग्यसिंह शेखावत
मआसिरुल उमरा भाग १—अनु० व्रजरत्नदास बी. ए.
मारवाड़ का इतिहास भाग १, २--पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ
मारवाड़ रा उमरावां री वारता--कु० देवीसिंह मंडावा का संग्रह
मिर्जा राजा जैसिंघ री दवावैत—डूंगरसी बागड़ी-कृत
मुगल दरबार भाग १—अनु० व्रजरत्नदास बी ए.
राजपूताने का इतिहास भाग १, २—जगदीशसिंह गहलोत
राजपूताने का इतिहास भाग १-४—डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा
राजरूपक वीरभाण रतनू-कृत—सं० पं० रामकर्ण आसोपा
राठोड़ जागीरदारों की वंशावली—सीताराम लालस का संग्रह
रायसल जस सरोज, रामदयाल कविया-कृत--सौभाग्यसिंह का संग्रह
राव भोजराज मनोहरदासोतरी निसांणी--नरहरिदास बारहठ-कृत
राव रतन री वेलो कल्याणदास मेहडू कृत--साहित्य संस्थान, उदयपुर
बांकीदास री ख्यात--सं० प्रो० नरोत्तमदास स्वामी
वीर-विनोद भाग १, २, ३--कविराजा श्यामलदास
सल्तनतकालीन भारत--डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव
शाहपुरा राज्य का रेकार्डस्—राजाधिराज सुदर्शनदेवसिंह शाहपुरा का संग्रह